بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

ثمرۃ العقائد

समरतुल अक़ाइद

अक़ीदों के लिये आयतों
और
अहादीस का अज़ीम ज़ख़ीरा

मुअल्लिफ़:

हज़रत मोलाना समीरूद्दीन क़ास्मी साहब

(दामत बरकातुहुम)

इस किताब में तक़रीबन 350 अक़ीदे हें
इन अक़ीदों को साबित करने के लिये
563 आयतें हें और 373 अहादीस हें।

मुतर्जिम:

मौलवी मु० जहँागीर दुमकवी

(تفصیلات) विवरन

नाम किताबः **समरतुल अ़क़ाइद**

मुअल्लिफ़ः हज़रत मोलाना समीरूद्दीन क़ास्मी साहब
मांचेस्टर इंग्लैण्ड. +447459131157

प्रकाशकः ....

छपाईः 2020

पैजः 552

हिन्दी ट्रांसलेट व कम्पोजिंगः

मौलवी मु० जहाँगीर

(द लाईट कम्पयूटर सेन्टर देवबन्द)

+91–7017483817–01336–224716

मिलने का पताः

मकतबा समीर

मांचेस्टर इंग्लैण्ड. +447459131157

फ़हरिस्त मज़ामीन

उ़नवान	सफ़्हा
समरतुल अ़क़ाइद की ख़ुसूसियत..	21
तक़ारीज़..	23
तक़रीज़..	25
तहनियत..	26
तदवीन इल्म कलाम– इल्म कलाम और उस की ज़रूरत............	28
किताब लिखने का मक़सद..	30
ख़ुदा करे कि सब मिल जाऐं..	31
दिल से माफ़ी मांगता हूं...	32
हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की तफ़सीर से हल पैश किया....	33
तन्ज़ व मिज़ाज से एतराज़ क्या हों..	33
शुक्रिया..	33
मेरे लिये दुआ़ फ़रमा दें...	34
(1) अल्लाह की ज़ात..	35
अल्लाह का ज़ाती नाम ''अल्लाह'' है बाक़ी नाम सिफ़ाती हैं.......	35
अल्लाह हमैशा से है और हमैशा रहेगा......................................	36
अल्लाह की ज़ात कभी फ़ना नहीं होगी और ना इस को मौत आयेगी..	37
हयात की चार क़िस्में हैं...	37
अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है..	38
अल्लाह की ना औलाद है ना वो किसी से पैदा हुआ है और ना उस के बराबर कोई है..	38
अल्लाह को ना नींद आती है और ना नींद उन के मुनासिब है।	39
अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है..	40
अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है....................................	41
अल्लाह तमाम जहानों का मालिक है...	42

उनवान	सफ़हा
हशर का दिन बहुत बड़ा दिन है, अल्लाह उस दिन का भी मालिक है	43
अल्लाह जो हर अर्ज़ जिस्म और कैफ़ियत से पाक है	43
अल्लाह तआ़ला जहत, और मकान से पाक है	43
अल्लाह ही हर क़िस्म की तारीक के लायक़ हैं	44
अल्लाह झूट बोलने से पाक है	45
अल्लाह हर चीज़ का सुनने वाला है और हर चीज़ को जानने वाला है	46
अल्लाह की ज़ात बुलन्द है और अ़ज़मत वाली है	47
सिर्फ़ अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है	48
अल्लाह के अ़लावा किसी और से रोज़ी नहीं मांगनी चाहिए	48
अल्लाह के अ़लावा कोई भी किसी तकलीफ़ को दमर करने की कुदरत नहीं रखता	49
सिर्फ़ अल्लह ही बच्चा देने वाला है	50
अल्लाह ही शिफ़ा देता है	52
(2) अल्लाह पर जज़ा या सज़ा देना वाजिब नहीं है	54
अल्लाह जो कुछ दे वो उस का फ़ज़्ल है	55
अहले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीद यह है कि ख़ैर और शर सब का पैदा करने वाला अल्लाह है	56
अल्बत्ता बन्दा शर का काम करे तो अल्लाह उस से राज़ी नहीं होता और ख़ैर का काम करे तो अल्लाह उस से राज़ी होता है.	57
अल्लाह की तमाम सिफ़ात अज़ली और अब्दी हैं	58
(3) दहरियों को खुदा मान लेना चाहिए	58
इस का जवाब यह है कि	59
अल्लाह की ज़ात को क्यों नहीं मानें	60
आप ख़ुद मर कर दिखलाऐं	60
आप जवान रह कर दिखलाऐं	60
आप सवा सौ साल तक ज़िन्दा रह कर ही दिखला दें	61
जो ज़ात मारेगा उसी का नाम ख़ुदा है	61
आप मान लें कि पैदा करने वाला ख़ुदा है	62

उनवान	सफ़हा
(4) रोयत बारी (अल्लाह को देखना)	62
हर एक की दलाइल यह हैं	63
हज़रत आ़यशा रज़ि0 का मौक़फ़ यह है कि दुनिया में अल्लाह को नहीं देखा जा सकता है............	64
(2) दूसरी जमाअ़त............	67
(3) तीसरी जमाअ़त............	67
(4) चौथी जमाअ़त यह है कि अल्लाह को दिल से देखा है.........	68
मौमिन आख़िरत में अल्लाह को देखेंगे	68
जहीमा फ़िरक़े ने कहा था कि आख़िरत में भी अल्लाह का दीदार नहीं होगा............	70
(5) हुज़ूर पाक स०अ०व० को 10 बड़ी बड़ी फ़ज़ीलतें दी गई हैं.	71
(1) हुज़ूर स0अ0व0 को शिफ़अ़ते कुबरा दी जायेगी............	72
(2) हुज़ूर स0अ0व0 को हौज़े कौसर दिया जायेगा जको किसी और को नहीं दिया गया है।............	74
(3) वसीला एक बहुत बड़ा मक़ाम है जो सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 को दिया जायेगा	75
(4) हुज़ूर स0अ0व0 को ''लवाउल हम्द'' दिया जायेगा जो किसी और को नहीं दिया जायेगा............	76
(5) हुज़ूर स0अ0व0 ख़ातिमुल नबिय्यीन हैं कोई और नहीं हैं.......	77
(6) हुज़ूर स0अ0व0 पूरी इन्सानियत के लिए नबी हैं............	78
(7) हुज़ूर स0अ0व0 को मेअ़राज पर ले जाया गया और बड़ी बड़ी निशानियां दिखलाईं............	79
(8) हुज़ूर स0अ0व0 पर कुरआन उतारा जो किसी और पर नहीं उतारा।............	80
(9) हुज़ूर स0अ0व0 महबूब रब्बुल आ़लमीन हैं	
(10) हुज़ूर स0अ0व0 अव्वलीन और आख़रीन के सरदार हैं और	81
कोई और नहीं है	81
हुज़ूर स0अ0व0 की जितनी फ़ज़ीलतें हैं उतने ही पर रखने की तालीम दी गई है इस से ज़्यादा बढ़ाना ठीक नहीं है।............	82

उनवान	सफ़्हा
(6) हुज़ूर स०अ०व० बशर हैं लेकिन अल्लाह के बाद तमाम कायनात से अफ़ज़ल हैं..	84
आप स0अ0व0 मख़्लूक़ में से सब से ज़्यादा महबूब हैं.................	85
हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि मैं इन्सान हूं............	86
इन हदीसों में हुज़ूर स0अ0व0 ने ऐलान किया है कि मैं इन्सान हूं	88
इन्सान फ़रिशतों से भी आ़ला है..	89
शरह अ़क़ाइद की इबारत से तीन बातें मालूम हुईं.........................	89
अहले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीदा यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 अल्लाह के बाद सब से अफ़ज़ल हैं..	90
वो आयतें जिन में इन्सान को फ़रिशतों से अफ़ज़ल शुमार किया गया है..	91
हिन्दुओं का अ़क़ीदा है कि भगवान इन की देवी और देवता के रूप में आते रहते हैं..	93
वो आयतें और अहादीस जिन से हुज़ूर स0अ0व0 के नूरी होने का शुब्हा होता है..	94
कुरआन में नूर 5 मआ़नी में इस्तेमाल हुआ है.................................	96
हक़ारत के तौर पर रसूल को बशर कहना बिल्कुल ठीक नहीं है.....	99
हुज़ूर स0अ0व0 ने ख़ुद फ़रमाया कि मुझे बढ़ा चढ़ा कर बयान ना करो..	102
(7) हुज़ूर स०अ०व० क़ब्र में ज़िन्दा हैं और यह ज़िन्दगी दुनिया से भी आ़ला है..	103
आप का जिस्म अतहर क़ब्र में बिल्कुल महफ़ूज़ है.........................	103
शोहदा ज़िन्दा हैं तो नबी का दरजा इन से बुलन्द है इस लिए वो भी ज़िन्दा हैं..	107
चार चीज़ों के ऐतबार से हुज़ूर स0अ0व0 दुनिया में भी ज़िन्दा हैं	109
आ़म लोग भी क़ब्र में ज़िन्दा किये जाते हैं......................................	109
क़ब्र में रूह और जिस्म दोनों को अ़ज़ाब या सवाब होता है.........	110
यह हयात बरज़ख़ी है, लेकिन दुनिया से बहुत आ़ला है...............	113
दुनियवी ऐतबार से हुज़ूर स0अ0व0 का इन्तक़ाल हो चुका है......	115

उनवान	सफ़्हा
कुछ हज़रात ने यह नज़रिया पेश किया है कि मौमिन की रूह दुनिया में भी फिरती है..	117
दौज़ख़ी दुनिया में आने की गुज़ारिश भी करेंगे तो इस को यहां नहीं आने दिया जायेगा..	119
दुनिया में घूमते रहते हैं..	119
(8) हाज़िर व नाज़िरः हुज़ूर स0अ0व0 हर जगह हाज़िर हैं	119
हाज़िरीन की तीन क़िस्में हैं..	120
हर जगह हाज़िर रहना और हर चीज़ को हर वक़्त देखे रहना सिर्फ़ अल्लाह की सिफ़त है	120
अल्लाह इल्म के ऐतबार से हर जगह हाज़िर हैं............................	120
अल्लाह हर चीज़ को हर बन्दे की हालत को देखने वाले हैं यानी अल्लाह नाज़िर है..	121
इन आयतों में है कि हुज़ूर स0अ0व0 इन जगहों पर हाज़िर नहीं थे.......	122
अहादीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 वहां हाज़िर नहीं थे................	124
क़यामत में गवाही देने के लिए उम्मत का या नबी का हाज़िर व नाज़िर होना ज़रूरी नहीं..	128
इस हदीस में भी गवाही देने की पूरी तफ़सील है..........................	130
कुछ हज़रात ने इन आयतों से हाज़िर व नाज़िर साबित की हैं...	132
हर उम्मत में से गवाह लाए जाऐंगे तो इस पूरी उम्मत को हाज़िर व नाज़िर मानना पड़ेगा..	134
شهد के तीन मअ़नी हैं..	135
(1) شهد का मअ़नी गवाही देना इस आयत में है........................	135
(2) شهد का तर्जुमा मौजूद होना, इस आयत में है.......................	136
(3) गवाही का तज़किया करना:..	136
इन अहादीस से हाज़िर व नाज़िर होने का शुब्हा होता है............	137
(9) मुख़्तार कुल सिर्फ़ अल्लाह है	140
इख़्तयारात की 4 क़िस्में हैं..	140
(1) अज़ल से अब्द तक हर हर चीज़ करने का इख़्तयार यह इख़्तयार सिर्फ़ अल्लाह को है..	140

उनवान	सफ़हा
(12) वसीला	203
वसीला की 5 सूरतें हैं	203
(1) दुआ़ अल्लाह ही से करे लेकिन किसी के तुफ़ैल का वास्ता दे	204
सहाबी के वसीले से दुआ़ मांगी	204
नेक आ़माल करके इस का वसीला पकड़े	209
ज़िन्दा आदमी से दुआ़ के लिए कहे यह जायज़ है	211
किसी ज़िन्दा आदमी से दुआ़ के लिए कहना जायज़ है	212
किसी ज़िन्दा आदमी से वसीला पकड़ना इस के लिए अ़मल सहाबी यह है	213
मुजाविरों की ज़्यादती	214
(12) यह पांच अ़क़ीदे इतने अहम हैं	215
यह पांच अ़क़ीदे यह हैं	215
(1) हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि मैं इन्सान हूं	215
हुज़ूर स0अ0व0 से बाज़ाब्ता ये ऐलान करवाया गया कि मुझे	216
इल्मे ग़ैब नहीं है	217
(3) हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि मैं नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं हूं इस लिए मुझ से मत मांगो, सिर्फ़ अल्लाह से मांगो	217
(4) हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करें।	218
(5) हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया कि निजात के लिए हुज़ूर स0अ0व0 की इताअ़त करें।	218
(14) शिफ़ाअ़त का बयान	218
क़यामत में सिफ़ारिश करने की आठ सूरतें हैं	219
शिफ़ाअ़त कुबरा	220
दूसरी सिफ़ारिशें	221
(2) दूसरी सिफ़ारिश	221
(3) तीसरी सिफ़ारिश	222

उनवान	सफ़हा
(4) चौथी सिफ़ारिश	223
(5) पांचवीं सिफ़ारिश	223
(6) छटी सिफ़ारिशस	224
(15) तमाम नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है	225
सब नबियों को मानना ज़रूरी है वरना ईमान मुकम्मल नहीं होगा	226
कुरआन में कुछ नबियों का ज़िक्र है कुछ का नहीं	227
सब नबियों के दीन में था कि अल्लाह एक है	229
अब हुज़ूर स0अ0व0 पर ईमान लाना ज़रूरी है	230
किसी नबी को किसी दूसरे नबी पर ज़्यादा फ़ज़ीलत देना ठीक नहीं है	231
चार बड़ी बड़ी किताबों का ज़िक्र कुरआन में यह है	232
हुज़ूर स0अ0व0 पर कुरआन उतारा इस का ज़िक्र इस आयत में है	232
तौरात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारी है	232
इंजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उतारी है	233
ज़बूर हज़रत दाउद अलैहिस्सलाम पर उतारी है	233
और बहुत सारी किताबें उतारी	233
(16) रसूल स0अ0व0 की गुस्ताख़ी	234
हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी बहुत बड़ा वबाल है	235
(1) हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली देता हो और समझाने से भी बा ना आता हो	236
मैंने खुली गाली का लफ़्ज़ क्यों इस्तेमाल किया	236
खुली गाली देने वाले को क़त्ल किया जायेगा	239
हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गोली देने से काफ़िर हो जायेगा	241
जिन के यहां गुस्तख़ रसूल की तौबा है इन के यहां तीन दिनों तक तौबा की मौहलत दी जायेगी	244
(2) ऐसा जुम्ला इस्तेमाल करता हो जिस से हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन का शुब्हा होता हो	245
(4) ग़ैर मुस्लिम मुल्क में रसूल की गुस्ताख़ी	247
गुस्ताख़े रसूल इस दौर में एक बड़ा मसला	248

उ़नवान	सफ़्हा
(17) तमाम सहाबा किराम का अहतराम बहुत ज़रूरी है...........	249
हर सहाबी की इ़ज़्ज़त करना और दिल से मौहब्बत करना ज़रूरी है..	250
सहाबा किराम से बेपनाह मौहब्बत करें और इमाम तहावी रह0 का हुक्म..	251
सहाबा की फ़ज़ीलत के बारे में यह 8 आयतें हैं............................	252
सहाबा में कोई इख़्तलाफ़ है भी तो इस की ऐसी तावील करें जिस से ज़्यादा से ज़्यादा इत्तफ़ाक़ की सूरत निकल आये।.......	258
सहाबा में इख़्तलाफ़ देखें तो हुजूर स0अ0व0 ने हमें यह दो नसीहतें की हैं	259
सहाबा के दरमियान जो इख़्तलाफ़ हुआ हमें इस में नहीं पड़ना चाहिए।..	261
यह दस सहाबी हैं जिन को दुनिया ही में जन्नत की बशारत दे दी गई है..	262
(18) अहले बैत से मौहब्बत करना ईमान का जुज़ है.................	263
अहले बैत में कौन कौन हज़रात दाख़िल हैं....................................	264
बाद में हुजूर स0अ0व0 ने हज़रत अ़ली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ि0 को अहल बैत में दाख़िल किया..................................	268
अहल बैत से मौहब्बत करना ईमान का जुज़ है.............................	270
सय्यदा हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की फ़ज़ीलत....................................	273
सय्यदा हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 को विरासत क्यों नहीं दी गई.......	274
हज़रत अबूबकर रजि0 ने अ़हद किया कि अहले बैत को जी भर कर देंगे..	277
हज़रत अ़ली रज़ि0 हज़रत अबूबकर के गले मिले.........................	278
अमीर उल मौमिनीन हज़रत अ़ली रज़ि0 की फ़ज़ीलत..................	280
हज़रत अ़ली रज़ि0 को हद से ज़्यादा बढ़ाना भी हलाकत है और इन से नफ़रत करना भी हलाकत है...	281
हज़रत अ़ली रज़ि0 तमाम मौमिनीन के वली हैं, यानी दौस्त हैं....	282
अमीर उल मौमिनीन हज़रत हसन रज़ि0 और हज़रत हुसैन रज़ि0 की फ़ज़ीलतें..	284

उनवान	सफ़हा
उम्मुल मौमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की फ़ज़ीलत	286
उम्मुल मौमिनीन हज़रत आयशा रज़ि0 की फ़ज़ीलत	287
अमीर उल मौमिनीन हज़रत अबूबकर रज़ि0 के फ़ज़ाइल	289
हज़रत अबूबकर रज़ि0 इन सहाबा में से अफ़ज़ल थे....................	293
हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई	294
हज़रत अबूबकर रज़ि0 और हज़रत उ़मर रज़ि0 हुज़ूर स0अ0व0 की ख़सर हैं..	295
अमीर उल मौमिनीन हज़रत उ़मर रज़ि0 के फ़ज़ाइल....................	295
हज़रत उ़म्र रज़ि0 हज़रत अ़ली रज़ि0 के दामान हैं......................	296
अमीर उल मौमिनीन हज़रत उ़समान रज़ि0 के फ़ज़ाइल..............	297
हज़रत उ़समान रज़ि0 हुज़ूर स0अ0व0 के इतने प्यारे थे कि हुज़ूर स0अ0व0 ने दूसरी बेटी भी उन के निकाह में दिया.....................	298
हुज़ूर स0अ0व0 के तमाम रिश्ते दारों से मौहब्बत करने की ताकीद की है..	300
ख़ास तौर पर यह हज़रात बहुत क़रीब के रिश्तेदार हैं उन से दिल से मौहब्बत करें...	301
मेरे असातिज़ा ने कितना अहतराम सिखाया..................................	302
(19) ख़िलाफ़त का मसला..	302
ख़िलाफ़त के बारे में इस्लाम का नज़रिया..	303
ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया कि मुझे ख़िलाफ़त की वसियत नहीं की है	303
लोग बूढ़ों की बात मान लेते हैं..	304
इख़्तलाफ़ के वक़्त ख़ुलफ़ा राशिदीन की इत्तबा करें....................	309
सब ने मिल कर हज़रत अबूबकर रज़ि0 को ख़लीफ़ा मुन्तख़्ब किया...	310
हज़रत अ़ली रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 से बैअ़त की थी...	310
ख़लीफ़ा मुतअ़य्यन होने के बाद बिला वजह इन से इख़्तलाफ़ करना जायज़ नहीं है	312
पांच ख़लीफ़ों की ख़िलाफ़त की मुद्दत...	313

उ़नवान	सफ़्हा
(20) वली किस को कहते हैं	315
वली की अ़लामत यह है कि इस को देख कर ख़ुदा याद आये..	317
जो शरीअ़त का पाबन्द नहीं वो वली नहीं है	318
कोई वली कितना ही बुलन्द हो जाये वो नबी और सहाबा से अफ़ज़ल नहीं हो सकता	318
वली से ख़ारिक़ आ़दत बात साबित हो जाये तो इस को करामत कहते हैं	319
जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता वो वली नहीं बन सकता	320
(21) फ़रिश्तों का बयान	321
फ़रिशता की पैदाइश नूर से है	322
चार फ़रिशते बड़े हैं उन का तज़्किरा इन आयतों में है	322
हज़रत इज़राइल अलैहिस्सलाम (मलक उल मौत) का तज़्किरा..	323
हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम का तज़्किरा	324
किरामन कातिबीन का तज़्किरा	325
मुनकर नकीर का तज़्किरा	326
फ़रिशते अल्लाह के फ़रमान के ताबअ़ होते हैं	326
(22) जिन का बयान	327
जिन की पैदाइश आग से है	327
इन्सान की पैदाइश मिट्टी से है	328
बाज़ जिन नेक होते हैं और बाज़ बदकार होते हैं	328
जिन्नात इन्सान को परेशान करता है लेकिन इतना नहीं है जितना आज कल के ज़माने में इस में ग़ुलू है	329
जिन्नात के ठेके दारों से चौकन्ना रहें	329
शैतान की पैदाइश भी आग से है	330
इन्सान शैतान और इस के क़बीले को नहीं देख सकता	331
(23) हशर क़ायम किया जायेगा	331
मर्दों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा	332
महशर में हर शख़्स का हिसाब होगा	333
क़यामत के दिन हाथ में नामा–ए–आ़माल दिया जायेगा	335
पुल सिरात क़ायम किया जायेगा	336

उ़नवान	सफ़हा
(24) मीज़ान हक़ है	337
(25) अल्लाह ने जन्नत को पैदा कर दिया है	338
अल्लाह ने जहन्नुम को पैदा कर दिया	339
जन्नत और जहन्नुम को अल्लाह हमैशा बाक़ी रखेंगे	340
जन्नत ऐैश की जगह है	341
जहन्नुम अ़ज़ाब की जगह है	341
जो जैन्नत में दाख़िल हो गया वो हमैशा वहीं रहेगा	342
जो लोग जन्नत या जहन्नुम में दाख़िल होंगे अल्लाह के इ़ल्म में पहले से मुतअ़य्यन है	343
(26) क़ुरआन अल्लाह का कलाम है	344
अल्लाह के सात जो कलाम है वो हमैशा है, और हम जो क़ुरआन पढ़ते हैं वो हादिस और फ़ानी है (इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की राये)	345
क़ुरआन अल्लाह का कलाम है	345
यह क़ुरआन लोहे महफ़ूज़ में भी है	346
क़ुरआन को लोहे महफ़ूज़ से थोड़ा थोड़ा करके उतारा	347
जो क़ुरआन में ना तहरीफ़ हुई है और ना होगी	348
हां सात क़िराअत पर क़ुरआन पढ़ने की इजाज़त थी	349
आख़िरत में अल्लाह तआ़ला जन्नतियों से कलाम करेंगे	350
(27) अल्लाह कहां है?	351
अल्लाह के बारे में चार बातें याद रखना ज़रूरी है	352
(1) पहली जमाअ़त	353
(2) दूसरी जमाअ़त	355
अ़र्श एक बहुत बड़ी मख़्लूक़ है	357
कुर्सी	357
(3) तीसरी जमाअ़त	358
(4) चौथी जमाअ़त	360
(5) पांचवीं जमाअ़त	361
(6) छटी जमाअ़त	362
इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की राये	364

उ़नवान	सफ़्हा
इमाम ग़ज़ाली रह0 की राये..	365
इमाम तहावी रह0 का मसलक..	365
यह अल्फ़ाज़ भी मुतशाबहात में से हैं..	366
(28) क़लम क्या चीज़ है..	370
लोह क्या चीज़ है..	371
(29) ईमान की तफ़सील..	372
छः चीज़ों पर ईमान हो तो आदमी को मौमिन क़रार दिया जायेगा...	372
अ़क़ीदतुल तहाविया में है कि इन छः चीज़ों पर ईमान होना ज़रूरी है..	373
अल्लाह पर इमान का मतलब..	375
किताब, कुरआन, को मानने का मतलब..	375
मुग़लक़ आयत की तफ़सील मानने का उसूल..	376
किताबों और रसूलों पर ईमान लाने का मतलब....................................	377
पिछले रसूलों की शरीअ़त में था कि इन छः चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है..	378
इन छः चीज़ों में से किसी एक का इनकार करेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा..	379
दिल से तसदीक़ और ज़बान से इक़रार करने को नाम ईमान है......	380
क़त्ल के ख़ौफ़ से ईमान का इन्कार..	380
हम दिल की तफ़तीश करने के मुकल्लिफ़ नहीं हैं................................	382
ईमान का एक हिस्सा अ़मल करना भी है..	383
हम जो कलिमा पढ़ते हैं, वो दो आयतों का मज्मूआ़ है..........................	384
(30) तक़दीर..	385
(1) तक़दीर मुबर्रम..	387
(2) और तक़दीर मुअ़ल्लक़..	387
जो जैसा होता है वैसा ही काम करने की तौफ़ीक़ हो जाती है..	388
तक़दीर के बारे में ज़्यादा बहस नहीं करनी चाहिए................................	389
(31) इस्तताअ़त, ख़ुल्क़ और कसब, क्या हैं................................	390
इस्तताअ़त क्या है..	390

उनवान	सफ़्हा
इन आयतों में इस्तताअ़त का ज़िक्र है..........	391
कसब..........	392
ख़ुल्क़..........	393
अ़हदे अलसतु..........	394
(32) शिर्क तमाम आसमानी किताबों में ममनूअ़ है..........	395
अहले अरब एक ख़ुदा मानते थे लेकिन वो शिर्क़ भी करते थे.....	396
शिर्क को अल्लाह तआ़ला कभी मुआ़फ़ नहीं करेंगे..........	398
अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक करना हराम है..........	399
अल्लाह की इबादत में शरीक करना हराम है..........	400
अल्लाह के अ़लावा किसी के लिए सज्दा और रूकूअ़ जायज़ नहीं है..........	401
शख़्सी तौर पर हम किसी को हतमी तौर पर जन्नती, या जहन्नुमी नहीं कह सकते..........	404
गुनाहे सग़ीरा, व गुनाहे कबीरा की तारीफ़..........	406
गुनाहे कबीरा करने वाला जन्नत में जायेगा..........	407
गुनाहे कबीरा को हलाल समझेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा.......	409
गुनाहे कबीरा की तअ़दाद..........	410
(33) मुसलमान मुरतद कब बनता है..........	411
मुरतद को क़ाज़ी शरई क़त्ल की सज़ा देगा..........	412
लेकिन मुरतद को क़त्ल करने के लिए तीन शर्तें हैं..........	413
आधे जुमले से मुश्रिक ना बनाऐं..........	417
तअ़ज़ीर क्या है..........	418
मुरतद को सज़ा देने की हुरमत क्या है..........	418
(34) अहले क़िब्ला कौन लौग हैं..........	419
जो लोग इन छः चीज़ों को दिल से मानता हो इस को अहले क़िब्ला कहते हैं..........	421
फ़ाजिर की इमामत जायज़ है है अल्बत्ता मकरूह है..........	421
इस्लाम में तशद्दुद भी नहीं ह और बहुत ढ़ील भी नहीं है..........	423
(35) पीरी मुरीदी..........	425

उ़नवान	सफ़्हा
पीरी मुरीदी का फ़ायदा	425
पीर अपने मुरीद को यह चार फ़ायदे दे सकते हैं	426
पीर ख़ुदा तरस हो तो इस का ज़्यादा असर पड़ता है	428
दुनिया तलब करने के लिए पीर बनाना, या मुरीद बनाना अच्छी बात नहीं	429
बैअ़त की चार क़िस्में होती हैं	430
हुज़ूर स0अ0व0 औ़रतों को बैअ़त करते थे लेकिन इन के हाथ को नहीं छूते थे	433
पीर साहब आप को कोई मअ़नवी फ़ैज़ दे देंगे ऐसा नहीं है	434
(36) तावीज़ पहनना कैसा है	435
तावीज़ करने की दो सूरतें हैं	436
बाज़ तावीज़ करने वालों का मकर	436
जिस घर में तावीज़ का रिवाज हो जाता है इस की जान नहीं छुटती	438
तावीज़ से ज़हनी तौर पर थोड़ी तसल्ली हो जाती है	438
(1) कुरआन और हदीस की जायज़ तावीज़	440
फिर तावीज़ करने के दो तरीक़े हैं	441
हुज़ूर स0अ0व0 ने तावीज़ के कलिमात पढ़ कर मरीज़ पर दम फ़रमाया है	442
पागल पन उतारने के लिए यह दुआ़ हदीस में है	443
(2) दूसरा है कि आयत या हदीस को लिख कर गले में लटकाना..	445
तावीज़ ना लटकाऐ और सब्र करे तो यह तक़्वा का आ़ला दर्जा है	446
कभी कभार तावीज़ लटकाली जिस से तसल्ली हो जाये तो इस की थोड़ी सी गुंजाइश है	447
तावीज़ करने के लिए मुआ़वज़ा लेने की थोड़ी सी गुंजाइश है	449
लेकिन तावीज़ का धंदा बना लेना ठीक नहीं है	450
इस हदीस में है कि दवाई इस्तेमाल करना जायज़ है	451
(4) नज़र बद लगना।	452
(5) जादू करना हराम है	453
सहर की एक हक़ीक़त है	454

उ़नवान	सफ़्हा
(6) अ़राफ़ जो ग़ैब का दअ़वा करता हो..	455
अ़राफ़ की बातों की तसदीक़ करना जायज़ नहीं............................	455
अ़राफ़ के पास जाने से चालीस दिन की इबादत क़ुबूल नहीं होती	456
(7) जिन्नात का निकालना..	457
(37) क़ब्रों की ज़ियारत..	458
हिन्दुओं के रिवाजों पर ग़ौर करें..	458
हुज़ूर स0अ0व0 ने क़ब्रों की हद से ज़्यादा ताज़ीम करने से मना फ़रमाया...	459
क़ब्र किस को कहते हैं..	460
क़ब्र पर इस लिए जाने की इजाज़त है कि वहां आख़िरत याद आने लगे..	460
सात शर्तों के साथ क़ब्र पर जाने की इजाज़त है...........................	462
(1) अल्लाह के अ़लावा किसी की इबादत ना करे.........................	462
(2) क़ब्र वालों से ना मांगे..	463
(3) क़ब्र पर सज्दा ना करे..	464
(4) परदे के साथ जाये बे परदगी के साथ हरगिज़ ना जाये.......	467
मर्दों को भी हुक्म दिया कि अपनी निगाहों को नीची रखा करें...	468
(5) क़ब्र पर वावेला ना करे..	468
(6) क़ब्र वाले के लिए असतग़फ़ार करे..	471
क़ब्र वाले को सलाम करना हो तो क़ब्र की तरफ़ मुतवज्जह हो सकता है..	472
क़ब्र के पास बैठना हो तो मुंह क़िब्ला की तरफ़ हो.......................	473
आ़म हालात में औ़रतों को क़ब्र पर जाना मना है...........................	473
औ़रतों के लिए कभी कभार क़ब की ज़ियारत की गुंजाइश दी है....	474
क़ब्र पर इमारत बनाना मकरूह है..	475
क़ब्र पर इमारत बनाने वालों की एक दलील....................................	476
हुज़ूर स0अ0व0 की कब्र मुबारक पर कुब्बा क्यों है.........................	476
क़ब्र को बहुत ऊंची बनाना भी मकरूह है..	478
क़ब्र के इर्द गिर्द मस्जिद बनाना भी मकरूह है...............................	479
क़ब्र पर चिराग़ जलाना भी मकरूह है...	480

उ़नवान	सफ़्हा
क़ब्र पर फूल चढ़ाना ठीक नहीं है..	481
ग़राइब का फ़तवा...	482
क़ब्र पर लिखना भी अच्छा नहीं है...	483
क़ब्र पर पत्थर की अ़लामत रखना जायज़ है....................................	483
क़ब्र की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं....................	483
क़ब्र पर बैठना मकरूह है...	484
क़ब्र को रोंदना मकरूह है..	484
क़ब्रों के दरमियान गुज़रने की ज़रूरत पड़ जाये तो जूता निकाल कर चले..	485
जिन के यहां मौत हुई है उन के यहां खाना बना कर भैजना सुन्नत है..	486
जिन के यहां मौत हुई है उन के यहां खाना खाना मकरूह है....	486
मय्यत के लिए बहुत ज़्यादा ऐलान करना भी ठीक नहीं है..........	487
तीन दिन से ज़्यादा सोग ना मनाये..	488
क़ब्र में गुनाहगरों को अ़ज़ाब होता है..	489
(38) क़ब्र पर उ़र्स जायज़ नहीं...	491
इस हदीस से उ़र्स पर इसतदलाल करना सही नहीं है................	492
गाना और ढ़ोलक, तबला बजाना हराम है..	494
गुनगुना कर गीत गाना भी मकरूह है..	496
इन हादीस से कुछ हज़रात क़व्वाली के जवाज़ पर इस्तदलाल करते हैं...	497
हिन्दू अपन बुज़ुर्गों की मन्दिरों के पास मैला लगाते हैं.................	500
(39) फ़ैज़ हासिल करना..	500
ज़िन्दों से कौनसा फ़ैज़ हासिल होता है...	501
क़ुरआन पाक में चार क़िस्म के फ़ैज़ का ज़िक्र है..........................	502
يُزَكِّيْكُمْ की तफ़सीर..	504
पीर साहब ख़ुदा तरस हो तो उस का असर ज़्यादा होता है........	504
क़ब्रों और मुर्दों से कौन सा फ़ैज़ हासिल होता है...........................	505
पीर साहब आप को कोई मअनवी फ़ैज़ दे देंगे ऐसा नहीं.............	507
मुस्तहब्ब काम में तशद्दुद..	508

उ़नवान	सफ़्हा
(40) क़ब्र के पास ज़िबाह करना ममनूअ़ है.................................	510
ज़िबाह करने की चार सूरतें हैं..	510
(1) पहली सूरत यह है कि अल्लाह के अ़लावा के नाम पर ज़िबाह करे..	510
(2) दूसरी सूरत, क़ब्र पर या बुतों पर ज़िबाह करे...........................	511
(3) तीसरी सूरत यह है कि क़ब्र के पास ज़िबाह करे....................	513
क़ब्र पर ज़िबाह करने का शायबा भी हो तो वो भी मना है...........	513
(4) चौथी सूरत अल्लाह के नाम पर करे और क़ब्र से दूर करे...	514
(41) मातम करना हराम है..	516
मुसीबत के वक़्त कुरआन ने सब्र करने को कहा............................	516
रिश्तेदार के रोने से मय्यत को अ़ज़ाब होता है................................	518
वावेला करना ममनूअ़ है...	518
ख़ुद बख़ुद आंसू निकल जाये तो यह माफ़ है................................	519
(42) ईसाले सवाब एक मुस्तहब्ब काम है....................................	520
इस वक़्त की अफ़रा तफ़री..	522
ईसाले सवाब की तीन सूरतें हैं..	523
(1) माले ख़ैरात करके सवाब पहुंचाने से मय्यत को सवाब मिलता है	523
(2) बदनी अ़मल करके मय्यत को सवाब पहुंचा सकते हैं.............	526
(3) कुरआन पढ़ कर और दुआ़ करके मय्यत को सवाब पहुंचा सकते हैं..	527
कुछ हज़रात की राये है कि सवाब नीं ंपहुंचा सकते......................	530
इन तीन वजह से जमहूर ईसाले सवाब के क़ाइल हुए.................	532
क़ब्र पर ख़ुराफ़ात से सवाब नहीं मिलता है.....................................	533
बाज़ मुजाविरों की दुकानें...	534
(43) मय्यत का सुनना...	535
(1) जो हज़रात कहते हैं कि मुर्दे नहीं सुनते हैं	535
(2) जो लोग कहते हैं कि क़ब्र वाले सुनते हैं.................................	538
(3) जो लोग कहते हैं कि ख़ुद तो नहीं सुनते लेकिन अल्लाह जितना चाहे तो सुना देते हैं..	540
एक उस्ताज़ की राये..	541

उ़नवान	सफ़्हा
(44) यह दस चीज़ें अ़लामत क़यामत में से हैं	542
हम इन अ़लामात क़यामत पर ईमान रखते हैं	542
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा ज़मीन पर उतरेंगे	543
हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम	546
दज्जाल का बयान	548
याजूज माजूज निकलेंगे	550
सूरज मग़रिब से निकलेगा	551
जानवर निकलेगा	551
कुछ और चीज़ें भी अ़लामत क़यामत में से हैं	551

☆......☆......☆ ☆

कम्पोजिंग व सेटिंग

मौलवी मु० जहँागीर

(द लाईट कम्पयूटर सेन्टर देवबन्द)

+91–7017483817–01336.224716

समरतुल अ़क़ाइद की ख़ुसूसियात

(1) किताब बहुत आसान अन्दाज़ में लिखी गई है।

(2) आज कल ज़रूरत की जो अ़क़ाइद हैं, उन्हीं को ज़िक्र किया गया है।

(3) हर अ़क़ीदे के लिए सरीह आयतें और सही अहादीस लाई गई हैं।

(4) कौशिश यह की गई है कि तमाम मसालिक के लोग इस पर मुत्तफ़िक़ हो जाऐं।

(5) जुमा में तक़रीर करने वाले ख़तीबों के लिए यह आसानी है कि यहां से आयत और अहादीस लें और तक़रीर फ़रमाऐं।

(6) जो हज़रात अ़क़ाइद की इशाअ़त में कोशां हैं उन के लिए भी इस किताब में आयात और अहादीस का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है।

(7) तलबा और असातिज़ा के लिए भी मालूमात का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है।

(8) किताब बहुत संजीदा अन्दाज़ में लिखी गई है और हर मसलक वालों के लिए मुफ़ीद है।

(9) हर अ़क़ीदे को साबित करने के लिए कितनी आयतें हैं और कितनी हदीसें हैं उन को गिन कर बताई गई है और हर आयत और हर हदीस का पूरा हवाला दिया गया है।

(10) इस किताब में तक़रीबन 350 अ़क़ीदे हैं, इन अ़क़ीदों को साबित करने के लिए 563 आयतें और 373 हदीसें हैं और कुल उ़नवानात 465 हैं और कुल बड़े अ़क़ीदे 44 हैं।

बिस्मिल्लाि हिर्रहमा निर्रहीम

दुआ़इया

हज़रत मौलाना समीर उद्दीन साहब क़ास्मी मुक़ीम मांचेस्टर इग्लैण्ड की मुतअ़द्दिद तसानीफ़ पहले भी देखने और पढ़ने का मौक़ा मिला, ख़ास तौर पर समरतुल मीरास और समीरी कलैण्ड़र से बहुत सी मालूमात हासिल हुईं।

सरमतुल अ़क़ाइद मौलाना दामत बरकातुहुम की ताज़ा तसनीफ़ है, जिस में इस्लाम की बुनियादी अ़क़ाइद को 44 मरकज़ी उ़नवानात के तहत मुसबत और सादा अन्दाज़ में इस तरह दर्ज फ़रमाया है कि ज़रूरी तफ़सीलात और आयात कुरआनिया और अहादीस नब्विया से अ़क़ीदा का इसबात भी हो जये इस किताब में अहले सुन्नत वल जमाअ़त के अ़क़ाइद हक़्क़हु के बयान के साथ राहे ऐतदाल से मुनहरिफ़ जमाअ़तों के अ़क़ाइद पर गिरफ़त भी की गई है और अपने दलाइल के ज़रिये साबित भी किया गया है।

उम्मीद है कि अ़क़ीदा जैसे नाज़ुक मसले में हज़रत की यह किताब बेहतरीन रहनुमा साबित होगी, अल्लाह तआ़ला इस किताब को शर्फ़े कुबूलियत अ़ता फ़रमाये और उम्मत को इसतफ़ादा की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(हज़रत मौलाना मुफ़ती)
अबुल क़ासिम नोअ़मानी ग़ुफ़िरलहू
मौहतमिम दारूल उ़लूम देवबन्द
8 मौहर्रम उल हराम 1441 हि0
8 सितम्बर 2019 ई0

तक़रीज़

हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन अम्मा बाद!

गरामी क़दर हज़रत मौलाना समीर उद्दीन साहब क़ासमी इन मौफ़िक़ बिल ख़ैर लोगों में से हैं जिन को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ख़ैर आ सअ़ादत की तौफ़ीक़ अरज़ानी नसीब फ़रमा रखी है, हज़रत मौलाना समीर उद्दीन साहब क़ास्मी, इल्मी ताअम्मुक़, मसलकी तसल्लुब, और मज़ा इस्तक़ामत के मालिक हैं, वसीउन नज़री उन की फ़ितरत है।

जब कभी मसलक अहले हक़ के ख़िलाफ़ कोई नज़रिया सामने आता है, तो मौलाना का दिल मुज़तरिब हो जाता है और उन का क़लम हरकत में आ जाता है, मौजूदा दौर में मसलक अहले हक़ के मुक़ाबले में नित नये फिरक़े और नज़रियात वजूद में आ गये हैं, मसलन ग़ैर मुक़ल्लदियत, मुमाती फ़िरक़ा, क़ादयानी, बिदअती वग़ैरह और उन के अ़क़ाइद व नज़रियात।

इस लिए मौलाना का क़लम इस की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और ''समरतुल अ़क़ाइद'' के नाम से एक ज़ख़ीम किताब मनसब–ए–शहूद में आ गई इस किताब में नसूस क़तइया और अहादीसे नब्विया से अहल के तीन सौ पचास अ़क़ाइद साबित किये गये हैं और मुसबत अन्दाज़ में तहरीर किये गये हैं, जिस से अन्दाज़ा होता है कि दीगर किताबों की तरह यह भी क़बूलियत अ़ाम्मा हासिल करेगी इन्शाअल्लाह।

इसी तरह दूसरी किताब ''साइंस और कुरआन'' हज़रत मोलाना समीर उद्दीन साहब क़ास्मी की वो तसनीफ़ है जिस में मौलाना ने यह वाज़ेह किया है कि कुरआन मख़दूम है और साइंस ख़ादिम है, जिस की तरफ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बहुत क़ब्ल

इशारा कर दिया था, साइंस दानों ने अब इस की खोज निकाली है, मैं मौलाना समीर उद्दीन साहब क़स्मी को मुबारक बाद पैश करता हूं और दुआ़ करता हूं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस को मक़बूल आ़म व ख़ास बनाये। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

(हज़रत मौलाना)
अ़ब्दुल ख़ालिक़ मदरासी
उस्ताज़ हदीस व नायब मौहतमिम दारूल उ़लूम देवबन्द
5 मौहर्रम उल हराम 1441 हि0

तक़रीज़

हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन अम्मा बाद!

गरामी मरतबत हज़रत मौलाना समीर उद्दीन साहब क़ास्मी ज़ैद मजदहू इंग्लैण्ड में बैठ कर मसलक अहले हक़ और मसलक देवबन्द की तर्जुमानी पर कमर बस्ता हैं जब भी अकाबिर देवबन्द के नज़रियात पर गर्द पड़ती हुई नज़र आती है वो मुज़तरिब हो जाते हैं इन का क़लम जुंबिश में आ जाता है, अभी हाल ही में मुख़्तलिफ़ मुक़ाबलाती नज़रियात, व फ़ासिद अ़क़ाइद के रद में मिल्लत और अ़ाम फ़हम असलूम में निहायत मबसूत ''समरतुल अ़क़ाइद'' नामी किताब तसनीफ़ फ़रमाई है, जिस में अहले हक़ व अकाबिर देवबन्द के 350 अ़क़ाइद मबसूत व मुदल्लल पैश किये गये हैं, इसी तरह दूसरी किताब ''साइंस और कुरआन'' इल्मी हलक़ों में तहसीन की निगाह से देखी जा रही है, इस किताब में यह साबित कराया गया है कि दुनिया के ज़ख़ाइर और ईजादात सब ख़ालिक क़ायनात की तख़लीक़ हैं और ख़ालिक़ कायनात ने अपनी किताब मुक़द्दस कुरआन में बहुत पहले ही इशारा कर दिया है, जिस की तरफ़ साइंस दुनिया की निगाह पहुंची है, क़ब्ल अज़ीं मौहतरम मौसूम का ख़ासा इल्मी, तहक़ीक़ी ज़ख़ीरा मिल्लत के सामने आ चुका है, जिस को अहले इल्म ने क़दर की निगाह से देखा, उम्मते मुस्लिमा बराबर उस से मुस्तफ़ीद हो रही है। फ़जज़ा उल्लाहु ख़ैरा।

मैं अरबाब दारूल उ़लूम और क़ास्मी बिरादरी की तरफ़ से मुबारक बाद पैश करता हूं और दुआ़ करता हूं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दीगर किताबों के मानिन्द इन दोनों किताबों को भी महज़ अपने फ़ज़ल से क़बूलियत ताम्मा से सरफ़राज़ फ़रमाये, आमीन या रब्बुल आ़लमीन।

अ़ब्दुल ख़ालिक़ संभलवी

उस्ताज़ हदीस व नायब मौहतमिम दारूल उ़लूम देवबन्द

5 मौहर्रम उल हराम 1441 हि0

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तहनीत

हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन अम्मा बाद!

हज़रत अक़्दस गरामी मरतबत मौलाना समीर उद्दीन साहब क़ास्मी ज़ैद मआ़लीकुम इन मुन्तख़ब व चुनीदा फ़रज़न्दाने दारूल उ़लूम देवबन्द में से एक हैं जिस को मादिरे इल्मी दारूल उ़लूम देवबन्द से इल्मी तामुक़ मसलकी तसल्लुब, अकाबिर का विरअ़ व तक़्वा, सुन्नते नब्वी का इत्तबा इक़्तदार और अहया सुन्नत का वाफ़िर हिस्सा अ़ता हुआ है। हज़रत मौलाना का गोहर बार क़लम अगर साइंस की तरफ़ मुतवज्जह होता है तो बैश क़ीमत किताब ''साइंस और कुरआन'' मन्सा–ए–शहूद पर नज़र आने लगती है और जिद्दत पसन्द लोगो को फ़ैज़याब करती और इस्तअ़जाब में ड़ाल देती है।

और जब उम्मत का बिगाड़, अ़क़ाइद का फ़साद और भरी दुनिया का उजाड़ सामने आता है तो औ आप की मज़का बेताब हो जाती है और तड़पने लगती है ऐसी तड़प कि मुसीबतों की तैज़ व तन्द आंधी बुढ़ापे की जुमूदगी और उ़मर रफ़ता का ज़ोअ़फ़ व दरमान्दगी आप की अ़ज़्ज़ कोहे गिरां में हाइल नहीं हो पाती और दस्त हक़ परस्त में हरकत आती है और बाबरकत बन जाती है और मसलक अहले हक़ मसलक अकाबिर देवबन्द की तर्जुमानी करते हुए आप सही तर्जुमानी करते हुए नज़र आते हैं।

और जब फ़साद व बिगाड़ने उम्मत मुस्लिमा को अपने लपैट में ले लिया और उम्मत सिराते मुस्तक़ीम से दूर होने लगी तो मौलाना का फ़ड़कता हुआ दिल इस की तरफ़ माइल हुआ और अ़क़ाइद में नुसूस क़तइया की तलब और जुस्तुजू में हैं यहां तक कि उ़लमा अहले सुन्नत वल जमाअ़त अहले हक़ और अकाबिर उ़लमा देवबन्द

के तीन सौ पचास अ़क़ाइद के मुस्तदलाल क़तइया, सहीहा और सरीहा की तलब पर कामयाब हो जाते हैं और ख़ूब कामयाब होते हैं जिस के नतीजे में एक मबसूत ज़ख़ीम ''समरतुल अ़क़ाइद'' नामी किताब वजूद में आ जाती है मुसबत और सहल अन्दाज़ में आती है। "**فالحمد للّٰہ علی ذٰلک**"।

यह आ़जिज़ हज़रत अक़्दस मौलाना समीर उद्दीन साहब क़ास्मी को अपनी तरफ़ से तमाम अहले हक़ बिरादरी की तरफ़ से दिल के नहाख़ाना से तहनीत पैश करता है और दुआ़ करता है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इस किताब को क़बूलियत ताम्मा से नवाज़े और मिल्लत इस्लामिया में अ़क़ाइद की दुरूस्तगी का ज़रिया बनाये। आमीन या रब्बुल आ़मलीन।

मुनीर उद्दीन अहमद उ़स्मानी नक़्शबन्दी मुजद्दिदी
उस्ताज़ दारूल उ़लूम देवबन्द

मुक़द्दमा

तदवीने इल्म कलाम

इल्मे कलाम और उस की ज़रूरत

साहबे मिफ़ताह उल सआ़दत ने लिखा है कि इल्मे कलाम की इब्तदाई इशाअ़त पहली सदी हिजरी में मोअ़तज़ला और क़दरिया ने की और अहले सुन्नत वल जमाअ़त के इल्मे कलाम की बुनियाद तीसरी सदी हिजरी में पड़ी क्योंकि ऐतज़ाल की इब्तदा व असल बिन अ़ता ने की जो 80 हि0 में पैदा हुआ और 131 हि0 में वफ़ात पाई और अहले सुन्नत वल जमाअ़त के इल्मे कलाम की बुनियाद इमाम अबुल हसन अशअ़री ने ड़ाली जो तीसरी सदी में थे और ख़ुद एक मुद्दत तक मोअ़तज़ली रह चुके थे। इस बिना पर कलाम दो सदियों तक मुस्तक़िल तौर पर मोअ़तज़ला के हाथ में रहा।

इल्म कलाम और इस की ज़रूरतः फ़लस्फ़ा की आ़म वुक़अ़त और अरस्तू व अफ़लातून के पुर अ़ज़मत नामों से बहुत से लोग मरऊ़ब हो गये थे और उन के दिलों से मज़हब का असर ज़ायल हो गया था, इस लिए इस बात की ज़रूरत थी कि फ़लस्फ़ा के मसाइल और हुकमा के ख़्यालात पर तनक़ीद करके इन की वुकअ़त और उन के असर को कम किया जाये, मुतकल्लिमीन इस्लाम में इमाम ग़ज़ाली रह0 ने इसी ज़रूरत से ''तहाफ़त उल फ़लास्फ़ा'' लिखी।

इल्म दीनिया में इस इल्म का रूत्बा सब से बड़ा है, क्योंकि जुम्ला उमूर दीनिया का दारो मदार सेहत अ़क़ाइद पर है, अगरचे इन्सान उ़मर भर नेकियां ही करता रहे मगर जब कभी अ़क़ीदे में कुछ नुक़सान वाक़े हो जायेगा तो सारी नेकियां बरबाद हो जाऐंगी

और अगर अक़ीदा सही हो तो कम अज़ कम अबदी अज़ाब से निजात मिल जायेगी। कुरआनी तालीम में भी ईमान और अक़ाइद की फ़ज़ीलत व अहमियत पर बकसरत इशारे और तशरीहात मौजूद हैं और जहां आमाले सालिहा का ज़िक्र आया है वहां शुरू में ईमान को बिल इल्तज़ाम लाया गया है, जिस से वाज़ह तौर पर ईमान और हुस्ने अक़ीदा की अहलियत साबित होती है।

(मुईन उल अक़ाइद सः 14)

अल्लाह तआला इस किताब को शर्फ़े क़बूलियत अ़ता फ़रमाये अल्लाह करे कि यह अक़ाइद की दुरूस्तगी का बेहतरीन हथियार साबित हो और मौलाना को दारैन में बेहतर अजर अ़ता फ़रमा कर ज़ख़ीरा–ए–आख़िरत व ज़रिया निजात बनाये। आमीन।

कुत्बा मरग़ूब अहमद लाजपुरी
4 शअ़बान 1439 हि0
मुताबिक़ 21 अप्रैल 2018 ई0 बरोज़ सनीचर

बिस्मिल्लि हिर्रहमा निर्रहीम

किताब लिखने का मक़सद

نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم اما بعد

एक मर्तबा कुछ तालिब आये और कहने लगे कि मौलाना अ़क़ाइद में कोई ऐसी किताब लिख दें जो हम जैसे तालिब इल्मों को असानी से समझ में आ जाये, हम लोग सुनते हैं कि अ़क़ाइद के लिए नस क़तई चाहिए यानी आयत और सही हदीस से इस्तदलाल किया गया हो, इस लिए ऐसी किताब लिखें जिस में सिर्फ़ आयत से और सही हदीस से अ़क़ीदा साबित किया गया हो, फिर अ़ाम फ़हम आयात और अहादीस लाऐं जिन को तमाम मसलक वाले मान लें, किताब बहुत आसान अन्दाज़ में लिखें जिस से अ़ाम तालिब भी समझ सकें, किताब में वो अ़क़ाइद ज़्यादा हों जिन की ज़रूरत आज कल बहुत पड़ती है।

मैं बहुत दिनों तक इस बात पर ग़ौर करता रहा, फिर कुछ दिनों की मेहनत के बाद अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से यह मज्मूआ़ तैयार हो गया अल्लाह इस को कुबूल फ़रमाये इस के तैयार करने में मक्तबा शामिला से काफ़ी मदद ली गई है।

इस किताब में तालिब इल्म की दरख़्वास्त की पूरी रिआ़यत की गई है, मसलन इस में सिर्फ़ आयात और अहादीस से अ़क़ाइद साबित किये गये हैं, अल्बत्ता यह बात जरूरी है कि जिस अ़क़ीदे में इख़्तलाफ़ ज़्यादा था उस में आयात और अहादीस ज़्यादा लाई गई हैं, ताकि नाज़िरीन को फ़ैसला करने में आसानी हो और जिन अ़क़ाइद में ज़्यादा इख़्तलाफ़ नहीं था उन में हदीसें या आयतें कम लाई गई हैं ताकि किताब लम्बी ना हो जाये और पढ़ने वाले उक्ता ना जाऐं।

मैं उ़लमा के अक़्वाल, क़ौल सजहाबी, क़ौल ताबई, इज्माअ़

और क़ियास को दिल से मानता हूं और इन की क़द्र करता हूं, लेकिन तालिब इल्म की ख़्वाहिश यह थी कि ज़्यादा तर कुरआन और हदीस हो इस लिए आयत और हदीस से ही ज़्यादा तर इस्तदलाल किया, फिर दूसरी बात यह है कि उ़लमा फ़रमाते हैं कि अ़क़ाइद के सबूत के लिए नस क़तई चाहिए (यानी आयत और हदीस सही चाहिए) इस लिए भी इसी पर ज़ौर दिया हूं।

किताब को आसान अन्दाज़ में लिखा ताकि हर आदमी पढ़ के और उन्हीं अ़क़ाइद को तरजीह दी जिन की ज़रूरत आज कल ज़्यादा पड़ती है किताब में लफ़्ज़ी बहस नहीं नहीं की ताकि किता लम्बी ना हो जाये।

ख़ुदा करे कि सब मिल जाऐं

आयत और हदीस पर इस लिए भी ज़ौर दिया कि यह असल हैं तमाम मसलक वाले इन को मानते हैं सब के अ़क़ाइद की बुनियाद भी यही कुरआन और अहादीस हैं इस लिए उम्मीद की जा सकती है कि इन अ़क़ाइद पर मुत्तफ़िक़ हो जाऐं और इख़्तलाफ़ कि यह फ़तवे कम से कम हो जाऐ और मुसलमानों में इत्तफ़ाक़ हो जाऐ या कम से कम बड़े बड़े अ़क़ीदे पर इत्तफ़ाक़ कर लें और जुज़्याती मसाइल के लिए रास्त खुला रखें कि हर मसलक वाला अपने अने अन्दाज़ में अ़मल करलें।

यह बहुत अच्छी बात होगी कि सब मसलक वाले कम से कम मुसलमानों के मिल्ली मसाइल के लिए साल में एक मर्तबा जमा हो जाऐं, इस में एक दूसरे पर तन्ज़ ना करें, बल्कि मिल्ली और मुशतरका मसाइल पर मिल कर ग़ौर करें और सब जमा हो कर एक फ़ैसला करें ताकि हुकूमत पर ज़ौर देने में आसानी हो, यह बहुत बड़ा अलमिया है कि एक मसलक वाला कुछ कहता है दूसरा कुछ कहता है और हुकूमत इन्तशार, इख़्तलाफ़ समझ कर किसी

पर अ़मल भी नहीं करती, बल्कि हमें कमज़ौर समझ कर नज़र अन्दाज़ कर देती है।

बस इसी इत्तफ़ाक़ के ख़ातिर इस किताब को लिखने की सई की है ख़ुदा करे कि नाचीज़ का यह मक़सद पूरा हो जाये और लोग मुझे दुआ़एें दें। आमीन या रब्बुल आ़लमीन।

दूसरी वजह यह है कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात, जन्नत जहन्नुम इन सब की हक़ीक़त आयत और हदीस से ही मालूम होगी, किसी के कहने से नहीं होगी, इसी लिए उ़लमा फ़रमाते हैं कि अ़क़ीदे के लिए नस क़तई चाहिए, यानी आयत और हदीस ही चाहिए, मैंने इसी लिए सिर्फ़ आयतें और अहादीस जमा की हैं और उन्हीं से सारे अ़क़ीदों में इस्तदलाल किया है।

दिल से माफ़ी मांगता हूं

अ़क़ाइद का मसला बहुत पैचीदा है, इस बारे में बहुत इख़्तलाफ़ भी है और हर एक के दलाइल भी बहुत हैं, इस लिए मेरे लिए यह कहना बहुत मुश्किल है कि मैंने सारे अ़क़ाइदद सही लिखे हैं और इन के लिए दलाइल भी बिल्कुल सही दिये हैं, बल्कि मेरा ख़्याल यह है कि इस में ग़लती हुई होगी, इस लिए इस किताब में किसी को ग़लती नज़र आये तो ज़रूर मुझे इस की इत्तला दें और किसी को तकलीफ़ हुई हो तो मुझे दिल से माफ़ कर दें, मैं बहुत शुक्र गुज़ार हूंगा।

इतना ख़्याल ज़रूर रखें कि आयत की सराहत से या सही हदीस की सराहत से कोई बात साबित होती हो और मैंने इस के ख़िलाफ़ लिख दिया है तो ज़रूर मुझे इत्तला दें क्योंकि आयत या सही हदीस के ख़िलाफ़ अ़क़ीदा पैश करके मुझे गुनाह में मुब्तला नहीं होना है और यह बोझ ले कर दुनिया से नहीं जाना है।

हां उ़लमा की राये मुख़्तलिफ़ हों तो उन का भी बहुत अहतराम करता हूं और दिल से मानता हूं, लेकिन इस से किताब लम्बी हो जायेगी इस लिए इस को छोड़ दिया हूं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की तफ़सीर से हल पैश किया

आयत का कोई लफ़्ज़ मुग़लक़ हो तो इस के हल के लिए हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 की तफ़सीर, तनवीर उल मिक़यास से इस लफ़्ज़ को हल किया है क्योंकि इस तफ़सीर की निस्बत कम से कम एक अ़ज़ीम सहाबी की तरफ़ है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि उन की तफ़सीर काफ़ी सही होती है इस लिए दूसरी तफ़ासीर का मुझे इनकार नहीं है लेकिन हल के लिए इसी का इन्तख़ाब किया गया है।

आयत का तर्जुमा, हज़रत मुफ़्ती तक़ी उ़स्मानी के आसान तर्जुमा कुरआन से लिया हूं और अहादीस का तर्जुमा मुझे ख़ुद करना पड़ा, क्योंकि अहादीस की तमाम किताबों के लिए कोई उर्दू तर्जुमा मयस्सर नहीं था।

तन्ज़ व मिज़ाज से ऐतराज़ क्या हों

इस किताब में इस बात का ख़ास ख़्याल रखा गया है कि किसी का नाम ना आये ताकि इस को बुरा मालूम ना हो, किसी के बारे में इशारा और किनाया भी नहीं किया हूं, ताकि इस की तौहीन ना हो और इख़्तलाफ़ ना बढ़ जाये फिर भी किसी को बुरा ूलम हो तो दिल से माफ़ी मांगता हूं अल्लाह के वास्ते मुझे माफ़ कर दें।

शुक्रिया

इस किताब के लिखने में जिन जिन हज़रात ने मदद की है मैं उन सब का शुक्रिया दा करता हूं ख़ास तौर पर मेरी अहलिया का शुक्रिया अदा करता हूं कि उन्होंने हर क़िस्म की सहूलत पहुंचाई जिस की बिना पर मैं यह किताब लिख सका अल्लाह तआ़ला इन को दोनों जहानों में इस का बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमायो।

हज़रत अ़ल्लामा अख़तर साहब और हज़रत मौलाना अ़ब्दुल रऊफ़ साहब लाजपुरी दामत बरकातुहुम का भी ख़ास शुक्रिया अदा करता हूं, उन्होंने हमैशा मेरी हिम्मत अफ़ज़ाई की और मेरी किताब से ख़ास दिल चस्पी रखी और मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ते रहे।

हज़रत मौलाना मरग़ूब साहब लाजपुरी दामत बरकातुहुम ने तो मेरी पूरी किताब की इसलाह भी फ़रमाई और अच्छी इसलाह फ़रमाई इस लिए उन का भी ख़ुसूसी शक्रिया अदा करता हूं अल्लाह तआ़ला अपनी बारगाह से उन हज़रात को बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमाये और जन्नत उल फ़िरदौस अ़ता फ़रमाये। आमीन या रब्बुल आ़लमीन।

मेरे लिए दुआ़ फ़रमा दें

उ़लमा और सुलहा की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि मेरी आख़िरत दुरूस्त हो जाये और अल्लाह पाक तमाम गुनाहों को माफ़ करके जन्नत उल फ़िरदौस अ़ता कर दे उस की दुआ़ कर दें, मैं उस वक़्त अड़सठ साल का हो चुका हूं बुढ़ापे का वक़्त है, हाथ बिल्कुल ख़ाली है पता नहीं कब बुलावा आ जाये इस लिए जब भी याद आये बशर्ते सहूलत मेरे लिए दुआ़ कर दिया करें, बस इतनी सी गुज़ारिश है।

दुआ़ का मौहताज
अहक़र समीर उद्दीन क़ास्मी ग़ुफ़िरलहू
मांचेस्टर इंग्लैण्ड

(1) अल्लाह की ज़ात

इस अ़क़ीदे के बारे में 61 आयतें और 4 हदीसें आप हर एक की तफ़सील देखें।

इस वक़्त कुछ लोग नास्तिक बन रहे हैं यानी वो कहते हैं कि ख़ुदा है ही नहीं, यह दुनिया ख़ुद ही पैदा हुई है ना हिसाब किताब है और ना क़यामत है, इस लिए हम को अल्लाह पर यक़ीन करने और इस की इबादत करने की ज़रूरत नहीं, यह मुसीबत आसमानी तमाम मज़हब वालों के लिए है, इस लिए मैंने इन आयतों को पेश किया जिस से मालूम हुआ कि अल्लाह है, उसी ने पूरी कायनात को पैदा किया है और वही सब को ख़त्म करेगा और क़यामत लायेगा और सब का हिसाब लिया जायेगा और जो ईमान के साथ जायेगा उस को जन्नत दी जायेगी और जो बग़ैर ईमान के मरेगा उस को जहन्नुम में दाख़िल किया जायेगा।

इस किताब में मैंने इस पर भी ज़ौर दिया है कि मौत, हयात, शिफ़ा, बीमारी, रोज़ी, बीवी औलाद, यह सब चीज़ें देने वाला सिर्फ़ अल्लाह है इसलिए सिर्फ़ उसी की इबादत करनी चाहिए और सिर्फ़ उसी से तमाम ज़रूरियात मांगनी चाहिए।

अल्लाह का ज़ाती नाम ''अल्लाह'' है, बाक़ी नाम सिफ़ाती हैं

लफ़्ज़ ''अल्लाह'' का ज़ाती नाम है और इसके अ़लावा जितने भी नाम हैं वो सब सिफ़ाती नाम हैं, यानी अल्लाह की सिफ़त की वजह से वो नाम बना है, मसलन ''रज़्ज़ाक़'' इस लिए अल्लाह का नाम है कि अल्लाह रोज़ी देने वाला है। इस आयत में अैल्लाह का ज़ाती नाम इस्तेमाल हुआ है।

(1) قل اللّٰہ خالق کل شیء و ھو الواحد القھار . (آیت ١٦، سورت الرعد ١٣)

तर्जुमा: कहो कि अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वो तन्हा ही ऐसा है कि इस का इक़्तदार सब पर हावी है।

(2) سبحانہ ھو اللّٰہ الواحد القھار . (آیت ٤، سورت الزمر ٣٩)

तर्जुमा: अल्लाह पाक है, वो एक ज़बरदस्त इक़्तदार का मालिक है।

इन दोनों आयतों में अल्लाह के ज़ैाती नाम इस्तेमाल हुए हैं, उन के अ़लावा और बहुत सी आयतें हैं जिन में अल्लाह का ज़ाती नाम इस्तेमाल हुआ है।

अल्लाह हमैशा से है और हमैशा रहेगा

अल्लाह उस ज़ात को कहते हैं जो हमैशा से है और हमैशा रहेंगे, इस की कोई इब्तदा नहीं है और ना इस की कोई इन्तहा है।

इस की दलील यह आयत है

(3) كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ. (آیت ٨٨، سورت القصص ٢٨)

तर्जुमा: वही अल्लाह अव्वल भी है और आख़िर भी है, ज़ाहिर भी है और बातिन भी है और वो हर चीज़ को पूरी तरह जानता है।

(4) كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ. (آیت ٨٨، سورت القصص ٢٨)

तर्जुमा: हर चीज़ फ़ना होने वाली है सिवाऐ अल्लाह की ज़ात के।

(١) حدیث میں ہے: اللّٰهُمَّ أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شیء ،انت الظاھر فلیس فوقک شیء و انت الباطن فلیس دونک شیء (مسلم شریف ، باب الدعاء عند النوم، ص ١١٧٩، نمبر: ٢٧١٣/ ٢٨٨٩)

तर्जुमा: ऐ अल्लाह आप ही अव्वल हैं, आप से पहले कुछ भी नहीं है आप आख़िर हैं आप के बाद कुछ नहीं है, आप ज़ाहिर हैं आप के ऊपर कुछ भी नहीं है, आप बातिन हैं आप के अ़लावा कुछ भी नहीं है।

अल्लाह की ज़ात कभी फ़ना नहीं होगी और ना उस को मौत आयेगी

अल्लाह की ज़ात फ़ना से पाक है, उस की दलील यह आयत है:

(5) **كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ.** (آیت ۸۸، سورت القصص۲۸)

तर्जुमा: हर चीज़ फ़ना होने वाली है सिवाऐ अल्लाह की ज़ात के।

(6) **وَ تَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لاَ يَمُوْتُ.** (آیت ۵۸، سورت الفرقان ۲۵)

तर्जुमा: तुम उस ज़ात पर भरौसा रखो जो ज़िन्दा है, जिसे कभी मौत नहीं आयेगी।

इन आयतों में है कि अल्लाह फ़ना और मौत से पाक है।

हयात की चार क़िस्में हैं

(1) एक अल्लाह की हयात है, उस में ना फ़ना है और ना मौत है, यह हमैशा से है और हमैशा रहेगी।

(2) हयात दुनियवी: यह इन्सान और जानवर की हयात है, इन की हयात एक ज़माने में नहीं थी, फिर अल्लाह के पैदा करने से हुई और फिर फ़ना हो जायेगी और मौत वाक़े हो जायेगी।

(3) हयात बरज़ख़ी: यह क़ब्र की हयात है इस को हयाते बरज़ख़ी कहते हैं, यह मरने के बाद शुरू होती है और क़यामत तक रहेगी।

(4) जन्नत और जहन्नुम की हयात: यह हयात जन्नत और जहन्नुम में दाख़िल होने के बाद शुरू होगी और हमैशा रहेगी।

इन सब को हयात कहते हैं लेकिन इस की कैफ़ियत में बहुत फ़र्क़ है।

अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है

ज़मीन और आसमान में जितनी भी चीज़ें हैं, उन में से कोई भी चीज़ अल्लाह की ज़ात, या इस की सिफ़ात की तरह नहीं हैं, क्योंकि अल्लाह की ज़ात वाजिब उल वजूद है और दुनिया की सारी चीज़े फ़ानी हैं, उस की ज़ात और सिफ़ात की तरह कोई चीज़ कैसे हो सकती है।

अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं, इस की दलील यह आयत है:

(7) لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ. (آیت ١١، سورت الشوری ٤٢)

तर्जुमाः कोई चीज़ अल्लाह के मिस्ल नहीं है और वही है जो हर बात को सुनता है, सब कुछ देखता है।

(8) لَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُواً اَحَدٌ. (آیت ٤،سورت اخلاص ١١٢)

तर्जुमाः और अल्लाह के जोड़ का कोई भी नहीं है।

(9) اِذْ تَأْمُرُوْنَنَا اَنْ نَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلُ لَهُ اَنْدَاداً. (آیت ٣٣، سورت سبا ٣٤)

तर्जुमाः जब तुम ताकीद करते थे कि हम अल्लाह से कुफ़्र का मामला करें और इस के साथ शरीक मानें।

(10) فَلاَ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَاداً وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ.(آیت ٢٢، سورت البقرة٢)

तर्जुमाः अल्लाह के साथ शरीक ना ठहराओ जब कि तुम यह सब बातें जानते हो।

इन आयतों में है कि अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है।

अल्लाह की ना औलाद है ना वो किसी से पैदा हुआ है और ना इस के बराबर कोई है

इस लिए किसी को अल्लाह के बराबर समझना शिर्क है इस से बहुत बचना चाहिए।

ईसाइयों का ख़्याल है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बेटे हैं, मुश्रिकीन मक्का कहा करते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियां हैं, लेकिन कुरआन ने बताया कि अल्लाह की ना कोई औलाद है और ना वो किसी से पैदा हुआ है वो बेनियाज़ है।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(11) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ، اَللّٰهُ الصَّمَدُ ، لَمْ يَلِدْ وَ لَمْ يُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ . (آيت ۱.۳، سورت اخلاص ۱۱۲)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि अलाह हर लिहाज़ से एक है, अल्लाह ही ऐसा है कि सब इस का मौहताज हैं ना कोई औलाद है और ना वो किसी की औलाद है और इस के जोड़े का कोई भी नहीं।

(12) سُبْحَانَهٗ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ لَهٗ مَا فِى السَّمَاوَاتِ وَ مَا فِىْ الْاَرْضِ . (آيت ۱۷۱، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: वो इस बात से बिल्कुल पाक है कि इस का कोई बेटा हो, आस्मानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है।

(13) قَالُوْا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحَانَهٗ هُوَ الْغَنِىُّ لَهٗ مَا فِى السَّمَاوَاتِ وَ مَا فِى الْاَرْضِ . (آيت ۶۸، سورت يونس ۱۰)

तर्जुमा: कुछ लोगों ने कह दिया कि औलाद रखता है, पाक है उस की ज़ात वो हर चीज़ से बेनियाज़ है।

इन आयतों में है कि अल्लाह से ना कोई पैदा हुआ है और ना वो किसी से पैदा हुआ है और ना इस का कोई मिस्ल है।

अल्लाह को ना नींद आती है और ना नींद उन के मुनासिब है

इस के लिए यह आयतें हैं:

(14) اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ . (آيت ۲۵۵، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: अल्लाह वो है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं है जो हमैशा ज़िन्दा है, जो पूरी कायनात संभाले हुआ है, जिस को ना कभी ऊंघ लगती है और ना नींद आती है।

(۲) حدیث میں ہے: ان اللّٰہ لا ینام و لا ینبغی له ان ینام . (مسلم شریف ، باب فی قوله علیه السلام ان الله لا ینام ، ص ۹۱، نمبر ۱۷۹ / ۴۴۵)

तर्जुमा: अल्लाह सोता नहीं है और इस के लिए नींद मुनासिब भी नहीं है।

इस आयत और हदीस में है कि अल्लाह को नींद नहीं आती, और यह उस के लिए मुनासिब भी नहीं है।

अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है

(15) الم تعلم ان الله علی کل شیء قدیر (آیت ۱۰۶ ، سورة البقرة ۲)

तर्जुमा: क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

(16) لِـلّٰهِ مُلْکُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا فِیْهِنَّ وَ هُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ. (آیت ۱۲۰ ، سورت المائدہ ۵)

तर्जुमा: तमाम आसमानों और ज़मीन और जो इन में हैं वो सब अल्लाह ही की मिल्कियत में हैं और वो हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता हैं

(17) اَیْنَ مَا تَکُوْنُوْا یَأْتِ بِکُمُ اللّٰهُ جَمِیْعاً اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ . (آیت ۱۴۸ ، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: तुम जहां भी होगे अल्लाह तुम सब को अपने पास ले आयेगा, यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

(18) فَیَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَاءُ وَ یُعَذِّبُ مَنْ یَّشَاءُ وَ اللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ. (آیت ۲۸۴ ، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: अल्लाह जिस को चाहेगा इस को माफ़ कर देगा और

जिस को चाहेगा अ़ज़ाब देगा, अल्लाह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।

(19) وَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمَاوَاتِ وَ مَا فِى الْاَرْضِ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ . (آیت ۲۹، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह हर चीज़ को जानता है, अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

(20) وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ .
(آیت ۱۸۹، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: आसमानों और ज़मीन की सल्तनत सिर्फ़ अल्लाह की है और अल्लाह हर चीज़ पर मुकम्मल कुदरत रखता है।

इस तरह 40 आयतों में फ़रमाया है कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है

इस के लिए यह आयतें हैं:

(21) ذَالِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ فَاَعْبُدُوْهُ .
(آیت ۱۰۲، سورت الانعام ٦)

तर्जुमा: यह अल्लाह है जो तुम को पालने वाला है, इस के सिवा कोई माबूद नहीं वो हर चीज़ को पैदा करने वाला है, इस लिए इसी की इबादत करो।

(22) قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ وَ هُوَ الْوَاحِدُالْقَهَّارُ .
(آیت ١٦، سورت الرعد١٣)

तर्जुमा: कह दो सिर्फ़ अल्लाह ही हर चीज़ का ख़ालिक़ है, और तन्हा वही है जिन का इक़्तदार सब पर हावी है।

(23) ذَالِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ لَا اِلٰهَ اِلَّاهُوَ.
(آیت ٦٢، سورت غافر ٤٠)

तर्जुमा: यह अल्लाह है जो तुम को पालने वाला है, वो हर चीज़ को पैदा करने वाला है, इस के सिवा कोई माबूद नहीं।

हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह ही है इस लिए अल्लाह ही से औलाद मांगना चाहिए, किसी पीर या फ़क़ीर से नहीं मांगना चाहिए, यह शिर्क है और अल्लाह तआ़ला इस से नाराज़ होते हैं।

अल्लाह तआ़ला तमाम जहानों का मालिक है

इस की दलील यह आयतें हैं:

(24) وَلِلّٰهِ مُلْکُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ اللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ .

(آیت ۱۸۹، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत सिर्फ़ अल्लाह की है और अल्लाह हर चीज़ पर मुकम्मल क़ुदरत रखता है।

(25) وَلِلّٰهِ مُلْکُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ اللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ .

(آیت ۱۸۹، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: तमाम आस्मानों और ज़मीन और जो इन दोनों के दरमियान हैं इस की मिल्कियत अल्लाह ही के लिए है।

(26) وَ لِلّٰهِ مُلْکُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا .

(آیت۱۷، سورت المائدہ۵) .

तर्जुमा: तमाम आसमानों और ज़मीन और जो इन दोनों के दरमियान हैं उस की मिल्कियत अल्लाह ही के लिए है और उसी की तरफ़ सब को लोट कर जाना है।

(27) سُبْحَانَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ مَلَکُوْتُ کُلِّ شَیْءٍ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ .

(آیت ۸۳، سورت یٰس ۳۶)

तर्जुमा: पाक है वो ज़ात जिस के हाथ तमाम चीज़ों की मिल्कियत है और तुम सब इसी की तरफ़ लोटाये जाओगे।

इन आयतों से मालूम हुआ कि अल्लाह तमाम चीज़ों का मालिक है।

हशर का दिन बहुत बड़ा दिन है, अल्लाह इस दिन का भी मालिक है

इस की दलील यह आयतें हैं:

(28) مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ . (آیت ۳، سورت الفاتحہ ۱)

तर्जुमा: जो बदले के दिन का मालिक है।

(29) قَوۡلِہِ الۡحَقُّ وَلَہُ الۡمُلۡکُ یَوۡمُ یُنۡفَخُ فِی الصُّوۡرِ.
(آیت۷۳، سورت الانعام ٦)

तर्जुमा: और जिस दिन सूर फूंका जायेगा उस दिन बादशाही उसी की होगी।

इन आयतों में है कि क़यामत के दिन का मालिक अल्लाह ही है।

अल्लाह जोहर, अ़र्ज़, जिस्म और कैफ़ियत से पाक है

अल्लाह जोहर, अ़र्ज़, जिस्म और कैफ़ियत से पाक है, क्योंकि यह बातें मख़्लूक़ात के लिए हैं और अल्लाह वाजिब उल वजूद है, इस लिए वो इन सिफ़ात से पाक है।

(30) لَیۡسَ کَمِثۡلِہٖ شَیۡءٌ وَھُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ .
(آیت ۱۱، سورت الشوری ۴۲)

तर्जुमा: कोई चीज़ इस के मिस्ल नहीं है और वही है जो हर बात सुनता है, सब कुछ देखता है।

इस आयत में है कि अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है।

अल्लाह तआ़ला जहत, और मकान से पाक है

इस के लिए आयतें यह हैं:

(31) اِلَّا اَنَّہُ بِکُلِّ شَیۡءٍ مُّحِیۡطٍ . (آیت ۵۴، سورت فصلت ۴۱)

तर्जुमा: सुन लो अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

(32) وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْطاً. (آیت ۱۲۶ ، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

इन आयतों में ह कि अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है, इस लिए जहत को भी घेरे हुआ है, इस लिए अल्लाह के लिए कोई जहत नहीं है।

अल्लाह ही हर क़िसम के तारीफ़ के लायक़ हैं

इस के लिए यह आयतें हैं:

(33) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهُ مَا فِی السَّمٰوَاتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْآخِرَةِ وَ هُوَ الْحَکِیْمُ الْخَبِیْرِ . (آیت ۱ ، سورت سباء ۳۴)

तर्जुमा: तमाम तारीफ़ इस अल्लाह की है जिस की सिफ़त यह है कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब इसी का है और आख़िरत में भी तारीफ़ इसी की है, और वही है जो हिक्मत का मालिक है मुकम्मल तौर पर ख़बर रखने वाला।

(34) لَهُ مَا فِی السَّمٰوَاتِ وَ مَا فِیْ الْاَرْضِ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ . (آیت ۶۴، سورت الحج ۲۲)

तर्जुमा: आसमानों में और ज़मीन में जो कुछ है सब इसी की है, और यक़ीन रखो कि अल्लाह ही वो ज़ात है जो सब से बेनियाज़ है बज़ाते ख़ुद तारीफ़ के क़ाबिल है।

(35) وَ اعْلَمُوْا اِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ . (آیت ۲۶۷ ،سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: और याद रखो कि अल्लाह ऐसा बेनियाज़ है कि हर क़िस्म की तारीफ़ इसी की तरफ़ लोटती है।

(36) لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوَاتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ .

(آیت ۲۶ ، سورت لقمان ۳۱)

तर्जुमा: आसमानों में और ज़मीन में जो कुछ है सब इसी की है और यक़ीन रखो कि अल्लाह ही वो ज़ात है जो सब से

बेनियाज़ है बज़ाते ख़ुद तारीफ़ के क़ाबिल है।

इन आयतों में है कि तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह ही की हैं।

अल्लाह झूट बोलने से पाक है

इस के लिए यह आयतें हैं:

(37) وَعَدَ اللّٰهُ حَقاً وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلاً .

(آیت ۱۲۲، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से ज़्यादा बात का सच्चा कौन हो सकता है?

(38) وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثاً . (آیت ۸۷، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: और कौन है जो अल्लाह से ज़्यादा बात का सच्चा हो?

इन आयतों में है कि अल्लाह सच्चा है, इस में झूट का कोई तसव्वुर नहीं है।

कुछ लोगों ने यह मन्तिक़ी बहस छैड़ दी है कि झूट बोलना भी एक चीज़ है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है तो क्या अल्लाह झूट पर भी क़ादिर है? और बाज़ लोगों ने यह समझ कर यह भी एक चीज़ है, इस लिए कह दिया कि अल्लाह झूट पर भी क़ादिर है, लेकिन बोलते नहीं हैं।

लेकिन यह बहस भी मन्तिक़ी है, और जवाब भी मन्तिक़ी है, सही बात यह है कि अल्लाह की ज़ात ऐसी है कि उस में नक़ाइस का तसव्वुर भी नहीं है, इस लिए झूट हो या नक़ाइस की कोई और चीज़, अल्लाह उन तमाम से पाक हैं, यह तो इन्सान और जिन्नात का ख़ासा है कि इस में अच्छाई भ्झी है और नक़ाइस भी हैं।

अल्लाह हर चीज़ का सुनने वाला और हर चीज़ को जानने वाला है

अल्लाह के अ़लावा कोई ऐसी ज़ात नहीं है जो हर चीज़ को सुनने वाली और हर चीज़ को जानने वाली हो।

हिन्दुओं का ऐतक़ाद यह है कि उन का बुत उन की दुआ़ सुनता है और उस की हालत को जानता है, इसी लिए वो बुतों के सामने अपनी ज़रूर पैश करते हैं और इस से हाजत मांगते हैं।

मुसलमान को ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिए, यह मदद तलब करने में शिर्क है।

इस के लिए यह आयतें हैं:

(39) رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۔

(آیت ۱۲۷، سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमा: ऐ हमारे रब हमारी ख़िदमत क़बूल करले, सिर्फ़ तू ही बुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है।

(40) قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لاَ يَمْلِکُ لَکُمْ ضَرًّا وَّ لاَ نَفْعاً وَّ اللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۔ (آیت ۷٦، سورت المائدہ ۵)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर उन से कहो! कि क्या अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो ना नुक़सान का मालिक है और ना नफ़े का मालिक है, सिर्फ़ अल्लाह ही हर बात को सुनने वाला और हर बात को जानने वाला है।

(41) قَالَ رَبِّیْ يَعْلَمُ الْقَوْلُ فِی السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ. (آیت ۴، سورت الانبیاء ۲۱)

तर्जुमा: पैग़म्बर ने कहा आसमान और ज़मीन में जो कुछ कहा जाता है, मेरा रब इस सब को जानता है, वही बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।

(42) وَ الَّـذِيْـنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ . (آیت ۲۰، سورت غافر ۴۰)

तर्जुमा: अल्लाह के अ़लावा जिस को तुम पुकारते हो वो कुछ फ़ैसला नहीं कर सकता, सिर्फ़ अल्लाह ही बहुत सुनने वाला बहुत जानने वाला है।

अल्लाह की ज़ात बुलन्द और अ़ज़मत वाली है

अल्लाह की ज़ात बहुत बुलन्द है और बहुत अ़ज़मत वाली है इस की बड़ाई का हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते, यह ऐतक़ाद रखना चाहिए।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(43) وَ لَا يَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ . (آیت۲۵۵، سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमा: और ज़मीन आसमान दोनों की निगहबानी से अल्लाह को ज़रा भी बोझ नहीं होता, और वो बहुत ही बुलन्द और अ़ज़मत वाला है।

(44) لَهٗ مَا فِي السَّمٰوَاتِ وَ مَا فِيْ الْاَرْضِ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ .

(آیت ۴، سورت الشوری ۴۲)

तर्जुमा: आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है और वो बहुत ही बुलन्द और अ़ज़मत वाला है।

(45) وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَالْبَاطِلُ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ .

(آیت ۶۲، سورت الحج ۲۲)

तर्जुमा: और अल्लाह के अ़लावा जिन को तुम पुकारते हो सब बातिल हैं और अल्लाह ही की शान ऊंची है रूत्बा भी बड़ा है।

इन आयतों मे है कि अल्लाह की ज़ात बहुत बुलन्द है और बहुत अ़ज़मत वाली है। इस लिए सिर्फ़ अलाह ही से मांगना चाहिए और इसी की इबादत करनी चाहिए।

सिर्फ़ अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है

इस लिए अल्लाह के अ़लावा किसी से रोज़ी नहीं मांगनी चाहिए।

इन आयतों में इस की दलील है।

(46) اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُوْ الْقُوَّةِ الْمَتِيْنِ .

(آیت۵۸، سورت الذاریات ۵۱)

तर्जुमा: यक़ीनन अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, मुस्तहकम कुव्वत वाला है।

(47) اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَ يَقْدُرُ .(آیت۲۶، سورت الرعد۱۳)

तर्जुमा: जिस के लिए चाहता है अल्लाह उस की रोज़ी में वुसअ़त दे देता है और सि के लिए चाहता है तंगी कर देता है।

इन आयतों में है कि अल्ला ही रोज़ी देने वाला है, किसी और को इस का इख़्तयार नहीं है, इस लिए अल्लाह के अ़लावा किसी और से रोज़ी नहीं मांगनी चाहिए।

अल्लाह के अ़लावा किसी और से रोज़ी नहीं मांगनी चाहिए

बाज़ ग़ैर मुस्लिमों का अ़क़ीदा यह है कि अल्लाह ने बाज़ हस्ती को रोज़ी देने का मालिक बनाया है इस लिए वो इस की पूजा करते हैं, और इस से रोज़ी मांगते हैं और अपनी हाजत मांगते हैं।

अल्लाह फ़रमाते है कि रोज़ी देने का मालिक ख़ुद मैं हूं मैंने किसी को रोज़ी देने का मालिक नहीं बनाया है इस लिए मुझ से ही रोज़ी मांगना चाहिए।

इस के लिए यह आयतें हैं:

(48) اِنَ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقاً فَابْتَغُوْا عِنْدِ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَ اعْبُدُوْهُ. (آیت ۱۷، سورت العنکبوت ۲۹)

तर्जुमा: अल्लाह के अ़लावा जिन जिन की तुम इबादत करते हो वो तुम्हें रोज़ी देने का इख़्तयार नहीं रखता, इस लिए अल्लाह ही के पास रोज़ी तलाा करो, और उसी की इबादत करो।

(49) يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ شَيْئًا وَ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ. (آیت ۷۳، سورت النحل ۱۶)

तर्जुमा: और यह अल्लाह को छोड़ कर इन चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन को आसमान और ज़मीन में से किसी तरह के रोज़ी देने का कोई इख़्तयार नहीं है और ना इख़्तयार रख सकती है।

इस आयत में है कि ज़मीन और आसमान में अल्लाह के अ़लावा कोई रोज़ी देने का ना मालिक है और ना वो रोज़ी दे सकता है।

इस लि अल्लाह के अ़लावा किसी वली या नबी से या पीर फ़क़ीर से रोज़ी नहीं मांगनी चाहिए।

अल्लाह के अ़लावा कोई भी किसी तकलीफ़ को दूर करने की कुदरत नहीं रखता

इस के किलए आयते यह हैं:

(50) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗ اِلَّا هُوَ.

(آیت ۱۷، سورت الانعام ۶)

तर्जुमा: अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो ख़ुद इस के सिवा इसे दूर करने वाला कोई नहीं है।

(51) فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ وَ لَا تَحْوِيْلًا.

(آیت ۵۶، سورت الاسراء ۱۷)

तर्जुमा: जिन को तुम ने अल्लाह के सिवा माबूद समझ रखा है, ना वो तकलीफ़ दूर करने के मालिक हैं और ना इस के बदलने के मालिक हैं।

(52) قُلْ لَا اَمْلِکُ لِنَفْسِیْ نَفْعاً وَّ لَا ضَراً اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰہُ.

(آیت ۱۸۸، سورت الاعراف۷)

तर्जुमा: आप कह दीजिये कि मैं अपने लिए नुक़सान और नफ़े का भी मालिक नहीं हूं, हां अल्लाह जो चाहे।

(53) قُلْ لَا اَمْلِکُ لِنَفْسِیْ نَفْعاً وَّ لَا ضَراً اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰہُ.

(آیت ۱۸۸، سورت الاعراف۷)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि मैं अपने लिए नुक़सान और नफ़ा का भी मालिक नहीं हूं, हां अल्लाह जो चाहे।

जब नबी को भी ख़ुद उन के लिए नफ़ा और नुक़सान का इख़्तयार नहीं दिया तो दूसरों को कौन सा इख़्तयार होगा।

(54) وَ مَا بِکُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰہُ ثُمَّ اِذَا مَسَکُمُ الضُّرُّ فَاِلَیْہِ تَجْأَرُوْنَ.

(آیت ۵۳، سورت النحل ۱۶)

तर्जुमा: और तुम को जो नेअ़मत भी हासिल होती है वो अल्लाह की तरफ़ से होती है, फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है ता इसी से फ़रियाद करते हो।

इन आयतों से मालूम हुआ कि अल्लाह के अ़लावा कोई और तकलीफ़ दूर नहीं कर सकता।

इस लिए किसी और से तकलीफ़ दूर करने की इल्तजा नहीं करनी चाहिए।

सिर्फ़ अल्लाह ही बच्चा देने वाला है

औलाद देना सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में है, इस लिए किसी और से औलाद नहीं मांगनी चाहिए, या किसी क़ब्र, या पीर या देवी देवता के पास इस को मांगने नहीं जाना चाहिए।

(55) لِلّٰہِ مُلْکُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ یَخْلُقُ مَا یَشَاءُ یَھَبُ لِمَنْ یَّشَاءُ اِنَـاثاً وَ یَھَبُ لِمَنْ یَّشَاءُ الذُّکُوْرُ ، اَوْ یَزْجِھِمْ ذُکْرَاناً وَ اِنَاثاً وَ یَجْعَلُ مَنْ یَّشَاءُ عَقِیْماً اِنَّہٗ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ . (آیت ۵۰، سورت الشوری ۴۲)

तर्जुमा: सारे आसमानों और ज़मीन की मिल्कियत अल्लाह ही के लिए है वो जो चाहता है पैदा करता है और जिस को चाहता है लड़कियां देता है, और जिस को चाहता है लड़के देता है, या फिर मिला जुला कर भी देता है लड़के भी और लड़कियां भी देता है और जिस को चाहता है बांझ बना देता है, यक़ीनन वो जानने वाला है और कुदरत वाला है।

इस आयत में है कि अल्लाह ही औलाद देता है।

(56) **فَلَمَّا اَثْقَلَتْ دَعَوَا اللّٰهُ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحاً لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ فَلَمَّا آتَا هُمَا صَالِحاً جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيْمَا آتَاهُمْ، فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئاً وَ هُمْ يَخْلُقُوْنَ ، وَ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْراً وَ لَا اَنْفُسَهُمْ يُنْصَرُوْنَ .** (آیت ۱۹۰۔ ۱۹۲،سورت الاعراف ۷)

तर्जुमा: फिर जब वो बोझल हो गई तो मियां बीवी दोनों ने अपने रब से दुआ की कि अगर तूने हमें तन्दरूस्त औलाद दी तो हम ज़रूर बिल ज़रूर तेरा शुक्र अदा करेंगे, लेकिन जब अल्लाह ने उस को एक तन्दरूस्त बच्चा दे दिया तो इन दोनों ने अल्लाह की अ़ता की हुई नेअ़मत में अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक ठहराना शुरू कर दिया, हालांकि अल्लाह उन की मुश्रिकाना बातों से कहीं बुलन्द और बरतर है, क्या वो ऐसी चीज़ों को अल्लाह के साथ ख़ुदाई में शरीक मानते हैं जो कोई चीज़ पैदा नहीं करते बल्कि ख़ुद इन को पैदा किया जाता है? और जो ना इन लोगों की मदद कर सकते हैं और ना ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं।

इस आयत में है कि अल्लाह ही औलाद देता है, लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि जब बच्चा पैदा हो जाता है तो इन्सान समझता है कि दूसरी देवी देवता ने दिया, या दूसरे वली या फ़क़ीर ने दिया और इस की पूजा करने लगता है और इस को शरीक ठहरा लेता है।

(57) هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُکُمْ فِی الْاَرْحَامِ کَیْفَ یَشَاءُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ . (آیت ۶، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: सिर्फ़ ख़ुदा ही है जो माओं के पेट में जिस तरह चाहता है तुम्हारी सूरतें बनाता है इस के सिवा कोई माबूद नहीं है वो ज़बरदस्त कुदरत का मालिक है आ़ला दर्जे की हिक्मत का भी मालिक है।

(58) وَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَقْضُوْنَ بِشَیْءٍ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ. (آیت ۲۰، سورت غافر ۴۰)

तर्जुमा: और अल्लाह को छोड़ कर जिन को यह पुकारते हैं वो किसी चीज़ का फ़ैसला नहीं कर सकते यक़ीनन अल्लाह ही है जो हर बात को सुनता है, सब कुछ देखता है।

इन आयतों में ह कि अल्लाह ही दुआ़ क़बूल करने वाले हैं और अल्ला ही औलाद देने वाले हैं।

बाज़ औ़रतें अल्लाह के अ़लावा से बच्चा मांगती है, यह ठीक नहीं है, अल्लाह ही ने इस औ़रत को पैदा किया है और अल्लाह ही बच्चा देगा उसी से मांगना चाहिए, बाज़ साधू ऐसे मौक़े पर शिर्क तक करवा लेता है और ग़ैरों की पूजा करवा लेता है इस से बचना चाहिए।

अल्लाह ही शिफ़ा देता है

आदमी इलाज कर सकता है, लेकिन शिफ़ा देने का इख़्तयार सिर्फ़ अल्लाह को ह, इस लिए सिर्फ़ अल्लाह ही से शिफ़ा मांगे किसी पीर या वली को शिफ़ा देने का इख़्तयार नहीं है, इस लिए इन से शिफ़ा नहीं मांगनी चाहिए।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(59) وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ . (آیت ۸۰، سورت الشعراء۲۶)

तर्जुमा: और जब मैं बीमार होता हूं तो सिर्फ़ वही मुझे शिफ़ा देता है।

(60) وَاِنْ يَّمْسَسْکَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلاَ کَاشِفَ لَهُ اِلَّا هُوَ .

(آیت ۱۷ ، سورت الانعام ۶)

तर्जुमाः अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचाये तो ख़ुद उस के सिवा इसे दूर करने वाला कोई नहीं है।

(61) فَلاَ يَمْلِکُوْنَ کَشْفَ الضُّرِّ وَ لَا تَحْوِيْلاً .

(آیت ۵۶، سورت الاسرار ۱۷)

तर्जुमाः जिन को तुम ने अल्लाह के सिवा माबूद समझ रखा है ना वो तकलीफ़ दूर करने के मालिक हैं और ना इस को बदलने के मालिक हैं।

इस के लिए अहादीस यह हैं:

(۳) عن عائشة قالت کان رسول الله ﷺ اذا اشتکی منامن انسان مسحه بيمينه ثم قال أذهب الباس رب الناس و اشف انت الشافی لا شفاء الا شفائک شفاء لا يغادر سقما . (مسلم شريف ، کتاب السلام ، باب استحباب رقية المريض ، ص ۹۷۲، نمبر ۲۱۹۱ / ۵۷۰۷)

तर्जुमाः हम में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर स0अ0व0 अपने दाऐं हाथ से इस को छूते, फिर यह दुआ पढ़ते, इन्सान के रब तकलीफ़ को दूर कर दें तू ही शिफ़ा देने वाला है, इस लिए शिफ़ा देदे, सिर्फ़ तेरी ही शिफ़ा है, ऐसी शिफ़ा जो बीमारी को ना छोड़े।

(۴) عن عبد العزيز قال دخلت انا و ثابت علی انس بن مالک ، قال ثابت يا ابا حمزة اشتکيتُ فقال انس : ألا أرقيک برقية رسول الله ﷺ؟ قال بلی ، قال اللهم رب الناس مذهب الباس ، اشف انت الشافی لا شافی الا انت ، شفاء لا يغادر سقما . (بخاری شريف ، باب رقية النبی ﷺ ، ص ۱۰۱۴، نمبر ۵۷۴۲)

तर्जुमाः हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रह0 फ़रमाते हैं कि मैं और साबित रज़ि0 हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 के पास आये,

हज़रत साबित ने कहा ऐ अबू हमज़ा मैं बीमार हूं, तो हज़रत अनस रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं हुजूर स0अ0व0 की तावीज़ आप पर ना पढ़ूं, हज़रत साबित रज़ि0 ने फ़रमाया, हा! हज़रत अनस रज़ि0 ने कहा। ऐ इन्सानों के रब तकलीफ़ दूर करने वाले, शिफ़ा देद, शिफ़ा देनेवाला सिर्फ़ तूही है, ऐसी शिफ़ा जो बीमारी को ना छोडे।

इन दोनों हदीसों में है कि शिफ़ा देनेवाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह है, इस लिए किसी और से शिफ़ा नहीं मांगनी चाहिए।

इस वक़्त बबहुत से लोग शिफ़ा मांगने के लिए देवी, देवताओं, और ना जाने कैसे कैसे लोगों के पास जाते हैं और वो चकमा दे कर पैसा भी लूटते हैं, और ईमान भी ख़राब करते हैं, इस से बचना चाहिए।

इस अ़क़ीदे के बारे में 61 आयतें और 4 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(2) अल्लाह पर जज़ा या सज़ा देंना वाजिब नहीं है

इस अ़क़ीदे के बारे में 15 आयतें और (0) हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

मोअ़तज़ला: एक जमाअ़त थी उस ने कहा था कि अल्लाह पर बदला देना वाजिब है।

लेकिन अहले सुन्नत वल जमाअ़त का मज़हब यह है कि अल्लाह पर कोई चीज़ वाजिब नहीं है, हर चीज़ उस की मरज़ी पर है उस के लिए आयतें यह हैं:

(1) فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ .

(آیت ۲۸۴، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: फिर जिस को चाहेगा माफ़ कर देगा और जिस को चाहेगा सज़ा देगा और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

(2) فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَشَاءُ وَ يَهْدِىْ مَنْ يَشَاءُ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ .

(آیت ۴، سورت ابراهیم ۱۴)

तर्जुमा: फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह कर देता है और जिस को चाहता है हिदायत दे देता है, वो ग़ालिब है हिक्मत वाला है।

(3) اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ . (آیت ۱۴، سورت الحج ۲۲)

तर्जुमा: फिर अल्लाह जो चाहता है करता है।

(4) وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ . (آیت ۲۷، سورت ابراهیم ۱۴)

तर्जुमा: अल्लाह जो चाहता है करता है।

इन आयतों में है कि अल्लाह जो चाहता है करता है, इस पर किसी चीज़ का करना वाजिब नहीं है।

अल्लाह जो कुछ दे वो उस का फ़ज़्ल है

किसी चीज़ को देना अल्लाह पर वाजिब नहीं है वो जिस को जो कुछ दे वो उस का फ़ज़्ल है।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(5) ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَشَاءُ،وَ اللّٰهُ ذُوْ الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(آیت ۲۱، سورت الحدید ۵۷)

तर्जुमा: यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिस को चाहता हे देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

(6) ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَشَاءُ،وَ اللّٰهُ ذُوْ الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ .

(آیت ۴، سورت الجمعه ۶۲)

तर्जुमा: यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिकस को चाहता है देता और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

(7) وَاِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَشَاءُ،وَ اللّٰهُ ذُوْ الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(آیت ۲۹، سورت الحدید ۵۷)

तर्जुमा: और यक़ीनन तमाम फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, जिस को चाहता है देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।

(8) وَ اللّٰہُ یَخْتَصُّ بِرَحْمَتِہٖ مَنْ یَشَاءُ وَ اللّٰہُ ذُوْ الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ .

(آیت ۱۰۵، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: अल्लाह जिस को चाहता है अपनी रहमत के लिए मख़्सूस कर लेता है और अल्लाह अ़ज़ीम फ़ज़्ल का मालिक है।

इन आयतों में है कि जो कुछ अल्लाह देता है वो इस का फ़ज़्ल है, इस पर कोई चीज़ वाजिब नहीं है।

अहले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीदा यह है कि ख़ैर और शर का सब का पैदा करने वाला अल्लाह है

पिछले ज़माने में कुछ लोगों का नज़रिया यह था कि शर का काम अच्छा नहीं है, इस लिए वो शर के पैदा करने की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करना मुनासिब नहीं समझते थे और कहते थे कि शर का पैदा करने वाला शैतान है।

लेकिन चूंकि आयत में है कि हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह पाक है इस लिए यही अ़क़ीदा सही है कि ख़ैर और शर दोनों का पैदा करने वाला अल्लाह है, और बन्दे को जो सवाब या अ़ज़ाब होता है वो इस के कसब यानी इस काम को करने की वजह से होता है।

इस लिए यह आयतें हैं:

(9) اَللّٰہُ خَالِقُ کُلِّ شَیْءٍ وَ ھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ وَکِیْلٌ .

(آیت ۶۲، سورت الزمر ۳۹)

तर्जुमा: अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का रखवाला है।

(10) ذَالِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ .

(آیت ٦٢، سورت غافر ٤٠)

तर्जुमा: यह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, इस के सिवा कोई माबूद नहीं है।

(11) قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ . (آیت ٧٨، سورت النساء ٤)

तर्जुमा: कहो जो हर चीज़ अल्लाह ही के पास से है।

इन आयतों से साबित हुआ कि हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह ही है।

अल्बत्ता बन्दा शर का काम करे तो अल्लाह इस से राज़ी नहीं होता और ख़ैर का काम करे तो अल्लाह इस से राज़ी होता है

है सब काम अल्लाह का ही पैदा किया हुआ अल्बत्ता नेक काम करने से अल्लाह राज़ी होते हैं और बुरे काम करने से अल्लाह राज़ी नहीं होते।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(12) وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرِ (آیت ٧، سورة الزمر ٣٩)

तर्जुमा: अल्लाह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र पसन्द नहीं करता।

इस आयत में है कि अल्लाह कुफ़्र से राज़ी नहीं होते।

(13) وَ اِنْ اَعْمَلَ صَالِحاً تَرْضَاهُ (آیت ١٩ سورت النمل ٢٧)

तर्जुमा: और वो नेक अ़मल करो जिस से आप राज़ी होते हैं।

(14) وَ اِنْ اَعْمَلَ صَالِحاً تَرْضَاهُ .(آیت ١٥، سورت الاحقاف ٤٦)

तर्जुमा: और वो नेक अ़मल करो जिस से आप राज़ी होते हैं।

इन दोनों आयतों में है कि नेक आ़माल से अल्लाह राज़ी होते हैं।

अल्लाह की तमाम सिफ़ात अज़्ली और अब्दी हैं

पिछले ज़माने में एक बहस रही है कि मसलन पैदा करने से पहले अल्लाह ख़ालिक़ है या नहीं तो इस बारे में यह है कि अल्लाह की तमाम सिफ़ात अज़्ली और अब्दी हैं, यानी जब तक कायनात को पैदा नहीं किया था उस वक़्त भी अल्लाह ख़ालिक़यत और राज़िक़यत के साथ मुतस्सिफ़ था और पैदा करने के बाद भी वो इसी सिफ़त के साथ मुतस्सिफ़ है, इस में कोई कमी बैशी नहीं आई है और जब इस कायनात को ख़त्म कर देंगे उस वक़्त भी अल्लाह ख़ालिक़ रहेगा इस में कोई कमी नहीं आयेगी, क्योंकि अल्लाह की तमाम सिफ़ात अब्दी हैं।

(15) اِنَّ ذَالِکَ لَمُحۡیِ الۡمَوۡتٰی وَ هُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٍ .

(آیت ۵۰، سورت الروم ۳۰)

तर्जुमा: यक़ीनन वो अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाले हैं और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

अल्लाह ने मुर्दों को अभी ज़िन्दा नहीं किया है बल्कि क़यामत में ज़िन्दा करेंगे, फिर भी अभी से अल्लाह को मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला कहा जाता है, जिस से मालूम हुआ कि ज़िन्दा करने से पहले भी वो ज़िन्दा करने की सिफ़त रखते हैं इसी तरह तमाम सिफ़ात कामिल है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 15 आयतें और 0 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(3) दहरियों को ख़ुदा मान लेना चाहिए

इस के 7 दलाइल हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

कुछ लोगों का यह नज़रिया है कि अल्लाह मौजूद नहीं, है, यह कायनात ख़ुदा पैदा हुई और ख़ुद ख़त्म हो जायेगी इस का

कोई पैदा करने वाला नहीं है इसी को दहरिया कहते हैं इसी को नास्तिक कहते हैं।

इन की दलील यह है कि हम ने ख़ुदा को भी नहीं देखा इस लिए वो मौजूद नहीं है।

इस का जवाब यह है कि

(1)......इन आंखों से ख़ुदा को देख ही नहीं सकते वो वाजिब उल वजूद है, वो दुनिया की चीज़ की तरह नहीं है कि हम इन आंखों से देख लें, हां आख़िरत में मौमिन के लिए ऐसी आंख पैदा कर दी जायेगी जिस से वो अल्लाह को देख सकेगा दुनिया में यह बात मुमकिन नहीं है।

अल्लाह की ज़ात सत्तर हज़ार नूर के परदे में है इस लिए इस को कैसे देख सकोगे, ख़ुद हुज़ूर स0अ0व0 ने मेअ़राज की रात के बारे में फ़रमाया: "نــورانــــی اراہ" कि वो तो नूर है इस को कैसे देखा जा सकता है।

इस के लिए हदीस यह है:

عـن ابــی ذر قــال سألت رسول الله ﷺ هل رأيت ربک ؟ قال نور أنی أراه ؟ . (مسـلـم شريف ، كتاب الايمان ، باب قوله عليه السلام نور انی اراه، ص ۹۱، نمبر ۱۷۸/ ۴۴۳)

तर्जुमा: हज़रत अबूज़र रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से पूछा कि क्या आप ने अपने रब को देखा है? तो फ़रमाया कि वो तो नूर है, उस को कैसे देख सकता हूं।

(2)......दुनिया में अल्लाह का पैदा किया हुआ सूरज को दोपहर में नहीं देख सकता जिस में बहुत ही अदना सा नूर है, तो अल्लाह की ज़ात जो नूर ही नूर है उस को हमारी आंखें कैसे देख सकती हैं।

अल्लाह की ज़ात को क्यों नहीं मानें

(3)……दुनिया में खरबों आदमी हैं हर एक का चेहरा बिल्कुल अलग अलग है बल्कि एक मां बाप के दो बच्चे हैं तो दोनों के चेहरे बिल्कुल अलग अलग होते हैं, यह अलग अलग चेहरा किस ज़ात की वजह से है, जिस ज़ात की वजह से यह अलग अलग चेहरा है उसी ज़ात का नाम ख़ुदा है, कुरआन में इसी को रब्बुल आ़लमीन कहा है।

इस के लिए यह आयत हैः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ . (سورت الفاتحه ، ا آيت ا)

तर्जुमाः तमाम तारीफ़ें अल्लाह की है जो तमाम जहानों को पालने वाला है।

इस आयत में है कि अल्लाह पूरी दुनिया को पालते रहते हैं।

जब यह बात तेय है कि हर एक का चेहरा अलग अलग है तो यह भी मानना पड़ेगा कि इन चेहरों को अलग अलग करने वाली जो ज़ात है उसी को ख़ुदा कहते हैं।

आप ख़ुद मर कर दिखलाऐं

(4)……दहरिया कहते हैं कि हम ख़ुद पैदा हुए, अगर ऐसी ही बात है कि आप ख़ुद पैदा हुए हैं तो आप ज़रा ख़ुद मर के दिखलाऐं, आप के इख़्तयार में मरना है फिर भी आप ख़ुद मर नहीं सकते तो ख़ुद पैदा कैसे हो गए।

आप जवान रह कर दिखलाऐं

(5)……दहरिया ख़ुद यह चाहते हैं कि मैं जवान रहूं और इस के लिए वो ख़ूब नुस्ख़े भी इस्तेमाल करते हैं लेकिन फिर भी जो चीज़ (जो ज़ात) इस को बूढ़ा करती जाती है और हाथ पांव को नाकारा करती जाती है, उसी ज़ात का नाम ख़ुदा है कुरआन में है।

وَ مِنْكُمْ مَنْ يُّرَدُّ اِلٰى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَىْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئاً.

(آیت ۷۰، سورت النحل ۱۶)

तर्जुमा: और तुम में से कोई ऐसा भी होता है जो उ़म्र के सब से नाकारा हिस्से तक पहुंचा दिया जाता है जिस में पहुंच कर वो सब कुछ जानने के बाद भी कुछ नहीं जानता, बेशक अल्लाह बड़े इल्म वाला और बड़ी कुदरत वाला है।

अगर आप ख़ुद पैदा हुए हैं तो नव्वे साल तक जवान रह कर दिखलाएं, अगर यह नहीं कर सकते तो जो ज़ात तुम्हें बूढ़ा कर रही उसी ज़ात का नाम ख़ुदा है, इस लिए ख़ुदा को मान लें।

आप सवा सौ साल तक ज़िन्दा रह कर ही दिखलादें

(6)……दहरिया ज़्यादा ही ज़िन्दा रहना चाहते हैं अगर यह ख़ुद पैदा हुए हैं तो चलो सवा सौ साल ही ज़िन्दा रह कर दिखलाएं, अगर यह ख़ुद पैदा हुए हैं तो इस को ख़ुद ज़िन्दा भी रहना चाहिए, लेकिन जो ज़ात इस को मारती है उसी ज़ात का नाम ख़ुदा है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की ज़ात को मुतआ़रिफ़ कराने के लिए ही कहा था। आयत यह है:

اِذْ قَالَ اِبْرَاهِيْمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَ يُمِيْتُ . (آیت ۲۵۸، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वो जो ज़िन्दगी भी देता है और मौत भी देता है।

पस जो ज़ात आप को मार रही है उसी ज़ात का नाम ख़ुदा है और उसी ज़ात ने तुम्हें पैदा भी किया है।

जो ज़ात मारेगी उसी का नाम ख़ुदा है

(7)……कुरआन और हदीस की रहनुमाई तो है ही लेकिन हम लोग जो ख़ुदा मानते हैं वो इसी लिए मानते हैं कि वो एक दिन हमें मारेगा, और जो ज़ात मारेगी वही पैदा करने वाली भी है, और

जब दोनों बातें बिल्कुल सामने हैं जिन क आप इन्कार नहीं कर सकते, तो इस से यह भी यक़ीन होता है कि क़यामत भी है और जन्नत और जहन्नुम भी हैं इस के लिए लम्बी चौड़ी दलाइल देने की ज़रूरत नहीं।

आप मान लें कि पैदा करने वाला ख़ुदा है

इस लिए अब मान लें कि आप को पैदा करने वाला ख़ुदा है, और इस के सामने यह है माफ़ी कि ऐ मारने वाले ख़ुदा मुझे माफ़ कर दे और मुझे दे दे अगर दिल से यह कहा और इसी पर मौत हुई तो मुमकिन है कि अल्लाह आप को माफ़ कर देंगे।

(4) रोइयते बारी (अल्लाह को देखना)

इस अ़क़ीदे के बारे में 5 आयतें और 10 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

मेअ़राज की रात में हुज़ूर स0अ0व0 ने अल्लाह को देखा या नहीं इस बारे में उ़लमा का इख़्तलाफ़ है।

(1) एक जमाअ़त कहती है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने अल्लाह को नहीं देखा।

(2) दूसरी जमाअ़त यह कहती है कि अल्लाह को देखा है लेकिन इस के नूर को देखा है बहरहाल देखा ज़रूर है अक्सर हज़रात की राये यही है।

(3) तीसरी जमाअ़त यह कहती है कि ऊपर से सरसरी देखा है अन्दर की हालत को नहीं देखा और वो देख भी नहीं सकते, क्योंकि अल्लाह की ज़ात ला मुन्तही है।

(4) चौथी जमाअ़त यह कहती है कि अल्लाह को दिल से देखा है।

अल्बत्ता सब ने यह बात ज़रूर कही कि आख़िरत में मौमिन अल्लाह को अपनी आंखों से देखेंगे।

हर एक की दलाइल यह हैं

पहली जमाअ़तः जिन हज़रात ने कहा कि अल्लाह को नहीं देखा। इन की दलाइल यह हैं:

हज़रत मूसा अलैहिससलाम ने अल्लाह को देखने की फ़रमाइश की तो अल्लाह ने कहा कि इस पहाड़ को देखो, यानी तूर पहाड़ को देखो, अगर वो अपनी जगह पर ठहर गया तो तुम भी देख सकोगे, और अगर वो अपनी जगह पर नहीं ठहरा तो तुम दुनिया में मुझे नहीं देख सकोगे, अल्लाह ने जब पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश हो गये जिस से मालूम हुआ कि दुनिया में अल्लाह तआ़ला को देखना ना मुमकिन है, क्योंकि दुनिया में हमारी आंखें ऐसी नहीं हैं कि अल्लाह को देख सकें।

इस के लिए यह आयतें हैं:

(1) قَالَ رَبِّىْ اَرِنِىْ اَنْظُرْ اِلَيْكَ قَالَ لَنْ تَرَانِىْ ، وَ لٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرَانِىْ،فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا . (آیت ۱۴۳، سورت الاعراف۷)

तर्जुमाः मेरे रब मुझे दीदार करा दीजिए कि मैं आप को देख लूं, फ़रमायाः तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकोगे, अल्बत्ता पहाड़ की तरफ़ नज़र उठाओ, इस के बाद अगर वो अपनी जगह बरक़रार रहा तो तुम मुझे देख लोगे, फिर जब इन के रब ने पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो इस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और हज़रत मूसा बेहोश होकर गिर पड़े।

इस आयत में है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह को नहीं देखा? इस लिए दुनिया में इन आंखों के साथ अल्लाह को देखना मुमकिन नहीं है, हां आख़िरत में दीदार होगी।

(2) لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَ هُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارُ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرِ .

(آیت ۱۰۳، سورت الانعام۶)

तर्जुमा: निगाहें अल्लाह को नहीं देख सकतीं और वो तमाम निगाहों को पा लेता है, इस की ज़ात बहुत लतीफ है, और वो बहुत बाख़बर है।

इस आयत में है कि निगाह अल्लाह को नहीं पा सकती, इस लिए अल्लाह की ज़ात को नहीं देख सकती है।

(3) ﴿وَ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْياً اَوْ مِنْ وَّرَاءِ حِجَابٍ﴾

آیت ۵۱، سورت الشوری ۴۲﴾. (بخاری شریف ، کتاب التفسیر ، سورت النجم ۵۳، ص ۸۶۰، نمبر ۴۸۵۵)

तर्जुमा: किसी इन्सान में यह ताक़त नहीं है कि अल्लाह से रूबरू बात करे सिवाऐ इस के वो वही के ज़रिये हो, या किसी परदे के पीछे से बात करे।

इस आयत में है कि अल्लाह दुनिया में किसी आदमी से वही के वासते से बात करते हैं, या हिजाब में बात करते हैं, इस लिए कुछ हज़रात का यह कहना है कि मेअ़राज की रात में हुज़ूर स0अ0व0 ने हिजाब ही में अल्लाह से बात की हैं अल्लाह को आंखों से नहीं देखा।

हज़रत आ़यशा रज़ि० का मौक़फ़ यह है कि दुनिया में अल्लाह को नहीं देखा जा सकता

अहादीस यह हैं:

(1) عن مسروق قال :قلت لعائشه رض يا امتاه هل رأى محمد ﷺ ربه ؟ فقالت لقد قف شعرى مما قلت ،اين انت من ثلاث، من حدثكهن فقد كذب ؟من حدثك ان محمدا ﷺ رأى ربه فقد كذب ، ثم قرأت ﴿لا تدركه الابصار و هو يدرك الابصار و هو اللطيف الخبير﴾ آيت ۱۰۳ ، سورت الانعام۶ ﴾ (بخارى شريف ، كتاب التفسير ، سورت النجم ۵۳، ص ۸۶۰، نمبر ۴۸۵۵)

तर्जुमा: हज़रत मसरूक़ ने कहा कि मैंने हज़रत आ़यशा रज़ि0 से पूछा कि ऐ अम्मां! क्या हुज़ूर स0अ0व0 ने अपने रब को देखा है? तो हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने फ़रमाया कि तुम्हारी बात से तो मेरे रोंगटे खड़े हो गये, यह तीन बातें तुम्हें पता नहीं है, इन तीनों बातों के बारे में कोई बात करे तो यह झूट है, जो यह कहे कि मौहम्मद स0अ0व0 ने अपने रब को देखा है तो यह झूट है, फिर यह पढ़ी:

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُهُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ.

तर्जुमा: निगाहें अल्लाह को नहीं पा सकतीं और वो तमाम निगाहों को पा लेता है, इस की ज़ात इतनी ही लतीफ़ है और वो इतना ही बाख़बर है।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने अल्लाह को अपनी आंखों से नहीं देखा।

(2) عن مسروق ...يا ام المومنين أنظرنى و لا تعجلينى . ألم يقل الله تعالى ﴿وَ لَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ﴾ (آيت ٢٣، سورت التكوير ٨١) ﴿وَ لَقَدْ رَءَاهُ نَزْلَةً أُخْرٰى﴾ (آيت ١٣، سورت النجم ٥٣)، فقالت انا اول هذه الامة سأل عن ذالک رسول الله ﷺ فقال انما هو جبريل عليه السلام . لم اراه على صورته التى خلق عليها غير هاتين المرتين رأيته منهبطا من السماء سادا عظم خلقه ما بين السماء الى الارض . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب معنى قول الله عز و جل ، و لقد رئاه نزلة اخرى ، و هل رأى النبى ربه ليلة الاسراء ، ص ٩٠، نمبر ١٧٧ / ٤٣٩)

तर्जुमा: हज़रत मसरूक़ ने कहा उम्मुल मौमिनीन मुझे मौहलत दें और जल्दी ना करें, क्या अल्लाह तआ़ला ने नहीं कहा **وَلَقَدْ رَآهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ** और **وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرٰى** कि हुज़ूर स0अ0व0 ने उफ़ुक़िल मुबीन पर देखा आर इस को दूसरी मर्तबा दखा तो हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने फ़रमाया कि इस उम्मत का मैं पहला

आदमी हूं जिस ने हुजूर स0अ0व0 को इस बारे में पूछा तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि वो जिब्रईल अलैहिस्सलाम को देखा है इन दो मर्तबों के अ़लावा मैंने जिब्रईल अलैहिस्सलाम को अपनी असली सूरत पर नहीं देखी है, इन को देखा कि वो आसमान से उतर रहे हैं, और उन की ख़लक़त ने ज़मीन और आसमान के दरमियानी हिस्से को भर दिया है।

इस आयत में हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने फ़रमाया कि: **وَلَقَدْرَآهُ وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَى** और **بِالْأُفُقِ الْمُبِيْنِ** मैं जो देखने का तज़्किरा है वो अल्लाह को देखना नहीं है, बल्कि हुजूर स0अ0व0 ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को इन की असली हालत में दो मर्तबा देखा है।

इस हदीस से भी यह साबित हुआ कि हुजूर स0अ0व0 ने दुनिया में अल्लाह को नहीं देखा है।

(3) عن ابی ذر قال سألت رسول الله ﷺ هل رأيت ربک ؟ قال نور أنى أراه ؟ . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب قوله عليه السلام نور انى اراه، ص ۹۱، نمبر ۱۷۸/ ۴۴۳)

तर्जुमा: हज़रत अबूज़र रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने हुजूर स0अ0व0 से पूछा कि आप ने अपने रब को देखा है? तो फ़रमाया कि वो तो नूर है, इस को कैसे देख सकता हूं।

इस हदीस में है कि हुजूर स0अ0व0 से पूछा गया कि मेअ़राज की रात में आप ने अल्लाह को देखा है, तो आप ने फ़रमाया कि इस का हिजाब नूर है (इस लिए इस को कैसे देखा जा सकता है)।

(4) عن ابی موسى قال قام فينا رسول الله ﷺ بخمس كلمات ....حجابه نور . و فى رواية ابى بكر ، النار . لو كشفه لاحرقت سبحات وجهه ما انتهى اليه بصره من خلقه . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب قوله عليه السلام ان الله لا ينام ،ص ۹۱، نمبر ۱۷۹/ ۴۴۵)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 हमारे दरमियान पांच कलिमात ले कर खड़े हुए......आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हिजाब नूर है, और अबूबकर की रिवायत में है कि, नार, है अगर इस को लोगों के सामने खोल दे तो इस के चेहरे की चमक से जहां तक नज़र जायेगी वहां जल कर रख हो जायेगी।

इन तीनों हदीसों से मालूम होता है कि अल्लाह पर नूर का हिजाब है, इस लिए दुनिया में उस को नहीं देखा जा सकता है।

(2) दूसरी जमाअ़त

दूसरी जमाअ़त यह कहती है कि अल्लाह को देखा है लेकिन इस के नूर को देखा है, बहरहाल देखा ज़रूर है अक्सर हज़रात की राये यही है।

इन की दलील यह हदीस है:

(5) قلت لابی ذر .... قال كنتُ اسأله: هل رأيت ربک ؟ قال ابو ذر قد سألته فقال رأيت ُنورا . (**مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب قوله عليه السلام نور انی اراه، ص ۹۱، نمبر ۱۷۸ / ۴۴۳**)

तर्जुमा: मैंने हज़रत अबूबकर रज़ि0 से पूछा......मैंने हुजूर स0अ0व0 से पूछा कि क्या आप ने अपने रब को देखा तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैंने नूर देखा।

इस हदीस में है कि ल्लाह के नूर को देखा है।

(3) तीसरी जमाअ़त

तीसरी जमाअ़त यह कहती है कि ऊपर से सरसरी देखा है, अन्दर की हालत को नहीं देखा और वो देख भी नहीं सकते, क्योंकि अल्लाह की ज़ात ला मुन्तही है।

इन की दलील यह क़ाल सहाबी है।

(6) قال سمعت عكرمة يقول سمعت ابن عباس يقول ان محمدا ﷺ رای ربه عز و جل . (**سنن كبرى للنسائى ، باب قوله تعالى ما كذب الفواد**

و ما رای ، ج ۱۰ ، ص ۲۷٦ ، نمبر ۱۱۴۷۳ / طبرانی کبیر ، باب عکرمة عن ابن عباس ، ج ۱۱ ، ص ۲۴۲ ، نمبر ۱۱٦۱۹)

तर्जुमा: हज़रत इकरमा फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 से कहते हुए सुना है कि मौहम्मद स0अ0व0 ने अपने रब को देखा है।

लेकिन आयत में है कि अल्लाह को निगाहें नहीं पा सकतीं (**لَاتُـدْرِكُـهُ الْأَبْصَارُ**)इस लिए यही कहा जा सकता है कि अल्लाह को ज़ाहिरी तौर पर सरसरी देखा है।

(4) चौथी जमाअ़त यह है कि अल्लाह को दिल से देखा है:

(7) **عـن يـوسف بن مهران عن ابن عباس . ﴿مَا كَذَبَ الْفُؤَادُمَا رَاىٰ** (سورت النجم ۵۳ ، آیت ۱۱) **قال رای ربه عز و جل بفواده .** (طبرانی کبیر ، باب یوسف بن مهران عن ابن عباس ، ج ۱۲ ، ص ۲۱۹ ، نمبر ۱۲۹۴۱)

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि (**مَاكَذَبَ الْـفُـؤَادُ مَـارَأَى**) जो आयत हे इस के बारे में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया कि हुज़ूर स0अ0व0 ने अपने रब को दिल से देखा है।

इस क़ौल सहाबी में है कि अल्लाह को दिल से देखा है।

मौमिन आख़िरत में अल्लाह को देखेंगे

पिछले ज़माने में जहीमा फ़िरक़े ने आख़िरत में भी अल्लाह को देखने का इन्कार किया था इस ज़माने में इस पर इत्तफ़ाक़ हो गया है कि अल्लाह की रोयत होगी।

आख़िरत में अल्लाह ऐसी आंख पैदा कर देंगे कि मौमिन अल्लाह को सामने देख रहे होंगे।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(۴)وَجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ نَا ضِرَةٌ، اِلٰى رَبِهَا نَاظِرَةٌ .(آیت ۲۳، سورت القیامة ۷۵)

तर्जुमा: क़यामत के दिन बहुत से चेहरे शादाब होंगे, अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे।

(8) ان ابا هريرة اخبره ان ناسا قالوا لرسول الله ﷺ يا رسول الله هل نرى ربنا يوم القيامة ...هل تضارون فى الشمس ليس دونها سحاب ؟ قالوا لا ، يا رسول الله ! قال فانكم ترونه كذالك . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب اثبات روية المومنين فى الآخرة ربهم ،ص ۹۲ ، نمبر ۱۸۲ / ۴۵۱/ ابن ماجة شريف ، باب فيما انكرت الجهمية ، ص ۲۷، نمبر ۱۷۸)

तर्जुमा: कुछ लोगों ने हुज़ूर स0अ0व0 से सवाल किया कि क्या हम क़यामत के दिन अपने रब को देखेंगे......तो आप ने फ़रमाया कि बादल ना हो तो सूरज को देखने में कोई परेशानी होती है? लोगों ने कहा: या रसूलुलह नहीं हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया बस ऐसे ही तुम बग़ैर परेशानी के अल्लाह को देखोगे।

इस आयत में है कि जन्नत में अल्लाह तआ़ाला का दीदार होगा।

(9) عن صهيب قال تلا رسول الله ﷺ هذه الآية ﴿لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ﴾ [آيت ۲۶، سورت يونس ۱۰] .و قال اذا دخل اهل الجنة الجنة و اهل النار النار نادى مناد يا اهل الجنة ان لكم عند الله موعدا يريد ان ينجزكموه ، فيقولون و ما هوا ؟ الم يثقل الله موازيننا و يبيض و جوهنا و يدخلنا الجنة و ينجينا من النار قال فيكشف الحجاب فينظرون اليه فوالله ما اعطاه الله شيئا احب اليهم من النظر يعنى اليه . و لا اقر لاعينهم . (ابن ماجة شريف ، كتاب مقدمة ، باب فيما انكرت الجهمية ، ص ۲۸، نمبر ۱۸۷/ مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب اثبات روية المومنين فى الآخرة ربهم ،ص ۹۲ ، نمبر ۱۸۱ / ۴۴۹)

तर्जुमा: हज़रत सुहैब रज़ि0 ने फ़रमाया कि हुज़ूर स0अ0व0 ने यह आयत तिलावत की: (**لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَةٌ**) तर्जुमा:

जिसने अच्छा काम किया उस के लिए हसनी (बहतरी) होगी, और कुछ ज़्यादा भी मिलेगी, इस के बारे में हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल हो जाऐंगे और जहन्नुम वाले जहन्नुम में दाख़िल हो जाऐंगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा, ऐ जन्नत वालो! अल्लाह के पास तुम्हारा एक वादा है अल्लाह चाहते हैं कि अल्लाह तुम को उस का बदला दे दें तो लोग पूछेंगे वो क्या है, अल्लाह ने हमारे वज़न को भारी नहीं कर दिया और हमारे चेहरे को शादाब किया और हम को जन्नत में दाख़िल किया, जहन्नुम से छुटकारा दिया (इस से ज़्यादा और क्या देंगे) तो अल्लाह हिजाब उठाऐंगे, फिर लोग अल्लाह की तरफ़ देखेंगे ख़ुदा की क़सम अल्लाह ने जितना इन लोगों को नेअ़मत दी थी अल्लाह को देखना उन सब से बेहतर होग, और उन की आंखों के लिए सब से ज़्यादा ठण्ड़क वाली चीज़ होगी।

(10) **ان ابا هريرة اخبرهما .....قال فهل تمارون فى روية الشمس ليس دونها سحاب ؟ قالوا لا قال فانكم ترونه كذالك** . (بخارى شريف ، كتاب الآذان ، باب فضل السجود ، ص ١٣٠ ، نمبر ٨٠٦)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि बादल ना हो तो सूरज को देखने में कोई शक होता है, लोगों ने कहा नहीं! हूज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम इसी तरह बग़ैर शक के अल्लाह को देखोगे।

जहीमा फ़िरक़े ने कहा था कि आख़िरत में भी अल्लाह का दीदार नहीं होगा

इन की दलील यह आयत है:

(٥) **لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَ هُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارُ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ**

(آيت ١٠٣ ، سورت الانعام ٦)

तर्जुमाः निगाहें उस को नहीं पा सकतीं और वो तमाम निगाहों को पा लेता है, उस की ज़ात इतनी ही लतीफ़ है और वो इेतना ही बाख़बर है।

इस आयत में है कि निगाह को नहीं पा सकती जिस से उन्होंने इस्तदलाल किया है कि हम आख़िरत में भी अल्लाह को नहीं देख सकेंगे।

जम्हूर ने इस आयत का जवाब यह दिया है कि "درک" का मअ़नी है पूरे तौर पर घैरना, हमारी आंखें अल्लाह की ज़ात को घैर नहीं सकती, सिर्फ़ देख सकती है और इस आयत में यह बयान किया गया है कि जन्नत में भी हम अल्लाह को देखेंगे, लेकिन इस को इहाता नहीं कर पाऐंगे क्योंकि यह नामुमकिन है। इस आयत का यह मतलब नहीं है कि हम `अल्लाह को आख़िरत में देख ही नहीं पाऐंगे।

इस अ़क़ीदे के बारे में 5 आयतें और 10 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(5) हुज़ूर स०अ०व० को 10 बड़ी बड़ी फ़ज़ीलतें दी गई हैं

इस अ़क़ीदे के बारे में 12 आयतें और 16 हदीसें हैं, आप हर एक की तकफ़सील देखें।

हुज़ूर स0अ0व0 के लिए बड़ी बड़ी फ़ज़ीलतें ज़िक्र की जा रही हैं, ताकि यह अन्दाज़ा हो कि हुज़ूर स0अ0व0 का मक़ाम क्या है। इस में कोई शक नहीं आप की फ़ज़ीलतें सब से ज़्यादा हैं और अल्लाह के बाद सब से बड़ी शख़्सियत आप ही की है।

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

كشف الدُجٰى بجماله		بلغ العُلٰى بكماله
صلو عليه و آله		حسنت جميع خصاله

तर्जुमा: अपने कमाल में आप बुलन्दी तक पहुंच गये अपनी ख़ूबसूरती से आप ने अंधेरे का रौशन कर दिया आप की तमाम ख़सलतें बहुत अच्छी हैं, आप पर और आप की आल व औलाद पर दुरूद व सलाम हो।

बाज़ मर्तबा आदमी को हुज़ूर स0अ0व0 की फज़ीलत का पता नहीं होता है तो वो इस की शान में गुस्ताख़ी कर लेता है और बाज़ मर्तबा हुज़ूर स0अ0व0 के ख़त्म नबुव्वत का इन्कार करता है जिस की वजह से वो काफ़िर हो जाता है, इस लिए मैंने यह फ़ज़ाइल ज़िक्र किये ताकि हुज़ूर स0अ0व0 की मौहब्बत इन्सानों के दिल में बैठ जाये और वो उन की मौहब्बत ले कर दुनिया से जाये।

(1) हुज़ूर स०अ०व० की शफ़ाअ़त कुबरा दी जायेगी

मैदाने हशर में जब हिसाब व किताब नहीं हो रहा होगा तो लोग बहुत परेशान होंगे और चाहेंगे कि कम से कम हिसाब हो जाये इस के लिए लोग बहुत से नबियों के पास जाऐंगे, लेकिन वो इन्कार कर देंगे कि मैं इस सिफ़ारिश के लायक़ नहीं हूं, इस के लिए आप लोग हुज़ूर स0अ0व0 के पास जाऐं, लोग आप स0अ0व0 के पास आऐंगे, फिर आप स0अ0व0 सिफ़ारिश करेंगे, इसी का नाम शिफ़ाअ़ते कुबरा है, जो सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 के लिए ख़ास है।

गुनहगारों को जन्नत में दाख़िल कराना या अपनी उम्मत को जन्नत में ले जाने की सिफ़ारिश करना यह दूसरे अम्बिया भी करेंगे और सुलहा भी करेंगे, इस को शफ़ाअ़त सुग़रा कहते हैं, यह दूसरे अम्बिया भी करेंगे हुज़ूर स0अ0व0 को शफ़ाअ़ते कुबरा दी जायेगी।

इस की दलील यह हदीस है:

(۱) عـن انس قال قال رسول الله ﷺ يجمع الله الناس يوم القيامة فيـقـولـون لو استشفعنا على ربنا حتى يريحنا من مكاننا .....ثم يقال لى : ارفـع رأسک و سـل تـعـطـه ، و قـل يسـمـع ، و اشفع تشفع فارفع رأسى فـأحمد ربى بتحميد يعلمنى ، ثم اشفع فيحد لى حدا ثم اخرجهم من النار و ادخـلهـم الـجـنة ثـم اعـود فاقع ساجدا مثله فى الثالثة او الرابعة حتى ما يبقى فى النار الا من حبسه القرآن . (بخارى شريف ، كتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار ، ص ١١٣٦ ، نمبر ٦٥٦٥)

तर्जुमा: हुजूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह क़यामत के दिन लोगों को जमा करेंगे, लोग कहेंगे हमारे रब के सामने कोई सिफ़ारिश करता तो इस जगह से में आ़फ़ियत हो जाती......फिर मुझ से कहा जायेगा, सर उठाओ और मांगो दिया जायेगा कहो बात सुनी जायेगी, सिफ़ारिश करो सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी ता मैं सर उठाउंगा और ऐसी हम्द करूंगा जो अल्लाह उस वक़्त मुझे सिखाऐंगे, फिर मैं सिफ़ारिश करूंगा तो एक हद मुतअ़य्यन कर दी जायेगी, फिर मैं उन लोगों को जहन्नुम से निकालूंगा और जन्नत में दाख़िल करूंगा, कफिर पहले की तरह दोबारा में सज्दे में जाउंगा, यह तीसरी मर्तबा होगा या चौथी मर्तबा होगा यहां तक कि जहन्नुम में वही बाक़ी रहेंगे जिन को कुरआन रे रोके रखा है। (यानी सिर्फ़ काफ़िर जहन्नुम में बाक़ी रह जाऐंगे)।

इस हदीस में तीन बातें हैं:

(1) एक तो यह कि शिफ़ाअ़त कुबरा आप स0अ0व0 करेंगे।

(2) और दूसरी बात यह है कि क़यामत में भी आप स0अ0व0 अल्लाह तआ़ला से मांगेगे और अल्लाह तआ़ला देंगे

(3) और तीसरी बात यह है कि जितने बन्दों को निकालने की इजाज़त होगी इतने ही को जहन्नुम से निकालेंगे।

(2) हुज़ूर स०अ०व० को हौज़े कौसर दिया जायेगा जो किसी और को नहीं दिया गया है

(1) اِنَّا اَعْطَيْنَاکَ الْکَوْثَرَ فَصَلِّ لِرَبِّکَ وَانْحَرْ (آیت ۱.۲. سورۃ الکوثر۱۰۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर यक़ीन जानो हम ने तुम्हें कौसर अ़ता कर दी है इस लिए अपने रब की ख़ुशनुदी के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो।

इस आयत में अल्लाह फ़रमाते हैं कि आप स0अ0व0 को कौसर दिया।

इस के लिए हदीसें यह हैं:

(2) عن عبد الله بن عمر و قال النبی ﷺ حوضی مسيرة شهر مأؤه أبيض من اللبن و ريحه أطيب من المسک و كيزانه كنجوم السماء، من شرب منها فلا يظمأأبدا . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق ، باب فی الحوض، ص ۱۱۳۸، نمبر ۶۵۷۹)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरा हौज़र एक माह तक चलने की मुसाफ़त तक लम्बा है इस की ख़ुशबू मुश्क से भी ज़्यादा है और इस पर जो प्याले हैं वो आसमान में सितारे जितने हैं, जो इस का पानी एक मर्तबा पी लेगा वो कभी प्यासा नहीं होगा।

(3) سمعت انس بن مالک يقول ....فقال انه انزلت علی آنفا سورة فقراء بسم الله الرحمن الرحيم ، انا اعطيناک الکوثر ، حتی ختمها فلما قرئها هل تدرون ماالکوثر ؟ قالوا الله و رسوله اعلم ، قال فانه نهر وعدنيه ربی عز و جل فی الجنة و عليه خير کثير ، عليه حوض ترد عليه امتی يوم القيامة آنيته عدد الکواکب . (ابو داود شریف ، کتاب السنة ، باب فی الحوض ، ص ۶۷۱، نمبر ۴۷۴۷)

तर्जुमा: हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 फ़रमाते हैं कि...... हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मुझ पर अभी एक सूरत उतरी है फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर (اِنَّـا اَعْـطَيْـنٰـكَ الْـكَوْثَرَ) सूरत को अख़ीर तक तिलावत की, जब तिलावत कर चुके तो पूछा कि आप को मालूम है कि कौसर क्या है, लोगों ने कहा अल्लाह और उसके रसूल को मालूम है तो आप स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि एक नहर है, अल्लाह ने जन्नत में मुझ से इस का वादा किया है इस नहर में बहुत ख़ैर है इस पर हौज़ है क़यामत के दिन इस पर मेरी उम्मत आयेगी इस पर जो बर्तन है वो सितारों जितने हैं।

इस आयत और हदीस से मालूम हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 को हौज़र कौसर दिया जायेगा जो किसी और को नहीं दिया जायेगा।

(3) वसीला एक बहुत बड़ा मक़ाम है जो सिर्फ़ हुज़ूर स०अ०व० को दिया जायेगा

(4) عن عبد اللـه بن عمر بن العاص انه سمع النبى ﷺ يقول .....ثم سلوا لى الوسيلة ، فانها منزلة فى الجنة لا ينبغى الا لعبد من عباد اللـه و ارجو أن اكون انا هو ، فمن سأل لى الوسيلة حلت عليه الشفاعة .

(مسلم شريف ، باب استحباب القول مثل قول الموذن لمن سمعه ثم يصلى على النبى ثم يسأل اللـه لـه الوسيلة ، ص ١٦٣ ، نمبر ٣٨٣/٨٤٩/ ترمذى شريف كتاب المناقب ، باب سلو لى الوسيلة ، ص ٨٢٤، نمبر ٣٦١٢)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया......फिर मेरे लिए वसीला मांगे, वसीला जन्नत में एक मक़ाम है जो अल्लाह के बन्दों में से एक ही के लिए है मुनासिब है और मैं उम्मीद करता हूं कि वो मैं ही हूंगा। पस जो मेरे लिए वसीला मांगेगा उस के लिए मेरी शफ़ाअ़त हलाल हो गई।

(5) عن جابر بن عبد الله ان رسول الله ﷺ قال من قال حين يسمع النـداء ، اللهم رب هذه الدعوة التامة الصلاة القائمة آت محمد الوسيلة و الفضيلة و ابعثه مقاما محمودا الذى وعدته ، حلت له شفاعتى يوم القيامة . (بخارى شريف ، كتاب الاذان ، باب الدعاء عند النداء ، ص ١٠٢ ، نمبر ٦١٤)

तर्जुमाः आप स0अ0व0 ने फ़रमाया अज़ान सुनते वक़्त जो कहेगा, ऐ अल्लाह......हुजूर स0अ0व0 को वसीला दे, फ़ज़ीलत दे, और मक़ाम महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस का आप ने वादा फ़रमाया है, तो क़यामत के दिन इस के लिए मेरी सिफ़ारिश हलाल हो जायेगी।

इन दो हदीसों में है कि वसीला एक बहुत बड़ा मक़ाम है जो सिर्फ़ एक बन्दे को दिया जायेगा और वो सिर्फ़ हुजूर स0अ0व0 के लिए होगा।

(4) हुजूर स०अ०व० को ''लवाउल हम्द'' दिया जायेगा जो किसी और नहीं दिया जायेगा

''لـواء الـحـمـد'' का तर्जुमा है तारीफ़ का झण्ड़ा, क़यामत में आप स0अ0व0 अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करेंगे जो किसी और ने नहीं की होगी, इस लिए इस को ''लवाउल हम्द'' कहा जाता है, यह सिर्फ़ हुजूर स0अ0व0 को दिया जायेगा।

(6) عـن انـس بـن مـالک قـال قـال رسول الله ﷺ انا اول الناس خـروجـا اذا بـعـثـوا و انـا خـطيبهم اذا وفدوا و انا مبشرهم اذا أيسوا ،لواء الـحـمـد يـومـئـذ بيدى و انا اكرم ولد آدم على ربى و لا فخر . (تـرمذى شريف ، باب انا اول الناس خروجا اذا بعثوا ، ص ٨٢٣، نمبر ٣٦١٠)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब क़यामत में लोग निकलेंगे तो मैं सब से पहले निकलूंगा, जब अल्लाह के सामने वफ़्द ले कर जाऐंगे तो मैं उस का ख़तीब हूंगा, जब लोग मायूस

हो जाऐंगे तो मैं उन को ख़ुश ख़बरी देने वाला हूंगा, इस दिन हम्द का झण्ड़ा मेरे हाथ में होगा, मैं अल्लाह के सामने औलाद आदम में से सब से ज़्यादा मुकर्रम हूंगा, लेकिन इस में मुझे कोई फ़ख़र नहीं है।

इस हदीस में है कि क़यामत में मेरे हाथ में हम्द का झण्ड़ा होगा।

(5) हुज़ूर स०अ०व० ख़ातिमुल नबिय्यीन हैं कोई और नहीं हैं

ख़ातिमुल नबिय्यीन का मतलब यह है कि आप आख़िरी नबी हैं, अब आप के बाद कोई नबी नहीं आऐंगे।

इस के लिए यह और हादीस यह हैं:

(٢) مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ . (آیت ۴۰، سورة الاحزاب ۳۳)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वो अल्लाह के रसलू हैं और सब से आख़िरी नबी हैं।

(7) عن ابی هريرةؓ ان رسول الله ﷺ قال .... انا خاتم النبيين .

(بخاری شريف ، باب خاتم النبيين ، ص ۵۹۵، نمبر ۳۵۳۵ / ترمذی شريف ، باب ما جاء لا تقوم الساعة حتى يخرج كذابون ، ص ۵۰۹، نمبر ۲۲۱۹)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया मैं आख़िरी नबी हू।

(8) عن ثوبان قال قال رسول الله ﷺ ...و انه سيكون فی امتی كذابون ثلاثون كلهم يزعم انه نبی و انا خاتم النبيين لا نبی بعدی . **(ابو داود شريف ، كتاب الفتن ، باب ذكر الفتن و دلائلها، ص ۵۹۶، نمبر ۴۲۵۲)**

तर्जुमा: आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि: मेरी उम्मत में तीस झूटे हैं, हर एक यह गुमान करो कि वो नबी है, लेकिन बात यह है कि मैं आख़िरी नबी हूं, मेरे बाद कोई नबी नहीं।

इन आयत और अहादीस में है हुज़ूर स0अ0व0 आख़िरी नबी हैं और यह भी है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं आऐंगे इस लिए जो इस के बाद नबुव्वत का दअ़वा करता है वो झूटा है इस को हरगिज़ नबी नहीं मानना चाहिए।

(6) हुज़ूर स०अ०व० पूरी इन्सानियत के लिए नबी हैं

और जितने भी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम आये वो किसी ख़ास क़ौम के लिए थे, या ख़ास ज़माने के लिए थे, लेकिन हुज़ूर स0अ0व0 तमाम लोगों के लिए नबी बन कर आऐ, जिन्नात के लिए भी नबी हैं आर इन्सान के लिए भी नबी हैं और क़यामत तक के लिए नबी और रसूल हैं इस लिए आप स0अ0व0 की फ़ज़ीलत सब से ज़्यादा है।

इस के लिए आयतें यह हैं:

(٣) وَ مَا اَرْسَلْنَاکَ اِلَّا کَافَّةً لِلْنَاسِ بَشِیْراً وَّ نَذِیْراً .

(آیت۲۸، سورۃ السباء۳۴)

तर्जुमा: और ऐ रसूल हम ने तुम्हें सारे ही इन्सानों के लिए ऐसा रसूल बना कर भैजा है जो ख़ुश ख़बरी भी सुनाऐ और ख़बरदार भी करे।

(٤) قُلْ یَااَیُّهَا النَّاسُ اِنِّی رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْکُمْ جَمِیْعًا.

(آیت۱۵۸، سورۃ الاعراف۷)

तर्जुमा: आप कह दीजिए ऐ लोगो! तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल बना कर भैजा गया हूं।

(٥) و ما ارسلناک الا رحمة للعالمین . (آیت۱۰۷، سورۃ الانبیاء۲۱)

तर्जुमा: और ऐ पैग़म्बर! हम ने तुम्हें सारे जहानों के लिए रहमत ही रहमत बना कर भैजा है।

(٦) اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنُكُمْ ، وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامُ دِيْناً . (آیت ۳ ، سورت المائدة ۵)

तर्जुमा: आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया, तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के तौर पर हमैशा के लिए पसन्द कर लिया।

(٧) يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ .

(آیت ۱۳۰ ، سورت الانعام ٦)

तर्जुमा: ऐ जिन्नात और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास ख़ुद तुम में से वो पैग़म्बर नहीं आये जो तुम्हें मेरी आयतें पढ़ कर सुनाते थे, इन आयतों से पता चला कि आप इन्सान और जिन्नात सब के लिए नबी हैं।

(7) हुजूर स०अ०व० को मेअ़राज पर ले जाया गया और बड़ी बड़ी निशानियां दिखलाई

हुजूर स0अ0व0 को मेअ़राज में ले गए और बड़ी बड़ी निशानियां दिखलाईं, यह फ़ज़ीलत सिर्फ़ हुजूर स0अ0व0 के लिए किसी और नबी क लिए नहीं है......इन आयतों में इस का ज़िक्र है।

(٨) سُبْحَانَ الَّذِىْ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلاً مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلٰى الْمَسْجِدِ الَّذِىْ بَارَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ آيَاتِنَا اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ .

(آیت ۱ ، سورت الاسراء ۱۷)

तर्जुमा: पाक है वो ज़ात जो अपने बन्दे का रातों रात मस्जिद हराम से मस्जिद अक़सा तक ले गई, जिस के माहौल पर हम ने बरकतें नाज़िी की हैं ताकि उन्हें हम अपनी कुछ निशानियां दिखाऐं, बेशक वो हर बात को सुनने वाली और हर चीज़ को देखने वाली ज़ात है।

(۹) لَقَدْ رَأَیٰ مِنْ آیَاتِ رَبِّهِ الْکُبْرٰی (آیت ۱۸ ، سورت النجم ۵۳)

तर्जुमा: सच तो यह है कि उन्होंने अपने रब की निशानियों में से बहुत कुछ देखा।

(9) عن مالک بن صعصعةؓ ان نبی الله ﷺ حدثه عن لیلة اسری ، قال بینما انا فی الحطیم. ربما قال فی الحجر. مضطجعا اذا اتانی آت .....فانطلق بی جبریل حتی اتی السماء الدنیا فاستفتح ....ثم رفع لی البیت المعمور ، الخ. (بخاری شریف ، کتاب مناقب الانصار ، باب المعراج ، ص ۶۵۲، نمبر ۳۸۸۷)

तर्जुमा: हुजूर पाक स0अ0व0 ने मेअ़राज की रात के बारे में बयान किया कि क्या मैं हतीम में था, एक रिवायत में है कि मैं हजरे में लेटा हुआ था कि एक आने वाला आया, जिब्रईल अलैहिस्सलाम आये......मुझ को जिब्रईल अलैहिस्सलाम समा दुनिया तक ले गये और दरवाज़ा खुलवाया......फिर मुझे बैतुल मामूर तक ले गये।

इन आयात और अहादीस में यह भी है कि मेअ़राज में ले जाये गये और यह भी है कि निशानियां दिखलाई गईं।

(8) हुजूर स०अ०व० पर कुरआन उतारा जो किसी और पर नहीं उतारा

और अम्बिया पर छोटी छोटी किताबों उतारीं लेकिन हुजूर स0अ0व0 के ऊपर कुरआन जैसी किताब उतारी जो किसी और पर नहीं उतारी।

(۱۰) اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَیْکَ الْقُرْآنُ تَنْزِیْلاً .(آیت ۲۳، سورت الانسان ۷۶)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर! हम ने ही आप पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया है।

इस आयत में है कि हम ने आप पर कुरआन उतारा है।

(9) हुजूर स०अ०व० महबूब रब्बुल आ़लमीन हैं

इस के लिए हदीसें यह हैं:

(10) عـن عـلـى بـن عـلـى المكى الهلالى عن ابيه قال دخلت على رسـول الـله ﷺ فى شكاته الذى قبض فيها .....انا خاتم النبيين و اكرم الـنبييـن على الله و احب المخلوقين الى الله عز و جل . (طبرانی کبیر ، ج ۳،بـقية الاخبـار الـحسـن بن على ، ۵۷، نمبر ۲۶۷۵/ مستدرک للحاکم، كتاب تواريخ المتقدمين من الانبياء و المرسليين ، باب و من كتاب آيات رسول الله ﷺ التى هى دلائل النبوة ، ج ۲، ص ۶۷۲، نمبر ۴۲۲۸)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली अलहिलाली रह0 फ़रमाते हैं कि जिस मर्ज़ में हुजूर स0अ0व0 की वफ़ात हुई, मैं उस वक़्त हुजूर के पास गया......आप ने फ़रमाया मैं आख़िरी नबी और अल्लाह के नज़दीक सब मोअ़जिज़ हूं और अल्लाह के नज़दीक मख़लूक़ में से सब से ज़्यादा महबूब हूं।

(11) عـن انـس بـن مالـک قال قال رسول الله ﷺ... و انا اكرم ولـد آدم على ربى و لا فخر . (تـرمـذی شریف ، باب انا اول الناس خروجا اذا بعثوا ، ص ۸۲۳، نمبر ۳۶۱۰)

तर्जुमा: आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपने रब के नज़दीक मैं औलादे आदम में से सब से ज़्यादा मोअ़जिज़ हूं लेकिन इस में कोई फ़ख़र की बात नहीं है।

इन अहादीस में है कि हुजूर स0अ0व0 अल्लाह की मख़लूक़ में से सब ज़्यादा महबूब हैं।

(10) हुजूर स०अ०व० अव्वली और आख़िरीन के सरदार हैं कोई और नहीं है

(12) عـن ابى هريرة قال كنا مع النبى ﷺ فى دعوة .....و قال انا سيد الناس يوم القيامة . (بخاری شریف ، كتاب احاديث الانبياء ، باب قول الله

عز و جل ﴿ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوحاً اِلٰی قَوْمِہٖ [آیت ۲۵، سورت ھود ﴾ ص ۵۵۵، نمبر ۳۳۴۰)

तर्जुमा: हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं एक दअ़वत में हुज़ूर स0अ0व0 के साथ था......और आप ने फ़रमाया कि मैं क़यामत के दिन लोगों का सरदार हूंगा।

(13) عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ ﷺ انا سید ولد آدم و اول من تنشق عنہ الارض ، و اول شافع و اول مشفع. (ابو داود شریف، باب فی التخییر بین الانبیاء علیھم السلام، ص ۲۶۰، نمبر۴۶۷۳)

तर्जुमा: आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं औलादे आदम का सरदार हूं, ज़मीन जब फटेगी तो मैं सब से पहले निकलूंगा, मैं सब से पहले सिफ़ारिश करूंगा और मेरी सिफ़ारिश सब से पहले क़बूल की जायेगी।

इन 10 आयात और 13 हदीसों में हुज़ूर स0अ0व0 की फ़ज़ीलत ज़िक्र की गई है।

इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 की इत्तबा की जाये उन की गुस्ताख़ी हरगिज़ ना करें और ऐसे जुमले इस्तोल ना करें जिन से इन की गुस्ताख़ी होती हो लेकिन यह बात भी ज़हन में रहे कि इन को ईसाइयों की तरह इतना ना बढ़ादें कि अल्लाह के दरजे में पहुंचा दें हुज़ूर स0अ0व0 ने इस से भी मना फ़रमाया है।

हुज़ूर स०अ०व० की जितनी फ़ज़ीलतें हैं इतने ही पर रखने की तालीम दी गई है, इस से ज़्यादा बढ़ाना ठीक नहीं है

इस के लिए यह आयतें हैं:

(۱۱) قُلْ یَا اَھْلَ الْکِتَابِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِکُمْ غَیْرَ الْحَقِّ .

(آیت ۷۷، سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमा: ऐ अहले किताब अपने दीन में नाहक़ ग़ुलू ना करो।

(۱۲) لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِکُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا عَلَی اللّٰہِ اِلَّا الْحَقِّ .

(آیت ۱۷۱، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: ऐ अहले किताब! अपने दीन में हद से ना बढ़ो, और अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा कोई बात ना कहो।

हुज़ूर स0अ0व0 को जितनी फ़ज़ीलत क़ुरआन में दी है इसी पर रखना अफ़ज़ल है इस से बढ़ाना अच्छा नहीं है।

इस के लिए हदीसें यह हैं:

(14) سمع عمرؓ یقول علی المنبر سمعت النبی ﷺ یقول لا تطرونی کما اطرت النصاری ابن مریم فانما انا عبدہ فقولوا عبد اللہ و رسولہ . (بخاری شریف، احادیث الانبیاء، باب قول اللہ تعالی ﴿وَ اذْکُرْ فِیْ الْکِتَابِ مَرْیَمَ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَھْلِھَا﴾ (آیت ۱۶، سورت مریم) (ص ۵۸۰، نمبر ۳۴۴۵)

तर्जुमा: हज़रत उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया कि मिम्बर पर हुज़ूर स0अ0व0 को कहते हुए सुना है कि मुझे तारीफ़ में हद से ज़्यादा ना बढ़ाओ, जैसे हज़रत ईसा बिन मरयम को बढ़ाया, मैं अल्लाह का बन्दा हूं, इस लिए अल्लाह का बदा और उस का रसूल कहा करो।

इस हदीस में है कि जैसे नसारा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बहुत बढ़ाया यहां तक कि अल्लाह के क़रीब कर दिया, तुम भी मुझे इतना ना बढ़ा देना, मुझे सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा और और उस का रसूल कहा करो।

(15) عن ابی سعید الخدری قال قال رسول اللہ ﷺ لا تخیروا بین الانبیاء . (ابو داود شریف، باب فی التخییر بین الانبیاء علیهم السلام، ص ۶۶۰، نمبر ۴۶۶۸)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मुझे अम्बिया के दरमियान फ़ज़ीलत मत दो।

इन अहादीस में है कि मुझे नबियों पर बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत मत दो, इस लिए आयत और अहादीस में हुजूर स0अ0व0 के लिए फ़ज़ीलत साबित हैं इतनी ही फ़ज़ीलत बयान करनी चाहिए इस से ज़्यादा करना गुमराही है।

इस हदीस में है कि जितना हदीस और कुरआन में है, इस से ज़्यादा करना बिदअ़त है, और बिदअ़त का अंजाम गुमराही है, इस लिए यह काम नहीं करना चाहिए।

(16) حدثنی عبد الرحمن بن عمر السلمی ....و ایاکم و محدثات الامور فان کل محدثة بدعة و کل بدعة ضلالة. (ابو داود شریف، کتاب السنة ، باب فی لزوم السنة ، ص ۶۵۱، نمبر ۴۶۰۷، نمبر ۴۶۰۷/ مسلم شریف، کتاب الجمعة ، باب تخفیف الصلاة و الخطبة ، ص ۳۴۷، نمبر ۸۶۷/ ۲۰۰۵)

तर्जुमाः दीन में नई नई बातें पैदा करने से बचा करो, इस लिए कि दीन में नई बात करना बिदअ़त है और हर बिदअ़त का अंजाम गुमराही है।

इन 2 आयतों और 3 हदीसों में है कि कुरआन और हदीस में जितना है, उस से ज्यादा करना ठीक नहीं है......यह गुमराही है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 12 आयतें और 16 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(6) हुजूर स०अ०व० बशर हैं लेकिन अल्लाह के बाद तमाम कायनात से अफ़ज़ल हैं

इस अ़क़ीदे के बारे में 28 आयतें और 8 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

हुजूर स0अ0व0 पर जो आयतें उतरी हैं वो नूर हैं, आप की रिसालत नूर है, आप पर उतरा हुआ कुरआन नूर है, ईमान नूर है

और यह तमाम सिफ़तें हुज़ूर स0अ0व0 में अतम दरजे में हैं इस लिए इन सिफ़ात के ऐतबार से आप नूरी हैं, लेकिन ज़ात के ऐतबार से आप इन्सान हैं, क्योंकि आप इन्सान में पैदा किये गये हैं, आप खाते थे, पीते थे शादी ब्याह की और ईन्सान की तरह ज़िन्दगी गुज़ारी।

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

आप स0अ0व0 मख़्लूक़ में से सब से ज़्यादा महबूब हैं

इस के लिए हदीसें यह हैं:

(1) عن ابن عباس قال اوحی الله الی عیسی بن مریم ...فلو لا محمد ما خلقت آدم ، و لولا محمد ما خلقت الجنة و لا النار ، و لقد خلقت العرش علی الماء فاضطرب فکتبت علیه لا اله الا الله محمد رسول الله فسکن . (مستدرک للحاکم ، و من کتاب آیات رسول الله التی هی دلائل النبوة ، ج۲،ص۶۷۲،نمبر ۴۲۲۷،متوفی ۴۰۵ھ)

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने हज़रत ईसा को वही भैजी......अल्लाह ने फ़रमाया मौहम्मद स0अ0व0 नहीं होते तो मैं हज़रत आदम को पैदा नहीं करता, और मौहम्मद स0अ0व0 नहीं होते ता मैं जन्नत और जहन्नुम पैदा नहीं करता, मैं ने अ़र्श को पानी पर पैदा किया तो वो हिलने लगा तो मैंने इस अ़र्श पर "لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰـهِ" लिखा तो वो साकिन हो गया।

(2) عن عمر بن الخطاب قال قال رسول الله ﷺ لما اقترف آدم الخطية ...فرأیت علی قوائم العرش مکتوبا ، لا اله الا الله محمد رسول الله،فعلمت انک لم تضف الی ا سمک الا احب الخلق الیک ، فقال الله : صدقت یا آدم انه لاحب الخلق الی، ادعنی بحقه فقد غفرت لک ، و لولا

محمد ما خلقتک . (مستدرک للحاکم ، و من کتاب آیات رسول الله التی هی دلائل النبوة ، ج۲،ص۶۷۲،نمبر۴۲۲۸،متوفی۴۰۵ھ)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ग़लती की...... मैंने अ़र्श के पाये पर ”لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ“ लिखा हुआ देखा तो समझ गया कि अल्लाह अपने नाम के साथ सिर्फ़ महबूब को ही मिला सकता है, तो अल्लाह ने फ़रमाया! तुम ने सच कहा, हज़रत मौहम्मद मुझ को मख़लूक़ में से सब ज़्यादा महबूब हैं, आप ने उन का वसीला ले कर दुआ़ की तो मैंने तुम को माफ़ कर दिया अगर मौहम्मद ना होते तो मैं तुम्हें भी पैदा ना करता।

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि हुजूर स0अ0व0 कायनात में सब से अफ़ज़ल हैं।

नोट: यह हदीस सिहाहे सित्ता या उन के ऊपर की किताब में मुझे नहीं मिली और हाशिया वाले ने लिखा है कि मेरा गुमान यह है कि यह हदीस मौजूअ़ है, लेकिन चूंकि फ़ज़ीलत में यह हदीस थी, इस लिए नाचीज़ ने इस को ज़िक्र कर दिया।

हुजूर स०अ०व० से ऐलान करवाया गया कि मैं इन्सान हूं

इन 3 आयातें में हसर और ताकीद के साथ आप स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया है कि आप स0अ0व0 बशर है अलबत्ता आप पर वही आती है जो बहुत बड़ी फ़ज़ीलत की चीज़ है।

(۱) قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحىٰ اِلَيَّ اَنَّمَا اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ. (آیت۱۱۰،سورۃالکہف۱۸)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि मैं तो तुम्ही जैसा एक इन्सान हूं अलबत्ता मुझ पर यह वही आती है कि तुम सब का ख़ुदा बस एक ही ख़ुदा है।

(٢) قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحىٰ اِلَىَّ اَنَّمَا اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ .
(آیت٦،سورۃ فصلت٤١)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि मैं तो तुम्ही जैसा एक इन्सान हूं अलबत्ता मुझ पर यह वही आती है कि तुम सब का ख़ुदा बस एक ही ख़ुदा है।

(٣) قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَراً رَّسُوْلًا . (آیت٩٣،سورت الاسراء١٧)

तर्जुमा: कह दीजिए, सुब्हान अल्लाह, मैं तो एक बशर हूं जिसे पैग़म्बर बना कर भेजा गया।

इन तीनों आयतों में ऐलान करवाया गया कि मैं तुम्हारी तरह इन्सान हूं, अल्बत्ता मेरे पास वही आती है।

(٤) وَ مَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدِ أَفَائِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُوْنَ
(آیت٣٤،سورۃ الانبیاء٢١)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर तुम से पहले भी हमैशा ज़िन्दा रहना हम ने किसी फ़र्द बशर के लिए तेय नहीं किया, चुनांचे अगर आप का इन्तक़ाल हो गा तो क्या यह लोग ऐसे हैं जो हमैशा ज़िन्दा रहेंगे।

(٥) قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ . (آیت١١،سورۃ ابراہیم١٤)

तर्जुमा: इन क़ौमों से इन के पैग़म्बरों ने कहा हम वाक़ई तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं।

(٦) وَ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْياً اَوْ مِنْ وَّرَاءِ حِجَابٍ.
(آیت٥١،الشوری٤٢)

तर्जुमा: किसी इन्सान में यह ताक़त नहीं कि अल्लाह उस से रूबरू बात करे, सिवाऐ इस के कि वो वही के ज़रिये हो, या किसी परदे के पीछे से हो।

इन 3 आयतों में ऐलान तो नहीं करवाया, लेकिन इशारा है कि रसूल इन्सान होते हैं।

इन हदीसों में हुजूर स०अ०व० ने ऐलान किया है कि मैं इन्सान हूं

हदीसें यह हैं:

3.قال عبد الله صلى النبى ﷺ .....قال انه لو حدث فى الصلوة شىء لنبأتكم به و لكن انما انا بشر مثلكم انسى كما تنسون فاذا نسيت فذكرونى . (بخارى شريف ، كتاب الصلاة، باب التوجه نحو القبلة حيث كان ، ص ٧٠، نمبر ٤٠١/ مسلم شريف ، كتاب المساجد ، باب السهو فى الصلاة والسجود له ، ص ٢٣٢ ،نمبر ٥٧٢، / ١٢٨٥)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि हुजूर स0अ0व0 ने नमाज़ पढ़ाई......हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि नमाज़ में कोई नया हुक्म आता तो मैं तुम लोगों को ज़रूर बताता, मैं तुम्हारी तरह इन्सान हूं, जिस तरह तुम भूलते हो मैं भी भूलता हूं, पस जब मैं भूल जाउं तो मुझे याद दिलाया करो।

4.ان امها ام سلمة زوج النبى ﷺ .....فخرج اليهم فقال : انما انا بشر و انه يأتينى الخصم فلعل بعضكم ان يكون ابلغ من بعض فاحسب انه صدق فاقضى له بذالك . (بخارى شريف ، كتاب المظالم ،باب اثم من خاصم فى باطل و هو يعلمه ، ص ٣٩٦، نمبر ٢٤٥٨)

तर्जुमा: उम्मे सलमा रज़ि0 ने फ़रमाया कि......हुजूर स0अ0व0 इन झगड़ने वालों के पास आये और फ़रमाया कि मैं इन्सान हूं, मेरे पास मुद्दआ़ और मुद्दआ़ अलैहि आते हैं ऐसा हो सकेता है कि बाज़ आदमी अपनी दलील पैश करने में ज़्यादा माहिर हो, जिस से मैं गुमान कर लूं कि यही सच्चा है, जिस की वजह से मैं इस के लिए चीज़ का फ़ैसला कर दूं।

5.انه سمع موسى بن طلحة بن عبيد الله يحدث عن ابيه ، قال مررت مع

رسول الله ﷺ فی نخل ......فبلغ النبی ﷺ فقال انما هو الظن ان کان یغنی شیئا فا صنعوه، فانما انا بشر مثلکم، و ان الظن یخطی و یصیب . (ابن ماجة شريف ،کتاب الرهون ، باب تلقيح النخل ، ص ۳۵۴، نمبر ۲۴۷۰)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 खजूर के बाग़ से गुज़र रहे थे......हुजूर स0अ0व0 को यह बात पहुंची कि (इस साल खजूर कम आई है) तो आप ने फ़रमाया कि यह एक मेरा गुमान था, अगर कोई चीज़ काम आती हो तो इस को करलो, मैं तुम्हारी तरह एक इन्सान हूं गुमान कभी सुबह तभी होता है और कभी ग़लत भी होता है।

इन 6 आयात और 3 आदीस में बार बार आप ने ऐलान किया है कि मैं इन्सान हूं।

यूं भी हुजूर स0अ0व0 इन्सानी नसल में पैदा हुए हैं, इन्सानी नसल में शादी ब्याह की है तो आप नूर कैसे हो सकते हैं।

इन्सान फ़रिश्तों से भी आ़ला है

इन्सान फ़रिश्तों से भी आ़ला है इस लिए इस को फ़रिश्तों में या नूरी मख़लूक़ में दाख़िल करना मुनासिब नहीं है।

इस की दलील यह है:

शरह अ़क़ाइद इबारत यह है:

رسل البشر افضل من رسل الملائكة ، و رسل الملائكة افضل من عامة البشر ، و عامة البشر افضل من عامة الملائكة . (شرح عقائد النسفية ، ص ١٧٦)

तर्जुमा: इन्सान में जो रसूल हैं वो फ़रिश्तों के रसूल से अफ़ज़ल हैं और फ़रिश्तों में जो रसूल हैं वो आ़म इन्सान से अफ़ज़ल हैं और आ़म इन्सन आ़म फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

शरह अ़क़ाइद की इबारत से तीन बातें मालूम हुई

(1) आ़म इन्सान आ़म फ़रिश्तों से अफ़जल हैं।

(2) बड़े फ़रिश्ते जिन को फ़रिश्तों का रसूल कहते हैं वो आ़म इन्सानों से अफ़ज़ल हैं।

(3) और तीसरी बात यह है कि फ़रिश्तों के रसूलों से भी इन्सान के रसूल अफ़ज़ल हैं।

इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 इन्सान होने के नाते तमाम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

इस लिए आप स0अ0व0 को नूरी मख़लूक़ में शामिल करना, आप स0अ0व0 की हैसयत को गिराना है।

अहले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीदा यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 अल्लाह के बाद सब से अफ़ज़ल हैं

इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 मख़लूक़ में 7 दरजे ऊपर हैं।

(1) क्योंकि हुज़ूर स0अ0व0 ख़ातिमुल रूसुल हैं।

(2) आप स0अ0व0 के नीचे तमाम रसूल हैं।

(3) इन के नीचे तमाम नबी हैं।

(4) इन के नीचे बड़े फ़रिश्ते हैं।

(5) इन के नीचे आ़म इन्सान हैं।

(6) इन के नीचे आ़म फ़रिश्ते हैं।

(7) इन के नीचे बाक़ी मख़लूक़ात हैं।

वो आयतें जिन में इन्सान को फ़रिश्तों से अफ़ज़ल शुमार किया गया है

आ़म इन्सान आ़म फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

इस की दलील यह आयतें हैं:

7.وَ لَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوْا لِآدَمَ فَسَجَدُوْا اِلَّا اِبْلِيْسَ . (آيت ١١، سورت الاعراف٨)

तर्जुमा: और हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारी सूरत बनाई फिर फ़रिश्तों से कहा आदम को सज्दा करो, चुनांचे सब ने सज्दा किया सिवाऐ इब्लीस के।

8.فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ . (آيت ٣٠، سورت الحجر ١٥)

तर्जुमा: चुनांचे सारे के सारे फ़रिश्तों ने हज़रत आदम को सज्दा किया।

9.فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ . (آيت٧٣، سورت ص٣٨)

तर्जुमा: चुनांचे सारे के सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया।

इन 3 आयतों में है कि सारे फ़रिश्तों से इन्सान को ताज़ीमी सज्दा कराया गया है जिस से मालूम हुआ कि आ़म इन्सान आ़म फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

10.وَ لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِیْ آدَمَ وَ حَمَلْنَا هُمْ فِیْ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ. (آيت ٧٠، سورت الاسراء ١٧)

तर्जुमा: और हक़ीक़त यह है कि हम ने आदम की औलाद को इ़ज़्ज़त बख़्शी और उन्हें ख़ुशकी और सुन्दर दोनों में सवारियां मुहय्या की हैं।

11.وَ التِّيْنِ وَ الزَّيْتُوْنِ وَ طُوْرِ سِيْنِيْنَ وَ هٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ . (آيت ١ . ٤. سورت التين ٩٥)

तर्जुमा: क़सम है इंजीर और ज़ैतून की और सहराऐ सीना के तूर पहाड़ की और इस अमन व अमान वाले शहर की कि हम ने इन्सान को बेहतरीन सांचे में ढ़ाल कर पैदा किया है।

इन आयतों में चार क़समें खा कर कहा कि इन्सान को बहुत अच्छे अन्दाज़ में पैदा किया है।

12. وَ عَلَّمَ آدَمَ الْاَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ اَنْبِئُوْنِیْ بِاَسْمَاءِ هٰؤُلَاءِ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ ، قَالُوْا سُبْحَانَکَ لَا عِلْمَ لَنَا اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ، قَالَ يَآ دَمُ اَنْبِئْهُمْ بِاَسْمَاءِ هِمْ فَلَمَّا اَنْبَاَهُمْ بِاَسْمَائِهِمْ ، قَالَ

اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ . (آیت میں ۳۱. ۳۳، سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: और आदम को अल्लाह ने सारे नाम सिखाऐ, फिर इन को फ़रिश्तों के सामने पैश किया और इन से कहा अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ, फ़रिश्ता बोल उठे आप ही की ज़ात पाक है, जो कुछ इल्म आप ने हमें दिया है इस के सिवा हम कुछ नहीं जानते, हक़ीक़त में इल्म व हिक्मत के मालिक तो सिर्फ़ आप हैं, अल्लाह ने कहा, आदम तुम इन को इन चीज़ों के नाम बता दो चुनांचे जब हज़रत आदम ने इन के नाम इन को बता दिये तो अल्लाह ने फ़रिश्तों से कहा क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन के भैज जानता हूं।

इन 6 आयात से मालूम हुआ कि आ़म आदमी आ़म फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है, इसी लिए तो इन्सान को अशरफ़ उल मख़लूक़ात कहते हैं।

और इन्सानी रसूल फ़रिश्तों के रसूल से अफ़ज़ल इस लिए हैं कि सब से बड़े और अफ़ज़ल फ़रिश्ता जिब्रईल अलैहिस्सलाम हैं और जिब्रईल अलैहिस्सलाम तमाम रसूलों को पैग़ाम पहुंचाते थे, जिस से मालूम हुआ कि रसूल अहम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

मेअ़राज की रात हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हुजूर स0अ0व0 के ख़ादिम बन कर हुजूर स0अ0व0 को आसमान पर ले गये थे, इस से भी मालूम हुआ कि हुजूर स0अ0व0 सब फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

इस के लिए हदीस यह है:

6.مضطجعا اذا اتانی آت .....فانطلق بی جبريل حتى اتى السماء الدنيا فاستفتح ....ثم رفع لی البيت المعمور ، الخ. (بخاری شریف ، کتاب مناقب الانصار ، باب المعراج ، ص ۶۵۲، نمبر ۳۸۸۷)

तर्जुमाः मैं हतीम में सोया हुआ था...... मुझ को जिब्राईल अलैहिस्सलाम ले गये, यहां तक कि समा दुनिया तक लाये और दरवाज़ा खुलवाया......फिर बैतुल मअ़मूर तक मुझे ले गये।

इस हदीस में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ख़ादिम बन कर हुजूर स0अ0व0 को मेअ़राज में ले गये हैं इस लिए हुजूर स0अ0व0 तमाम फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल हैं।

और हुजूर स0अ0व0 सब रसूलों से अफ़ज़ल हैं इस के लिए कई आयतें गुज़र चुकी हैं।

एक आयत यह भी हैः

13. وَ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

(آیت ۴۰ ، سورت الاحزاب ۳۳)

तर्जुमाः मुसलमानो! मौहम्मद स0अ0व0 तुम मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वो अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में से सब से आख़िरी नबी हैं।

इन 7 आयत और एक हदीस से मालूम हुआ कि इन्सान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं और हुजूर स0अ0व0 सब से अफ़ज़ल हैं।

हिन्दुओं का अक़ीदा है कि भगवान इन की देवी और देवता के रूप में आते रहे हैं

हिन्दुओं का अक़ीदा यह है कि भगवान यानी ख़ुदा इन की देवी और देवताओं के रूप और शक्ल में आते रहे हैं और आज भी आते रहते हैं, इसी लिए वो देवी और देवताओं की पूजा करते हैं इन के सामने माथा टैकते हैं इन पर चढ़ावा चढ़ाते हैं और इन से अपनी हाजतें मांगते हैं।

मुसलमानों को भी शुब्हा ना हो कि ख़ुदा हुजूर स0अ0व0 की शक्ल में आये हों और यह भी अल्लाह के नूर का हिस्सा हों, इस लिए 6 आयतों में हुजूर स0अ0व0 से ताकीद के साथ ऐलान

करवाया कि मैं बशर हूं, इन्सान हूं, मैं नूरी मख़लूक़ नहीं हूं, ख़ुदा मेरे रूप में, या शक्ल में नहीं आया है, इस लिए ना मेरी इबादत करो, और ना मुझ से अपनी हाजत रवाई की दरख़्वास्त करो, मैं भी ख़ुदा से मांगता हूं और तुम भी ख़ुदा ही से मांगो, यही तालीम देने के लिए हुज़ूर स0अ0व0 को मबऊ़स किया था और यही दीने इस्लाम है।

वो आयतें और अहादीस जिन से हुज़ूर स०अ०व० के नूरी होने का शुब्हा होता है

14. يَا اَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَ كُمْ رَسُوْلَنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْراً مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتَابِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ قَدْ جَاءَ كُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتَابٌ مُّبِيْنٌ . يَهْدِىْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلٰمِ وَ يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلٰى النُّوْرِ بِاِذْنِهِ وَ يَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (آيت ١٥ .١٦ ، سورت المائده ٥)

तर्जुमा: ऐ अहले किताब तुम्हारे पास हमारे यह पैग़म्बर आ गये हैं, जो किताब (तौरात और इंजील) की बहुत सी बातों को खोल खेल कर बयान करते हैं, जो तुम छुपाया करते थे और बहुत सी बातों से दरगुज़र कर जाते हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एके रौशनी आई है और एक ऐसी किताब जो हक़ को वाज़ह कर देने वाली है, जिस के ज़रिये अल्लाह इन लोगों को सलामती की राह दिखाता है, जो इस की ख़ुशनुदी के तालिब हैं, और उन्हें अपने हुक्म से अंधेरियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाता है, और उन्हें सीधे रासते की हिदायत अ़ता करता है।

इस आयत में नूर से मुराद हुज़ूर स0अ0व0 को लिया है इस की वजह यह है कि तफ़सीर जलालीन में नूर की तफ़सीर में सिर्फ़ "هو النبی ﷺ" कहा है, जिस से मालूम हुआ कि नूर से मौहम्मद स0अ0व0 मुराद हैं।

लेकिन तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 में है कि इस आयत में नूर

से मुराद हुज़ूर स0अ0व0 की रिसालत है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की तफ़सीर यह है: (قَدْجَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ) रसूल, यानी मौहम्मद यहां नूर की तफ़सीर में पहले रसूल, लाये, फिर मौहम्मद, लाये हैं जिस का मतलब यह हुआ कि आप की रिसालत नूर है, ख़ुद हुज़ूर की ज़ात नूर नहीं हुई, और वो कैसे हो सकती है क्योंकि पहले कई आयतों में यह ऐलान करवाया गया कि आप इन्सान हैं।

आगे आयत नम्बर 16 में नूर से मुराद ईमान है, तफ़सीर यह है: (وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ) من الكفر الى الإيمان (تنوير المقياس، من تفسير ابن عباس: ص ۹ ا ا، آيت ۱۵،۱٦ ا، سورة المائدة ۵) इस तफ़सीर में नूर का तर्जुमा ईमान किया है जिस से मालूम हुआ कि नूर के मुख़्तलिफ़ तर्जुमे हैं।

तीसरी दलील यह है कि इस आयत के शुरू में: (يٰاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْجَآئَكُمْ رَسُوْلُنَا) कहा है इस से भी साबित होता है कि अहल किताब को यह बतलाना है कि तुम्हारे पास मेरा रसूल आ गया है, इस से भी पता चलता है कि यहां नूर से मुराद हुज़ूर स0अ0व0 की रिसालत है।

आर इस में कोई शक नीं कि आप का दीन आप की रिसालत और आप की हिदायत नूर है और ऐसा नूर है जा सूरज और चांद की रौशनी से भी बरतर है।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने नूर की तफ़सीर सिर्फ़ मौहम्मद स0अ0व0 से की है, जिस की वजह से बाज़ हज़रात समझते हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 की ज़ा नूर है लेकिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 की असली तफ़सीर देखें तो मालूम होता है कि यहां हुज़ूर स0अ0व0 की रिसालत मुराद है वरना नूर वाली तफ़सीर दसियों आयतों से मुतज़ाद हो जायेगी।

नूर का मअ़नी कहीं नूर नबुव्वत है, कहीं कुरआन है और कहीं हिदायत है इस लिए एक मुबहम लफ़्ज़ से हुजूर स0अ0व0 को नूर साबित करना मुश्किल है।

यही वो आयत है जिस से बाज़ हज़रात हुजूर स0अ0व0 को नूर साबित करने की कौशिश करते हैं।

आप भी ग़ौर फ़रमालें।

इस आयत से भी बाज़ हज़रात ने इसतदलाल किया है कि हुजूर स0अ0व0 नूर हैं।

15. يَا اَيُّهَا النَّبِیُّ اِنَّا اَرْسَلْنَاکَ ، شَاهِداً وَ مُبشِراً وَ نَذِيْراً ، وَ دَاعِياً اِلٰی اللّٰهِ سِرَاجاً مُّنِيْراً . (آيت ۴۵. ۴۶، سورت احزاب ۳۳)

तर्जुमा: ऐ नबी बेशक हम ने तुम्हें ऐसा बना कर भैजा है कि तुम गवाही देने वाले हो, ख़ुश ख़ब्री सुनाने वाले हो और ख़बरदार करने वाले हो, और अल्लाह के हुक्म से लोगों को अैल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले हो और रौशनी फै़लाने वाले चिराग़ हो।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 की तफ़सीर में है कि यहां: "**سراجاً منيرا**" से मुराद ऐसी रौशनी है जिस की इक़्तदा की जाये, यानी आज की हिदायत और नबुव्वत, तफ़सीर यह है: "**سِرَاجاً مُّنِيْراً**" इस तफ़सीर में सिराज से मुराद चिराग़ नहीं है, बक्कि आप की नबुव्वत वाली रौशनी है जिस की लोग इक़्तदा करें।

कुरआन में नूर 5 मअ़ानी में इस्तेमाल हुआ है

कुरआन में नूर पांच मअ़ानी में इस्तेमाल हुआ है कभी कुरआन के मअ़नी में, कभी रिसालत के मअ़नी में कभी ईमान के मअ़नी में कभी अहकाम के मअ़नी में और कभी दीन के मअ़नी में इस्तेमाल हुआ है, इस लिए कुरआन की इस आयत में जो: (**قَدْجَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ**) (آيت/۱۵،سورة المائده/۵) मैं नूर से हुजूर स0अ0व0 को लेना ज़रूरी नहीं है, इस से इन की रिसालत भी

मुराद हो सकती है जैसा कि तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में नूर से हुजूर स0अ0व0 की रिसालत मुराद ली है, और अगर इस नूर से हुजूर स0अ0व0 की ज़ात मुराद लेते हैं तो यह आयत ऊपर की 12 आयतों के ख़िलाफ़ हो जायेगा, जिस में हसर और ताकीद के साथ यह ऐलान करवाया गया है कि मैं इन्सान हूं।

आप ख़ुद भी ग़ौर करलें।

(1) इन दो आयतों में नूर से कुरआन मुराद है।

16.وَ اتَّبَعُوْا النُّوْرَ الَّذِىْ اَنْزَلَ مَعَهُ اُوْلٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

(آيت ۱۵۷ ، اعراف ۷)

तर्जुमा: तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में यहां नूर से मुराद कुरआन है।(۷/۱۵۷) . ﴿وَ اتَّبَعُوْا النُّوْرَ﴾ القرآن

. مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتَابُ وَ لَا الْاِيْمَانُ وَ لٰكِنْ جَعَلْنَاهُ نُوْراً .

(آيت ۵۲، الشورى ۴۲)

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में यहां कुरआन को नूर कहा है।(وَلٰكِنْ جَعَلْنَاهُ) قلنا يعنى القرآن (نُوْرًا) بيان اللامر والهى (۴۲/۵۲)

इन आयतों में नूर से कुरआन मुराद लिया गया है।

(2) इन दो आयतों में नूर से मुराद ईमाल है।

19. وَ يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلٰى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ . (آيت ۱۶ ، سورت المائدة ۵)

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में यहां नूर से मुराद ईमान है।

﴿ وَ يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلٰى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ ﴾ من الكفر الى الايمان .

(آيت ۱۶ ، سورت المائدة ۵)

20.هُوَ الَّذِىْ يُصَلِّىْ عَلَيْكُمْ وَ مَلَائِكَتِهٖ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلٰى النُّوْرِ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْماً . (آيت ۴۳، سورت الاحزاب ۳۳)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 की तफ़सीर में है कि यहां नूर से मुराद ईमान है और जुलुमात से मुराद कुफ़्र है। तफ़सीर यह है।

﴿ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ ﴾ قد اخرجكم من الكفر الى الايمان . (آيت ۴۳، سورت الاحزاب ۳۳)

इस तफ़सीर में नूर का तर्जुमा ईमान है।

(3) इस आयत में नूर से मुराद अहकाम हैं:

21.اِنَّا اَنْزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيْهَا هُدًى وَ نُوْرٌ . (آيت ۴۴، سورت المائده ۵)

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में यहां नूर से मुराद अहकाम हैं ﴿ اِنَّا اَنْزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيْهَا هُدًى وَ نُوْرٌ ﴾من الضلالة﴿ و نور﴾ بيان الرجم . (آيت ۴۴، سورت المائده ۵)

(4) इस आयत में नूर से मुराद दीन है:

22 .يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ يَاْبَى اللّٰهُ اِلَّا اَنْ يُتِمَّ نُوْرَهُ وَ لَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ . (آيت ۳۲، سورت التوبة ۹)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास रज़ि0 की तफ़सीर में है कि यहां नूर से मुराद अल्लाह का दीन है, तफ़सीर यह है। (نُوْرَ اللّٰهِ) दीन अल्लाह ﴿اِلَّا اَنْ يُتِمَّ نُوْرَهُ ﴾ الا ان يظهر دينه الاسلام . (تنوير المقياس ، من تفسير ابن عباس ، ص ۲۰۲، آيت ۳۲، سورت التوبة ۹) इस तफ़सीर में नूर का तर्जुमा दीने इस्लाम किया है।

23.يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ . (آيت ۸، سورت الصف ۶۱)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 की तफ़सीर में है कि यहां नूर से मुराद अल्लाह का दीन है या अल्लाह की किताब कुरआन है। तफ़सीर यह है: ﴿ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ﴾ ، ليبطلوا دين الله و يقال كتاب الله القرآن .﴿ و الله متم نوره ﴾ مظهر نور كتابه و دينه . (آيت۸، سورت الصف ۶۱) इस तफ़सीर में नूर का तर्जुमा दीन और किताब किया गया है।

(5) इस आयत में नूर से मुराद हुज़ूर स0अ0व0 की रिसालत है:

18﴿ قَدْ جَاءَ كُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتَابٌ مُّبِيْنٌ ﴾
(آیت ۱۵، سورت المائده ۵)

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 में यहां नूर से मुराद रिसालत है ﴿ قَـدْ جَـاءَ كُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ ﴾ रसूल यानी मौहम्मद (15/5) यहां नूर की तफ़सीर में पहल रसूल लाये, फिर मौहम्मद लाये हैं जिस का मतलब यह हुआ कि आप की रिसालत नूर है, ख़ुद हुज़ूर स0अ0व0 की ज़ात नूर नहीं है।

जब नूर कुरआन में पांच मआ़नी में इस्तेमाल हुआ है: तो قَـــدْ جَـاءَ كُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتَابٌ مُّبِيْن، (آیت۱۵، سورت المائده ۵) में नूर से मुराद हुज़ूर स0अ0व0 ही को क्यों लें जब कि वो 16 के ख़िलाफ़ हो जायेगा इस लिए बेहतर यह है कि यूं कहा जाये कि हुज़ूर स0अ0व0 बशर थे, लेकिन इन में ईमान, रिसालत, कुरआन, दीन और अहकाम की सिफ़त अतम दरजे में थी जो नूर हैं इस लिए आप सिफ़त के ऐतबार से नूर थे।

हक़ारत के तौर पर रसूल को बशर कहना बिल्कुल ठीक नहीं है

रसूल इन्सान होते हैं लेकिन आप को इस तरह कहना कि आप हमारी तरह इनसान हैं और यह तास्सुर देना कि हमारे पास वही नहीं आती, इस लिए आप हमें नसीहत ना करें और ना हम आप पर ईमान लाने के पाबन्द हैं, इस तरह कहना रसूल की बेअदबी है और इन पर ईमान ना लाना है इस लिए इस तरह बशर नहीं कहना चाहिए, इस में ईमान से मुंह मोड़ना है।

इस की दलील यह आयत है:

24. وَ مَـا اَنْـتَ إِلَّا بَشَـرٌ مِّثْلُـنَـا فَـأْتِ بِـآيَةٍ اِنْ كُـنْـتَ مِنَ الصّـادِقِيْنَ
(آیت۱۵۴، سورة الشعراء۲۶).

तर्जुमा: तुम्हारी हक़ीक़त इस के सिवा कुछ भी नहीं कि तुम

हम जैसे ही एक इन्सान हो, लिहाज़ा अगर सच्चे हो तो कोई निशानी ले कर आओ।

24.وَ مَا اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَ اِنْ نَّظُنُّکَ لَمِنَ الْكَاذِبِيْنَ .

(آیت ۱۸۶، سورۃالشعراء ۲۶)

तर्जुमा: तुम्हारी हक़ीक़त इस के सिवा कुछ भी नहीं कि तुम हम जैसे ही एक इन्सान हो और हम तुम्हें पूरे यक़ीन के साथ झूटा समझते हैं।

25.فَقَالَ الْمَلَاءُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرَاکَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلُنَا...بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِيْنَ . (آیت ۲۷، سورۃ ھود ۱۱)

तर्जुमा: जिन सरदारों ने कुफ़्र इख़्तयार किया था वो कहने लगे कि तुम में कोई बात नज़श्र नहीं आ रही है कि तुम हम जैसे ही एक इन्सान हो......बल्कि हमारा ख़्याल तो यह है कि तुम सब झूटे हो।

इन 3 आयतों में कुफ़्फ़ार ने रसूलों को अपने जसा रसूल कहा कि इन के पास वही नहीं आती और इन की इत्तबा मत करो, इस तरह का रसूल बशर कहना इन की गुस्ताख़ी है इस से हर आदमी को परहैज़ करना चाहिए।

قد خلق بل الاشياء نور نبيک من نوره वाली हदीस साबित नहीं है।

कुछ हज़रात इस हदीस से हुजूर स0अ0व0 को नूर साबित करने की कौशिश करते हैं इस में मुसन्निफ़ अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ का हवाला दिया है, फिर बाज़ हज़रात ने "**دلائل النبوة للبيهقى**" और मुस्तदरक हाकिम का भी हवाला दिया है, लेकिन मैंने इन तीनों किताबों को सामने रख कर बहुत तलाश की और मक्तबा शामिला के ज़रिये भी तलाश की लेकिन हदीस कहीं नहीं मिली, बल्कि पिछले ज़माने के बहुत सारे हज़रात ने लिखा है कि यह हदीस मौज़ूअ़ हदीस से कुरआन के ख़िलाफ़ कैसे इस्तदलाल किया जा

सकता है, इस लिए इस हदीस से भी हुजूर स0अ0व0 को नूर साबित करना मुश्किल है।

हदीस यह है:

. روی عبد الرزاق بسنده عن جابر بن عبد الله قال قلت یا رسول الله ! بابی انت و امی اخبرنی عن اول شیء خلقه الله تعالی قبل اشیاء ؟ قال : یا جابر ان الله تعالی قد خلق قبل الاشیاء نور نبیک من نوره . الخ (المواهب للدنیة ، للقسطلانی ،[متوفی 923 ه] ج اول ، المقصد الاول ، باب تشریف الله تعالی ، ص ۴۸)

नोट: इस हदीस को, अलमवाहिब लिल दुनिया, मुसन्निफ़ क़िस्तलानी ने वफ़ात 923 हि0 ने अपनी किताब में ज़िक्र की है, लेकिन चूंकि क़िस्तलानी साहब 923 हि0 के हैं इस लिए इन की हदीस को मैं नहीं ले सकता, क्योंकि मेरा उल्तज़ाम यह है कि तबअ़ ताबईन के ज़माने की किताबों से हदीस लेता हूं या सिहाहे सित्ता या इन के असातिज़ा की किताबों से हदीस लेता हूं क्योंकि वही असल हैं, और क़िस्तलानी रह0 बहुत बाद के हैं, और ताबई और तबअ़ ताबई के ज़माने की किताबों में यह हदीस नहीं है, इस लिए इस का लेना मुश्किल है, यूं भी यह ऐतक़ाद का मसला है और यह हदीस 12 आयतों और तीन हदीसों से टकराती है इस लिए इस हदीस को लेना अच्छी बात नहीं है।

इस हदीस के बर ख़िलाफ़ दूसरी हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने सब से पहेले क़लम को पैदा किया है इस **اوّل ماخلق** **نور نبیک،** वाली हदीस को कैसे ले लें।

हदीस यह है:

7.حدثنا عبد الواحد بن سلیم .... لقیت الولید بن عبادة بن الصامت فقال حدثنی ابی قال سمعت رسول الله ﷺ یقول ان اول ما خلق الله القلم فقال له اکتب فجری بما هو کائن الی الابد . (ترمذی شریف ، کتاب تفسیر

القرآن ، باب و من سورۃ نون و القلم ، ص ۷۵۷، نمبر ۳۳۱۹)

तर्जुमा: मैंने हुजूर पाक स0अ0व0 से सुना, फ़रमाया अल्लाह ने सब से पहले क़लम पैदा किया, फिर क़लम से कहा लिखो तो कयामत तक जितनी बातें होनी थीं सब लिख दिया।

(26) इस आयत से भी इशारा मिलता है कि सब से पहले कलम पैदा किया है। **ن و القلم و ما یسطرون** . (آیت ۱، سورت القلم ۶۸)

इस हदीस में है कि अल्लाह ने सब से पहले क़लम पैदा किया इस लिए यह हदीस **نور نبیک** के ख़िलाफ़ है।

12 आयतों और तीन अहादीस में बार बार कहा है कि हुजूर स0अ0व0 बशर थे, अब नूर साबित करने के लिए कोई आयत हो या पक्की हदीस हो जिस में सराहत के साथ यह बताया हो कि हुजूर स0अ0व0 नूर थे तब नूर साबित होगा, मौजूअ़ हदीस, या तफ़सीर करने वालों के मुबहम बात से नूर साबित नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह अ़क़ीदे का मसला है।

मैंने असली तहक़ीक़ पैश कर दी है आप हज़रात ख़ुद भी ग़ौर करलें। वल्लाहु आ़लम बिल सवाब।

हुजूर स०अ०व० ने ख़ुद फ़रमाया कि मुझे बढ़ा चढ़ा कर बयान ना करो

ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बहुत बढ़ाया और इन को अल्लाह का बेटा तक कह दिया और यह इन की ताज़ीम में किया लेकिन यह बात सही नहीं थी इस लिए इन को कुरआन में रोका कि नबी की ताज़ीम इतनी ही करो जितना इन का हक़ है इस से ज़्यादा करना गुलू है जो ठीक नहीं।

इस लिए हुजूर स00व0 ने अपनी उम्मत को तालीम दी कि मेरे बारे में भी गुलू मत करना, इस लिए हुजूर स0अ0व0 अगर बशर हैं तो आप स0अ0व0 को बशर मानना ही बेहतर है और इसी में आप की ताज़ीम है। इस के लिए हदीस यह है।

8.سمع عمرؓ يقول على المنبر سمعت النبى ﷺ يقول لا تطرونى كما اطرت النصارى ابن مريم فانما انا عبده فقولوا عبد الله و رسوله . (بخارى شريف ، احاديث الانبياء ، باب قول الله تعالى ﴿و اذكر فى الكتاب مريم اذ انتبذتمن اهلها [آيت ١٦ ، سورت مريم ١٩ ﴾ ص ٥٨٠، نمبر ٣٤٤٥)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 फ़रमाते हैं जिस तरह नसारा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बढ़ा चढ़ा कर बयान किया तुम भी मुझे बढ़ा चढ़ा कर बयान ना करना मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूं, इस लिए मुझे अल्लाह का बन्दा और इस का रसूल कहा करो इस हदीस में है कि जैसे नसारा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलम को बहुत बढ़ाया, तुम भी इतना ना बढ़ा देना।

27. لَاتَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقِّ . (آيت ١٧١ ، سورت النساء ٤)

तर्जुमा: अपने दीन में हद से ना बढ़ो और अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा कोई बा ना कहो।

28.قُلْ يَا اَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ . (آيت ٧٧، سورت المائدة ٥)

तर्जुमा: ऐ अहले किताब अपने दीन में नाहक़ गुलू ना करो।

इस अक़ीदे के बारे में 28 आयतें और 8 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(7) हुजूर स०अ०व० क़ब्र में ज़िन्दा हैं और यह ज़िन्दगी दुनिया से भी आ़ला है आप का जिस्मे अतहर क़ब्र में बिल्कुल महफ़ूज़ है

इस अक़ीदे के बारे में 11 आयतें और 20 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

हुज़ूर स0अ0व0 क़ब्र में ज़िन्दा हैं और यह हयात बरज़ख़ी है, यह हयात दुनिया से भी आ़ला है और हुज़ूर स0अ0व0 के जिस्म को मिट्टी ने नहीं खाया है आप का जिस्म क़ब्र में बिल्कुल महफ़ूज़ है।

हुज़ूर स0अ0व0 क़ब्र में ज़िन्दा हैं इस की दलील यह अहादीस हैं:

1.عن ابی درداء قال قال رسول الله ﷺ اکثروا الصلاة علی یوم الجمعة فانه مشهود تشهده الملائکةو ان احدا لن یصلی علی الا عرضت علی صلاته حتی یفرغ منها قال قلت بعد الموت ؟قال و بعد الموت ان الله حرم علی الارض ان تأکل اجساد الانبیاء . فنبی الله حی یرزق. (ابن ماجة شریف ، باب ذکر وفاته و دفنه ﷺ ص ۲۳۴، نمبر ۱۶۳۷)

तर्जुमा: हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जुमा के दिन मेरे ऊपर कसरत के साथ दुरूद भैजा करो इस लिए कि जुमा का दिन हाज़िर होने का दिन है, इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, जो भी आदमी दुरूद भैजता है मुझ पर ज़रूर पैश किया जाता है जब तक कि वो दुरूछ शरीफ़ से फ़ारिग़ ना हो जाये, मैंने कहा कि आप की मौत के बाद भी दुरूद शरीफ़ पैश किया जायेगा? आप ने फ़रमाया कि हां मौत के बाद दुरूद शरीफ़ पैश किया जायेगा अल्लाह ने ज़मीन पर इस बात को हराम कर दिया है कि वो नबियों के जिस्म को खाये, अल्लाह के नबी ज़िन्दा रहते हैं और इन को रोज़ी दी जाती है।

इस हदीस में तीन बातें हैं (1) एक तो यह कि अम्बिया के जिस्म को मिट्टी नहीं खाती। (2) दूसरी यह कि नबी अलैहिस्सलाम क़ब्र में ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है। (3) और तीसरी बात यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 पर सलाम पैश किया जाता है।

2.عـن اوس ابـن اوس قـال قـال النبی ﷺ .....فان صلوتکم معروضة علـی ، قـال فـقـالوا یا رسول الله !و کیف تعرض صلاتنا علیک و قد ارمت ؟ قـال یـقـولـون بـلیـت . قـال ان الـلـه حرم علی الارض أجساد الانبیاء ﷺ. (ابـوداود شـریف ، بـاب فـی الاستـغـفار ، ص ۲۲٦، نمبر ۱۵۳۱ / ابن ماجة شریف ، باب فی فضل الجمعة ، ص ۱۵۲ ، نمبر ۱۰۸۵)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पैश किया जाता है, लोगों ने पूछा कि हमारा दुरूद आप पर कैसे पैश किया जायेगा? आप तो बौसीदा हो चुके होंगे। शायद रावी ने **ارمـت** की जगह **بـلـیـت** कहा, हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने ज़मीन पर नबियों के जिस्मों को हराम कर दिया कि वो दिखाये।

इस हदीस में दो बातें हैं एक तो यह कि अम्बिया पर दुरूद शरीफ़ पैश किया जाता है, और दूसरी बात यह है कि ज़मीन पर नबियों के जिस्म को खाना हराम कर दिया गया है।

3.عـن ابـی هـریـرة عن النبی ﷺ قال من صلی علی عند قبری سمعته و مـن صـلـی عـلی نائیا ابلغته . (بیهقی فی شعب الایمان ، باب فی تعظیم النبی ﷺ و اجلاله و توقیره ، ج ثانی ، ص ۲۱۸ ، نمبر ۱۵۸۳) .

तर्जुमा: हुजूर पाक स0अ0व0 से रिवायत है कि जो मेरी क़ब्र के पास दुरूद भैजता है मैं इस को सुनता हूं, और जो दूर से भैजता है मुझ को वो दुरूद पहुंचा दिया जाता है।

इस हदीस में है कि मेरी क़ब्र के पास दुरूद भैजे तो मैं उस को सुनता हूं और दूर से भैजे ता मुझे पहुंचाया जाता है।

4.قـال قـال رسول الله ﷺ حیاتی خیر لکم تحدثون و نحدث لکم ، و وفـاتـی خیـر لکم تعرض علی اعمالکم فما رأیت خیرا حمدت الله و ما رأیت مـن شـر استـغـفرت الله لکم . (مسند البزار ، باب زاذان عن عبد الله ، ج ۵، ص ۳۰۸)

तर्जुमा: हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरी ज़िन्दगी तुम लोगों के लिए बेहतर है कि तुम लोग बात करते हो और मैं तुम लोगों से बा करता हूं और मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए बेहतर है, कि तुम्हारे आ़माल मुझ पर पैश किये जाते हैं, जब मैं इस में कोई अच्छी बात देखता हूं तो अल्लाह का शुक्र अदा करता हूं और जब बुरी बात नज़र आती है तो मैं तुम्हारे लिए असतग़फ़ार करता हूं।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 क़ब्र में ज़िन्दा हैं और आप पर उम्मत के आ़माल पैश किये जाते हैं और यह भी पता चला कि हुज़ूर स0अ0व0 हाज़िर व नाज़िर नहीं हैं वरना आ़माल पैश किये जाने की ज़रूरत क्या है।

इस हदीस में भी है कि मुझे लोगों का सलाम पहुंचाया जाता है।

5.عن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ ان لله ملائكة سياحين فى الارض يبلغونى من امتى السلام . (نسائى شريف ، كتاب السهو ، باب التسليم على النبى ﷺ ، ص ١٧٩ ، نمبر ١٢٨٣)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ज़मीन में फिरने वाले अल्लाह के फ़रिश्ते हैं जो मेरी उम्मत का सलाम मुझे पहुंचाते हं।

इस हदीस में है कि सलाम का जवाब देने के लिए ज़िन्दा किया जाता है।

6.عن ابى هريرة ان رسول الله ﷺ قال ما من احد يسلم على الا رد الله على روحى حتى ارد عليه السلام . (ابوداود شريف ، باب زيارة القبور ، ص ٢٩٥، نمبر ٢٠٤١)

तर्जुमा: हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब भी कोई मुझे सलाम करता है तो अल्लाह मुझ पर मेरी रूह लोटा देते हैं ताकि मैं इस के सलाम का जवाब दे सकूं।

इस हदीस में है कि मुझे ज़िन्दा किया जाता है।

7.عن انس بن مالک ، ان رسول الله ﷺ قال أتيتُ و فی روایة هداب. مررتُ . علی موسی لیلة أسری بی عند الکثیب الاحمر ، و هو قائم یصلی فی قبره . (مسلم شریف ، باب من فضل موسی علیه السلام ، ص ۱۰۴۴، نمبر ۶۱۵۷/۲۳۷۵)

तर्जुमाः हुजूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं आया और हज़रत हिदाब की रिवायत में है कि मेअ़राज की रात में कसीब अहमर के पास हज़रत मूसा अलैहि0 की क़ब्र के सामने से गुज़र हुआ, तो दखा कि वो अपनी क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं।

इस हदीस में है कि हज़रत मूसा अलैहि0 अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे, जिस का मतलब यह हुआ कि वो अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं।

शोहदा ज़िन्दा हैं तो नबी का दरजा इन से बुलन्द है इस लिए वो भी ज़िन्दा हैं

1.وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ، بَلْ اَحْيَاءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ . (آیت ۱۵۴ ، نمبر البقرة ۲)

तर्जुमाः जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुए हैं उन को मुर्दा मत कहो, बल्कि वो ज़िन्दा हैं, मगर तुम को उन की ज़िन्दगी का अहसास नहीं होता।

इस आयत में यह भी है कि शहीद ज़िन्दा तो हैं लेकिन इन की ज़िन्दगी किस तरह की है, इस का तुम शऊ़र नहीं कर सकते, जिस से मालूम होता है कि यह हयात बरज़ख़ी है।

चूंकि हमें क़ब्र की हयात का शऊ़र नहीं है इस लिए बहुत तहक़ीक़ में नहीं पड़ना चाहिए।

2. وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتاً بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ

يُرْزَقُوْنَ ٥ فَرِحِيْنَ بِمَا أَتَاهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ٥ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ وَّ اَنَ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ٥ (آيت ١٦٩ . ١٧١ ،سورة آل عمران ٣)

तर्जुमा: और ऐ पैग़म्बर जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुए हैं उन्हें हरगिज़ मुर्दा ना सझना बल्कि वो ज़िन्दा हैं उन्हें अपने रब के पास रोज़ी मिलती है अल्लाह ने इन को अपने फ़ज़ल से जा कुछ दिया है वो इस पर ख़ुश हैं, और इन के पीछे जो लोग अभी इन के साथ शहादत में शामिल नहीं हुए, इन के बारे में इस बात पर ख़ुशी मनाते हैं कि जब वो इन से आकर मिलेंगे तो ना इन को कोई ख़ौफ़ होगा और ना वो ग़मगीन होंगे।

इस आयत में है कि शोहदा ज़िनदा हैं और रिज़्क़ दिये जाते हैं तो अम्बिया बदरजा– ए–औला क़ब्र में ज़िन्दा होंगे और रोज़ी दिये जाते होंगे।

8.عن مسروق قال سألنا عبد الله هو ابن مسعود عن هذه الآية ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتاً بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ﴾(آيت ١٦٩ ،آل عمران ٣) قال اما انا قد سألنا عن ذالک فقال أرواحهم فی جوف طير خضر لها قناديل معلقة بالعرش تسرح من الجنة حيث شائت ثم تأوی الی تلک القناديل . (مسلم شريف ، كتاب الامارة ، باب بيان ان ارواح الشهداء فی الجنة و انهم احياء عند ربهم يرزقون ، ص ٨٤٥، نمبر ١٨٨٧/ ٤٨٨٥)

तर्जुमा: हज़रत मसरूक़ रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि0 मैंने इस आयत के बारे में पूछा (कि जो लोग अललाह के रास्ते में क़त्ल होते हैं इन को मुर्दा समझो, बल्कि वो ज़िन्दा अपने रब के पास रोज़ी दिये जाते हैं) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैंने इस आयत के बारे

में हुज़ूर स0अ0व0 से पूछा था तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया था कि शोहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दे के पेट में होते हैं, अ़र्श के नीचे इन की क़न्दीलें लटकी होती हैं वो जन्नत में जहां चाहती हैं चली जाती हैं, फिर इन क़न्दीलों में वापिस आ जाती हैं।

चार चीज़ों के ऐतबार से हुज़ूर स०अ०व० दुनिया में भी ज़िन्दा हैं

रसूलुल्लाह स0अ0व0 को ज़ाहिरी मौत वाक़े हुई है अल्बत्ता बरज़ख़ी हयात है, जिस में नबी को रोज़ी दी जाती है, अल्बत्ता तीन चीज़ों में नबी को दुनिया में भी ज़िन्दा शुमार किया जाता है (1) इन की बीवी का निकाह नहीं होगा, क्योंकि नबी अभी भी ज़िन्दा हैं। (2) इन की विरासत तक़सीम नहीं होगी। (3) मिट्टी इस के जिस्म को नहीं खाती है। (4) और हुज़ूर स0अ0व0 की ज़िन्दगी इतनी क़वी है कि आप के बाद अब कोई नबी नहीं आऐंगे, आप ख़ातिमुल नबिय्यीन हैं।

अ़ाम लोग भी क़ब्र में ज़िन्दा किये जाते हैं

अ़ाम लोग भी क़ब्र में ज़िन्दा हैं और यह हयाते बरज़ख़ी है, इस में इन को अ़ज़ाब और सवाब भी होता है।

अल्बत्ता अ़ाम लोगों में और अम्बिया और शोहदा में फ़र्क़ यह है कि अ़ाम लोगों का जिस्म मिट्टी खा जाती है वो सड़े गल जाता है और अम्बिया और शेहदा का जिस्म वैसे ही ज़मीन में बाक़ी रहता है, जैसा दफ़न के वक़्त था, इन को खाना पीना दिया जाता है आर इन की ज़िन्दगी दुनिया की ज़िन्दगी से बहुत अ़ाला है।

लेकिन चूंकि आयत में है: وَ لَكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ . (آیت ۱۵۴ سورت البقرۃ ۲) कि तुम को इस का शऊ़र नहीं ह इस लिए इस बारे में ज़्यादा बहस नहीं करनी चाहिए, बस हदीस और आयत में जितना है उसी पर इक्तफ़ा करना चाहिए।

आ़म लोग भी क़ब्र में ज़िन्दा किये जाते हैं इस के लिए अहादीस यह हैं:

9.عن ابی ایوب ؓ قال خرج النبی ﷺ و قد وجبت الشمس ، فسمع صوتا فقال یهود یعذب فی قبورها . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب التعوذ من عذاب القبر ، ص ۲۲۰ ، نمبر ۱۳۷۵)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 सूरज के गुरूब के वक़्त निकले तो कोई आवाज़ सुनी तो आप ने फ़रमाया कि यहूद को क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है।

इस हदीस में है कि यहूद को क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है, जिस से मालूम हुआ कि यह हयात बरज़ख़ी है।

10.حدثنی ابنة خالد بن سعید ابن العاصی انها سمعت النبی ﷺ و هو یتعوذ من عذاب القبر . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب التعوذ من عذاب القبر ، ص ۲۲۱ ، نمبر ۱۳۷۶)

तर्जुमा: ख़ालिद बिन सईद फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर स0अ0व0 को अ़ज़ाब क़ब्र से पनाह मांगते सुना।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह मांगते थे, जिस से मालूम हुआ कि यह हयात बरज़ख़ी है।

क़ब्र में रूह और जिस्म दोनों को अ़ज़ाब या सवाब होता है

इस के लिए अहादीस यह हैं:

11.عن البراء بن عازب قال خرجنا مع النبی ﷺ فی جنازة...قال فتعاد روحه فی جسده ، فیاتیه ملکان فیجلسان فیقولا له من ربک فیقول ربی الله...تعاد روحه و یاتیه ملکان فیجلسانه فیقولان من ربک ؟ فیقول ها ها لا ادری .(مسند احمد ، حدیث البراء بن عاذب ، ج ۵ ، ص ۳۶۴ ، نمبر

۱۸۰۶۳ / ابو داود شریف ، باب المسألة فی القبر و عذاب القبر ۶۷۲، نمبر ۴۷۵۳)

तर्जुमा: हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर स0अ0व0 के साथ एक जनाज़े में निकले...... आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मुर्दे के जिस्म में रूह लोटा दी जाती है, फिर इस के पास दो फ़रिशते आते हैं, और इस को बैठाते हैं, फिर पूछते हैं तुम्हारा रब कौन है, मुर्दा कहता है हाऐ मुझे कुछ पता नहीं है।

इस हदीस में है कि क़ब्र में हर आदमी की रूह इस के जिस्म में लोटा दी जाती है और फ़रिश्ता इस से सवाल करते हैं इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि जिस्म और रूह दोनों को अ़ज़ाब या सवाब होता है सिर्फ़ रूह या सिर्फ़ जिस्म को नहीं।

12.عن عبد اللہ بن عمرؓ ان رسول اللہ ﷺ قال ان احدکم اذا مات عرض علیہ مقعدہ بالغداۃ و العشی ان کان من اھل الجنۃ فمن اھل الجنۃ و ان کان من اھل النار فمن اھل النار فیقال ھذا مقعدک حتی یبعثک اللہ الی یوم القیامۃ . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب المیت یعرض علیہ مقعدہ بالغداۃ و العشیء ، ص ۲۲۱، نمبر ۱۳۷۹)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम में से कोई एक जब मरता है तो सुबह और शाम जन्नत में इस की रहने की जगह पैश की जाती है अगर वो जन्नत वालों में है तो जन्नत की जगह, और अगर वो जहन्नु वालों में है तो जहन्नुम की जगह पैश की जाती है और कहा जाता है कि क़यामत में उठाऐ जाने तक तेरी यह जगह है।

इस हदीस से भी साबित होता है कि वो क़ब्र में ज़िन्दा है।

13.انہ سمع ابا سعید الخدریؓ یقول قال رسول اللہ ﷺ اذا وضعت الجنازۃ فاحتملھا الرجال علی اعناقھم فان کانت صالحۃ قالت قدمونی قدمونی و ان کانت غیر صالحۃ قالت یا ویلھا این یذھبون بھا ؟یسمع صوتھا

كل شيء الا الانسان و لو سمعها الانسان لصعق. (بخارى شريف ، كتاب الجنائز ، باب كلام الميت على الجنازة ، ص ۲۲۱، نمبر ۱۳۸۰)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब जनाज़ा रखा जाता है और लोग इस को अपने कंधे पर ले जा रहे थे होते हैं, तो अगर वो नेक है तो कहता है कि मुझे जल्दी ले चलो और अगर वो गुनाहगार है तो कहता है हाऐ अफ़सोस तुम कहां ले जा रहे हो इस की आवाज़ इन्सान के अ़लावा सब सुनते हैं और अगर इन्सान सुन ले तो सब बेहोश हो जाये।

इस हदीस से मालूम होता है कि आ़म इन्सान भी कब्र में ज़िन्दा किया जाता है और यह हयात बरज़ख़ी है, दुनियावी नहीं है।

इस हदीस में है कि रिश्तेदारों पर हमारे आ़माल पैश किये जाते हैं।

14. سمع انس بن مالك يقول قال النبى ﷺ ان اعمالكم تعرض على اقاربكم و عشائر كم من الاموات فان كان خيرا استبشروا به و ان كان غير ذالك قالوا اللهم لا تمتهم حتى تهديهم كما هديتنا . (مسند احمد ، كتاب مسند انس بن مالك ، ج ٣، ص ٢٤٣، نمبر ١٢٢٧٢)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम्हारे आ़माल तुम्हारे मुर्दे रिश्तेदारों पर पैश किये जाते हैं, अगर अ़मल अच्छा होता है तो इस से इन को ख़ुशी होती है और अगर आ़माल अच्छे नहीं होते तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह जिस तरह मुझे हिदायत दी इस को भी हिदायत देने से पहले मौत ना देना।

इन 14 अहादीस और 2 आयतों से साबित हुआ कि हुजूर स0अ0व0 क़ब्र में ज़िन्दा हैं और ह भी पता चला कि इन का जिस्म भी महफ़ूज़ है इन को मिट्टी ने नहीं खाया है।

यह हयात बरज़ख़ी है, लेकिन दुनिया से बहुत आ़ला है

यह हयाते बरजख़ी है इस की दलील यह आयतें हैं:

3. حَتّٰی إِذَا جَاءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنَ ، لَعَلِّیْ اَعْمَلُ صَالِحاً فِیْمَا تَرَکْتُ کَلَّا إِنَّهَا کَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَ مِنْ وَّرَائِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ .

(آیت ۱۰۰ ، سورت المومنون ۲۳)

तर्जुमा: यहां तक कि जबक इन में से किसी पर मौत आकर खड़ी होगी तो वो यह कहेगा कि मेरे रब मुझे वापिस भैज दीजिए ताकि जिस दुनिया को मैं छोड़ कर आया हूं इस में जाकर नेक अ़मल करूं, हरगिज़ नहीं यह तो एक बात ही बात है जो ज़बान से कह रहा है आर इन मरने वालों के सामने आ़लम बरज़ख़ की आड़ है जो इस वक़्त तक क़ायम रहेगी जब तक उन को दोबारा ज़िन्दा करके ना उठाया जाये।

इस आयत में है कि मरने वाले बरज़ख़ में होते हैं और बद आ़माल लोग दुनिया में वापिस आने की गुज़ारिश करेंगे लेकिन इन को यहां आने नहीं दिया जायेगा।

4. وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوْءَ الْعَذَابِ النَّارِ یُعْرَضُوْنَ عَلَیْهَا غُدُواً وَّعَشِیًّا وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ اُدْخُلُوْا أٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ . (آیت ۴۶،سورت غافر ۴۰)

तर्जुमा: और फ़िरऔ़न के लोगों को बदतरीन अ़ज़ाब ने आ घैरा, आग है जिस के सामने उन्हें सुबह शाम पैश किया जाता है और जिस दिन क़यामत आ जायेगी इस दिन हुक्म होगा कि फ़िरऔ़न के लोगों को सख़्त तरीन अ़ज़ाब में दाख़िल कर दो।

इस आयत में है कि अ़ज़ाब का मामला आ़लम बरज़ख़ में होगा इस लिए यह हयात बरज़ख़ी है।

5. وَلَوْ تَرَی اِذِ الظَّالِمُوْنَ فِیْ غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلَائِکَةِ بَاسِطُوْا أَیْدِیْهِمْ اَخْرِجُوْا اَنْفُسَکُمُ الْیَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا کُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ غَیْرَ الْحَقِّ . (آیت ۹۳ ، سورت الانعام ٦)

तर्जुमा: और अगर तुम वो वक़्त देखो तो बड़ा हालनाक मन्ज़र नज़र आयगा जब ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में गिरफ़तार होंगे और फ़रिशते अपने हाथ फैलाये हुए कह रे होंगे अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जायेगा इस लिए कि तुम झूटी बातें अल्लाह के ज़िम्मे लगाते थे।

6.وَ مِنۡ اَهۡلِ الۡمَدِيۡنَةِ مَرَدُوۡا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعۡلَمُهُمۡ سَنُعَذِّبُهُمۡ مَرَّتَيۡنِ ثُمَّ يُرَدُّوۡنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيۡمٍ . (آيت ١٠١ ، سورت التوبة ٩)

तर्जुमा: और मदीने के बाशिन्दों में भी मुनाफ़िक़ हैं, यह लोग मुनाफ़िक़त में इतने माहिर हो गये हैं कि तुम उन्हें नहीं जानते उन्हें हम जानते हैं, इन को हम दो मर्तबा सज़ा देंगे (एक रूह निकालते वक़्त और दूसरा क़ब्र में) फिर इन को एक ज़बरदस्त अ़ज़ाब की तरफ़ धकैल दिया जायेगा।

7.وَ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ آمَنُوۡا بِالۡقَوۡلِ الثَّابِتِ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَ فِى الۡاٰخِرَةِ وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيۡنَ وَ يَفۡعَلُ مَا يَشَاءُ . (آيت ٢٧ ، سورت ابراهيم ١٤)

तर्जुमा: जो लोग ईमान लाये हैं अल्लाह उन को इस मज़बूत बात पर दुनिया की ज़िन्दगी में भी जमाओ अ़ता करता है और आख़िरत में भी (यानी क़ब्र में भी)।

8.ان الابرار لفى نعيم ، و ان الفجار لفى جحيم .

(آيت ١٣ ، سورت الانفطار ٨٢)

तर्जुमा: यक़ीन रखो कि नेक लोग बड़ी नेअ़मतों में होंगे और बदकार लोग ज़रूर दोज़ख़ में होंगे।

इन 6 आयतों से पता चला कि इन्सान को क़ब्र में ज़िन्दा किया जाता है, फिर इस को सज़ा दी जाती है, या नेअ़मत दी जाती है, और पहले 14 हदीसों से भी यही साबित किया गया है।

दुनियवी ऐतबार से हुज़ूर स०अ०व० का इन्तक़ाल हो चुका है

अल्बत्ता आप स0अ0व0 क़ब्र में जसद अतहर के साथ ज़िन्दा हैं जो दुनियवी हयात से भी आ़ला है। हुज़ूर स0अ0व0 का दुनियवी इन्तक़ाल हो चुका है इस की दलील यह आयत है:

15. ان عائشةؓ اخبرته قالت اقبل ابو بكر .....فقال اما بعد فمن كان منكم يعبد محمدا ﷺ فان محمدا قد مات ، و من كان يعبد الله فان الله حى لا يموت ، قال الله تعالى. ﴿و ما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل أفاين مات او قتل أنقلبتم على أعقابكم ، و من ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا و سيجزى الله الشاكرين﴾ آيت ۱۴۴ ، سورة آل عمران ۳) (بخارى شريف ، باب الدخول على الميت بعد الموت اذا أدرج فى اكفانه ، ص ۱۹۹ ، نمبر ۱۲۴۱ / ابن ماجة شريف ، باب ذكر وفاته و دفنه ﷺ ، ص ۲۳۲ ، نمبر ۱۶۲۷)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 बाहर से तशरीफ लाये......फिर फ़रमाया कि अम्मा बाद तुम में से जो मौहम्मद स0अ0व0 की इबादत करता हो तो मौहम्मद स0अ0व0 का इन्तक़ाल हो चुका है और जो अल्लाह की इबादत करता हो तो अल्लाह ज़िनदा है इस को कभी मौत नहीं आयेगी, फिर आयत पढ़ी (मौहम्मद स0अ0व0 एक रसूल ही तो हैं, इन से पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं भला अगर इन का इन्तक़ाल या उन्हें क़त्ल कर दिया जाये तो क्या हुक्म उलटे पांव फिर जाओगे, और जो कोई उलटे पांव फिरेगा वो अल्लाह को हरगिज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकता और जो शुक्रगुज़ार बन्दे हैं अल्लाह उन को सवाब देगा)।

इस हदीस में और आयत में है कि हुज़ूर स0अ0व0 का

इन्तक़ज़्ल हो चुका है, हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने भी इसी अन्दाज़ में लोगों को ख़िताब किया।

9.اِنَّکَ مَیِّتٌ وَ اِنَّھُمْ مِیِّتُوْنَ(آیت ۳۰، سورۃ الزمر ۳۹)

तर्जुमाः ऐ पैग़म्बर मौत तुम्हें भी आती है और मौत उन्हें भी आनी है।

इस आयत में अल्लाह तआ़ला हुज़ूर स0अ0व0 से फ़रमाते हैं कि आप का भी इन्तक़ाल हो जायेगा और वो कुफ़्फ़ार भी मरेंगे।

10.ثُمَّ اِنَّکُمْ بَعْدَ ذَالِکَ لَمَیِّتُوْنَ .(آیت ۱۵ ، سورۃ المومنون ۲۳)

तर्जुमाः फिर इस सब के बाद तुम्हें यक़ीनन मौत आने वाली है।

16.عن جابر بن عبد اللهؓ قال لما مات النبی ﷺ جاء ابا بکر مال من قبل العلاء الحضرمی . (بخاری شریف ، کتاب الشهادات ، باب ، ص ۴۳۷، نمبر ۲۶۸۳)

तर्जुमाः जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं जब हुज़ूर स0अ0व0 का इन्तक़ाल हुआ तो अ़ला हज़रमी की जानिब से हज़रत अबूबकर रज़ि0 के पास माल आया।

17.عن عائشة قالت مات النبی ﷺ انه لبین حاقنتی و ذاقنتی .(بخاری شریف ، کتاب المغازی ، باب مرض النبی و وفاته ، ص۷۵۵، نمبر ۴۴۴۶)

तर्जुमाः हज़रत आ़यश रज़ि0 ने फ़रमाया जब हुज़ूर स0अ0व0 का इन्तक़ाल हुआ तो वो मेरे हंसली और थोड़ी के दरमियान थे।

इन दोनों हदीसों में है, "مات النبی ﷺ" यानी हुज़ूर स0अ0व0 का इन्तक़ाल हो गया।

इन 2 आयतों और 3 हदीसों से साबित हुआ कि दुनियवी ऐतबार से आप का इन्तक़ाल हो चुका है। यूं भी ज़ाहिरी तौर हुज़ूर स0अ0व0 का इन्तक़ाल हो गया है इसी लिए तो आप स0अ0व0 को दफ़न किया गया अगर वो दुनिया में होते तो दफ़न नहीं किया जाता।

कुछ हज़रात नें यह नज़रिया पैश किया है कि मौमिन की रूह दुनिया में भी फिरती है

इन का इस्तदलाल इस क़ौल से है।

18. عن عبد الله بن عمر و [بن العاص] قال الدنيا سجن المومن و جنة الكافر ، فاذا مات المومن يخلى به يسرح حيث شاء . (مصنف ابن ابى شيبة ، باب كلام عبد الله بن عمر ، ج ٧،ص ٥٧ نمبر ٢٦٧٥)

तर्जुमा: हज़रत उमरू बिनुल आ़स रज़ि0 ने फ़रमाया कि दुनिया मौमिन की क़ैद है और काफ़िर की जन्नत है पस जब मौमिन मरता है तो वो आज़ाद हो जाता है और जहां चाहता है घूमता है।

इस क़ौल सहाबी में है कि "يسرح حيث شاء" कि जहां चाहते हैं वो जाते हैं जिस से उन्होंने इस्तदलाल किया कि वो दुनियाम में भी इधर उधर जाते हैं।

लेकिन इस में तीन कमज़ौरियां हैं।

(1) यह सहाबी का कौल है, यह हदीस नहीं है इस लिए इस से ऐतक़ाद नहीं किया जा सकता।

(2) इस में "الدنيا سبحن المؤمن" का जुम्ला है, इस लिए दुनिया जब क़ैदख़ाना है तो वो यहां ाकर फिर क़ैद ख़ाना में क्यों आऐंगे इस लिए حيث شاء का मतलब यह नहीं हागा कि वो दुनिया में फिरते हैं, बल्कि मतलब यह होगा कि वो जन्नत में जहां चाहते हैं फिरते हैं, क्योंकि इस क़ौल सहाबी में दुनियाक की तसरीह नहीं है।

(3) एक दूसरी हदीस में हज़रत जअ़फ़र शहीद रज़ि0 के बारे में इस की सराहत है कि वो जन्नत में जहां चाहते हैं उड़ कर चले जाते हैं, इस लिए इस क़ौल सहाबी से रूैह के दुनिया में फिरने का सबूत नहीं होगा।

जन्नत में जहां चाहते हैं घूमते हैं इस के लिए हदीस यह है।

19. **عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ رأيت جعفرا يطير فی الجنة مع الملائكة . (ترمذی شريف ، كتاب المناقب ، باب مناقب جعفر بن طالب ، ص ٨٥٥، نمبر ٣٧٦٣)**

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैंने जअ़फ़र रज़ि0 को देखा कि फ़रिश्तों के साथ जन्नत में उड़ रहे हैं।

इस हदीस में है कि हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 जन्नत में जहां चाहते हैं, फिरते हैं, इस लिए अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर के क़ौल का मतलब भी यही होगा कि मौमिन मौत के बाद जन्नत में फ़िरते हैं दुनिया में फिरना साबित नहीं होगा।

20. **عن مسروق قال سألنا عبد الله هو ابن مسعود عن هذه الآية ﴿ولا تحسبن الذين قتلوا فی سبيل الله امواتا بل احياء عند ربهم يرزقون﴾(آل عمران ، ١٦٩) قال اما انا قد سألنا عن ذالک فقال أرواحهم فی جوف طير خضر لها قناديل معلقة بالعرش تسرح من الجنة حيث شائت ثم تأوی الی تلک القناديل . (مسلم شريف ، كتاب الامارة ، باب بيان ان ارواح الشهداء فی الجنة و انهم احياء عند ربهم يرزقون ، ص ٨٤٥، نمبر ١٨٨٧/ ٤٨٨٥)**

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि0 से मैंने इस आयत के बारे में पूछा (कि जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल होते हैं इन को मुर्दा समझो, बल्कि वो ज़िन्दा हैं अपने रब के पास रोज़ी दिये जाते हैं) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैंने इस आयत के बारे में हुज़ूर स0अ0व0 से पूछा था, तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया था कि शोहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दे के पेट में होते हैं, अ़र्श के नीचे इन की क़न्दीलें लटकी होती हैं वो जन्नत में जहां चाहते हैं चले जाते हैं, फिर इन क़न्दीलों में वापिस आ जाते हैं।

इस हदीस में भी है कि जन्नत में जिधर चाहते हैं चले जाते हैं, दुनिया में इधर उधर फिरने का सबू नहीं होगा।

दौज़ख़ी दुनिया में आने की गुज़ारिश भी करेंगे तो इस को यहां नहीं आने दिया जायेगा

इस आयत में है कि बरज़ख़ी लोग दुनिया में वापिस आने की गुज़ारिश करेंगे तब भी इस को दुनिया वापिस नहीं आने दिया जायेगा, तो यह रूहें दुनिया में कैसे भटकने लगीं।

आयत यह है:

11. حَتّٰى اِذَا جَاءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ، لَعَلِّىْ اَعْمَلُ صَالِحاً فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَ مِنْ وَّرَائِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ .

(آیت ۱۰۰، سورت المومنون ۲۳)

तर्जुमा: यहां तक कि जब इन में से किसी पर मौत आकर खड़ी होगी तो वो यह कहेगा कि मेरे रब मुझे वापिस भैज दीजिए ताकि जिस दुनिया को मैं छोड़ कर आया हूं, इस में जाकर नेक अ़मल करूं, हरगिज़ नहीं यह तो एक बात ही बात है जो ज़बान से कह रहा है, और इन मरने वालों के सामने आ़लमे बरज़ख़ की आड़ है, जो इस वक़्त तक क़ायम रहेगी जब तक इन को दोबारा ज़िन्दा करके ना उठाया जाये।

इस आयत में है कि दौज़ख़ी दुनिया में आने की दरख़्वास्त भी करेंगे तो इन को आने की इजाज़त नहीं होगी तो फिर इन मुर्दों की रूहें कैसे दुनिया में आकर घूमेगी और सदक़ात मांगेगी।

इन 2 आयतों और एक हदीस से मालूम होता है कि रूहें जन्नत में इधर उधर फिरती हैं, दुनिया में नहीं।

इस अ़क़ीदे के बारे में 11 आयतें और 20 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(8) हाज़िर व नाज़िर (हुज़ूर स०अ०व० हर जगह हाज़िर नहीं हैं)

इस अ़क़ीदे के बारे में 34 आयतें और 13 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

हाज़िर की तीन क़िस्में हैं

(1) ज़िन्दगी में हुज़ूर स0अ0व0 बहुत सी जगह पर हाज़िर थे।

(2) आख़िरत में बहुत सी जगह पर हाज़िर होंगे।

(3) लेकिन हुज़ूर स0अ0व0 हर जगह हाज़िर हों और हर चीज़ को देख रहे हों, मसलन आज ज़ैद मौजूद है, इन की तमाम हालतों को हुज़ूर स0अ0व0 देख रहे हों, और ज़ैद के पास मौजूद भी हों, यह सिफ़त सिर्फ़ अल्लाह की है रसूल में यह सिफ़त नहीं है।

हर जगह हाज़िर रहना और हर चीज़ को हर वक़्त देखे रहना सिर्फ़ अल्लाह की सिफ़त है

अल्लाह इल्म के ऐतबार से हर जगह हाज़िर है

इस के लिए यह आयतें हैं:

1.هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ .

(آیت ۴، سورت الحدید ۵۷)

तर्जुमा: तुम जहां भी अल्लाह तुम्हारे साथ है, तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस को ख़ूब देख रहा है।

2.وَ لَا اَدْنٰى مِنْ ذَالِكَ وَ لَا اَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا .

(آیت ۷، المجادلة ۵۸)

तर्जुमा: इस से कम हों या ज़्यादा वो जहां भी हों अल्लाह के साथ होता है।

3.اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اَنَّ اللّٰهُ مَعَنَا . (آیت ۴۰، سورت التوبة ۹)

तर्जुमा: जब हुज़ूर स0अ0व0 अपने साथी हज़रत अबूबकर रज़ि0 से कह रहे थे ग़म मत करो, अल्लाह हमारे साथ हैं।

4. فَلَا تَهِنُوْا وَ تَدْعُوْا اِلَى السِّلْمِ وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ وَ اللّٰهُ مَعَكُمْ .

(آیت ۳۵, محمد ۴۷)

तर्जुमा: ऐ मुसलमानों तुम कमज़ौर पड़ कर सुलह की दअ़वत ना दो तुम ही सर बुलन्द होगे अल्लाह तुम्हारे साथ है।

5.وَ اِذَا سَأَلَکَ عِبَادِیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ. (آیت ۱۸۶، سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमा: ऐ हुजूर स0अ0व0 जब आप से मेरा बन्दा पूछता है तो कह दो कि मैं बहुत क़रीब हों।

6.وَ نَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ.

(آیت ۱۶، قٓ ۵۰)

तर्जुमा: इन्सान के दिल में जो ख़्यालात आते हैं उन को भी जानता हूं और उन के शह रग से भी ज़्यादा क़रीब हूं।

इन 6 आयतों में है कि अल्लाह हर जगह तुम्हारे साथ है, इस लिए हाज़िर व नाजिम़र की सिफ़त सिर्फ़ अल्लाह की है।

अल्लाह हर चीज़ को हर बन्दे की हालत को देखने वाले हैं यानी अल्लाह नाज़िर है

इस के लिए यह आयतें हैं:

7.وَ اللّٰهُ بَصِیْرٌ بِالْعِبَادِ . (آیت ۱۵، سورت آل عمران ۳)

8.وَ اللّٰهُ بَصِیْرٌ بِالْعِبَادِ . (آیت ۲۰، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: और तमाम बन्दों को अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

9.اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ. (آیت ۲۳۳، سورت البقرۃ ۲)

10.اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ. (آیت۲۳۷، سورت البقرۃ ۲)

11.اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ. (آیت ۲۶۵، سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमा: और यक़ीनन जान लो कि अल्लाह तुम्हारे सारे कामों को अच्छी तरह देख रहा है।

12 .وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ. (آیت۱۵۶، سورت آل عمران ۳)

13.وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ. (آیت۱۶۳، سورت آل عمران ۳)

14.وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ. (آیت ۳۹، سورت الانفال ۸)

तर्जुमा: और तुम जो भी अ़मल करते हो उसे ख़ूब अच्छी तरह देखता है।

इन 8 आयतों में है कि अल्लाह हर चीज़ को देखने वाला है, यानी वो नाज़िर है।

इस लिए हाज़िर व नाज़िर की सिफ़त सिर्फ़ अल्लाह की है।

नोट: देखने के कैफ़ियत और क्या है यह अल्लाह ही जाने, यह इसी की शान के मुनासिब है।

इन आयतों में है कि हुजूर स०अ०व० इन जगहों पर हाज़िर नहीं थे

इन आयतों में है कि दुनिया में फ़लां फ़लां जगह पर हाज़िर नहीं थे इस आयत में शाहिद का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है, आख़िरत में भी आप कहेंगे मैं फ़लां जगह हाज़िर नहीं था, तो इन 5 आयतों के होते हुए और 6 हदीसों के होते हुए यह कैसे कहा जा सकता है कि हुजूर हाज़िर नाज़िर हैं?

इन आयतों पर ग़ौर करें।

आयतें यह हैं:

15.وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَا اِلٰى مُوْسٰى الْاَمْرِ وَ مَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ . (آیت ۴۴، سورت قصص ۲۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर आप इस वक़्त कोहे तूर की मग़रिबी जानिब हाज़िर नहीं थे जब हम ने मूसा को अहकाम सुपुर्द किये थे और आप इन लोगों में से नहीं थे जो इस को देख रहे थे।

16.وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْنَا دَيْنَاً . (آیت ۴۶، قصص ۲۸)

तर्जुमा: और आप इस वक़्त तूर के किनारे नहीं थे जब हम ने मूसा को पुकारा था।

17. وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْيُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يُكْفَلُ مَرْيَمَ وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ

اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ . (آیت ۴۴، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: आप इस वक़्त इन के पास नहीं थे जब वो यह तेय करने के लिए अपने अपने क़लम ड़ाल रहे थे कि इन में से कौन मरयम की कफ़ालत करेगा और ना इस वक़्त तुम इन के पास थे जब वो इस मसले में एक दूसरे से इख़्तलाफ़ कर रहे थे।

18.وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْا اَمْرَهُمْ وَ هُمْ يَمْكُرُوْنَ .
(آیت ۱۰۲، سورت یوسف ۱۲)

तर्जुमा: और आप इस वक़्त यूसुफ़ के भाइयों के पास मौजूद नहीं थे जब उन्होंने साज़िश करके अपना फ़ैसला पुख़्ता कर लिया था।

19.وَ كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْداً مَا دُمْتَ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٍ (آیت ۱۱۷، سورت المائدة ۵).

तर्जुमा: और जब तक मैं इन के दरमियान मौजूद रहा मैं इन के हालात से वाकिफ़ रहा फिर जब आप ने मुझे वफ़ात दे दिया तो ख़ुद इन के निगरां थे और आप हर चीज़ के गवाह हैं।

नोट: यह आयत अगरचे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में है एक हदीस में हुजूर ने भी ला इल्मी ज़ाहिर की है और इसी आयत को पढ़ी है इस लिए यह आयत हुजूर स0अ0व0 के बारे में भी हो गई वो हदीस इल्म ग़ैब की बहस में आयेगी।

इन 5 आयतों से पता चलता है कि आप इन जगहों पर हाज़िर नहीं थे बल्कि आप आख़िरत में भी इक़रार करेंगे कि मैं मरने क बाद इन उम्मतों के पास हाज़िर नहीं रहा तो ओप हर जगह हाज़िर व नाज़िर कैसे हो गये।

नोट: यह मसला अ़क़ीदे का है इस लिए हुजूर स0अ0व0 को हाज़िर व नाज़िर करने के लिए कोई सरीह आयत या कोई पक्की हदीस लानी होगी, जिस से सराहत के साथ यह साबित होता हो कि आप हर जगह हाज़िर व नाज़िर हैं या क़ब्र में रह कर भी

हाज़िर व नाज़िर हैं सिर्फ़ ख़्वाब की बातों या लफ़्ज़ी बहसों या बुज़ुर्गों की बातों से अ़क़ीदा साबित नहीं होता यह मुसल्लिमा क़ाइदा है।

अहादीस में है कि हुजूर स०अ०व० वहां हाजि़र नहीं थे

इन अहादीस से पता चलता है कि आप अपनी ज़िन्दगी में भी बहुत सी जगह पर हाज़िर नहीं थे, और क़यामत में भी इस का इज़हार करेंगे कि मैं इन्तक़ाल के बाद मैं अपनी क़ौम में मौजूद नहीं रहा, और इन के अहवाल भी मुझे मालूम नहीं हैं जिस से मालूम होता है कि हुज़ूर स0अ0व0 हाज़िर नाज़िर हैं, हां जो बात आप को बता दी गई वो आप को मालूम हैं, और जो बातें हुज़ूर स0अ0व0 को बताई गई हैं वो अव्वलीन और आख़िरीन से ज़्यादा हैं।

हदीस मेअ़राज में यह भी है कि अल्लाह ने बैतुल मक़्दिस को हुज़ूर स0अ0व0 के सामने कर दिया जिस की वजह से इस को देख कर कुरैश को जवाब देते रहे, जिस से मालूम हुआ कि आप हाज़िर नाज़िर नहीं हैं, अगर आप स0अ0व0 हाज़िर व नाज़िर होते तो बैतुल मक़्दिस को आप स0अ0व0 के सामने हाज़िर करने की ज़रूरत क्या है, आप स0अ0व0 तो बैतुल मक़्दिस के पास मौजूद ही हैं और आप इस को देख भी रहे हैं।

1. حدیث یہ ہے .سمعت جابر بن عبد اللہ ؓ انہ سمع رسول اللہ ﷺ یقول لما کذبنی قریش قمت فی الحجر فجلی اللہ لی بیت المقدس فطفقت اخبرھم عن آیاتہ و انا انظر الیہ . (بخاری شریف ، کتاب مناقب الانصار، باب حدیث الاسراء ، ص ۶۵۲، نمبر ۳۸۸۶)

तर्जुमा: हज़रज जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 ने हुज़ूर स0अ0व0 से सुना वो फ़रमाया करते थे कि जब कुरैश ने मुझे

मेअ़राज के मौक़े पर झुटलाया तो मैं हतीम में खड़ा हुआ अल्लाह ने मेरे लिए बैतुल मक़्दिस वाज़ह कर दिया, मैं इस को देखता रहा और इन की निशानियों के बारे में क़ुरैश को बताता रहा। हुज़ूर स0अ0व0 की बीवी हज़रत आ़यशा रज़ि0 पर मुनाफ़िक़ीन ने तोहमत लगाई जिस की वजह से तक़रीबन एक माह तक हुज़ूर स0अ0व0 परेशान रहे, फिर हज़रत आ़यशा रज़ि0 की बराअत में सूरह नूर की आयतें नाज़िल हुईं तब हुज़ूर स0अ0व0 को इत्मिनान हुआ, अगर हुज़ूर स0अ0व0 हाज़िर व नाज़िर थे तो एक माह तक परेशान होने की ज़रूरत क्या थी, आप को मालूम हो जाना था कि हज़रत आ़यशा रज़ि0 बरी हैं इस के लिए हदीस यह है।

2.عتبہ بن مسعود عن عائشہؓ رضی اللہ عنھا زوج النبی ﷺ حین قال لھا اھل الافک ما قالوا .....و قد لبث شھرا لا یوحی الیہ فی شانی بشیء قالت فتشھد رسول اللہ ﷺ حین جلس ثم قال اما بعد یا عائشۃ انہ بلغنی عنک کذا کذا فان کنت بریئۃ فسیبرئک اللہ و ان کنت الممت بذنب فاستغفری اللہ و توبی الیہ ..... و انزل اللہ تعالی﴿ان الذین جاؤ بالافک عصبۃ منکم[آیت ۱۱، سورت النور ۱۸﴾ (بخاری شریف ، کتاب المغازی، باب حدیث الافک ، ص ۷۰۱، نمبر ۴۱۴۱/ مسلم شریف ، کتاب التوبۃ ، باب فی حدیث الافک و قبول التوبۃ ، ص ۱۲۰۵ ، نمبر ۷۰۲۰/۲۷۷۰)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 से रिवायत है कि तोहमत लगाने वालों ने जो कुछ इन से कहा......हुज़ूर स0अ0व0 एक महीने तक ठहरे रहे मेरे बारे में कोई वहीं नहीं आई फिर फ़रमाती हैं जब हुज़ूर स0अ0व0 बैठे तो उन्होंने तशह्हुद पढ़ी, फिर कहा अम्मा बाद! ऐ आ़यशा! तुम्हारे बारे में मुझे यह बातें पहुंची हैं, अगर तुम बरी हो तो अल्लाह तुम्हें बरी कर देंगे और अगर तुम ने गुनाह का इरतकाब किया है तो अल्लाह से असतग़फ़ार करो और तौबा करो......फिर अल्लाह तआ़ला ने मेरे बारे में यह आयत उतारी

(जिन लोगों ने तोहमत लगाई वो छोटी सी जमाअ़त है इलख़)

आप हाज़िर व नाज़िर थे तो आप को अपनी चहेती बीवी हज़रत आ़यशा रज़ि0 की बराअत का इल्म क्यों नहीं हो गया।

इन अहादीस में भी यह है कि मुझे लोगों का सलाम पहुंचाया जाता है अगर पूरी कायनात आप के सामने है और आप हाज़िर व नाज़िर हैं तो सलाम पहुंचान की ज़रूरत क्या है, आप के तो सामने ही सलाम हो रहा है।

3.عن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ ان لله ملائكة سياحين فى الارض يبلغونى من امتى السلام . (نسائى شريف ، كتاب السهو ، باب التسليم على النبى ﷺ ، ص ١٧٩ ، نمبر ١٢٨٣)

तर्जुमाः अल्लाह के लिए ज़मीन में फिरने वाले फ़रिशते हैं जो मेरी उम्मत का सलाम मुझे पहुंचाते हैं।

4.قال قال رسول الله ﷺ حياتى خير لكم تحدثون و نحدث لكم ، و وفاتى خير لكم تعرض على اعمالكم فما رأيت خيرا حمدت الله و ما رأيت من شر استغفرت الله لكم . (مسند البزار ، باب زاذان عن عبد الله ، ج ٥، ص ٣٠٨)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे लिए बेहतर है, तुम लोग मुझ से बातें करते हो मैं तुम लोगों से बातें कर लेता हूं (और हदीस बन जाती है) और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिए बेहतर है, तुम्हारे आ़माल मुझ पर पैश किये जाऐंगे अगर मैं इन में अच्छी बात देखूंगा तो अल्लाह की हम्द करूंगा और कोई बुरी बात देखूंगा तो मैं तुम्हारे लिए असतग़फ़ार करूंगा।

इन अहादीस से पता चला कि (1) हुजूर स0अ0व0 क़ब्र में ज़िन्दा हैं। (2) और इन पर उमत के आ़माल पश किये जाते हैं। (3) और यह भी पता चला कि हुजूर स0अ0व0 हाज़िर व नाज़िर नहीं हैं और ना पूरी कायनात आप स0अ0व0 के सामने है वरना

आमाल पैश किये जाने की ज़रूरत क्या है।

आप स0अ0व0 हाज़िर नाज़िर नहीं हैं इस की दलील यह हदीस है।

5.عن ابی ہریرة قال قال رسول الله ﷺ لا تجعلوا بیوتکم قبورا ، و لا تجعلوا قبری عیدا ، و صلوا علی فان صلاتکم تبلغنی حیث کنتم . (ابو داود شریف ، کتاب المناسک ، باب زیارة القبور ، ص۲۹۶ ، نمبر ۲۰۴۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपने घरों को क़ब्र की तरह मत बनाओ (कि इस में कोई इबादत ही ना करो) और मेरी क़ब्र को ईद मनाने की तरह मत बनाओ, और मुझ पर दुरूद भैजा करो तुम जहां भी हो मुझ पर तुम्हारा दुरूद पहुंचाया जाता है।

इन अहादीस में है कि तुम जहां भी हो मुझे तुम्हारा सलाम पहुंचाया जाता है अगर हुज़ूर स0अ0व0 हाज़िर नाज़िर हैं तो फ़रिश्तों को सलाम पहुंचाने की क्या ज़रूरत है।

इस हदीस में है कि क़यामत में भी आप हाज़िर नाज़िर नहीं होंगे वरना ग़ैर सहाबी कैसे समझ लेंगे।

6. عن ابن عباس .....الا و انه یجاء برجال من امتی فیوخذ بهم ذات الشمال فاقول یا رب أصیحابی فیقال انک لا تدری ما احدثوا بعدک فاقول کما قال العبد الصالح﴿ و کنت علیهم شهیدا ما دمت فیهم فلما توفیتنی کنت انت الرقیب علیهم ﴾فیقال ان هولاء لم یزالوا مرتدین علی اعقابهم منذ فارقتهم . (بخاری شریف، کتاب التفسیر ، باب و کنت علیهم شهیدا ما دمت فیهم . ص ۷۹۱، نمبر ۴۶۲۵/ مسلم شریف ، کتاب الفضائل ، باب اثبات حوض نبینا ﷺ وصفاته ، ص ۱۰۱۸ ، نمبر ۲۳۰۴/ ۵۹۹۶)

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 से रिवायत है......क़यामत में हुज़ूर स0अ0व0 की उम्मती के कुछ लोग लाऐ जाऐंगे जिन की

बद आ़मालियां उन को पकड़ चुकी होंगी, हुज़ूर स0अ0व0 कहेंगे मेरे रब यह मेरे सहाबी हैं तो आप को कहा जायेगा, आप को मालूम नहीं है कि आप की वफ़ात के बाद उन्होंने क्या काम किया है (यानी यह मुरतद हो चुके थे) तो हुज़ूर स0अ0व0 कहते हैं कि मैं वही बात कहूं जो एक नेक बन्दे (हज़रत ईसा) ने कहा था कि जब तक मैं उन के दरमियान रहा तो मैं उन का गवाह रहा और जब आप ने मुझे वफ़ात दी तो आप ही उन के निगरां हैं, फ़रिश्ते हुज़ूर स0अ0व0 को इत्तला देंगे कि जब आप स0अ0व0 उन लोगों से जुदा हुए थे तो यह लोग मुरतद हो गये थे।

अगर आप हाज़िर व नाज़िर होते तो आप क्यों ना जान लेते कि यह आदमी मेरा सहाबी नहीं रहा।

इन 6 हदीसों से मालूम हुआ कि आप हाज़िर व नाज़िर नहीं हैं और ना पूरी कायनात को आप के सामने कर दी गई है कि आप सारी चीज़ों को देख लें, हां आप क़ब्र में अपने जिस्मे अतहर के साथ ज़िन्दा हैं और जो लोग आप पर सलाम और दुरूद पैश करते हैं, फ़रिशते इस को आप तक पहुंचा देते हैं, हदीस से यही साबित है।

और जब तक आयत या पक्की हदीस से हाज़िर व नाज़िर साबित ना हो यह अ़क़ीदे का मसला है इस लिए ख़्वाब की बातों या लोगों के अक़वाल से इतने बड़े मामले को साबित नहीं किया जा सकता है।

क़यामतम में गवाही देने के लिए उम्मत का या नबी का हाज़िर व नाज़िर होना ज़रूरी नहीं

आगे तीन आयतें पैश की जा रही हैं और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की तफ़सीर के ऐतबार से तीनों आयतों में शाहिदन का तर्जुमा यह है कि आप स0अ0व0 क़यामत में गवाही देंगे कि मैंने अपनी अपनी उम्मत पर रिसालत पहुंचा दी हैं, इस लिए شـــاهـدا

का तर्जुमा गवाही देने का है हाज़िर व नाज़िर का नहीं है।

यह इश्काल कि गवाही देने के लिए उम्मत की हालतों को देखना ज़रूरी है तब ही तो हालात को देख कर गवाही दी जा सकेगी, इस लिए हुजूर स0अ0व0 को तमाम हालात की ख़बर है, यह इश्काल सही नही है, बल्कि कुरआन ने यह बताया है कि तमाम नबियों ने अपनी अपनी उम्मत को रिसालत पहुंचा दी है अल्लाह की इसी ख़बर पर ऐतमाद करके हुजूर स0अ0व0 भी गवाही देंगे और हुजूर स0अ0व0 ने अपनी उम्मत को बता दिया हे कि तमाम रसूलों अपनी अपनी उम्मत को रिसालत पहुंचा दी है इस में ना हुजूर स0अ0व0 का हाज़िर होना ज़रूरी है और ना इस उम्मत का हाज़िर होना ज़रूरी है।

इस के लिए हदीस यह है:

7.عن ابی سعید قال قال رسول الله ﷺ یجی النبی و معه الرجلان و یجیء النبی و معه الثلاثة و اکثر من ذالک و اقل، فیقال له هل بلغت قومک ؟ فیقول نعم فیدعی قومه فیقال هل بلغکم ؟ فیقولون :لا، فیقال من شهد لک ؟ فیقول محمد و امته ، فیدعی امة محمد فیقال هل بلغ هذا ؟ فیقولون نعم فیقول و ما علمکم بذالک ؟ فیقولون أخبرنا نبینا بذالک ان الرسل قد بلغوا فصدقناه ، قال فذالکم قوله تعالی ﴿وَ كَذٰلِکَ جَعَلْنٰکُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَ يَكُوْنُ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْداً﴾ آیت ۱۴۳ ، سورت البقرة ۲) (ابن ماجة شریف ، کتاب الزهد ، باب صفة امة محمد ﷺ ، ص ۶۲۴، نمبر ۴۲۸۴)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि कुछ नबी क़यामत में आऐंगे और इन के साथ दो आदमी होंगे और कुछ नबी आऐंगे और इन के साथ तीन या ज़्यादा आदमी होंगे, इन से पूछा जायेगा क्या आप स0अ0व0 ने अपनी क़ौम को पूरा पैग़ाम पहुंचा दिया था, वो कहेंगे हां अब इन की क़ौम को बुलाया जायेगा और इन से पूछा

जायेगा क्या तुम को नबी ने पैग़ाम पहुंचा दिया था? वो कहेंगे नहीं तो नबियों से पूछा जायेगा पैग़ाम पहुंचाने पर आप का गवाह कौन है, नबी फ़रमाऐंगे, मौहम्मद स0अ0व0 और उन की उम्मत, अब मौहम्मद स0अ0व0 की उम्मत बुलाई जायेगी और पूछा जायेगा क्या उन नबियों ने पैग़ाम पहुंचा दिया है? उम्मते मौहम्मदिया कहेगी हां तो अल्लाह पूछेंगे तुम को इस का क्या पता है तो उम्मत मौहम्मदिया कहेगी हम को हमारे नबी ने इस बात की इत्तला दी थी कि तमाम नबियों ने पैग़ाम पहुंचा दिया है और हम ने इन की तसदीक़ की है (इस लिए हम ने इस की गवाही दी) हुज़ूर स0अ0व0 ने इस की ताईद में यह आयत पढ़ी وَكَذَالِكَ الخ ऐसे ही हम ने तुम को वसत उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने जो उम्मत को पैग़ाम पहुंचा देने की ख़बर दी थी इस की बुनियाद पर यह उम्मत गवाही देगी, इस के लिए हाज़िर व नाज़िर होना ज़रूरी नहीं, आप इस तफ़सील को पूरे ग़ौर से देखें।

इस हदीस में भी गवाही देने की पूरी तफ़सील है

8.عن ابی سعید قال قال رسول الله ﷺ یجیء نوح و امته فیقول الله تعالی هل بلغت فیقول نعم ای رب ، فیقول لامته هل بلغکم ؟ فیقولون لا ما جائنا من نبی فیقول لنوح من یشهد لک ؟ فیقول محمد ﷺ و امته فتشهد انه قد بلغ ، و هو قوله جل ذکره ﴿و کذالک جعلنا کم امة وسطا لتکونوا شهداء علی الناس و یکون الرسول علیکم شهیدا . (آیت ۱۴۳ ، سورت بقرہ ۲) ﴾. (بخاری شریف ، باب قول الله عز و جل ، و لقد ارسلنا نوحا الی قومه [آیت ۲۵ ، سورت هود ﴾ ص ۵۵۵ ، نمبر ۳۳۳۹)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि क़यामत में नूह और

उन की उम्मत लाई जायेगी, अल्लाह पूछेंगे क्या तुम ने अपनी उम्मत को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया है, हज़रत नूह अलैहि0 फ़रमाऐंगे हां अल्लाह उम्मत से पूछेंगे क्या तुम को रिसालत पहुंचा दिया तो वो कहें कि हमारे पास तो कोई नबी ही नहीं आये, तो अल्लाह नूह अलैहि0 से कहेंगे कि तुम्हारा गवाह कौन है? तो नूह अलैहि0 कहेंगे कि मौहम्मद स0अ0व0 और उन की उम्मत, तो मौहम्मद स0अ0व0 गवाही देंगे कि हां हज़रत नूह अलैहि0 ने पैग़ाम पहुंचा दिया था, अल्लाह के इस क़ौल में इसी वाक़िऐ का ज़िक्र है इसी तरह तुम को वसत उम्मत बनाया ताकि तु लोगों पर गवाह बनो, और रसूल (मौहम्मद स0अ0व0) तुम पर गवाह बनेंगे।

अगर शहीद के लफ़्ज़ से हुजूर स0अ0व0 को हाज़िर नाज़िर मान लिया जाये तो फिर इस उम्मत को भी हाज़िर व नाज़िर मानना पड़ेगा क्योंकि इस के बारे में भी आयत में (**لِتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ**) कि तुम लोगों पर शहीद होंगे और दूसरी उम्मतों को भी हाज़िर व नाज़िर मानना होगा, क्योंकि उन के बारे में भी आया कि (**جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ**) हर उम्मत में से भी एक एक शहीद लाउंगा।

असल बात पहले गुज़र चुकी है कि अल्लाह ने कुरआन में यह कह दिया कि पिछले नबियों ने अपनी अपनी उम्मतों को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया है कुरआन की इस बात पर यक़ीन करते हुए उम्मत मौहम्मदिया भी गवाही देगी कि तमाम नबियों ने अपना अपना पैग़ाम पहुंचा दिया है और ख़ुद भी गवाही देंगे कि सारे नबियों ने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया है।

इस आयत में है कि हर क़ौम में अल्लाह ने रसूल भैजा था।

20. **وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِيْنُ** (آیت ۵۴، النور ۲۴)

तर्जुमा: और रसूल का फ़र्ज़ इस से ज़्यादा नहीं है कि वो साफ़ साफ़ बात पहुंचा दें।

21. **وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِيْنُ** (آیت ۱۸، العنکبوت ۲۹)

तर्जुमाः और रसूल का फ़र्ज़ इस से ज़्यादा नहीं है कि वो साफ़ साफ़ बात पहुंचा दें।

22 . قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَکْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللّٰهُ شَهِیْدٌ بَیْنِیْ وَ بَیْنَکُمْ ..
(آیت ۱۹ ، سورت الانعام ۲)

तर्जुमाः अल्लाह से बढ़ कर कौन सी चीज़ गवाही देने वाली होगी, आप कह दीजिए कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है।

इसी ख़बर पर ऐतमाद करते हुए हुज़ूर स0अ0व0 और इन की उम्मत क़यामत में गवाही देंगे कि तमाम नबियों ने अपना अपना पैग़ाम पहुंचा दिया है इस लिए यह उम्मत और हुज़ूर स0अ0व0 हाज़िर व नाज़िर नहीं थे।

कुछ हज़रात ने इन आयतों से हाज़िर व नाज़िर साबित की हैं

कुछ हज़रात ने इन 3 आयतों से हाज़िर व नाज़िर साबित की हैं और दलील यह दी है कि हालात देख कर ही गवाही दी जाती है और हुज़ूर स0अ0व0 पिछले नबियों के लिए गवाही देंगे इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 हाज़िर व नाज़िर हो गये कुछ हज़रात ने शाहिदन का तर्जुमा हाज़िर किया है। आयत यह हैः

23.اِنَّـا اَرْسَلْنَا اِلَیْکُمْ رَسُوْلاً شَاهِداً عَلَیْکُمْ کَمَا اَرْسَلْنَا اِلٰی فِرْعَوْنَ رَسُوْلاً
(آیت۱۵ ، سورت مزمل ۷۳) .

तर्जुमाः झुटलाने वालो! यक़ीन जानो हम ने तुम्हारे पास तुम पर गवाह बनने वाला एक रसूल इसी तरह भैजा, जैसे हम ने फ़िरऔन के पास एक रसूल भैजा था।

यहां शाहिदन का तर्जुमा रिसालत को पहुंचा देने की गवाही है, तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 में इबादत है (شَـــاهِـــدًا عَـــلَیْــکُـمْ) بـالبـلاغ (بالبلاغ) की तफ़सीर से पता चलता है कि शाहिदन का

तर्जुमा रिसालत पहुंचा देने की गवाही है क्योंकि फ़िरऔन की तरफ़ जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भैजा है वो रिसालत पहुंचा देने के लिए ही हैं।

24.يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ شَاهِداً وَ مُبَشِّراً وَّ نَذِيْراً ۝، وَ دَاعِياً اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهِ سِرَاجاً مُّنِيْراً. (آیت ۴۵ ،سورت احزاب۳۳)

तर्जुमा: ऐ नबी! बेशक हम ने तुम्हें ऐसा बना कर भैजा है कि तुम गवाही देने वाले, ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और ख़बरदार करने वाले हो और अल्लाह के हुक्म से लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले हो, और रौशनी फैलाने वाले चिराग़ हो।

यहां भी शाहिदा का तर्जुमा रिसालत पहुंचा देने की गवाही के मअ़नी में है, तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में इस की तफ़सीर से की है, **(شَاهِدًا) علی امتک بالبلاغ** (آیت/۴۵،الاحزاب/۳۳) **علی امتک بالبلاغ** की तफ़सीर से पता चलता है कि **شَاهِدًا** का तर्जुमा रिसालत पहुंचा देने की वाही है, आगे की आयत में **دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهِ** है, अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला है, जिस से रिसालत पहुंचाने के मअ़नी का सुबूत है, हाज़िर व नाज़िर के मअ़नी में नहीं है।

25. اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ شَاهِداً وَ مُبَشِّراً وَّ نَذِيْراً . (آیت ۸،سورت الفتح۴۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर हकम ने तुम्हें गवाही देने वाला ख़ुशख़बरी देने वाला, और ख़बरदार करने वाला बना कर भैजा है।

यहां भी तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में **شاهدا** की तफ़सीर **البلاغ** से की है **(شَاهِدًا) علی امتک بالبلاغ** (آیت/۸،**سورة الفتح**/۴۸) **علی امتک بالبلاغ** की तफ़सीर से पता चलता है कि **شاهدا** का तर्जुमा अल्लाह के पैग़ाम पहुंचा देने की गवाही देना है, हाज़िर व नाज़िर के मअ़नी में नहीं है।

हर उम्मत में से गवाह लाये जाऐंगे तो इस पूरी उम्मत को हाज़िर व नाज़िर मानना पड़ेगा

अगर शहद के लफ़्ज़ से हुजूर स0अ0व0 को हाज़िर व नाज़िर साबित करें तो उम्मती भी क़यामत में दूसरी क़ौमों पर गवाही देगी तो इस उम्मती के हर फ़र्द को हाज़िर व नाज़िर मानना पड़ेगा? क्योंकि आयत में है कि यह उम्मती भी दूसरी क़ौमों पर गवाह होगी इस लिए शहिदा के लफ़्ज़ से हुजूर स0अ0व0 को हाज़िर व नाज़िर साबित करना सही नहीं है, आप भी ग़ौर करें। आयतें यह हैं:

26. وَ كَذَالِكَ جَعَلْنَا كُمْ اُمَّةً وَّسَطاً لِّتَكُوْنُوْاشُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْداً . (آيت ١۴٣ ، سورت بقره ٢)

तर्जुमा: और ऐ मुसलमानो! इसी तरह तो हम ने तुम को एक मोअ़तदिल उम्मत बनाया है ताकि तुम दूसरे लोगों पर गवाह बनो, और रसूल तुम पर गवाह बने।

27. وَ يَوْمَ نَبْعَثُ فِىْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْداً عَلَيْهِمْ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ جِئْنَابِكَ شَهِيْداً عَلٰى هٰؤُلَاءِ .(آيت ٨٩، سورت النحل ١٦)

तर्जुमा: और वो दिन भी याद रखो जब हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से खड़ा करेंगे और ऐ पैग़म्बर! हम तुम्हें इन लोगों के ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए लाऐंगे।

28. فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَ جِئْنَابِكَ عَلٰى هٰؤُلَاءِ شَهِيْداً .

(آيت ۴١، سورت نساء ۴)

तर्जुमा: क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह ले कर आऐंगे और ऐ पैग़म्बर हम तुम को इन लोगों के ख़िलाफ़ गवाह के तौर पर पैश करेंगे।

29. لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْداً عَلَيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا شُهَدَاءُ عَلَى النَّاسِ.

(آيت٧٨، سورت الحج ٢٢)

तर्जुमा: ताकि यह रसूल तुम्हारे लिए गवाह बनें और तुम (यह उम्मत) दूसरे लोगों के लिए गवाह बनो।

30.يَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْداً . (آيت ٨٤، النحل ١٦)

तर्जुमा: इस दिन को याद करो जिस दिन हर उम्मत में से एक गवाह खड़ा करेंगे।

31.وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْداً فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ.

(آيت ٧٥، سورت القصص ٢٨)

तर्जुमा: और हम हर उम्मत में से एक गवाही देने वाला निकाल लाऐंगे फिर कहेंगे कि लाओ अपनी कोई दलील।

इन 6 आयतों में है कि हर उम्मत में से गवाह लाए जाऐंगे तो वो तमाम उम्मती भी हाज़िर व नाज़िर हो जायेगी, सिर्फ़ एक रसूल हाज़िर व नाज़िर नहीं रहेंगे......आयतों पर ग़ौर करलें।

शहद के तीन मअ़ानी हैं

इस लिए सियाक़ व सबाक़ देख कर आयत का तर्जुमा करना होगा, ताकि दूसरी आयतों से इस का मअ़नी टकरा ना जाये।

(1) गवाही देना। (2) मौजूद होना और देखना। (3) गवाहों का तज़्किया करना और यह कहना कि इन गवाहों ने सच कहा है।

(1) شهد के मअ़नी गवाही देना इस आयत में है:

32. وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا. (آيت٢٦، يوسف ١٢)

तर्जुमा: हज़रत ज़ुलैख़ा के अहल में से ऐक बच्चे ने गवाही दी।

इस आयत में **شهــــد** का तर्जुमा सिर्फ़ गवाही देना है, क्योंकि बच्चे ने हज़रत यूसुफ़ अलैहि0 को ज़ुलैख़ा के कमरे में नहीं देखा था, इस लिए इस आयत में शहिद का तर्जुमा गवाही देना है।

(2) شهد का तर्जुमा मौजूद होना, इस आयत में है:

33.وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَا اِلٰى مُوْسٰى الامر وَ مَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ . (آيت ۴۴، سورت قصص ۲۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर आप उस वक़्त कोहे तूर की मग़रिबी जानिब हाज़िर नहीं थे जब हम ने मूसा अलैहि0 को अहकाम सुपुर्द किये थे, और आप इन लोगों में से नहीं थे जो इस को देख रहे थे।

इस आयत में **شهد** का तर्जुमा है आप वहां हाज़िर नहीं थे।

(3) गवाहों का तज़्किया करना:

तज़्किया का मतलब यह है कि यह तसदीक़ करे कि गवाह ने जो गवाही दी है वो सच और सही है।

34.فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَابِكَ عَلٰى هٰؤُلَآءِ شَهِيْدًا . (آيت ۴۱، سورت نساء ۴)

तर्जुमा: क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह ले कर आऐंगे और ऐ पैग़म्बर हम तुम को इन लोगों के ख़िलाफ़ गवाह के तौर पर पैश करेंगे।

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में इस आयत में **شهيدا** का तर्जुमा तज़्किया किया है **(وَجِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدًا) ويقال لا متك شهيدا مزكيا معدلا، مصدقا لهم)** यानी उम्मत ने जो गवाही दी है हुज़ूर स0अ0व0 इस का तज़्किया करेंगे कि मेरी उम्मत ने जो गवाही दी है वो ठीक है सच है।

जब **شهد** का तीन मआ़नी हैं तो सियाक़ व सिबाक़ देख कर ही शहद का तर्जुमा करना होगा, ताकि इस का मअ़नी दूसरी आयतों से टकराना जाये।

इन अहादीस से हाज़िर व नाज़िर होने का शुब होता है

9.عن ثوبان قال قال رسول الله ﷺ ان الله زوى لى الارض فرأئت مشارقها و مغاربها و ان امتى سيبلغ ملكها ما زوى لى منها . (مسلم شريف، كتاب الفتن ، باب هلاك هذه الامة بعضهم ببعض ، ص ١٢٥٠ ، نمبر ٧٢٧٨/٢٨٨٩)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने ज़मीन मेरे लिए सुकैड दी, जिस से मैं ज़मीन की मश्रिक़ और मग़रिब को देखा लिया और जहां तक ज़मीन सुकैड़ी मेरी उम्मत वहां तक पहुंच जायेगी।

यह एक मोअ़ज्ज़ा का ज़िक्र है कि मश्रिक़ और मग़रिब की ज़मीन आप के सामने कर दी और आप ने इस को देख लिया, इस में زوى माज़ी का सीग़ा है, जिस का मतलब यह है कि एक मर्तबा ऐसा किया गया वरना अगर आप स0अ0व0 हमैशा हर जगह हाज़िर व नाज़िर हैं तो आप के सामने ज़मीन को करने का मतलब क्या है वो तो हर वक़्त आप के सामने है ही इस लिए इस हदीस से हाज़िर व नाज़िर साबित नहीं होता, यह आप स0अ0व0 की ज़िन्दगी में एक मोअ़ज्ज़ा है जिस का इस हदीस में ज़िक्र है।

दूसरी बात यह है कि इस हदीस में सिर्फ़ ज़मीन आप के सामने की गई है पूरी कायनात नहीं है। आप ख़ुद भी ग़ौर करलें।

इस हदीस से भी हुजूर स0अ0व0 के हाज़िर व नाज़िर होने का शुब्हा होता है।

10.عن عبد الله بن عمر و [بن العاص] قال الدنيا سجن المومن و جنة الكافر ، فاذا مات المومن يخلى به يسرح حيث شاء .و الله اعلم . (مصنف ابن ابى شيبة ، باب كلام عبد الله بن عمر ، ج ٧،ص ٥٧ ،نمبر ٣٤٧٢٢)

तर्जुमा: अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मरू बिन अल आ़स ने फ़रमाया दुनिया मौमिन की क़ैद है और काफ़िर की जन्नत है पस जब मौमिन मर जाता है तो वो दुनिया से छुट जाता है और जहां चाहता है घूमता रहता है।

इस सहाबी के क़ौल में **يسرح حيث شاء** कि जहां चाहता है घूमता रहता है से बाज़ हज़रात ने इस्तदलाल किया है मौमिन की रूहें दुनिया में जहां चाहती हैं घूमती रहती हैं और इसी पर क़ियास करके हुज़ूर स0अ0व0 भी हर जगह हाज़िर व नाज़िर हैं।

लेकिन इस में तीन ख़ामियां हैं।

(1) यह हदीस नहीं है यह सहाबी का अपना क़ौल है जिस से अ़क़ीदा साबित नहीं किया जा सकता।

(2) दूसरी बात है कि जब दुनिया क़ैद है और मौत की वजह से वहां से निकल गई तो दोबारा दुनिया जैसी क़ैद में मौमिन की रूह क्यों आयेगी।

(3) और तीसरी बात यह है कि दुनिया में नहीं बल्कि जन्नत में जहां चाहती है घूमती रहती है क्योंकि दूसरी हदीस में शहीदों के बारे में है कि इन की रूह जन्नत में जहां चाहती है घूमती रहती है, दुनिया में नहीं घूमती।

. عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ رأيت جعفرا يطير فی الجنة مع الملائكة . (ترمذی شريف ، كتاب المناقب ، باب مناقب جعفر بن طالب ، ص ٨٥٥، نمبر ٣٧٦٣)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैंने हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 को देखा कि वो जन्नत में फ़रिशतों के साथ उड़ रहे हैं।

इस हदीस में है कि हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 जन्नत में जहां चाहते हैं फिरते हैं इस लिए अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि0 के क़ौल का मतलब भी यही होगा कि मौमिन मौत के बाद जन्नत में फिरते हैं, दुनिया में फिरना साबित नहीं होगा।

इस हदीस में भी इस की तसरीह है कि शोहदा की रूहें जन्नत में जिधर चाहती है घूमती हैं दुनिया में नहीं।

12.عن مسروق قال سألنا عبد الله هو ابن مسعود عن هذه الآية ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتاً بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴾(آيت ۱۶۹ ، آل عمران ۳) قال اما انا قد سألنا عن ذالک فقال أرواحهم فى جوف طير خضر لها قناديل معلقة بالعرش تسرح من الجنة حيث شائت ثم تأوى الى تلک القناديل . (مسلم شريف ، كتاب الامارة ، باب بيان ان ارواح الشهداء فى الجنة و انهم احياء عند ربهم يرزقون ، ص ۸۴۵، نمبر ۱۸۸۷/ ۴۸۸۵)

तर्जुमा: हज़रत मसरूक़ रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि0 से इस आयत ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتاً بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴾ के बारे में पूछा फ़रमाया कि मैं इस आयत के बारे में हुजूर स0अ0व0 से पूछा चुका हूं, फरमाया कि शहीदों की रूह सब्ज़ परिन्दे के पेट में होती है और क़न्दीलें अ़र्श के साथ लटकी होती हैं वो रूह जहां चाहती है चली जाती है, फिर इस क़न्दील में आकर ठहर जाती है।

इस हदीस में भी है कि जन्नत में जिधर चाहते हैं चले जाते हैं, दुनिया में इधर उधर फिरने का सबूतम नहीं होगा।

इस हदीस में है कि मौमिन की रूह भी जन्नत में होती है।

13.عن عبد الرحمن بن كعب الانصارى انه اخبره ان اباه كان يحدث ان رسول الله ﷺ قال انما نسمة المومن طائر يعلق فى شجرة الجنة حتى يرجع الى جسده يوم يبعث . (ابن ماجة شريف ، كتاب الزهد ، باب ذكر القبر و البلى ، ص ۶۲۲، نمبر ۴۲۷۱/ مسند احمد ، بقية حديث كعب بن مالك الانصارى ، جلد ۲۵، ص ۵۷، نمبر ۱۵۷۷۷،)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मौमिन की रूह एक परिन्दा जैसी होती है जो जन्नत में इधर उधर नहीं भटकती। यह

अ़क़ीदा हिन्दुओं का है कि मरने के बाद मय्यत की रूहें दुनिया में भटकती रहती हैं।

इस अ़क़ीदे के बारे में 34 हदीसें और 13 आयतें हैं, आप हर की तफ़सील देखें आप इन आयतों और हदीसों में ख़ुद ग़ौर करलें।

(9) मुख़्तार कुल सिर्फ़ अल्लाह है

अल्बत्ता हुज़ूर स0अ0व0 को दुनिया में बहुत से इख़्तयार दिये गये हैं और आख़िरत में भी बहुत सारे इख़्तयार दिये जाऐंगे जो अव्वलीन और आख़िरीन में से सब से ज़्यादा हैं।

लेकिन वो जुज़ इख़्तयारात हैं कुल नहीं हैं।

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

इस अ़क़ीदे के बारे में 36 आयतें और 10 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

इख़्तयारात की 4 क़िस्में हैं

(1) अज़ल से अबद तक हर हर चीज़ करने का इख़्तयार यह इख़्यार सिर्फ़ अल्लाह को है।

(2) हुज़ूर स0अ0व0 को ज़िन्दगी में बहुत से इख़्तयार दिये गये।

(3) हुज़ूर स0अ0व0 को क़यामत में चार इख़्तयार दिये जाऐंगे।

(4) क्या हुज़ूर स0अ0व0 को ज़ैद को शिफ़ा देने, रिज़्क़ देने नफ़ा और नुक़सान देने का इख़्तियार है।

(1) अज़ल से अब्द तक हर हर चीज़ करने का इख़्तयार यह इख़्तयार सिर्फ अल्लाह को है

इस के लिए यह आयतें हैं:

1. اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ . (آیت ۶۲، سورت الزمر ۳۹)

तर्जुमा: अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का रखवाला है।

2.ذَالِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ .(آیت۶۲،سورت غافر۴۰)

तर्जुमा: वो है अल्लाह जो तुम्हारा पालने वाला है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है।

3.اِنَّ رَبَّکَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ . (آیت۱۰۷،سورت ھود۱۱)

तर्जुमा: यक़ीनन आप का रब जो चाहे करता है।

4.ذُوْ الْعَرْشِ الْمَجِیْدِ فَعَّالٌ لِّمَدا یُرِیْدُ .(آیت۱۶،سورت البروج۸۵)

तर्जुमा: अ़र्श का मालिक है, बुजुर्गी वाला है, जो कुछ इरादा करता है कर गुज़रता है।

5.قُلِ اللّٰهَ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ . (آیت۱۶،سورت الرعد۱۳)

तर्जुमा: आप यह कह दीजिए कि अल्लाह हर चीज का पैदा करने वाला है, और वो एक ही ग़ालिब है।

इन पांच आयतों में है कि अज़ल से अब्द तक का पूरा पूरा इख़्तयार सिर्फ़ अल्लाह को है किसी और को नहीं है।

(2) ज़िन्दगी में हुजूर स०अ०व० को बहुत सारे इख़्तयार दिये गये

खाने पीने के सोने के जागने के अमर के नी के अहकाम फैलाने के इख़्तयार दिये गये थे।

ख़ास तौर पर इन चार इख़्तयार के लिए आप को मबऊ़स किया गया था।

इस के लिए यह आयतें हैं:

6.هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِیْ الْاُمِّیِّیْنَ رَسُوْلاً مِنْ اَنْفُسِهِمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ آیَاتِهٖ وَ یُزَکِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْکِتَابَ وَ الْحِکْمَةَ وَ اِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلِ لَفِیْ ضَلَالٍ مُّبِیْنٍ.

(آیت۲،سورۃ الجمعۃ۶۲)

तर्जुमा: वही है जिस ने उम्मी लोगों में उन्ही में से एक रसूल को भैजा जो उन के सामने इस की आयतों की तिलावत करें और इन को पाकीज़ा बनाऐं और उन्हें किताब और हिक्मत की तालीम दें जब कि वो इस से पहले खुली गुमराही में पड़े हुए थे।

7.رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُزَكِّيْهِمْ . (آیت۱۲۹،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: और हमारे परवरदिगार! इन में एक ऐसा रसूल भी भैजना जो उन्हीं में से हो जा उन के सामने तेरी आयतों की तिलावत करे उन्हें किताब और हिक्मत की तालीम दे और उन को पाकीज़ा बनाये।

इस आयत में है कि हुज़ूर स0अ0व0 को चार काम के लिए मबऊ़स किया गया है।

(1) कुरआन की तिलावत करने के लिए।

(2) कुरआन सिखाने के लिए।

(3) हिक्मत सिखाने के लिए।

(4) और तज़्किया करने के लिए, इस लिए ज़िन्दगी में हुज़ूर स0अ0व0 को यह इख़्तयार तो है।

8.وَ دَاعِياً اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجاً مُّنِيْراً . (آیت۴۶،سورت الاحزاب۳۳)

तर्जुमा: अल्लाह के हुक्म से लोगों को बुलाने वाले और रौशनी फैलाने वाले चिराग़ हो।

9. يَا اَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ . (آیت۶۷،سورت المائدہ۵)

तर्जुमा: ऐ रसूल जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है उस की तबलीग़ करो।

10.وَ لِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنَ .
(آیت۶۳،سورت الزخرف۴۳)

तर्जुमा: और इस लिए लाया हूं कि तुम्हारे सामने वो चीज़ें

वाज़ह कर दूं जिन में तुम इख़्तलाफ़ करते हा लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मान लो।

इन 5 आयतों में है कि आप स0अ0व0 को ज़िन्दगी में दीन और अहकाम फैलाने के और अमर व नही के नाफ़िज़ करने के इख़्त्यार दिये गये थे इन के अ़लावा भी ज़िन्दगी में बहुत सारे इख़्तयार दिये गये थे।

(3) हुज़ूर स०अ०व० को क़यामत में चार इख़्तयार दिये जाऐंगे

क़यामत में अल्लाह के हुक्म स और भी इख़्तयार दिये जाऐंगे लेकिन यह चार इख़्तयार अहम हैं।

1– शिफ़ाअ़ते कुबरा का इख़्तयार।

2– शिफ़ाअ़ते सुग़रा का इख़्तयार।

3– अल्लाह की हम्द करने का इख़्तयार।

4– हौज़े कौसर पर पानी पिलाने का इख़्तयार।

(1) शिफ़ाअ़त कुबरा का इख़्तयार

क़यामत में हिसाब करने के लिए जो सिफ़ारिश की जायेगी उस की शिफ़ाअ़त कुबरा कहते हैं, क्योंकि यह शिफ़ाअ़त बहुत मुश्किल होगी, और यह सिफ़ारिश करने का हक़ सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 को दिया जायेगा, किसी और को नहीं।

इस के लिए हदीस यह है:

1 .عن انس قال قال رسول الله ﷺ يجمع الله الناس يوم القيامة فيقولون لو استشفعنا على ربنا حتى يريحنا من مكاننا .....ثم يقال لى : ارفع رأسک و سل تعطه ، و قل يسمع ، و اشفع تشفع فارفع رأسى فأحمد ربى بتحميد يعلمنى ، ثم اشفع فيحد لى حدا ثم اخرجهم من النار و ادخلهم الجنة ثم اعود فاقع ساجدا مثله فى الثالثة او الرابعة حتى ما يبقى فى النار الا من

حبسہ القرآن . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار ، ص ١١٣٦ ، نمبر ٦٥٦٥ص)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह क़यामत के दिन लोगों को जमा करेंगे, लोग कहेंगे हमारे रब से कोई सिफ़ारिश करता तो हम इस जगह की मुसीबतों से निजात पा लेते......हुजूर स0अ0व0 फ़रमाते हैं कि मुझ से कहा जायेगा कि अपना सर उठाइये, मांगिये आप को दिया जायेगा, फ़रमाइये, आप की बात सुनी जायेगी, आप सिफ़ारिश कीजिए सिफ़ारिश कुबूल करूंगा तो एक हद तक मेरी सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी, फिर मैं इन को आग से निकालूंगा ओर जन्नत में दाख़िल करूंगा, फिर मैं दोबारा पहले की तरह सज्दे में जाउंगा, (फिर तीसरी मर्तबा फिर चौथी मर्तबा, सज्दे में जाउंगा) फिर जहन्नुम में वही बाक़ी रहेंगे जिन को कुरआन ने जहन्नुम में रखने का फ़ैसला किया। (यानी जो काफ़िर होगा वही जहन्नुम में बाक़ी रहेगा)।

इस हदीस में तीन चीज़ों का सबूत है:

(1) एक शिफ़ाअ़त कुबरा का।

(2) दूसरा हम्द करने का।

(3) और तीसरा शिफ़ाअ़त सुग़रा का।

(2) शिफ़ाअ़ते सुग़रा का इख़्तयार

2.حدثنا انس بن مالک ان النبی ﷺ قال لکل نبی دعوة دعاها لامته و انی اختبأت دعوتی شفاوة لامتی یوم القیامة .(مسلم شریف ، کتاب الایمان، باب اختباء النبی دعوة الشفاعة لامته ، ص١٠٦ ، نمبر ٢٠٠/٤٩٤)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हर नबी के लिए एक मक़बूल दुआ़ होती है जो अपनी उम्मत के लिए वो करते हैं और मैंने अपनी उम्मत के लिए एक दुआ़ छुपा रखी है और वो यह कि क़यामत के दिन अपनी उम्मत के लिए सिफ़ारिश करूंगा।

इस हदीस में शिफ़ाअ़त सुग़रा का ज़िक्र है जो हुज़ूर स0अ0व0 को दी जायेगी।

लेकिन यह शिफ़ाअ़त अल्लाह के हुक्म के बग़ैर नहीं होगी

इस के लिए यह आयत है:

11.من ذا الذی یشفع عندہ الا باذنہ . (آیت۲۵۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: कौन है जो इस के हुज़ूर इस की इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके।

12.مَا مِنۡ شَفِيۡعٍ اِلَّا مِنۡ بَعۡدِ اِذۡنِهٖ . (آیت۳،سورت یونس۱۰)

तर्जुमा: कोई इस की इजाज़त के बग़ैर इस के सामने किसी की सिफ़ारिश करने वाला नहीं है।

(3) हम्द करने का इख़्तयार

हुज़ूर स0अ0व0 को क़यामत में अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करने का इख़्तयार दिया जायेगा जो किसी और को नहीं दिया जायेगा।

इस के लिए हदीस यह है:

3.عن انس قال قال رسول اللہ ﷺ یجمع اللہ الناس یوم القیامۃ فیقولون لو استشفعنا علی ربنا حتی یریحنا من مکاننا .....ثم یقال لی : ارفع رأسک و سل تعطہ ، و قل یسمع ، و اشفع تشفع فارفع رأسی فأحمد ربی بتحمید یعلمنی . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنۃ و النار ، ص ۱۱۳۶ ، نمبر ۶۵۶۵ص)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह क़यामत के दिन लोगों को जमा करेंगे, लोग कहेंगे हमारे रब से कोई सिफ़ारिश करता तो हम इस जगह की मुसीबतों से निजात पा लेते......हुज़ूर स0अ0व0 फ़रमाते हैं कि मुझ से कहा जायेगा कि अपना सर उठाइये, मांगिये आप को दिया जायेगा, फ़रमाइये, आप

की बात सुनी जायेगी, आप सिफ़ारिश कीजिए सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी, मैं सर उठाउंगा और अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करूंगा जो अल्लाह मुझे तालीम देंगे।

(4) हौज़ कौसर पर पानी पिलाने का इख़्तयार

4.عن عبد الله بن عمر و قال النبى ﷺ حوضى مسيرة شهر مأؤه أبيض من اللبن و ريحه أطيب من المسك و كيزانه كنجوم السماء ، من شرب منها فلا يظمأأبدا . (بخارى شريف ، كتاب الرقاق ، باب فى الحوض ، ص ١١٣٨ ، نمبر ٦٥٧٩)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरा हौज़ एक महीने तक चलने की मुसाफ़त तक है उस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ैद है और इस की ख़ुशबू मुश्क से ज़्यादा अच्छी है, इस के प्याले आसमान मे सितार जितने हैं, जो इस से एक मर्तबा पी लेगा कभी प्यासा नहीं होगा।

इन चार हदीसों से मालूम हुआ कि हुजूर स0अ0व0 को क़यामत में चार बड़े बड़े इख़्यार दिये जाऐंगे।

(4) इख़्तयार की चौथी क़िस्मः

नफ़ा और नुक़सान पहुंचाने का इख़्तयार अल्लाह के अ़लावा किसी को नहीं

इख़्तयार की चौथी क़िस्म है नफ़ा और नुक़सान पहुंचाने का इख़्तयार किसी को औलाद देना, किसी को शिफ़ा देना, किसी को रोज़ी देना, किसी को मौत देना, किसी को हयात देना, बारिश बरसाना, क़हत लाना, यह इख़्तयारात हुजूर स0अ0व0 को भी नहीं हैं और किसी और को भी नहीं हैं यह इख़्तयार सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को है।

इस के लिए यह आयतें हैंः

13. قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعاً مِّنَ الرُّسُلِ ، وَ مَا اَدْرِیْ مَا يُفْعَلُ بِیْ وَ لَا بِكُمْ ، اِنِ اتَّبِعَ اِلَّا مَا يُوْحِیْ اِلَیَّ . (آیت۹،سورت الاحقاف ۴۶)

तर्जुमा: कहो कि मैं पैग़म्बर में से कोई अनोखा पैग़म्बर नहीं हूं, मुझे मालूम नहीं कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और ना मालूम कि तुम्हारे साथ क्या होगा, मैं किसी और चीज़ को नहीं सिर्फ़ इस वही की पैरवी करता हूं जो मुझे भैजी जाती है।

14. ،قُلْ اِنِّیْ لَا اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرّاً وَّ لَا رَشَداً قُلْ اِنِّیْ لَنْ يُّجِيْرَنِیْ مِنَ اللّٰهِ اَحَداً وَ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَداً . (آیت۲۱،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: आप कह दिजीये के मैं ना तुमहारे नुकसान का मालिक हूं और ना भलाई का मालिक हूं, आप कह दिजीये! मुझे अल्लाह से ना कोई बचा सकता है और ना मैं उसे छोड़ कर काई पनाह की जगा पासकता हूं।

इस लिये ये चोथी किसम का इख़्तयार भी हुजूर स0अ0व0 के पास नही है। आप खुद भी आयतों पर गौर कर लें।

हुजूर स०अ०व० से एलान करवाया गया के मेरे हाथ में नफा और नुक्सान पहुंचाने का इख़्तयार नहीं

उस के लिये आयतें ये हैं:

15. قُلْ لَّا اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ ضَرّاً وَّ لَا نَفْعاً اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهُ .

(آیت۱۸۸،سورۃ الاعراف ۷)

तर्जुमा: आप कह दीजीये के में अपने आप को भी नुक़सान और नफा पहुचाने का मालिक नहीं हूं, मगर अल्लाह जितना चाहेगा इतना होगा।

16. قُلْ لَّا اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ ضَرّاً وَّ لَا نَفْعاً اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهُ . (آیت۴۹،سورۃ یونس۱۰)

तर्जुमा: आप कह दीजीये के मैं अपने आप को भी नुक़सान और नफा पहुचाने का मालिक नहीं हूं, मगर अल्लाह जितना चाहेगा इतना होगा।

17. قُلْ اِنِّیْ لَا اَمْلِکُ لَکُمْ ضَرّاً وَّ لَا رَشَداً (آیت۲۰،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: आप कह दीजीये के में ना तुमहारे नुक़सान का मालिक हूं, और ना भलाई का मालिक हूं।

18.قُلْ اِنِّیْ لَنْ یُّجِیْرَنِیْ مِنَ اللّٰہِ اَحداً وَّ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِہٖ مُلْتَحَداً .

(آیت۲۱،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: आप कह दीजीये मुझे अल्लाह से ना कोई बचा सकता है और ना मैं उसे छोड़ कर कोई पनाह की जगाह पा सकता हूं।

19.قُلْ مَا یَکُوْنُ لِیْ اَنْ اُبَدِّلَہٗ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِیْ . (آیت۱۵،سورت یونس۱۰)

तर्जुमा: आप कह दीजीये के मुझे ये हक़ नहीं हें के अपनी तरफ से कोई तबदीली करूं।

20 .قُلْ مَا کُنْتُ بِدْعاً مِّنَ الرُّسُلِ ، وَ مَا اَدْرِیْ مَا یَفْعَلُ بِیْ وَ لَا بِکُمْ ، اِنِ اتَّبِعَ اِلَّا مَا یُوْحِیْ اِلَیَّ . (آیت۹،سورت الاحقاف ۴۶)

तर्जुमा: कहो कि मैं पैग़म्बर में से कोई अनोखा पैग़म्बर नहीं हूं, मुझे मालूम नहीं कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और ना मालूम कि तुम्हारे साथ क्या होगा, मैं किसी और चीज़ को नहीं सिर्फ़ इस वही की पैरवी करता हूं जो मुझे भैजी जाती है।

इन 6 आयतों में हुजूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि मुझे इख़्तयार नहीं है तो फिर हुजूर स0अ0व0 को कैसे मुख़्तार कुल कहा जाये?

इन आयतों में है कि हुजूर स०अ०व० को बहुत इख़्तयारात नहीं हैं

21.لَیْسَ عَلَیْکَ ھُدَاھُمْ وَّ لٰکِنَ اللّٰہَ یَھْدِیْ مَنْ یَّشَاءُ. (آیت۲۷۲،سورۃ البقرۃ۲)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर आप पर हिदायत देने की ज़िम्मेदारी नहीं है लेकिन अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है।

22.اِنَّکَ لَا تَھۡدِیۡ مَنۡ اَحۡبَبۡتَ ، وَ لٰکِنَّ اللّٰہَ یَھۡدِیۡ مَنۡ یَّشَآءُ وَ ھُوَاَعۡلَمُ بِالۡمُھۡتَدِیۡنَ . (آیت۵۶،سورہ القصص۲۸)

तर्जुमा: आप जिस को चाहें हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है।

इस आयत में है कि आप स0अ0व0 किसी का हिदायत देना चाहें तो नहीं दे सकते, हां अल्लाह जिस को चाहें इस को हिदायत दे सकते हैं तो फिर आप स0अ0व0 मुख़्तार कुल कैसे हुए।

23.وَ لَا تَقُوۡلَنَّ لِشَایۡءٍ اِنِّیۡ فَاعِلٌ ذٰلِکَ غَداً اِلَّا اَنۡ یَّشَآءُ اللّٰہُ

(آیت۲۴،سورۃ الکہف۱۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर किसी भी काम के बारे में कभी यह ना कहो कि मैं यह काम कर लूंगा, हां यह कहो कि अल्लाह चाहेगा तो कर लूंगा।

24.لَیۡسَ لَکَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَیۡءٌ اَوۡ یَتُوۡبَ عَلَیۡھِمۡ اَوۡ یُعَذِّبَھُمۡ فَاِنَّھُمۡ ظَالِمُوۡنَ.

(آیت۱۲۸،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर आप को इस फ़ैसले का कोई इख़्तयार नहीं है कि अल्लाह इन की तौबा क़बूल करे या इन को अ़ज़ाब दे क्योंकि यह ज़ालिम लोग हैं।

25.یَوۡمَ لَا تَمۡلِکُ نَفۡسٌ لِنَفۡسٍ شَیۡئًا وَّ الۡاَمۡرُ یَوۡمَئِذٍ لِلّٰہِ

(آیت۱۹،سورت الانفطار۸۲)

तर्जुमा: यह वो दिन (क़यामत) होगा जिस में कोई आदमी किसी दूसरे के लिए कुछ करने का मालिक नहीं होगा और तमाम तर हुक्म इस दिन अल्लाह ही का चलेगा।

26.مَا کَانَ لِنَبِیِّ وَّ الَّذِیۡنَ آمَنُوۡا اَنۡ یَّسۡتَغۡفِرُوۡا لِلۡمُشۡرِکِیۡنَ وَ لَوۡ کَانُوۡا اُوۡلِیۡ قُرۡبٰی مِنۡ بَعۡدِ مَا تَبَیَّنَ لَھُمۡ اَنَّھُمۡ اَصۡحَابُ الۡجَحِیۡمِ . (آیت۱۱۳،سورت التوبہ۹)

तर्जुमा: यह बात तो ना नबी को ज़ैब देती और ना दूसरे मौमिनों को कि वो मुश्रिकों के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करें चाहे

वो रिश्तेदार ही क्यों ना हों।

27. مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّأْتِىَ بِآيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ . (آیت۷۸،سورت غافر۴۰)

तर्जुमा: और किसी रसूल को इख़्तयार नहीं है कि वो अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई मोअ़ज्ज़ा ले आये।

इन 7 आयतों को ग़ौर से देखें कि हुज़ूर स0अ0व0 को बहुत सी चीज़ों का इख़्तयार नहीं दिया गया है तो हुज़ूर स0अ0व0 को मुख़्तार कुल कैसे कहा जाये?

अल्लाह की मरज़ी क बग़ैर हुज़ूर स०अ०व० को मसला बयान करने का भी हक़ नहीं है

इन आयतों में तो यहां तक है कि अल्लाह की मरज़ी के बग़ैर हुज़ूर स0अ0व0 को मसला बयान करने का भी हक़ नहीं है।

28. يَاأَيُّهَا النَّبِىُّ لِمَا تُحَرِّمُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِىْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ .

(آیت۱،سورت تحریم۶۶)

तर्जुमा: ऐ नबी जिस चीज़ को मैंने तुम्हारे लिए हलाल की अपनी बीवियों को ख़ुशनुदी के लिए इसे क्यों हराम करते हो।

29. مَا كَانَ لِنَبِىٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهُ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِىْ الْاَرْضِ .

(آیت۶۷،سورت الانفال۸).

तर्जुमा: यह बात किसी नबी की शायाने शान नहीं है कि इन के पास क़ैदी रहें, जब तक कि वो ज़मीन में दुश्मनों का ख़ून अच्छी तरह ना बहा लें।

हुज़ूर स0अ0व0 ने बदरी क़ैदियों से फ़िदया लेने का हुक्म दिया था, जो अल्लाह की मरज़ी नहीं थी तो फ़ौरन हुज़ूर स0अ0व0 को इस से आगाह कर दिया गया था।

इन 2 आयतों को देखें कि अल्लाह के हुक्म के बग़ैर आप को मसला बयान करने का भी हक़ नहीं है तो आप मुख़्तार कुल कैसे हो गये।

हूज़ूर स०अ०व० ने जो कुछ किया है वो अल्लाह की इजाज़त से की है

इस के लिए यह आयतें हैं:

30.وَ مَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ . (آیت۶۴،سورت النساء۴)

तर्जुमा: हम ने किसी भी रसूल को इसी लिए भैजा है कि अल्लाह के हुक्म से इन की इताअ़त की जाये।

31.وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٍ.

(آیت۳۸،سورت الرعد۱۳)

तर्जुमा: और किसी रसूल को यह इख़्तयार नहीं था कि वो अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई आयत भी ला सके।

32.وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ . (آیت۷۸،سورت غافر۴۰)

तर्जुमा: और किसी रसूल को इख़्तयार नहीं है कि वो अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई मोअ़ज्ज़ा ले आये।

33.اَنْزَلْنَا اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ .

(آیت۱،سورت ابراہیم۱۴)

तर्जुमा: यह एक किताब है जो हम ने तुम पर नाज़िल की है ताकि तुम लोगों को इस के रब के हुक्म से अंधैरों से निकाल कर रौशनी में ले आओ।

34.وَ دَاعِياً اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجاً مُّنِيْراً . (آیت۴۶،سورت الاحزاب۳۳)

तर्जुमा: अल्लाह के हुक्म से लोगों को बुलाने वाले और रौशनी फैलाने वाले चिराग़ हो।

इन 5 आयतों में है कि हुज़ूर स0अ0व0 को बहुत से इख़्तयार दिये गये थे, लेकिन वो सब अल्लाह के हुक्म से थे।

अल्लाह के इख़्तयारात ला महदूद हैं वो हुज़ूर स०अ०व० को कैसे हासिल हो सकते हैं

अल्लाह तआ़ला वाजिब उल वजूद है इस का इख़्तयार ला महदूद है और हुज़ूर स0अ0व0 की ज़ात महदूद है इस लिए वो तमाम इख़्तयारात हुज़ूर स0अ0व0 को कैसे हासिल हो सकते हं, यह ना मुमकिन है इस लिए हुज़ूर मुख़्र कुल नहीं हैं, हां दुनिया में और आख़िरत में कुछ इख़्तयार दिये गये हैं जिन की तफ़सील ऊपर गुज़री।

इस आयत में है कि अल्लाह जो कुछ चाहते हैं करते हैं।

35.اِنَّ رَبَّکَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ . (آیت ۱۰۷، سورت ھود ۱۱)

तर्जुमा: यक़ीनन आप का रब जो चाहे करता है।

36.ذُوْ الْعَرْشِ الْمَجِیْدِ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ . (آیت ۱۶، سورت البروج ۸۵)

तर्जुमा: अ़र्श का मालिक है, बुज़ुर्गी वाला है, जो कुछ इरादा करता है कर गुज़रता है।

हुज़ूर स0अ0व0 को इस क़िस्म का इख़्तयार नहीं है कि जो चाहे कर लें यह इख़्तयार ता सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को है।

इस 36 आयतों से साबित हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 को ज़िन्दगी में बहुत से इख़्तयार दिये गये थे और क़यामत में भी बहुत से इख़्तयार दिये जाऐंगे। यह इख़्तयारात तमाम अव्वलीन और आख़िरीन से ज़्यादा हैं। इन सब के बावजूद आप स0अ0व0 मुख़्तार कुल नहीं हैं और ना आप स0अ0व0 किसी के नफ़ा व नुक़सान के मालिक हैं।

हुज़ूर स०अ०व० को कुली इख़्तयार नहीं है अहादीस से इस का सबूत

इन अहादीस में है कि मुझे इख़्तयार नहीं है:

5. عن ابی ھریرۃ ؓ ان النبی ﷺ قال .... یا ام الزبیر بن العوام عمة

رسـول الـلـه ﷺ .يـا فـاطمة بنت محمد اشتريا انفسكما من الله ، لا املک لـكـمـا مـن الـلـه شيـئـا ، سلانی من مالی ما شئتما . (بخاری شریف ، باب من انتسب الی ابائه فی الاسلام و الجاهلية ، ص ۵۹۴، نمبر ۳۵۲۷)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया......ऐ रसूलुल्लाह की फूफी उम्मे जुबैर बिन अ़वाम ए फ़ातिमा बिन्ते मौहम्मद अल्लाह से अपने लिए कुछ ख़रीद लो मैं तुम लोगों को फ़ायदा पहंचाने का इख़्तयार नहीं रखता हूं मेरे माल में से जो चाहो मांग लो।

6.ان ابـا هريـــرةؓ قال قام رسول الله ﷺ حين انزل الله عز و جل ﴿ وَ اَنْـذِرْ عَشِيْـرَتَکَ الْاَقْـرَبِيْـنَ﴾ [آيـت ۲۱۴ ، سورة الشعراء ۲۶) ...يا صفية عـمة رسـول الـلـه ، لا أغنى عنک من الله شيئا ، و يا فاطمة بنت محمد ﷺ سـلـيـنـی مـا شـئـت من مالی ، لا اغنی من الله شيئا . (بخاری شریف ، باب هل يدخل النساء و الولد فی الاقارب ، ص ۴۵۵، نمبر ۲۷۵۳) .

तर्जुमा: जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप स0अ0व0 खड़े हुए और फ़रमाया......ऐ रसूल की फूफ़ी सफ़िया रज़ि0 मैं अल्लाह की जानिब से तुम को काम नहीं आ सकता, और ऐ फ़ातिमा रज़ि0 मेरे माल में से मुझ से मांग लो, मैं अल्लाह की जानिब से कुछ काम नहीं आ सकता।

इन दोनों हदीसों में है कि मैं क़यामत में काम नहीं आ सकता हां ईमान हो और अल्लाह सिफ़ारिश करने की इजाज़त दे तो मैं सिफ़ारिश करूंगा।

7.عـن انـس قـال قـال رسـول الـلـه ﷺ يـجـمـع الله الناس يوم القيامة فيـقـولـون لو استشفعنا على ربنا حتى يريحنا من مكاننا .....ثم يقال لی : ارفع رأسک و سـل تـعـطـه ، و قـل يسـمـع ، و اشفع تشفع فارفع رأسی فأحمد ربی بتـحـميد يعلمنی ، ثم اشفع فيحد لی حدا ثم اخرجهم من النار و ادخلهم الجنة ثـم اعـود فـاقـع سـاجـدا مثـلـه فی الثالثة او الرابعة حتى ما يبقى فی النار الا من

حبسه القرآن . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار ، ص ۱۱۳۶، نمبر ۶۵۶۵)

तर्जुमाः हुजूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह क़यामत के दिन लोगों को जमा करेंगे लोग कहेंगे हमारे रब के सामने कोई सिफ़ारिश करता तो इस जगह से हमें आ़फ़ियत हो जाती......फिर मुझ से कहा जायेगा सर उठाओ और मांगो दिया जायेगा, कहो बात सुनी जायेगा, सिफ़ारिश करो सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी, तो मैं सर उठाउंगा और ऐसी हम्द करूं जो अल्लाह इस मुझे सिखाऐंगे, फिर मैं दाख़िल करूंगा, फिर पहले की तरह दोबारा मैं सज्दा में गिर पडूंगा, यह तीसरी मर्तबा होगा या चौथी मर्तबा होगा, यहां तक कि जहन्नुम में वही बाक़ी रहेंगे जिन को कुरआन ने रोके रखा है। (यानी सिर्फ़ काफ़िर जहन्नुम में बाक़ी रह जाऐंगे)।

इस हदीस में है कि क़यामत में हुजूर स0अ0व0 अल्लाह से मांगेंगे और अल्लाह देंगे फिर यह भी है कि तमाम की सिफ़ारिश बयक वक़्त नहीं करेंगे, बल्कि एक मर्तबा एक हद मुतअय्यन की जायेगी, फिर दूसरी मर्तबा दूसरी हद मुतअ़य्यन होगी, और तीसरी मर्तबा एक हद मुतअ़य्यन की जायेगी, फिर चौथी मर्तबा सिफ़ारिश की एक हद मुतअ़य्यन की जायेगी, इस तरह चार मर्तबा में आप की सिफ़ारिश पूरी होगी, इस लिए आप क़यामत में भी मुख़्तार कुल नहीं होंगे। इन हदीसों में आप ख़ुद भी ग़ौर फ़रमालें।

इस हदीस में यहां तक रोगा गया है कि यह भी ना कहे कि अल्लाह और मौहम्मद स0अ0व0 ने चाहा, बल्कि यूं कहो कि अल्लाह ने चाहा फिर मौहम्मद स0अ0व0 ने चाहा।

8.حدیث یہ ہے .عن حزیفة بن الیمان ..... تقولون ما شاء الله و شاء محمد ، و ذکر ذالک للنبی ﷺ فقال اما و الله ان کنت لاعرفها لکم ، قولوا ما شاء الله ثم شاء محمد . (ابن ماجة شریف ، کتاب الکفارات ، باب النهی ان یقال ما شاء الله و شئت، ص ۳۰۴، نمبر ۲۱۱۸ / مسند احمد ، حدیث

حذیفة بن یمان ، ج ۳۸، ص ۳۶۴، نمبر ۲۳۳۳۹)

तर्जुमाः हुज़ैफ़ा बिन यमाम रज़ि0 से रिवायत है......तुम लोग कहते हो जो अल्लाह चाहते हैं और मौहम्मद स0अ0व0 चाहते हैं (तो वो काम होता है) इस का तज़्किरा हुज़ूर स0अ0व0 के सामने हुआ, तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम तुम लोगों की इस बात को जानता था यूं कहो, जो अल्लाह चाहते हैं फिर मौहम्मद स0अ0व0 चाहते हैं (यानी अल्लाह के चाहने के बाद मौहम्मद स0अ0व0 ने चाहा, ताकि चाहने में शिरकत ना हो)।

और तिबरानी कबीर में तो है कि सिर्फ़ यह कहो कि अल्लाह ने चाहा बीच में हुज़ूश्र स0अ0व0 के चाहने का नाम ही ना लो।

हदीस ये हैः

9. عن ربعی بن خراش عن اخ لعائشة زوج النبی ﷺ ...انما کان یمنعنی ان انها کم من ذالک الحیاء ، فاذاقلتم فقولوا ، ما شاء الله وحده .

(طبرانی کبیر ، طفیل بن سخیر الدوسی اخو عائشةؓ ، ج ۸، ص ۳۲۵، نمبر ۸۲۱۵)

तर्जुमाः हज़रत आ़यशा रज़ि0 के भाई रबीअ़ बिन ख़राा से रिवायत है......शर्म की वजह से मैं यह बात नहीं कह रहा था जब तुम कहो तो यूं कहो कि सिर्फ़ अल्लाह चाहे वो होता है।

इस हदीस में है कि सिर्फ़ यह कहो कि अल्लाह जो चाहे वो होता है।

इस लिए इन 5 अहादीस से पता चलता है कि हुजूर स0अ0व0 मुख़्तार कुल नहीं हैं।

(10) इल्मे ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह को है

इस अक़ीदे के बारे में 55 आयतें और 17 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

इल्म ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह को है, हां हुज़ूर स0अ0व0 को ग़ैब की बहुत सारी बातें वही के ज़रिये या मेअ़राज में ले जा कर या

जन्नत और जहन्नुम को आप के सामने करके बताई गई जो कायनात में सब से ज़्यादा इल्म है। इस लिए यूं कहा जाये कि आ़लिमुल ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह है, और हुज़ूर स0अ0व0 को 7 तरीक़ों से ग़ैब की बहुत सी बातें बताई गई हैं जो अव्वलीन और आख़िरीन में से सब से ज़्यादा हैं। अल्बत्ता यह इल्म जुज़ है, कुल इल्म नहीं है:

बाद अज़ ख़ुदा बुजुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

तमाम नबियों को वही के ज़रिये ग़ैब की बहुत सारी बातें बताई गई हैं इसी लिए इन को नबी कहा जाता है यानी ग़ैब की बातें बताने वाले। लेकिन ग़ैब की बातें बताने की वजह से वो आ़लिमुल ग़ैब नहीं हो जाते क्योंकि अगर ग़ैब की बातें बताने से वो आ़लिमुल ग़ैब हो जाएं तो तमाम नबियों को आ़लिमुल ग़ैब मानना पड़ेगा इस सूरत में तन्हा हुज़ूर स0अ0व0 आ़लिमुल ग़ैब नहीं रहेंगे इस नुक्ता पर ग़ौर करलें।

इल्म ग़ैब की तीन सूरतें हैं

(1) वो इल्म ग़ैब जो ज़ाती है और हर हर चीज़ को शामिल है और हमैशा के लिए शामिल है, यह हमैशा से है और हमैशा रहेगा यह इल्म ला इन्तहा है, इस की कोई हद नहीं है यह इल्म ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह को है, किसी और को नहीं है इस में किसी का इख़्तलाफ़ नहीं है।

इल्म ग़ैब अल्लाह का इल्म है जिस की कोई इन्तहा नहीं है और जिस हुज़ूर स0अ0व0 की तो इन्तहा है तो यह बेइन्तहा वाला इल्म हुज़ूर को कैसे हो सकता है।

(2) इल्म ग़ैब की दूसरी सूरत यह है कि ग़ैब की बातें हैं, ग़ैब की चीज़ें हैं, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को बताई, हुज़ूर स0अ0व0 को अल्लाह ने जितनी बातें बताईं वो तो

रसूलुल्लाह स0अ0व0 के लिए साबित हैं यह इल्म एक तो अल्लाह तआ़ला का बताया हुआ है।

दूसरी बात यह है कि इल्म बाज़ है अल्लाह का कुल इल्म नहीं है। इस आयत में है ि ग़ैब की कुछ ख़बरें वही के ज़रिये से आप को बताई जा रही है।

ذَالِکَ مِنۡ اَنۡبَاءِ الۡغَیۡبِ نُوۡحِیۡهِ اَلَیۡکَ . (آیت۴۴،سورت آل عمران۳)

तर्जुमाः यह ग़ैब की कुछ ख़बरें हैं जो हम वही के ज़रिये आप को दे रहे हैं।

(3) और तीसरी सूरत यह है कि मसलन ज़ैद के खाने पीने, बीमार, शिफ़ा, औलाद, मौत, हयात, नफ़ा व नुक़सान का इल्म, क्या यह इल्म हुज़ूर स0अ0व0 को है?

तो आगे 40 आयतें और 5 हदीसें आ रही हैं कि यह इल्म भी अल्लाह के अ़लावा किसी और को नहीं है।

(1) वो इल्मे ग़ैब जो ज़ाती है और हर हर चीज़ को शामिल है यह इल्म ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को है

(1) अल्लाह का ज़ाती इल्म ग़ैब जो हमैशा के लिए है और सिर्फ़ अल्लाह ही को है। इस के लिए आयतें यह हैंः

1. قُلۡ لَّا یَعۡلَمُ مَنۡ فِی السَّمَاوَاتِ وَالۡاَرۡضِ الۡغَیۡبَ اِلَّا اللّٰهُ وَ مَا یَشۡعُرُوۡنَ اَیَّانَ یُبۡعَثُوۡنَ . (آیت۶۵،سورت النمل۲۷)

तर्जुमाः आप ऐलान कर दीजिए कि ज़मीन और आसमान में अल्लाह के सिवा किसी को इल्म ग़ैब नहीं है और लोगों को यह भी पता नहीं है कि कब दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा।

2. وَ عِنۡدَهٗ مَفَاتِیۡحُ الۡغَیۡبِ لَا یَعۡلَمُهَا اِلَّا هُوَ . (آیت۵۹،سورۃ الانعام۶)

तर्जुमाः अल्लाह ही के पास ग़ैब की कुंजियां हैं, अल्लाह के

अ़लावा इन को कोई नहीं जानता।

3.وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ يَرْجِعُ الْاَمْرُ كُلُّهُ .

(آیت۱۲۳،سورت ھود۱۱)

तर्जुमाः आसमान और ज़मीन में जितने पौशीदा हैं सब अल्लाह ही के इल्म में हैं, और इसी की तरफ़ सारे मामलात लोटाये जाऐंगे।

4.تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَ لَا اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلَّامُ الْغُيُوْبُ .

(آیت۱۱۶،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमाः मेरे दिल में क्या है, वो आप जानते हैं और मैं ाप की पौशीदा बातों को नहीं जानता, यक़ीनन आप को तमाम छुपी हुई बातों का पूरा इल्म है।

नोटः यहां **انک** और **انـــــت** से हसर है कि सिर्फ़ तू ही जानता है, फिर अ़ल्लाम मुबालग़े का सीग़ा है कि अल्लाह तआ़ला बहुत जानने वाले हैं फिर गुयूब भी मुबालग़े का सीग़ा है कि ग़ैब की हर हर चीज़ को जानने वाले हैं, इस लिए इस सिफ़त का मालिक कोई और नहीं है।

5.لَهُ غَيْبَ السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ . (آیت۲۶،سورت الکہف۱۸)

तर्जुमाः आसमानों और ज़मीन के सारी ग़ैब की बातें अल्लाह ही के इल्म में हैं।

6.قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ وَ اِنَّمَا اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ . (آیت۲۶،سورت الملک۶۷)

तर्जुमाः आप ऐलान कर दीजिए कि इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है और मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तरीक़े पर ख़बरदार करने वाला हूं।

7. قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ .

(آیت۶۵،سورت النمل۲۷)

तर्जुमाः आप एलान कर दीजिए कि आसमानों और ज़मीन में

अल्लाह के अ़लावा किसी के पास इल्म ग़ैब नहीं है।

8.قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ . (آیت۱۰۹،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमा: रसूल कहेंगे हमें कुछ इल्म नहीं है ग़ैब की सारी बातों को जानने वाले तो सिर्फ़ आप ही हैं।

9.اِنَّ اللّٰہَ یَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَاللّٰہُ بَصِیْرٌ بِّمَا تَعْمَلُوْنَ .
(آیت۱۸،سورۃ الحجرات۴۹)

तर्जुमा: अल्लाह आसमान और ज़मीन के तमाम छुपी हुई बातों कों ख़ूब जानता है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे अच्छी तरह देख रहा है।

10.اِنَّ اللّٰہَ عَالِمُ الْغَیْبِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اِنَّہٗ عَلِیْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ.
(آیت۳۸،سورت فاطر۳۵)

तर्जुमा: अल्लाह आसमानों और ज़मीन के तमाम छुपी हुई बातों को ख़ूब जानता है बेशक वो सीनों में छुपी हुई बातों को ख़ूब जानता है।

11..اَلَمْ یَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰہَ یَعْلَمُ سِرَّھُمْ وَ نَجْوَاھُمْ وَ اَنَّ اللّٰہَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ .
(آیت۷۸،سورت التوبۃ۹)

तर्जुमा: क्या इन मुनाफ़िक़ों को यह पता नहीं था कि अल्लाह इन की तमाम पौशीदा बातों को और इन की सरगौशियों को जानता है और यह कि ग़ैब की सारी बातों का पूरा पूरा इल्म है।

12.عَالِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّھَادَۃِ ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ . (آیت۲۲،سورت الحشر۵۹)

तर्जुमा: अल्लाह छुपी हुई और खुली बातों को जानने वाले हैं, वही है जो सब पर मेहरबान है, बहुत मेहरबान है।

13.عَالِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّھَادَۃِ الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ .(آیت۱۸،سورت التغابن۶۴)

तर्जुमा: अल्लाह छुपी हुई और खुली बातों को जानने वाला है, वही ग़ालिब है, हिक्मत वाला है।

14. اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوَاهُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ .

(آیت ۷۸، سورت التوبۃ ۹)

तर्जुमा: क्या इन मुनाफ़िक़ों को पता नहीं था कि अल्लाह इन की तमाम पौशीदा बातों और सरगौशियों को जानता है और यह कि इन को ग़ैब की सारी बातों का पूरा पूरा इल्म है।

15. عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ. (آیت ۷۳، سورت الانعام ۶)

तर्जुमा: अल्लाह ग़ायब और हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है और वही बड़ी हिक्मत वाला है, पूरी तरह बाख़बर है।

16. عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ . (آیت ۹۲، سورت المومنون ۲۳)

तर्जुमा: अल्लाह ग़ायब और हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है इस लिए वो इन के शिर्क से बहुत बुलन्द व बाला है।

17. عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ . (آیت ۴۶ سورت الزمر ۳۹)

तर्जुमा: अल्लाह ग़ायब और हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है।

18. ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ . .

(آیت ۸، سورت الجمعہ ۶۲)

तर्जुमा: फिर तुम्हें इस अल्लाह की तरफ़ लोटाया जायेगा जिसे तमाम पौशीदा और खुली बातों का पूरा इल्म है, फिर वो बतायेगा कि तुम क्या कुछ करते थे।

19. عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖ اَحَداً .. (آیت ۲۶، سورت الجن ۷۲)

तर्जुमा: वही अल्लाह सारे भैजद जानने वाला है, चुनांचे वो अपने भैद पर किसी को मुत्तला नहीं करता।

20. وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ . (آیت ۷۷، سورت النحل ۱۶)

तर्जुमा: आसमानों और ज़मीन छुपी हुई बातों का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है।

21. تِلْكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَا اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا اَنْتَ وَ لَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا . (آیت۴۹،سورت ھود۱۱)

तर्जुमा: यह ग़ैब कुछ बातें हैं जो हम तुम्हें वही के ज़रिये बता रहे हैं यह बातें ना तुम इस से पहले जानते थे और ना तुम्हारी क़ौम।

नोट: इस आयत में अल्लाह ख़ुद फ़रमा रहे हैं कि ऐ नबी तुम्हें कुछ मालूम नहीं था, और ना आप की क़ौम को मालूम था अगर आप को इल्म गै़ था तो तैईस साल में कुरआन को आप पर उतारने की ज़रूरत क्या थी वो पहले ही से आप को मालूम होना चाहिए।

इस की दलील यह आयत है:

22. اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيْلًا . (آیت۲۳،سورۃ الانسان۷۶)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर! म ने ही तुम पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया है।

23. وَ قُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنَاهُ تَنْزِيْلًا .

(آیت۱۰۶،سورۃ الاسراء۱۷)

तर्जुमा: और हम ने कुरआन के जुदा जुदा हिस्से बनाये ताकि तुम उसे ठहर ठहर कर लोगों के सामने पढ़ो और हम ने उसे थोड़ा थोड़ा करके उतारा है।

इन आयतों में है कि आहिस्ता आहिस्ता आप पर कुरआन उतारा।

इन 23 आयतों में है कि इल्म ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह को है किसी ओर को नहीं है और वही हर चीज़ को जानता हे, किसी और को यह इल्म नहीं है जब इन आयतों में किसी और के लिए ग़ैब होने का सरीह इनकार है तो हुज़ूर स0अ0व0 के लिए इल्म ग़ैब साति करना सही नहीं है।

हुज़ूर स०अ०व० से बाज़ाब्ता यह ऐलान करवाया गया कि मुझे इल्म ग़ैब नहीं है

इस के लिए यह 8 आयतें यह हैं:

24. قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ . (آیت ۶۵،سورت النمل ۲۷)

तर्जुमा: आप ऐलान कर दीजिए कि ज़मीन और आसमान में अल्लाह के सिवा किसी को इल्म ग़ैब नहीं है और लोगों को यह भी पता नहीं है कि कब दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा।

25. قُلْ لَّا اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَائِنُ اللّٰهِ وَلَا اَعْلَمُ الْغَيْبَ .

(آیت ۵۰،سورت الانعام ۶)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर! इन से कहो मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और ना मैं ग़ैब का पूरा इल्म रखता हूं।

26. قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعاً مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَا اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَ لَا بِكُمْ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَىَّ وَ مَا اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (آیت ۹،سورت الاحقاف ۴۶)

तर्जुमा: कहो कि मैं पैग़म्बरों में से कोई अनोखा पैग़म्बर नहीं हूं, मुझे मालूम नहीं कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और ना मालूम कि तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा, मैं किसी और चीज़ की नहीं सिर्फ़ इस वही की पैरवी करता हूं जो मुझे भैजी जाती है।

27. وَلَا اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَائِنُ اللّٰهِ وَلَا اَعْلَمُ الْغَيْبَ . (آیت ۳۱،سورت ہود ۱۱)

तर्जुमा: मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और ना मैं ग़ैब की सारी बातें जानता हूं।

28. قُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ .

(آیت ۲۰،سورت یونس ۱۰)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि ग़ैब की बातें तो सिर्फ़ अल्लाह के इख़्तयार में हैं, लिहाज़ा तुम इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हार साथ इन्तज़ार करता हूं।

29.يَسْـئَـلُـوْنَکَ عَـنِ السَّـاعَةِ اَيَّـانَ مُـرْسَـاهَا قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَا اِلَّا هُوَ. (آیت ۱۸۷، سورت الاعراف ۷)

तर्जुमा: लोग आप स0अ0व0 से क़यामत के बारे में पूछते हैं कह दीजिए कि इस का इलम तो सिर्फ़ मेरे रब के पास है, वही उसे अपने वक़्त पर खोल कर दिखायेगा।

30.يَسْئَلُکَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَاللّٰهِ.

(آیت ۶۳، سورت الاحزاب ۳۳)

तर्जुमा: लोग आप स0अ0व0 से क़यामत के बारे में पूछते हैं कह दीजिए कि इस का इल्म तो सिर्फ़ मेरे रब के पास है।

31.وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَ مَا مَسَّنِىَ السُّوْٓءُ

(آیت ۱۸۸، سورة الاعراف ۷)

तर्जुमा: और अगर मुझे ग़ैब का इल्म होता तो मैं अच्छी अच्छी चीज़ें ख़ूब जमा करता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ ही नहीं पहुंचती।

इन 8 आयतों में हुजूर स0अ0व0 से यह ऐलान करवाया गया है कि मुझे इल्म ग़ैब नहीं है सिर्फ़ अल्लाह के पास इल्म ग़ैब है तो फिर कैसे कहा जा सकता है कि हुजूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब है।

हुजूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि मेंरे पास जो इल्म है वो वही के ज़रिये से है मै उसी की इत्तबा करता हूं

इन 6 आयतों में हसर और ताकीद के साथ है कि मेरे पास जो भी इल्म है वो वही के ज़रिये है।

32.قُلْ اِنَّمَا اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّىْ . (آیت۲۰۳،سورت الاعراف ۷)

तर्जुमा: आप स0अ0व0 कह दीजिए मैं तो सिर्फ़ इस वही की इत्तबा करता हूं जो मुझ पर मेरे रब की जानिब से वही की जाती है।

33.اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَيَّ . (آیت۵۰،سورت الانعام۶)

तर्जुमा: मैं तो सिर्फ़ इस वही की इत्तबा करता हूं जो मुझ पर नाज़िल की जाती है।

34.اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَيَّ .(آیت۱۵،سورت یونس۱۰)

35.اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَيَّ وَ مَا اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (آیت۹،سورت الاحقاف۴۶)

36. وَ اتَّبِعْ مَا يُوْحٰى اِلَيْكَ . (آیت۱۰۹،سورت یونس۱۰)

37 .اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْىٌ يُّوْحٰى .(آیت۴،سورت النجم۵۳)

इन 6 आयतों में हसर के साथ हुजूर स0अ0व0 ने यह बताया कि मेरे पास जो कुछ है वो सिर्फ़ वही के ज़रिये आया हुआ है, मैं उसी की इत्तबा करता हूं, इस लिए इल्म ग़ैब साबित करने के लिए बहुत कुछ सौचना होगा। इस के बावजूद इल्म ग़ैब माने तो इस के लिए कोई आयत हो जिस में सराहत के साथ यह ऐलान किया गया हो कि मैंने हुजूर स0अ0व0 को तमाम इल्म ग़ैब अ़ताई तौर पर दिये हैं।

इन पांच बातों का इल्म किसी को भी नहीं है

इस आयत में है कि इन पांच चीज़ों का इल्म तो अल्लाह के अ़लावा किसी के पास नहीं है।

38.اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ، وَ يَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ ، وَ مَا تَدْرِىْ نَفْسٌ مَا ذَا تَكْسِبُ غَدًا، وَ مَا تَدْرِىْ نَفْسٌ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ. (آیت۳۴،سورۃ لقمان۳۱)

तर्जुमा: यक़ीनन अल्लाह ही के पास क़यामत का इल्म है वही बारिश बरसाता है वही जानता है कि माओं के पेट में क्या है और किसी मुतनफ़्फ़िस को यह पता नहीं है कि वो कल क्या कमायेगा, और ना किसी मुतनफ़्फ़िस को यह पता है उन को किस ज़मीन में मौत आयेगी बेशक अल्लाह हर चीज़ का मुकम्मल इल्म राने वाला है, हर बात से पूरी तरह बाख़बर है।

इस आयत में है कि इन पांच चीज़ों का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है किसी और को नहीं है।

हुज़ूर स०अ०व० से ऐलान करवाया गया कि इल्म ग़ैब होता तो मुझे कोई नुक़सान ही नहीं पहुंचता

39 .وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَ مَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ.

(آیت۱۸۸،سورۃ الاعراف۷)

तर्जुमा: और अगर मुझे ग़ैब का इल्म होता तो मैं अच्छी अच्छी चीज़ें ख़ूब जमा करता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ ही नहीं पहुंचती।

इस आयत में है कि हुज़ूर स0अ0व0 से कहलवा रहे हैं कि अगर मुझे इल्म ग़ैब होता तो ख़ैर की बहुत सी चीज़ें जमा कर लेता और मुझे कोई नुक़सान छूता भी नहीं।

हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि अल्लाह ही के पास ग़ैब की कुंजी है और सिर्फ़ वही ग़ैब जानता है

आयत यह है:

40.وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِيْحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا اِلَّا هُوَ . (آیت۵۹،سورۃالانعام۶)

तर्जुमा: अल्लाह ही के पास ग़ैब की कुंजियां हैं अल्लाह के अ़ैलावा इन को कोई नहीं जानता।

इन 40 आयतों में हुज़ूर स0अ0व0 यह इन्कार कर रहे हैं कि मुझे इल्म ग़ैब नहीं है तो फिर इल्म ग़ैब कैसे साबित कर दिया जाये।

और अगर अ़ताई तौर पर इल्म ग़ैब है तो इन आयतों में इस का इन्कार नहीं होना चाहिए।

या फिर किसी आयत में सराहत के साथ इस का ज़िक्र हो कि अल्लाह ने हुज़ूर स0अ0व0 को अ़ताई तौर पर तमाम इल्म ग़ैब दिया है, जो तलाश करने के बाद मुझे नहीं मिली।

और जिन दो आयतों से इल्म ग़ैब साबित करते हैं वहां वही का ज़िक्र मौजूद है जिस से पता चलता है कि आप को वही के ज़रिये से ग़ैब की बहुत सी बातें बताई गई हैं।

हुज़ूर स०अ०व० को इल्म ग़ैब नहीं था, अहादीस में इस का सुबूत

5 हदीसें यह हैं:

हुज़ूर स0अ0व0 की बीवी हज़रत अ़ायशा रजि0 पर मुनाफ़िक़ीन ने तोहमत लगाई जिस की वजह से तक़रीबन एक माह तक हुज़ूर स0अ0व0 परेशान रहे, फिर हज़रत अ़ायशा रज़ि0 की बराअत में सूरह नूर की आयतें नाज़िल हुईं तब हुज़ूर स0अ0व0 को इत्मिनान हुआ, अगर हुज़ूर स0अ0व0 आ़लिमुल ग़ैब थे तो एक माह तक परेशान होने की ज़रूरत क्या थी, आप को मालूम हो जकाना था कि हज़रत अ़ायशा रज़ि0 बरी हैं इस के लिए हदीस यह है।

1.عتبہ بن مسعود عن عائشہ رضی اللہ عنہا زوج النبی ﷺ حین قال لھا اھل الافک ما قالو....و قد لبث شھرا لا یوحی الیہ فی شانی بشیء قالت فتشھد رسول اللہ ﷺ حین جلس ثم قال اما بعد یا عائشۃ انہ بلغنی عنک کذا کذا فان کنت بریئۃ فسیبرئک اللہ و ان کنت الممت بذنب فاستغفری

الـلـه و توبی الیه ..... و انزل الله تعالی﴿ اِنَّ الَّذِیۡنَ جَآءُوۡ بِالۡاِفۡكِ عُصۡبَةٌ مِّنۡكُمۡ [آیـت ۱۱، سـورت الـنـور ۱۸﴾ (بـخـاری شـریف ، کتـاب الـمغازی ، باب حدیث الافک ، ص ۷۰۱، نمبر ۴۱۴۱/ مسلم شریف ، کتاب التوبة ، باب فی حدیث الافک و قبول التوبة ، ص ۱۲۰۵، نمبر ۷۷۰۲/ ۷۰۲۰)

हज़रत आ़यशा रज़ि0 पर तोहमत और उन की बराअत के बारे में यह बहुत लम्बी हदीस है यह उस का मुख़्तसर है।

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं, तोहमत लगाने वालों ने जब कहा......एक महीने तक मेरे बारे में कोई वही नहीं आई, हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 ने बैठ कर हम्द व सना की फिर फ़रमाया आ़यशा रज़ि0! तुम्हारे बारे में ऐसी ऐसी बातें पहुंची हैं अगर तुम बरी कर देंगे और अगर तुम ने गुनाह किया है तो अल्लाह से माफ़ी मांग लो......फिर अल्लाह ने यह आयतें उतारीं (आयतः 11 ता 18) यक़ीनन जो तोहमत लगाने वाले थे वो एक जमाअ़त थी। अलख़।

इस हदीस में देखें कि हुज़ूर स0अ0व0 को अपनी चहेती बीवी के बारे में भी इल्म ना हो सका कि यह बरी हैं या नहीं और एक माह तक परेशान रहे, अगर आप स0अ0व0 को इल्म ग़ैब होता तो यह परेशानी क्यों होती।

नमाज़ जैसी अहम इबादत में आप स0अ0व0 भूल गये और फिर फ़रमाया कि मैं भी भूलता हूं और यह भी कहा कि मुझे याद दिला दिया करो अगर आप स0अ0व0 आ़लिमुल ग़ैब हैं तो भूलने का क्या मतलब फिर याद करवाने के लिए क्यों कहा इस से मालूम हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब नहीं था।

इस के लिए हदीस यह हैः

2.قـال عبد الله صلى النبی ﷺ .....قال انه لو حدث فی الصلوة شیء لـنبأتكم به و لكن انما انا بشر مثلكم انسی كما تنسون فاذا نسیت فذكرونی .

(بخاری شریف ، کتاب الصلاۃ، باب التوجه نحو القبلة حیث کان ، ص ۷۰،
نمبر ۴۰۱ / مسلم شریف ، کتاب المساجد ، باب السھو فی الصلاۃ
والسجود له ، ص ۲۳۲ ،نمبر ۵۷۲، / ۱۲۸۵)

तर्जुमाः हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि हुजूर स0अ0व0 ने नमाज़ पढ़ाई……फ़रमाया अगर नमाज़ में कोई तब्दीली हुई होती तो मैं तुम लोगों को ज़रूर बताता, लेकिन मैं तुम्हारी तरह इन्सान हूं, जिस तरह तुम लोग भूलते हो मैं भी भूलता हूं पस जब कभी भूल जाउं तो मुझे याद दिला दिया करो।

इस हदीस में है कि भूल जाता हूं तो इल्म ग़ैब कैसे हुआ।

फ़ैसले जैसे अहम मौक़े पर एक ग़ैर सच्चे को सच्चा मान लें और इस के लिए फ़ैसला भी कर दें, यह इसी वक़्त हो सकता है जब आप ग़ैब नहीं जानते हैं वरना ग़ैर सच्चे को आप स0अ0व0 कैसे मान सकते हैं।

3.ان امھا ام سلمة زوج النبی ﷺ .....فخرج الیھم فقال : انما انا بشر و انه یأتینی الخصم فلعل بعضکم ان یکون ابلغ من بعض فاحسب انه صدق فاقضی له بذالک . (بخاری شریف ، کتاب المظالم ،باب اثم من خاصم فی باطل و ھو یعلمه ، ص ۳۹۶، نمبر ۲۴۵۸)

तर्जुमाः हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से रिवायत है……हुजूर स0अ0व0 लोगों के पास आये और फ़रमाया मैं एक इन्सान हूं, मेरे पास झगड़े ले कर आते हैं, यह बहुत मुमकिन है कि बाज़ दलील पैश करने में ज़्यादा माहिर हो जिस से मैं गुमान कर लूं कि यह सच्चा है और इस के लिए इस का फ़ैसला कर दूं।

इस हदीस में है कि कभी किसी को इस की बातों से सच्चा मान लेता हूं तो फिर हुजूर स0अ0व0 ऐसे आदमी को आप मौमिन और अपना साथी समझ लेंगे जो बाद में मौमिन नहीं रहे थे।

हदीस ये हैः

4 . عن ابن عباس .....الا و انه يجاء برجال من امتی فيوخذ بهم ذات الشمال فاقول يا رب أصيحابی فيقال انک لا تدری ما احدثوا بعدک فاقول كما قال العبد الصالح و كنت عليهم شهيدا ما دمت فيهم فلما توفيتنی كنت انت الرقيب عليهم فيقال ان هولاء لم يزالوا مرتدين على اعقابهم منذ فارقتهم. (بخاری شریف، کتاب التفسير ، باب و كنت عليهم شهيدا ما دمت فيهم . ص ۷۹۱، نمبر ۴۶۲۵/ مسلم شریف ، كتاب الفضائل ، باب اثبات حوض نبينا ﷺ وصفاته ، ص ۱۰۱۸ ، نمبر ۲۳۰۴/ ۵۹۹۶)

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि......क़यामत में मेरी उम्मत के कुछ लोग लाऐ जाऐंगे इन के बद आमालियों ने इस को गिरफ़तार कर लिया होगा, मैं हुजूर स0अ0व0 कहूंगा यह मेरे साथी हैं, तो मुझ से कहा जायेगा आप के बाद इस ने क्या काम किया यह आप को मालूम नहीं है, तो वही बात कहूंगा जो एक नेक बन्दे (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) ने कही थी, ऐ अल्लाज जब आप ने मुझे मौत दी तो आप ही इस पर निगरां रहे, फिर मुझ को इत्तला दी जायेगी कि जब से आप स0अ0व0 इन लोगों से जुदा हुए तो यह अपनी ऐड़ियों के बल वापिस लोट गये थे।

शफ़ाअ़त कुबरा के वक़्त भी आप को हम्द याद नहीं होगा उस वक़्त अल्लाह आप को हम्द का इल्हाम करेंगे

5.عن انس بن مالک قال قال رسول الله ﷺ يجمع الله تعالى الناس يوم القيامة ...فارفع رأسی فاحمد ربی بتحميد يعلمنيه ربی . (مسلم شریف ، كتاب الايمان ،باب ادنی اهل الجنة منزلة فيها ، ص ۱۰۱ ، نمبر ۱۹۳/

۴۷۵ / بخاری شریف ، کتاب التوحید ، باب قول الله تعالی لما خلقت بیدی ، ص ۱۲۷۵ ، نمبر ۷۴۱۰)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया क़यामत के दिन अल्लाह लोगों को जमा करेंगे...... मैं पना सर उठाउंगा फिर रब की ऐसी हम्द करूंगा जिस को अल्लाह मुझे सिखायेगा।

इस हदीस में है कि मैं सज्दे से सर उठाउंगा तो अल्लाह मुझे हम्द का इलहाम फ़रमाऐंगे जिस से मैं अ़जीब हम्द करूंगा, जिस से मालूम हुआ कि हुजूर स00व0 को इल्म ग़ैब नहीं था।

इन 5 हदीसों से मालूम हुआ कि हुजूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब नहीं था, हां ग़ैब की कुछ बातों की आप स0अ0व0 को ख़बर दी गई है जो अव्वलीन और आख़िरीन के इल्म से ज़्यादा है यह सही है।

जो अल्लाह के अ़लावा के लिए इल्म ग़ैब माने वो काफ़िर है

(इमाम अबू हनीफ़ा की राये)

इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की मशहूर किताब फ़िक़्हा अकबर है हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रह0 ने इस की शरह की है जिस का नाम शरह फ़िक़्हा अकबर है इस में है कि जो अल्लाह के अ़लावा को आ़लिमुल ग़ैब माने वो काफ़िर है।

शरह फ़िक़्हा अकबर की इबारत यह है:

ثم اعلم ان الانبياء ﷺ لم يعلموا المغيبات من الاشياء الا ما علمهم الله تعالى احيانا.

و ذكر الحنفية تصريحا بالتكفير باعتقاد ان النبى ﷺ يعلم الغيب لمعارضة قوله تعالى ، ﴿ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ . [آیت ۶۵ ، سورت النمل ۲۷ ﴾ كذا فى المسامرة .) شرح فقه

اکبر، مسئلة فی ان تصدیق الکاهن بما یخبر به من الغیب کفر ، ص ۲۵۳)

तर्जुमाः फिर यह जान लो कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ग़ैब की बातों को नहीं जानते थे, हां कभी कभार जितना बता दिया जाता था उतना जानते थे।

हनफ़िया ने इस बात को सराहत से लिखा है कि जो ऐतक़ाद रखे कि हुज़ूर स0अ0व0 ग़ैब को जानते थे वो काफ़िर है क्योंकि इस के ख़िलाफ़ में अल्लाह तआ़ला का क़ौल है (आयत 65, सूरह 27) आप कही दीजिए कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के अ़लावा किसी को ग़ैब का इल्म नहीं है।

शरह फ़िक़्हा अकबर की इस इबारत में है कि जो यह ऐतक़ाद रखे कि हुज़ूर स0अ0व0 को इल्मे ग़ैब था वो काफ़िर है।

हुज़ूर स०अ०व० को ग़ैब की बहुत सी बातें बताई गई हैं जो अव्वलीन और आख़िरीन से ज़्यादा हैं, लेकिन वो जुज़ इल्म है कुल नहीं है

(2) इल्म ग़ैब की दूसरी सूरत यह है कि ग़ैब की बातें ग़ैब की चीज़ें हैं, लेकिन अल्लाह ने अपने रसूल को बताई हैं, हुज़ूर स0अ0व0 को अल्लाह तआ़ला ने जितनी बातें बताईं वो तो रसूलुल्लाह स0अ0व0 के लिए साबित हैं, यह इल्म एक तो अल्लाह तआ़ला का बताया हुआ है, दूसरी बात यह है कि यह इल्म बाज़ है अल्लाह का कुल इल्म नहीं है, लेकिन यह बाज़ इल्म बहुत छोटा नहीं है, यह इल्म भी इतना अ़ज़ीम है कि अव्वलीन और आख़िरीन को जितना इल्म दिया गया है उन से ज़्यादा है।

हुज़ूर स०अ०व० को जो ग़ैब की बातें बताई गई हैं उस की 7 सूरतें होती थीं

(1) वही के ज़रिये हुज़ूर स0अ0व0 को ग़ैब की बातें बताई

जाती थी।

(2) अम्बाउल ग़ैब, यानी ग़ैब की ख़बर दी गई इस के ज़रिये ग़ैब की बातें बताई जाती थीं।

(3) ग़ैब की बात है, हुज़ूर स0अ0व0 पर इस को ज़ाहिर की गई है, तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में है कि यह बाज़ इल्म ग़ैब है, सब नहीं है।

(4) ग़ैब की बात है हुज़ूर स0अ0व0 को इस पर मुतलअ़ किया गया है, यह भी हुज़ूर स0अ0व0 को दी गई है, तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में ह कि यह बाज़ इल्म ग़ैब है, सब नहीं है।

(5) ग़ैब की बहुत सारी बातें हैं जिन को हुज़ूर स0अ0व0 के सामने कर दी गई जैसे मेअ़राज में ले जा कर आप स0अ0व0 को बहुत कुछ दिखलाया गया।

(6) या नमाज़ में जन्नत और जहन्नुम की चीज़ें दिखलाई गईं।

(7) या ज़मीन को आप के सामने कर दी गई और मश्रिक़ स मग़रिब तक आप ने देख ली।

यह सब भी बाज़ ग़ैब हैं, वो तमाम ग़ैब नहीं हैं जो अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास हैं।

(1) वो इल्म ग़ैब जो वही के ज़रिये दिया गया है।

इस के लिए आयतें यह हैं:

41.قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعاً مِنَ الرُّسُلُ وَ مَا اَدْرِىْ مَا يَفْعَلُ بِىْ وَ لَا بِكُمْ اِنْ اتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَىَّ وَ مَا اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (آیت۹،سورت الاحقاف۴۶)

तर्जुमा: कहो कि मैं पैग़म्बरों में से कोई अनोखा पैग़म्बर नहीं हूं, मुझे मालूम नहीं कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और ना मालूम कि तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा मैं किसी और चीज़ की नहीं, सिर्फ़ इस वही की पैरवी करता हूं जो मुझे भैजी जाती है।

42.وَ مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْىٌ يُّوْحٰى . (آیت۳۔۴،سورت النجم۵۳)

तर्जुमा: और यह अपनी ख़्वाहिश से कुछ नहीं बोलते यह तो

ख़ालिस वही है जो इन के पास भैजी जाती है।

(2) वो इल्मे ग़ैब जो वही के ज़रिये दिया गया है जिस को अम्बाउल ग़ैब कहा गया है।

इन 3 आयतों में यह वज़ाहत है कि ग़ैब की कुछ ही ख़बरों की आप पर वही की गई है, सब की नहीं।

43. ذَالِکَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْہِ اِلَیْکَ . (آیت۴۴،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: यह सब ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम वही के ज़रिये आप को दे रहे हैं।

44. ذَالِکَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْہِ اِلَیْکَ وَ مَا کُنْتُ لَدَیْھِمْ.

(آیت۱۰۲،سورت یوسف۱۲)

तर्जुमा: यह सब ग़ैब की बातें हैं जो हम वही के ज़रिये आप को दे रहे हैं, और आप इन के पास नहीं थे।

45. تِلْکَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْہِ اِلَیْکِ . (آیت۴۹،سورت ھود۱۱)

तर्जुमा: यह सब ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम वही के ज़रिये आप को दे रहे हैं।

इन आयतों में है कि ग़ैब की कुछ बातें हैं जो वही के ज़रिये मुझे बताई गई हैं इसी को अम्बाउल ग़ैब कहा गया।

(3) तीसरी सूरत यह है कि ग़ैब की बात हुजूर स0अ0व0 पर इस को ज़ाहिर की गई है।

इस की दलील यह आयत है:

46. عَالِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْھِرُ عَلَی غَیْبِہٖ اَحداً . اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ فِاِنَّہُ یَسْلُکُ مِنْ بَیْنِ یَدَیْہِ وَ مِنْ خَلْفِہٖ رَصَداً ، لِیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسَالَاتِ رَبِّھِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَیْھِمْ وَ اَحْصٰی کُلِّ شَیْءٍ عَدَداً. (آیت۲۶۔۲۸،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: अल्लाह ही ग़ैब की सारी बातें जानने वाला है, चुनांचे वो अपने भेद पर किसी को मुतलअ़ नहीं करता सिवाऐ किसी पैग़म्बर के जिस उस ने (उस काम के लिए) पसन्द फ़रमा लिया

हो, ऐसी सूरत में वो इस पैग़म्बर के आगे पीछे कुछ मुहाफ़िज़ लगा देता है ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने परवरदिगार के पैग़ाम को पहुंचा दिये हैं।

इस आयत में है कि......आप स0अ0व0 पर ग़ैब की बातें ज़ाहिर की हैं।

(4) ग़ैब की बातें हैं, हुजूर स0अ0व0 को इन पर मुलतअ़ किया गया है यह भी हुजूर स0अ0व0 को दी गई है। तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 में है कि यह बाज़ इल्म ग़ैब है, सब नहीं है। इस की दलील यह आयत है:

47. مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعُكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاءُ. (آیت۱۷۹،سورۃ آل عمران۳)

तर्जुमा: और ऐसा नहीं कर सकता कि तुम को बराहे रास्त ग़ैब की बातें बेता दे, हां वो (जितना बताना मुनासिब समझता है इस के लिए) अपने पैग़म्बरों में से जिस को चाहा है चुन लेता है।

इस आयत में है। अल्लाह ने हुजूर स0अ0व0 को ग़ैब की बाज़ बातों पर मुतलअ़ किया है।

(6) छटी सूरत आप के सामने जन्नत और जहन्नुम कर दी गई, जिस की वजह से हुजूर स0अ0व0 जन्नत और जहन्नुम की बहुत सी चीज़ें देख ली।

6.عن انس ؓ قال سألو النبی ﷺ حتی احفوه بالمسئله فصعد النبی ﷺ ذات يوم المنبر فقال لا تسألونی عن شئی الا بينت لكم ..... فقال النبی ﷺ ما رأئت فی الخير و الشر كاليوم قط ، انه صورت لی الجنة و النار حتی رأئت هما دون الحائط .(بخاری شريف ، كتاب الفتن ، باب التعوذ من الفتن ، ص ۱۲۲۲ ، نمبر ۷۰۸۹)

तर्जुमा: हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि लोगों ने हुजूर स0अ0व0 से पूछना शुरू किया तो आप एक दिन मिम्बर पर चढ़े और कहा कि जो कुछ तुम पूछोगे, मैं तुम को इस के बारे में

बताउंगा......हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि आज की तरह मैंने भी ख़ैर और शर को नीं देखा, मेरे सामने जन्नत और जहन्नुम कर दी गई, यहां तक कि मैंने इन दोनों को दीवार की पीछे देखा।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 के सामने जन्नत और जहन्नुम कर दी गई और आप ने इन को क़रीब से देखा।

(7) या दुनिया और आख़िरत की कुछ चीज़ें आप के सामने कर दी गई और आप ने इन को देख ली।

7.عن ابی بکر الصدیق قال اصبح رسول الله ﷺ ذات یوم ....فقال نعم عرض علی ما هو کائن من امر الدنیا و امر الآخرة . (مسند احمد ، مسند ابی بکر ، ج ۱ ، ص ۱۰ ، نمبر ۱۲)

तर्जुमा: एक दिन सुबह हुई......आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि दुनिया और आख़िरत में जो (बड़े बड़े मामले) होने वाले हैं और अ़र्ज़ कर दिये गये।

इस हदीस में है: दुनिया और आख़िरत में जो बड़े बड़े मामले होने वाले हैं वो मेरे सामने कर दिये गये ता यह सूरत भी है कि हुज़ूर स0अ0व0 के सामने ग़ैब की कुछ बातें ज़ाहिर कर दी गई, और आप स0अ0व0 ने इन को देख लिया यह ग़ैब की बातें बताने की पांचवीं सूरत हैं।

लेकिन आगे बताया जायेगा कि यह ग़ैब की बाज़ बातें हैं कुल नहीं हैं और वो हो भी नहीं सकती, क्योंकि अल्लाह का इल्म तो ला मुन्तही है, तो वो हुज़ूर स0अ0व0 को कैसे दिया जा सकता है, जिन की मुन्तही है।

वो आयतें जिन से कुल्ली इल्म ग़ैब होने का शुब्हा होता है

कुछ हज़रात इन अहादीस से इल्म ग़ैब अ़ताई साबित करते हैं।

बाज़ हज़रात ने आयत में **تبیانا لکل شئی** से इसतदलाल किया है कि इस किताब में हर चीज़ है, जिस का मतलब यह हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 को तमाम के उ़लूम ग़ैब दे दिये गये। आयत यह है:

49.وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَاناً لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ .(آیت۸۹،سورت النحل۱۶)

तर्जुमा: और हम ने तुम पर यह किताब उतारी है ताकि वो हर बात को खोल कर बयान करे और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और ख़ुा ख़बरी हो।

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बा रज़ि0 में: **تِبْيَاناً لِّكُلِّ شَيْءٍ** ، की तफ़सीर की है। **من الحلال ، و الحرام ،و الامر ، و النهى** कि इस किताब (कुरआन) में हलाल, हराम, अमर और नही की तफ़सील है, तमाम इल्मे ग़ैब नहीं है। तफ़सीर की इबारत यह है: **﴿تِبْيَاناً لِّكُلِّ شَيْءٍ﴾ من الحلال ، و الحرام ،و الامر ، و النهى** ( ) इस लिए इस आयत से कुल्ली इल्म ग़ैब साबित करना मुश्किल है।

50.مَا كَانَ حَدِيْثاً يُّفْتَرٰى وَ لٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ . (آیت۱۱۱،سورت یوسف۱۲)

तर्जुमा: यह कोई ऐसी बात नहीं है जो झूट मूट घड़ ली गई हो, बल्कि इस से पहले जो किताब आ चुकी है उस की तसदीक़ है, और हर बात की वज़ाहत और जो लोग ईमान लाऐ उन के लिए हिदायत और रहमत का सामान है।

बाज़ हज़रात ने इसतदलाल किया है कि इस आयत में है कि हुज़ूर स0अ0व0 पर कुरआन उतारा और इस आयत में है कि तमाम चीज़ों की तफ़सील है तो हुज़ूर स0अ0व0 को तमाम चीज़ों का इल्म ग़ैब हो गया।

लेकिन तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 में है कि यहां तमाम तफ़सील से मुराद हलाल और हराम की तफ़सील है, तमाम उ़लूम

ग़ैबिया नहीं हैं, क्योंकि वो तो इस किताब में है भी नहीं, और अल्लाह का लामहदूद इल्म इस किताब में कैसे हो सकता है।

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 की इबारत यह है: ﴿وَ تَفْصِيْلُ كُلِّ شَيْءٍ﴾ تبيان كل شيء من الحلال و الحرام . (تفسير ابن عباس ، آيت ۱۱۱ ، سورت يوسف ۱۲ ، ص) (तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास आयत 111, सूरह यूसुफ़: 12)

51. عَالِمُ الْغَيْبِ فَلاَ يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ اَحَداً . اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهِ رَصَداً ، لِيَعْلَمُ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَ اَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَداً. (آيت ۲۶-۲۸، سورة الجن ۷۲)

तर्जुमा: अल्लाह ही ग़ैब की सारी बातें जानने वाला है, चुनांचे वो अपने भैद पर किसी को मुतलअ़ नही करता सिवाऐ किसी पैग़म्बर के जिसे उस ने (उस काम के लिए) पसन्द फ़रमा लिया हो, ऐसी सूरत में वो इस पैग़म्बर के आगे पीछे कुछ मुहाफ़िज़ लगा देता है ताकि अल्लाज जान ले कि उन्होंने अपने परवरदिार के पैग़ाम को पहुंचा दिये हैं।

इस आयत से बाज़ हज़रात ने इसतदलाल किया है कि अल्लाह जिन रसूल से राज़ी होते हैं उन पर ग़ैब ज़ाहिर कर देते हैं, लिहाज़ा हुज़ूर स0अ0व0 पर ग़ैब ज़ाहिर कर दिया इस लिए वो इल्म ग़ैब जानने वाले बन गये।

लेकिन इस आयत से इसतदलाल दुरूस्त नहीं है क्योंकि इस आयत में है: قد ابلغوا رسالات ربهم कि इस इल्म को रसूल पर ज़ाहिर करते हैं जो रिसालत के क़बील से हो, तमाम इल्म ग़ैब नहीं है, आप ख़ुद भी आयत पर ग़ौर करलें।

तफ़सीर इब्न अ़ब्बास में है कि यहां भी ग़ैब से मुराद बाज़ ग़ैब है, इस की इबारत यह है: ﴿فلا يظهر﴾ فلا يطلع ﴿عَلٰى غَيْبِهِ اَحَداً اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ﴾ الا من اختارمن الرسل فانه يطلعه على بعض الغيب .

(تفسیر ابن عباس ، ص ۶۲۰، آیت ۲۵ . ۲۶، سورت الجن ۷۲) (तफसीर इब्ने अ़ब्बास स:620, आयत: 25–26, सूरतुल जिन: 72) इस तफ़सीर में साफ़ लिखा हुआ है कि अल्लाह बाज़ ग़ैब पर मुतलअ़ करते हैं, पूरा इल्म ग़ैब नहीं दे दिया।

52.**مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَ لٰكِنَ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاءُ.** (آیت۱۷۹،سورۃ آل عمران۳)

तर्जुमा: और ऐसा नहीं कर सकता कि तुम को बराहे रास्त ग़ैब की बातें बता दे हां वो (जितना बताना मुनासिब समझता है इस के लिए) अपने पैग़म्बरों में से जिस को चाहता है चुन लेता है।

इस आयत में है कि ऐ अहले मक्का तुम लोगों को अल्लाह ग़ैब पर मुतलअ़ नहीं करता, हां अपने रसूल में जिन को चाहते हैं इन को ग़ैब की कुछ बातों की इत्तला दे देते हैं।

तफ़सीर इब्न अ़ब्बास में यहां भी है कि यह बाज़ ग़ैब है जो हुजूर स0अ0व0 को वही के जरीये बताया गया है इस की इबारत ये है **﴿وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ﴾ يا اهل مكة ﴿عَلَى الْغَيْبِ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاءُ﴾ يعنى محمدا فيطلعه على بعض ذالك بالوحى** . (تفسیر ابن عباس ، ص ۸۰، آیت ۱۷۹ ، سورت آل عمران ۳)

इस तफसीर में देखें **على بعض ذالك بالوحى** इबारत है के वही के जरीये गैब की बाज़ बातों की हुजूर स0अ0व0 को इत्तला देते हैं, इस लिए यह कुल इल्म ग़ैब नहीं है।

53.**وَ لَا رَطْبٍ وَ لَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ .** (آیت۵۹،سورت الانعام۶)

तर्जुमा: या कोई ख़ुश्क, या कोई तर चीज़ ऐसी नहीं है जो एक किताब मुबीन से इसतदलाल किया है कि किताब मुबीन से मुराद कुरआन करीम है और यह हुजूर स0अ0व0 को दिया गया है इस लिए हुजूर स0अ0व0 को सारा इल्म ग़ैब हासिल हो गया।

लेकिन यह इस्तदलाल इस लिए सही नहीं है क्योंकि किताब

मुबीन से मुराद लोहे महफ़ूज़ है जो हुज़ूर स0अ0व0 को नहीं दी गई है यह सिर्फ़ अल्लाह के पास है और इस में सब चीज़ें लिखी हुई हैं।

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 में यहां लोहे महफ़ूज़ लिखा हुआ इस की इबारत यह है ، كل ذالک فی اللوح المحفوظ ﴿كتاب مبين﴾ (مبين مقدارها ووقتها और लोहे महफ़ूज़ हुज़ूर स0अ0व0 को नहीं दी गई है इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 को तमाम इल्मे ग़ैब नहीं हुआ।

वो अहादीस जिन से इल्म ग़ैब पर इसतदलाल किया जाता है

यहां चार हदीसें हैं जिन में ماكان ومايكون का ज़िक्र है, यानी जो कुछ हो चुका है और क़यामत तक जो कुछ होने वाला है हुज़ूर स0अ0व0 ने इन सभी चीज़ों को सहाबा के सामने बयान किया, जिस का मतलब यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 को ख़ल्क़ की पैदाइश से ले कर जन्नत और जहन्नुम में दाख़िल होने तक की ग़ैब की बात मालूम है और इन अहादीस से साबित होता है कि ماكان और مايكون का इल्म हुज़ूर स0अ0व0 को हासिल है।

इन अहादीस से कुछ हज़रात ने हुज़ूर स0अ0व0 के लिए इल्म ग़ैब साबित करने की कौशिश की है, लेकिन ग़ौर से देखेंगे तो यह मालूम होगा कि इन अहादीस में यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 को बड़े बड़े फ़ितने की इत्तला दी गई है या बड़े बड़े वाक़िआत की इत्तला दी गई थी जिन का ज़िक्र हुज़ूर स0अ0व0 ने सहाबा के सामने किया, क्योंकि इल्म ग़ैब बेइन्तहा है इन सब को एक दिन में कैसे बयान किया? और बाज़ हदीस में इस की वज़ाहत है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 के सामने क़यामत तक आने वाले फ़ितनों का ज़िक्र किया है। और इन अहादीस से सब इल्म ग़ैब लेलें तमो यह अहादीस पिछले 40 आयतों के ख़िलाफ़ हो

जायेगी, जिन में ज़िक्र है कि हुजूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब नहीं है। अहादीस यह हैं:

8.عن حذيفة قال قام فينا رسول الله ﷺ مقاما ما ترك شيئا يكون فى مقامه ذالك الى قيام الساعة الا حدث به حفظه من حفظه و نسيه من نسيه قد علمه أصحابى هؤلاء . (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب اخبار النبى ﷺ فيما يكون الى قيام الساعة ، ص ١٢٥١ ، نمبر ٢٨٩١ / ٧٢٦٣)

तर्जुमा: हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 ने फ़रमाया हुजूर स0अ0व0 हमारे सामने खड़े हुए, क़यामत तक जितनी बातें इस जगह होने वाली हैं इस को बयान किया, किसी ने इन को याद रखा और किसी ने उन को भुला दिया, मेरे यह साथी इस बात को जानते हैं।

इस हदीस में भी है कि क़यामत तक जितनी बातें होने वाली हैं उन को हुजूर स0अ0व0 ने बयान किया।

दूसरे हज़रात में भी है कि क़यामत तक जितनी बातें होने वाली हैं उन को हुजूर स0अ0व0 ने बयान किया।

दूसरे हज़रात कहते हैं कि इस हदीस में बड़े बड़े फ़ितने का ज़िक्र है, पूरा इल्म ग़ैब नहीं है क्योंकि इसी हदीस को दूसरी सनद से बयान किया है जिस में बड़े बड़े फ़ितने का ज़िक्र है। वो अहादीस यह हैं:

9. قال حذيفه بن اليمان والله انى لاعلم الناس بكل فتنة هى كائنة ، فيما بينى و بين الساعة . (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب اخبار النبى ﷺ فيما يكون الى قيام الساعة ، ص ١٢٥١ ، نمبر ٢٨٩١ / ٧٢٦٢)

तर्जुमा: हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि0 ने फ़रमाया कि मेरे दरमियान और क़यामत के दरमियान जितने फ़ितने होने वाले हैं ख़ुदा की क़सम में लोगों में से इन को ज़्यादा जानने वाला हूं।

इस लिए यह पूरा इल्म ग़ैब नहीं है इन अहादीस में क़यामत

तक आने वाले बड़े बड़े फ़ितनों का ज़िक्र है।

10. عن حذيفة انه قال اخبرني رسول الله ﷺ بما هو كائن الى ان تقوم الساعة فما منه شيء الا قد سألته (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب اخبار النبى ﷺ فيما يكون الى قيام الساعة ، ص ١٢٥١ ، نمبر ٢٨٩١/ ٧٢٦٥)

तर्जुमा: हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़यामत तक जो कुछ (फ़ितने) होने वाले हैं हुज़ूर स०अ०व० ने मुझ को इन की ख़बर दी है और इन में से हर एक को मैंने पूछ भी लिया है।

11. حدثني ابو زيد [يعنى عمر و بن اخطب] قال صلى بنا رسول الله ﷺ الفجر و صعد المنبر فخطبنا حتى حضرت الظهر فنزل فصلى ثم صعد المنبر فخطبنا حتى حضرت العصر ثم نزل فصلى ثم صعد المنبر فخطبنا حتى غربت الشمس فاخبرنا بما كان و بما هو كائن فاعلمنا أحفظنا . (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب اخبار النبى ﷺ فيما يكون الى قيام الساعة ، ص ١٢٥١ ، نمبر ٢٨٩٢/ ٧٢٦٧)

तर्जुमा: हुज़ूर स०अ०व० ने हम लोगों को फ़जिर की नमाज़ पढ़ाई और मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और ज़ोहर तक हमारे सामने बयान करते रहे, फिर उतर की नमाज़ पढ़ाई, फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और अ़सर तक हमारे सामने बयान करते रहे, फिर मिम्बर से उतरे और नमाज़ पढ़ाई, फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और आफ़ताब के गुरूब होने तक हमारे सामने बयान करते रहे, इस में जा कुछ हो चुके हैं और जो कुछ होने वाले हैं हम लोगों का सब बताया और हम ने उन को जान लिया और उस को याद भी कर लिया।

इस हदीस में है कि जो कुछ हो चुका है और जो होने वाले हैं सब बताया, अब ज़ाहिर बात हैकि एक दिन में इल्म ग़ैब की तमाम बातें नहीं बता सकते, बल्कि बड़े बड़े फ़ितने वाक़िआत ही

बता सकते हैं, इसी लिए इमाम मुस्लिम रह0 ने इस हदीस को किताब उन फ़ितन में ज़िक्र किया है और इसी बाब तें हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 की हदीस पहले गुज़री जिस में ह कि इस में बड़े बड़े फ़ितने का ज़िक्र है जो क़यामत तमक होने वाले हं, हुज़ूर स0अ0व0 इन का तज़्किरा किया है इस में तमाम इल्म ग़ैब नहीं है।

12.سمعت عن عمرؓ یقول قام فینا النبی ﷺ مقاما فأخبرنا عن بدء الخلق حتی دخل اهل الجنة منازلهم و اهل النار منازلهم حفظ ذالک من حفظه و نسیه من نسئه . (بخاری شریف ، کتاب بدء الخلق ، باب ما جاء فی قول الله تعالی ﴿ و هو الذی یبدء الخلق ثم یعیده و هو اهون علیه ﴾[آیت ۲۷، سورت الروم) ص ۵۳۲، نمبر ۳۱۹۲)

तर्जुमा: हज़रत उ़मर रज़ि0 कहते हैं कि हमारे सामने हुज़ूर स0अ0व0 खड़े हुए ओर जब से मख़लूक़ पैदा हुई है वहां से ले कर जन्नत में दाख़िल हो जाऐं और जहन्नम में दाख़िल हो जाऐं वहां तक की ख़बर हमें दी, जो इन बातों को याद रख सके उन्होंने याद रखा और जो भूलने वाले थे उन्होंने भुला दिया।

इस हदीस में भी बड़ी बड़ी ख़बरें या बड़े बड़े फ़ितने या बड़े बड़े वाक़िआत हुज़ूर स0अ0व0 ने बताये इस में पूरा इल्म ग़ैब नहीं है क्योंकि एक दिन में पूरा इल्म ग़ैब बताना ना मुमकिन है।

13.عن انسؓ قال سألو النبی ﷺ حتی احفوه بالمسئله فصعد النبی ﷺ ذات یوم المنبر فقال لا تسألونی عن شئی الا بینت لکم ..... فقال النبی ﷺ ما رأئت فی الخیر و الشر کالیوم قط ، انه صورت لی الجنة و النار حتی رأئت هما دون الحائط، قال قتادة یذکر هذه الحدیث عند هذه الآیة .﴿یاایها الذین آمنوا لا تسألوا عن اشیاء ان تبد لکم تسوکم و ان تسألو عنها هین ینزل القرآن ان تبد لکم عفا الله عنها و الله غفور حلیم[آیت ۱۰۱ ، سورت المائدة ۵﴾ (بخاری شریف ، کتاب

الفتن ، باب التعوذ من الفتن ، ص ۱۲۲۲ ، نمبر ۷۰۸۹)

तर्जुमाः हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि लोगों ने हुजूर स0अ0व0 से पूछना शुरू किया तो आप एक दिन मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया कि जो कुछ तुम पूछोगे मैं तुम को इस के बारे में बताउंगा......हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि आज की तरह मैंने कभी ख़ैर और शर को नहीं देखा, मेरे सामने जन्नत और जहन्नुम कर दी गई, यहां तक कि मैंने इन दोनों को दीवार के पीछे देखा।

बाज़ हज़रात ने इस हदीस से इसतदलाल किया है कि आप को इल्म ग़ैब था, तब ही तो आप ने फ़रमाया कि जो पूछोगे सब बताउंगा।

दूसरे हज़रात यह जवाब देते हैं कि ख़ुद इस हदीस में है कि अल्लाह ने जन्नत और जहन्नुम मेरे सामने कर दी जिस की वजह से मैं बयान करता चला गया इस लिए यह इल्म ग़ैब नहीं है बल्कि यह वही है जो आप पर बार बार नाज़िल होती थी? **يا اطلع على الغيب** है, चुनांचे इसी हदीस मे यह आयत है कि कुरआन के नाज़िल होते वक़्त सवाल पूछोगे तो सब बात ज़ाहिर कर दी जायेगी, जिस से मालूम हुआ कि आप को वही के ज़रिये बात बता दी जाती थी।

14.عن ابی بکر الصدیق قال اصبح رسول الله ﷺ ذات یوم....فقال نعم عرض علی ما هو کائن من امر الدنیا و امر الآخرة ، فجمع الاولون و الآخرون فی صعید واحد ففظع الناس بذالک حتی انطلقوا الی آدم علیه السلام...و یقول الله عز و جل ارفع راسک یا محمد و قل یسمع و اشفع تشفع. (مسند احمد ، مسند ابی بکر ، ج ۱ ، ص ۱۰ ، نمبر ۱۲) ،

तर्जुमाः एक दिन सुबह हुई......तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि दुनिया और आख़िरत में जितनी चीज़ें होने वाली है वो मुझ पर

पैश की गई, पस एक मैदान में अव्वल और आख़िर के तमाम लोगों को जमा किया गया, पस लोग घबरा कर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास जाऐंगे......अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे ऐ मौहम्मद अपने सर को उठाइये और आप कहिए बात सुनी जायेगी, और सिफ़ारिश कीजिए तो सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी।

इस हदीस से भी बाज़ हज़रात ने इसतदलाल किया है कि हुज़ूर स0अ0व0 को इल्म गै़ब था क्योंकि इस में है कि दुनिया और आख़िरत में जितनी बात होने वाली है, मेरे सामने सब पैश कर दी गई इस लिए आप को सब चीज़ का इल्म गै़ब हासिल हो गया।

दूसरे हज़रात न जवाब दिया कि इस पूरी हदीस को देखने से पता चलता है कि इस हदीस में बड़ी बड़ी चीज़ें वाज़ह की गई हैं और ख़ास तौर पर क़यामत में किस तरह हज़रत आदम अलैहि0 और दूसरे अम्बिया के पास लोग जाऐंगे और किस तरह आप शिफ़ाअ़त कुबरा करेंगे इस का ज़िक्र है, गै़ब की तमाम बातें नहीं हैं।

15.عن ابن عباس قال قال رسول الله ﷺ أتانی اللیلةربی تبارک و تعالی فی احسن صورة . قال احسبه قال فی المنام . فقال یا محمد هل تدری فیم یختصم الملاء الاعلی ؟ قال قلت : لا ، قال فوضع یده بین کتفی حتی وجدت بردها بین ثدیی، او قال فی نحری . فعلمت ما فی السماوات و ما فی الارض قال یا محمد هل تدری فیم یختصم الملاء الاعلیٰ قلت نعم فی الکفارات ، المکث فی المسجد بعد الصلوة . (ترمذی شریف ، کتاب تفسیر القرآن ، باب ومن سورة صٓ ، ص ۷۳۴، نمبر ۳۲۳۳، نمبر ۳۲۳۴، نمبر ۳۲۳۵)

तर्जुमा: हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि आज रात अल्लाह तआ़ला अच्छी सूरत में मेरे पास आये......रावी कहते हैं शायद यह ख़्वाब की बात थी......फिर अल्लाह ने कहा ऐ मौहम्मद स0अ0व0 आप को मालूम है कि मुल्ला आ़ला के लोग किस बारे में

झगड़ रहे हैं, मैंने कहा नहीं तो अल्लाह ने अपने हाथ को मेरे मोंढ़े के दरमियान रखा, यहां तक कि सीने में इस की ठण्ड़क महसूस हुई, आप ने सदी फ़रमाया या नहरी फ़रमाया, पस जो आसमान में था और जो ज़ैमीन में था उस को जान लिया, अल्लाह ने पूछा ऐ मौहम्मद स0अ0व0 आप को पता है कि मुल्ला अ़ाला वाले किस चीज़ में सबक़त कर रहे हैं, मैंनें कहा हां कफ़ारात और नमाज़ के बाद मस्जिद में ठहरने का जो सवाब है इस बारे में सबक़त कर रहे हैं।

यहां तीन हदीसें हैं: हदीस नमबर 3233 में है।

فعلمت ما فی السماوات و ما فی الارض.

हदीस नम्बर 3234 में है।

فعلمت ما بين المشرق و المغرب .

और हदीस नम्बर 3235 में है:

فتجلى لى كل شىء و عرفت . है इस से साबित करते हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 को तमाम चीज़ों का इल्म ग़ैब है।

दूसरे हज़रात इस हदीस के बारे में चार बातें कहते हैं:

(1) यह हदीस ऊपर की 37 आयतों के ख़िलाफ़ है, जिस में है कि मुझें इल्म ग़ैब नहीं है।

(2) दूसरी बात यह है कि इसी हदीस में **لا ادری** है कि मुझे मालूम नहीं है तो हुज़ूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब कैसे हुआ।

(3) तीसरी बात है कि आप को सारा इल्म ग़ैब नही दिया गया था, बल्कि ख़ास मलाअ अ़ाला के बारे में कुछ राज़ खोली गई कि मलाअ अ़ाला के लोग किस बात में सबक़त करते हैं ताकि हुज़ूर स0अ0व0 अपनी उम्मत को इन नेकियों को बता सकें।

(4) और चौथी बात यह है कि यह हदीस ख़्वाब की है।

इस लिए इस हदीस से तमाम चीज़ों का इल्म ग़ैब साबित करना मुश्किल है।

16. عن ثوبان قال قال رسول الله ﷺ ان الله زوى لى الارض فرأئت مشارقها و مغاربها و ان امتى سيبلغ ملكها ما زوى لى منها . (مسلم شريف، كتاب الفتن ، باب هلاک هذه الامة بعضهم ببعض ، ص ۱۲۵۰ ، نمبر ۲۸۸۹/ ۷۲۷۸)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने मेरे लिए ज़मीन को समेट दिया पस मैंने इस के मश्रिक़ और मग़रिब को देखा और जहां तक समैटी गई मेरी उम्मत वहां तक पहुंच जायेगी।

इस हदीस से भी इल्म ग़ैब साबित करने की कौशिश की जाती है।

यह एक मोअ़ज्ज़ा का ज़िक्र है कि आप के सामने मश्रिक़ और मग़रिब की ज़मीन कर दी गई और आप ने इस को देख लिया लेकिन इस हदीस में वज़ाहत है कि मश्रिक़ और मग़रिब की चीज़ों को देखा, सिर्फ़ मश्रिक़ और मग़रिब की चीज़ों को देखना यह पूरा इल्म ग़ैब नहीं है, बल्कि यह जुज़ है जो आप को बताया गया है।

दूसरी बात यह है कि इस में **زوى** माज़ी का सीग़ा है, जिस का मतलब है कि एक मर्तबा ऐसा किया गया वरना अगर आप को हमैशा इल्म ग़ैब है तो आप के सामने ज़मीन को करने का मतलब क्या है, वो तो हर वक़्त आप के सामने है ही, इस लिए इस हदीस से इल्म ग़ैब साबित नहीं होता, बल्कि ग़ैब की बाज़ बातों को आप को बताई गई है। आप ख़ुद भी ग़ौर करलें।

17. عن ابى ذر قال قال رسول الله ﷺ انى ارى ما لا ترون و اسمع ما لا تسمعون . (ترمذى شريف ، كتاب الزهد ، باب ما جاء فى قول النبى ﷺ لو تعلمون ما اعلم لضحكتم قليلا، ص ۵۳۰، نمبر ۲۳۱۲)

तर्जुमाः आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं जो देखता हूं तुम लोगों का इस का पता नहीं है और मैं जो सुनता हूं तुम नहीं सुन सकते।

इस हदीस से बाज़ हज़रात ने इल्म ग़ैब पर इस्तदलाल किया है, लेकिन इस हदीस से भी पूरा इल्म ग़ैब साबित नहीं होता है, बल्कि अल्लाह का बाज़ इल्म ग़ैब है, जो हुजूर स0अ0व0 को बताया गया है।

इन 10 आयत और अहादीस से मालूम होता है कि हुजूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब था लेकिन बार बार अ़र्ज़ किया जा चुका है कि यह आयत और अहादीस 40 आयतों और 8 अहादीस के ख़िलाफ़ हैं।

क्या अल्लाह के अ़लावा किसी और को ज़ैद की हर हालत की ख़बर है

(3) और ग़ैब की तीसरी सूरत यह है कि क्या आज ज़ैद की सारी हालत, मौत की हयात की, रोज़ी की, शिफ़ा की नफ़ा की नुक़सान की मालूम है तो इस बारे में आयत बिल्कुल साफ़ है कि जब हुजूर स0अ0व0 को अपनी हालत का पता नहीं तो दूसरों की हालत का पता कैसे होगा। इस के लिए यह आयतें यह हैं:

54. قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعا مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَا اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَ لَا بِكُمْ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَّى وَ مَا اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (آیت۹،سورت الاحقاف۴۶)

तर्जुमा: कहो कि मैं पैग़म्बरों में से कोई अनोखा पैग़म्बर नहीं हूं मुझे मालूम नहीं कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और ना मालूम कि तुम्हारे साफ़ क्या किया जायेगा, मैं किसी और चीज़ की नहीं सिर्फ़ इस वही की पैरवी करता हूं जो मुझे भैजी जाती है।

इस आयत में हुजूर स0अ0व0 ऐलान कर रहे हैं ख़ुद मेरा भी पता नहीं कि मेरे साथ क्या होगा और तेरा भी पता नहीं कि तेरे साथ क्या होगा तो आज ज़ैद का इल्म हुजूर स0अ0व0 को कैसे हो जायेगा।

55. تِلْكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَا اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا اَنْتَ وَ لَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا . (آیت۴۹،سورت ھود۱۱).

तर्जुमा: यह ग़ैब की कुछ बातें हैं जो हम तुम्हें वही के ज़रिये बता रहे हैं यह बातें ना तुम इस से पहले जानते थे और ना तुम्हारी क़ौम।

नोट: इस आयत में अल्लाह ख़ुद फ़रमा रहे हैं कि ऐ नबी तुम्हें कुछ मालूम नहीं था और ना आप की क़ौम को मालूम था तो ज़ैद की हर हाल का इल्म हुज़ूर स0अ0व0 को कैसे हो सकता है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 55 आयतें और 17 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(11) सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांग सकते हैं

इस अ़क़ीदे के बारे मे 38 आयतें और 4 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

मदद मांगने की दो सूरतें हैं

(1) कोई सामने मौजूद हो तो इस से मदद मांग सकते हैं इस में कोई क़बाहत नहीं है यह जायज़ है जैसे हुज़ूर स0अ0व0 से दुआ़ करने के लिए कहा या सहाबा ने आप से कई चीज़ें मांगी, या जैसे क़यामत में हुज़ूर स0अ0व0 इन्सानों के सामने होंगे तो हुज़ूर स0अ0व0 से सिफ़ारिश की दरख़्वास्त करेंगे या जैसे डॉक्टर से कहे कि आप मेरा इलाज कर दें या मां से कहे कि मुझे खाना दे दें।

वो दुआ़ या मदद जो हुज़ूर स0अ0व0 से इन की ज़िन्दगी में मांगी हैं और कुरआन और अहादीस में इन का ज़िक्र है इन इबारात से बाज़ हज़रात ने यह इसतदलाल किया है कि मौत के बाद भी इन से मदद मांगना जायज़ है हालांकि मौत के बाद का मामला बिल्कुल अलग है, मौत के बाद मांगने के लिए बाज़ाब्ता आयत या हदीस होनी चाहिए।

(2) दूसरी सूरत यह है कि एक आदमी मरा हुआ है वो सामने मौजूद नहीं है अब इस के बारे में यह यक़ीन करना कि वो हमारी

बात को सुनता है और मैं जो कुछ मांगूगा वो देदेगा या जायज़ नहीं है क्योंकि ऐसी मदद सिर्फ़ अल्लाह ही कर सकता है।

किसी मय्यत से मांगने से पहले 4 सवाल हल करें

(1) पहला सवाल यह है कि हम जिस मय्यत से मांग रहे हैं वो हमारी बात सुनते भी हैं या नहीं। क्योंकि कुरआन ने ऐलान करके कहा।

وَ مَا يَسْتَوِى الْاَحْيَاءُ وَ لَا الْاَمْوَاتُ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَاءُ وَ مَا اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ . (آیت۲۲،سورت فاطر۳۵)

तर्जुमा: मुर्दा और ज़िन्दा बराबर नीं हैं और अल्लाह तो जिस को चाहता है बात सुना देता है और तुम इन को बात सुना नही सकते जो क़ब्रों में पड़े हैं।

इस आयत में है कि ऐ हुज़ूर स0अ0व0 आप मुर्दे को नहीं सुना सकते।

और दूसरी जमाअ़त की राये है कि हम तो नहीं सुना सकते, हां अैल्लाह चाहे तो किसी बात को मुर्दे को सुना सकते हैं और इन की दलील यह है कि हुजूर स0अ0व0 ने अबूजहल को मुख़ातिब करके कहा था कि क्या तुम को वो चीज़ मिल गई जिस का तुम से वादा किया जाता था।

हदीस यह है:

ان ابن عمر اخبره قال اطلع النبى ﷺ على اهل القليب فقال : وجدتم ما وعد ربكم حقا ؟ فقيل له أتدعون أمواتا ، فقال ما انتم باسمع منهم و لكن لا يجيبون . (بخارى شريف ، باب ما جاء فى عذاب القبر ، ص ٢٢٠ ، نمبر ١٣٧٠)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 बदर के कुंवे के मुर्दे के पास खड़े हुए और कहा अल्लाह ने जो तुम से वादा किया था तुम ने इस को सच पा लिया? लोगों ने हुजूर स0अ0व0 से कहा कि आप मुर्दों को

पुकार रहे हैं तो आप ने फ़रमाया कि तुम भी इतना नहीं सुनते जितना वो सुन रहे हैं, लेकिन वो जवाब नहीं दे सकते।

अब चूंकि मुर्दे के सुनने में ही इख़्तलाफ़ है इस लिए हम मुर्दे से सवाल कैसे करें।

(2) दूसरा सवाल है कि हम सवाल करलें तो क्या मुर्दे हमारी मदद कर सकते हैं जब कि हदीस में है:

اذا مات الانسان انقطع عمله . (ترمذی شریف، نمبر ۱۳۷۶)

तर्जुमा: इन्सान जब मर जाता है तो इस का अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाता है।

अब वो दुनियवी काम नहीं कर सकता जिस से अन्दाज़ा होता है कि इस को हमारी मदद करने का इख़्तयार नहीं है।

(3) और तीसरा सवाल है कि क्या अल्लाह ने या रसूलुल्लाह स0अ0व0 ने हमें हुक्म दिया है कि हम मुर्दों से मांगें? या ऐसे सवाल करने से मना किया है।

इस तीसरे सवाल के मुताल्लिक़ 30 आयतें और 3 हदीसें आ रही हैं कि अल्लाह` अ़लावा किसी और से मत मांगो।

आप ख़ुद भी इन आयतों पर ग़ौर करें।

(4) और चौथा सवाल यह है कि हिन्दू भी एक ख़ुदा को मानता है जिस को वो कृष्ण भगवान कहता है लेकिन दूसरी देवी और देवता से भी अपनी मदद मांगता है। तो आप भी ख़ुदा के अ़लावा नबियों से वलियों से और दूसरे लोगों से मदद मांगते हैं, तो हिन्दुओं और आप के ऐक़ाद में क्या फ़र्क़ रहा?

दुआ़ सिर्फ़ अल्लाह से मांगनी चाहिए

ग़ायब से मदद मांगना हो तो सिर्फ़ अल्लाह से मदद मांगे।

इस के लिए यह आयतें हैं:

1. اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ. (آیت ۴، سورہ فاتحہ ۱)

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और

सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांगते हैं।

दिन रात में फ़र्ज़ नमाज़ सतरह रकअ़तें हैं और कम से कम सतरह मर्तबा एक मौमिन से कहलवाया जाता है कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करते हैं और सिर्फ़ अल्लाह ही से मांगते हैं, इस लिए किसी और की इबादत भी जायज़ नहीं और किसी और से मदद मांगना भी जायज़ नहीं है।

2. أَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ ، بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ . (آیت۴۰۔۴۱،سورۃ الانعام۶)

तर्जुमा: तो क्या अल्लाह के अ़ैलावा किसी और पुकारोगे अगर तुम सच्चे हो बल्कि इसी को पुकारोगे।

3. اِنَّ الْمَسَاجِدَ لِلّٰهِ فَلاَ تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَداً . (آیت۱۸، سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: सज्दा सिर्फ़ अल्लाह के लिए है इस लिए अल्लाह के अ़लावा और को मत पुकारो।

4. اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ . (آیت۱۹۴،سورۃ الاعراف۷)

तर्जुमा: अल्लाह के अ़लावा जिस को पुकारते हो वो तुम्हारी तरह अल्लाह के बन्दे हैं।

5. وَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ . (آیت۱۳،سورۃ فاطر۳۵)

तर्जुमा: अल्लाह के अ़लावा जिस को भी पुकारते हो वो गुठली के छिलके का भी मालिक नहीं है। (तो तुमरी मदद क्या करेंगे)।

6. قُلْ اِنَّمَا اَدْعُوْا رَبِّىْ وَ لَا اُشْرِكُ بِهٖ اَحَداً . (آیت۲۰،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: आप फ़रमा दीजिए कि मैं सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारता हूं और उस के साथ किसी और को शरीक नहीं करता।

7. اِنَّ الْمَسَاجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَداً . (۱۸،سورت الجن۷۲)

तर्जुमा: और यक़ीनन तमाम सज्दे अल्लाह ही के लि हैं इस लिए अल्लाह के साथ किसी और को मत पुकारो।

इस आयत में है कि अल्लाह के अ़लावा किसी को मत पुकारो

तो दूसरे से दुआ़ मांगना कैसे जायेज़ होगा।

8.وَ اِنْ يَّمْسَسْکَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلاَ كَاشِفَ لَهٗ اِلَّا هُوَ . (آیت ۱۷،سورت الانعام ۶)

तर्जुमाः अगर अल्लाह तुम को तकलीफ़ पहुंचाये तो अल्लाह के अ़लावा कोई इस को दूर करने वाला नहीं है।

9. وَ اِنْ يَّمْسَسْکَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلاَ كَاشِفَ لَهٗ اِلَّا هُوَ . (آیت ۱۰۷،سورت یونس ۱۰)

इन 9 आयतों में हसर और ताकीद के साथ फ़रमाया कि सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारो और उसी से मदद मांगो तो अल्लाह के अ़लावा से कैसे मांगना जायज़ होगा।

आप ख़ुद भी इन आयतों पर ग़ौर करें।

इन आयतों में ताकीद और हसर के साथ कहा गया है कि सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद हो सकती है

10.وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ .(آیت ۱۲۶،سورت آل عمران ۳)

11.وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ . (آیت ۱۰،سورت الانفال ۸)

तर्जुमाः मदद तो सिर्फ़ अल्लाह ही के पास से आती है जो मुकम्मल इक़्तदार का मालिक है हिक्मत वाला है।

12.وَ مَا لَكُمْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٌ .(آیت ۱۰۷،سورت البقرۃ ۲)

13.وَ مَا لَكُمْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٌ . (آیت ۲۲،سورت العنکبوت ۲۹)

14.وَ مَا لَكُمْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٌ . (آیت ۳۱،سورت الشوری ۴۲)

तर्जुमाः और अल्लाह के सिवा तुम्हारा ना कोई रखवाला है और ना मददगार है।

15.مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٌ . (آیت ۱۰۷،سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमाः और अल्लाह के अ़लावा तुम्हारा ना कोई रखवाला है और ना कोई मददगार।

इन 6 आयतों में हसर के साथ बताया कि अल्लाह के अ़लावा कोई मददगार नहीं है और ना कोई रखवाला है इस लिए अल्लाह

के अ़लावा किसी से मदद नहीं मांगनी चाहिए। आप इन आयतों को ख़ुद भी ग़ौर से पढ़ें।

हुज़ूर स०अ०व० से ऐलान करवाया गया कि मैं भी नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं हूं

इन आयतों में हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया कि कहो कि मैं अपने लिए भी नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं हूं ताकि लोग हुज़ूर स0अ0व0 से ना मांगें और जब हुज़ूर स0अ0व0 से मांगने से मना कर दिया गया तो किसी और से मांगने की इजाज़त कैसे दी जायेगी।

16. قُلْ لَّآ اَمْلِکُ لِنَفْسِیْ ضَرّاً وَّ لَا نَفْعاً اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهُ .

(آیت۱۸۸،سورۃالاعراف۷)

17. قُلْ لَّآ اَمْلِکُ لِنَفْسِیْ ضَرّاً وَّ لَا نَفْعاً اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهَ .

(آیت۴۹،سورۃیونس۱۰)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि मैं ख़ुद भी अपने आप को नफ़ा और नुक़सान पहुंचाने का इख़्तयार नहीं रखता, मगर जो अल्लाह चाहे।

18. قُلْ اِنِّیْ لَا اَمْلِکُ لَکُمْ ضَرّاً وَّ لَا رَشْداً . (آیت۲۱،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: आप कह दीजिए ना तुम्हारा कोई नुक़सान मेरे इख़्तयार में है और ना कोई भलाई।

इन 3 आयतों में हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि यह कह दो कि मैं किसी के लिए नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं हूं। और इस की बड़ी वजह यह है कि हिन्दुओं ने अल्लाह के अ़लावा देवी और देवता को नफ़ा और नुक़सान का मालिक जाना इस लिए वो लोग अल्लाह को छोड़ कर देवी और देवता की पूजा करने लगे और शिर्क में मुब्तला हो गये।

इन तीन आयतों में भी फ़रमाया कि आप को इख़्तयार नहीं है

19. لَیۡسَ لَکَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَیۡءٍ اَوۡ یَتُوۡبَ عَلَیۡهِمۡ اَوۡ یُعَذِّبُهُمۡ ۔

(آیت ۱۲۸، آل عمران ۳)

तर्जुमाः ऐ रसूल आप को इस फ़ैसले का कोई इख़्तयार नहीं है कि अल्लाह इन की तौबा क़बूल करे या इन को अ़ज़ाब दे।

20. وَ لَا تَقُوۡلَنَّ لِشَیۡءٍ اِنِّیۡ فَاعِلٌ ذٰلِکَ غَداً اِلَّا اَنۡ یَّشَاءَ اللّٰهُ ۔

(آیت ۲۳، سورت الکہف ۱۸)

तर्जुमाः ऐ पैग़म्बर किसी भी काम के बारे में कभी भी यह ना कहिए कि मैं यह काम कर लूंगा हां यह कहिए कि अल्लाह चाहेगा तो कर लूंगा।

21. اِنَّکَ لَا تَهۡدِیۡ مَنۡ اَحۡبَبۡتَ ، وَ لٰکِنَّ اللّٰهَ یَهۡدِیۡ مَنۡ یَّشَاءُ وَ هُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِیۡنَ ۔ (آیت ۵۶، سورہ القصص ۲۸)

तर्जुमाः ऐ पैग़म्बर! आप जिस को चाहें हिदायत तक नहीं पहुंचा सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत तक पहुंचा देता है।

इस आयत में है कि आप किसी को हिदायत देना चाहें तो नहीं दे सकते, जब तजक कि अल्लाह ना चाहे आप हिदायत के लिए मबऊ़स हुए हैं तो जब आप हिदायत भी नहीं दे सकते तो दूसरी चीज़ें कैसे दे सकते हैं और हम कैसे आप से मांग सकते हैं? इस पर ग़ौर फ़रमाऐं।

इन आयतों में फ़रमाया कि अल्लाह के अ़लावा जिन को भी पुकारते हो वो अपनी मदद भी नहीं कर सकता तो तुम्हारी मदद क्या करेगा

22. وَ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَ كُمۡ وَ لَا اَنۡفُسَهُمۡ يَنۡصُرُوۡنَ .

(آیت۱۹۷،سورت الاعراف ۷)

तर्जुमाः और तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन जिन को पुकारते हो वो ना तुम्हारी मदद कर सकते हं और ना अपनी मदद कर सकते हैं।

23. لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَ كُمۡ وَ لَا اَنۡفُسَهُمۡ يَنۡصُرُوۡنَ .

(آیت۱۹۲،سورت الاعراف ۷)

तर्जुमाः वो ना इन की मदद कर सकते हैं और ना अपनी मदद कर सकते हैं।

24. وَ الَّذِيۡنِ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا يَسۡتَجِيۡبُوۡنَ لَهُمۡ بِشَيۡءٍ .

(آیت۱۴،سورت الرعد۱۳)

तर्जुमाः अल्लाह को छोड़ कर जिन को यह पुकारते हैं वो इन की दुआ़ओं का कोई जवाब नहीं देते।

25. وَ اِنَّ مَا يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ هُوَالۡبَاطِلُ وَ اِنَّ اللّٰهَ هُوَّ الۡعَلِيُّ الۡكَبِيۡرُ .

(آیت۶۲،سورت الحج ۲۲)

तर्जुमाः और यह लोग अल्लाह को छोड़ कर जिस को पुकारते हैं वो सब बातिल हैं और अल्लाह ही की शान ऊंची है और बड़ा रूत्बे वाला है।

26. قُلۡ فَمَنۡ يَّمۡلِكُ لَكُمۡ مِنَ اللّٰهِ شَيۡئاً اِنۡ اَرَادَ بِكُمۡ ضَرّاً اَوۡاَرَادَ بِكُمۡ نَفۡعاً بَلۡ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡراً . (آیت۱۱،سورت الفتح ۴۸)

तर्जुमाः आप कह दीजिए कि अगर अल्लाह तुम्हें कोई नुक़सान पहुंचाना चाहे या फ़ायदा पहुंचाना चाहे तो कौन है जो

अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे मामले में कुछ भी करने की ताक़त रखता हो, बल्कि तुम जो कुछ करते हो अल्लाह इस को पूरी तरह जानता है।

27.فلا يملكون كشف الضر عنكم و لا تحويلا. (آیت۵۶،سورت الاسراء۱۷)

तर्जुमा: जिन को तुम ने अल्लाह के सिवा माबूद समझ रखा है वो ना तुम से कोई तकलीफ़ दूर कर सकेंगे और ना इसे तब्दील कर सकेंगे।

28 .وَ مَا بِكُمْ مِنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهُ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْأَرُوْنَ .
(آیت۵۳،سورت النحل۱۶)

तर्जुमा: और तुम को जो नेअ़मत भी हासिल होती है वो अल्लाह की तरफ़ से होती है फिर जब तुम को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो इसी से फ़रियाद करते हो।

29.وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانُ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهٖ اَوْ قَاعِداً اَوْ قَائِماً فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَانْ لَمْ يَكُنْ يَدْعُنَا اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهُ . (آیت۱۲،سورت یونس۱۰)

तर्जुमा: और जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वो लेटे, बैठे और खड़े हुए हर हाल में हमें पुकारता है, फिर जब हजम इस की तकलीफ़ दूर कर देते हैं तो इस तरह चल खड़ा होता है, जैसे कभी इस को पहुंचने वाली तकलीफ़ में हमें पुकारा ही नहीं था।

30.وَ اِذَا سَأَلَكَ عِبَادِىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ .
(آیت۱۸۶،سورت البقرة۲)

तर्जुमा: ऐ रसूल जब मेरे बन्दे आप से मेरे बारे में पूछें (तो आप इन से कह दीजिए कि) मैं इतना क़रीब हूं कि जब कोई मुझे पुकारता है तो मैं पुकारने वाले की पुकार को सुनता हूं।

31.وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَ نَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهُ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ . (آیت۱۶،سورت قٓ۵۰)

तर्जुमा: हम ने इन्सान को पैदा किया और इन के दिल में जो ख़्याल आते हैं उन को हम ख़ूब जानते हैं और हम इन के शहे रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।

32.قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِیْنَ . (آیت۶۰،سورت غافر۴۰)

तर्जुमा: तुम्हारे रब ने कहा कि मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआऐं क़बूल करूंगा, बेशक जो लोग तकब्बुर की बिना पर मेरी इबादत से मुंह मोड़ते है वो ज़लील हो कर जहन्नुम में दाख़िल होंगे।

इस आयत में तो शिद्दत के साथ यह कहा है कि जो मुझ से नहीं मांगेगा उस को जहन्नुम में दाख़िल किया जायेगा।

33.هُوَ الْحَیُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ . (آیت۶۵،سورت غافر۴۰)

तर्जुमा: वही हमैशा ज़िन्दा है इस के अ़लावा कोई माबूद नहीं इस लिए अल्लाह को इस तरह पुकारो कि तुम्हारी ताबअ़दारी ख़ालिस इसी के लिए हो।

34 .اِنْ یَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَ اِنْ یَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِیْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ . (آیت۱۶۰،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं है और अगर वो तुम्हें तन्हा छोड़ दे तो कौन है जो इस के बाद तुम्हारी मदद करे?

35.بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَ هُوَ خَیْرُ النّٰصِرِیْنَ . (آیت۱۵۰،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: बल्कि अल्लाह तुम्हारा हामी और नासिर है और वो बेहतरीन मददगार है।

इन 35 आयतों में ताकीद की गई है कि सिर्फ़ अल्लाह ही से मांगो, इस लिए दूसरों से मांगना जायज़ नहीं है। आप ख़ुद भी आयतों पर ग़ौर करलें।

हदीस में तालीम दी गई है कि सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांगे

हदीसें यह हैं:

1.عن انس قال قال رسول الله ﷺ ليسأل احدكم ربه حاجته كلها حتى يسأل شسع نعله اذا انقطع . (ترمذى شريف ، كتاب الدعوات ، باب ليسأل ربه حاجته كلها ، ص ۸۲۲، نمبر ۳۶۰۴)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम में से हर एक अपने रब से तमाम ही ज़रूरत मांग, यहां तक कि जूते का तिसमा टूट जाये तो वो भी अल्लाह ही से मांगे।

इस हदीस में है कि तमाम ज़रूरियात अल्लाह से ही मांगना चाहिए।

2.عن عائشة قالت كان رسول الله ﷺ اذا اشتكى من انسان مسحه بيمينه ثم قال أذهب الباس رب الناس و اشف انت الشافى لا شفاء الا شفائك شفاء لا يغادر سقما . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب استحباب رقية المريض ، ص ۹۷۲، نمبر ۲۱۹۱ /۵۷۰۷)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 की ादत यह थी कि कोई आदमी बीमार होता तो दाऐं हाथ से उस को छूते, फिर यह दुआ़ पढ़ते, इन्सान के रब तकलीफ़ दूर कर दीजिए, आप शिफ़ा देने वाले हैं आप ही शिफ़ा दीजिए सिर्फ आप ही की शिफ़ा है ऐसी शिफ़ा जो बीमारी को ना छोड़े।

इस हदीस में सिर्फ़ अल्लाह से शिफ़ा मांगी गई है।

क़यामत में भी हुज़ूर स०अ०व० अल्लाह से मांगेगे और अल्लाह देंगे

इस के लिए हदीस यह है:

3.عن انس قال قال رسول الله ﷺ يجمع الله الناس يوم القيامة فيقولون لو استشفعنا على ربنا حتى يريحنا من مكاننا .....ثم يقال لى : ارفع رأسک و سل تعطه ، و قل يسمع ، و اشفع تشفع فارفع رأسى فأحمد ربى بتحميد يعلمنى ، ثم اشفع فيحد لى حدا ثم اخرجهم من النار و ادخلهم الجنة ثم اعود فاقع ساجدا مثله فى الثالثة او الرابعة حتى ما يبقى فى النار الا من حبسه القرآن . (بخارى شريف ، كتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار ، ص ١١٣٦ ، نمبر ٦٥٦٥ص)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह लोगों को क़यामत के दिन जमा करेंगे, लोग कहेंगे कि कोई हमारे रब के सामने सिफ़ारिश पैश करे तो क़यामत के इस मैदान से हमें आ़फ़ियत मिल जाये……फिर मुझ से अल्लाह कहेंगे, हुज़ूर स0अ0व0 सर उठाइये मांगो मैं दूंगा आप कहिए, बात सुनी जायेगी, सिफ़ारिश कीजिए सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी, तो मैं सर उठाउंगा और इस वक़्त ऐसी तारीफ़ करूंगा जो तारीफ़ मुझे अल्लाह सिखाऐंगे फिर सिफ़ारिश करूंगा तो मेरे लिए एक हद मुतअ़य्यन की जायेगी फिर इन लोगों को मैं आग से निकालूंगा और जन्नत में दाख़िल करूंगा, फिर पहले की तरह दोबारा सज्दे में जाउंगा तीसरी मर्तबा या चौथी मर्तबा यहां तक कि कुरआन ने जिन को जहन्नुम में रखा है सिर्फ़ वही जहन्नुम में रहेगा।

इस हदीस में है कि क़यामत के दिन अल्लाह कहेंगे कि आप मांगें और मैं दूंगा जिस का मतलब यह है कि क़यामत में भी आप को इख़्तयार नहीं होगा, बल्कि आप मांगेंगे और अल्लाह देंगे आप शिफ़ाअ़त मांगेंगे और अल्लाह देंगे।

सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांगनी चाहिए (इमाम ग़ज़ाली रह० की राये)

इमाम ग़ज़ाली रह0 की किताब ''क़वाइदुल अ़क़ाइद'' में यह इबारत है:

.فالله وحده هو الذى يتقرب اليه المسلم بعبادته و بخضوعه

.و من الله وحده يستمد المسلم العون و يطلب الهداية .

هـذا هـو الـمـعـنى الذى يعينه ، او الذى يجب ان يعنيه المسلم كلما قرأ قـول الـلـه تـعـالى ﴿ اِيَّاکَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاکَ نَسْتَعِيْنُ ﴾ (آیت۳،سورت الفاتحۃ۱) (قواعد العقائد للامام غزالی، باب تقديم ، ص ۹)

तर्जुमा: अल्लाह ही एक ऐसी ज़ात है जिस की इबादत करके और उस के सामने झुक कर मुसलमान उस की कुरबत हासिल करता है।

मुसलमान जब भी **ايـاک نـعبـد ، و ايـاک نستعين،** पढ़े तो यही मतलब ले या मुसलमान पर वाजिब है कि यही मतलब ले कि सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करता हूं और उसी से मदद मांगता हूं।

इस इबारत और आयत में है कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांगनी चाहिए यही तौहीद है।

इन आयात और अहादीस से शुब्हा होता है कि वफ़ात के बाद भी आप से मांगने की इजाज़त है

पहली बात यह है कि 35 आयतों में ताकीद के साथ गुज़रा कि अल्लाह ही से मांगे इस लिए वही सही है और नीचे की आयतों में जिस मदद मांगने का ज़िक्र है वो आप की हयात में है और आप जब ज़िन्दा थे, आमने सामने थे तो इस वक़्त आप से मांगने की तरग़ीब थी, या क़यामत में जब उम्मती आप स0अ0व0 के सामने होगा तो वो आप से सिफ़ारिश करने के लिए कहेगा, या हौज़ कौसर का पानी मांगेगा और यह सब के यहां जायज़ है।

सवाल उस वक़्त है कि क्या आप की वफ़ात के बाद हमें आप से मांगने की इजाज़त दी गई है या किसी वली या सहाबी से

मांगने की इजाज़त दी गई है, तो इस बारे में मुझे कोई आयत, हदीस नहीं मिली, जो आयत, हदीस मिलती है वो आप की हयात के वक़्त की है या क़यामत में उम्मती आप स0अ0व0 के सामने होगा, ग़ायब में मांगने की हदीस मुझे नहीं मिली।

शुब्हा की आयतें यह हैं:

1.وَ لَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَاءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوْا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلَ لَوَجَدُوْا اللّٰهَ تَوَّاباً رَّحِيْماً . (آیت۶۴،سورت النساء۴)

तर्जुमा: और जब इन लोगों ने (मुनाफ़िक़ीन ने) अपनी जानों पर जुल्म किया था अगर यह तुम्हारे पास आकर अल्लाह से मग़फ़िरत मांगते और रसूल भी इन के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करते तो यह अल्लाह को बहुत माफ़ करने वाला और बड़ा मेहरबान पाते।

नोट: इस आयत में तरग़ीब दी गई है कि हुज़ूर स0अ0व0 के पास आकर अस्तग़फ़ार करने के लिए कहते, जिस से मालूम हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 से मांग सकते हैं, लेकिन यह मांगना आप स0अ0व0 की हयात में है जो हर एक के नज़दीक जायज़ है।

2.اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهُ وَ الَّذِيْنَ آمَنُوْا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ رَاكِعُوْنَ . (آیت۵۵،سورت المائدة۵)

तर्जुमा: मुसलमानो! तुम्हारा यार व मददगार तो अल्लाह है इस के रसूल और वो ईमान वाले हैं जो इस तरह नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं कि वो दिल से अल्लाह के आगे झुके होते हैं।

इस आयत से बाज़ हज़रात ने यह इसतदलाल किया है कि इस आयत में कहा कि रसूल मददगार हैं, और नमाज़ पढ़ने वाले भी मददगार हैं इस लिए हम इन से मदद मांग सकते हैं।

लेकिन तफ़सीर में यह वज़ाहत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ओर उन के साथी यहूदी थे जब वो मुसलमान हुए तो उन के

रिश्तेदारों ने मुंह मोड़ लिया तो अल्लाह ने इन को तसल्ली दी कि घबराने की बात नहीं तुम्हारा मददगार तो अल्लाह, रसूल और मुसलमान हैं और यह हुज़ूर स0अ0व0 की ज़िन्दगी में था, इन की वफ़ात के बाद हुज़ूर स0अ0व0 से मांगे, इस आयत से साबित नहीं होता।

3.وَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُ اَوْلِيَاءَ بَعْضٍ يَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ . (آیت ۷۱،سورت التوبۃ ۹)

तर्जुमा: और मौमिन मर्द और मौमिन अ़ौरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं वो नेकी की तलक़ीन करते हैं और बुराई से रोकते हैं।

नोट: इस आयत से भी बाज़ हज़रात ने यह इस्तदलाल किया है कि मौमिन मर्द और मौमिन अ़ौरतें एक दूसरे के मददगार हैं, इस लिए इन से मौत के बाद भी मांग सकते हैं और इस से साबित हुआ कि वली से भी मांग सकते हैं।

लेकिन यह आयत भी मरने के बाद मांगने के सिलसिले में नहीं है बल्कि ज़िन्दा हो तो एक दूसरे से मांग सकते हैं, इसी लिए इसी आयत में वज़ाहत है कि नेकी की तलक़ीन करना और बुराई से रोकना, यह मांगते हैं, इस लिए मरने के बाद वलियों से मांगने का सबूत इस से नहीं होता और कैसे होगा जब कि यह आयत 35 आयतों के ख़िलाफ़ है।

4.سمعت معاوية خطيبا يقول سمعت النبى ﷺ يقول من يرد الله به خيرا يفقهه فى الدين و انما انا قاسم و الله يعطى . (بخارى شريف ، كتاب العلم ،باب من يرد الله به خيرا يفقهه فى الدين،ص ١٧ ، نمبر ١٧)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 से कहते हुए सुना है कि अल्लाह जिस के साथ ख़ैर का इरादा करते हैं इस को दीन की समझ अ़ता कर देते हैं और मैं तो सिर्फ़ (रिसालत) तक़सीम करने वाला हूं, हर चीज़ का देने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है।

बाज़ हज़रात ने इस हदीस से साबित की है कि हुजूर स0अ0व0 क़ासिम हैं इस लिए इन से मांग सकते हैं, लकिन पूरी हदीस को पढ़ने से मालूम होता है कि इस का मतलब यह है कि समझ देना यह अल्लाह का काम है इस लिए इसी से समझ मांगो अल्बत्ता हदीस और कुरआन और दीन का इल्म जो अल्लाह ने मुझे दिया है या ग़नीमत का माल मुझे दिया है मैं इस को बयान करता हूं और इस को तक़सीम करता हूं, इसी लिए इमाम बुख़ारी रह0 ने इस हदीस का बाब बांधा कि من يرد الله به خيرا يفقهه فى الدين अल्लाह जिस को चाहते हैं इस को फ़िक़्हा की समझ दे देते हैं दूसरी बात यह है कि यह तक़सीम करना आप की हयात में था, आप की वफ़ात के बाद भी आप दुनिया वालों पर तक़सीम कर रहे हैं इस हदीस में इस की वज़ाहत नहीं है।

(12) वसीला

वसीला एक बड़ा हंगामा ख़ैज़ मज़मून है इस में कई फ़रीक़ हैं और हर एक अपनी राये की तरफ़ दलीलें देते हैं इस लिए इस की तफ़सील सुनें।

इस अक़ीदे के बारे मे 4 आयतें और 10 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

वसीला की 5 सूरतें हैं

(1) पहली सूरत दुआ़ अल्लाह ही से मांगे, लेकिन यूं कहे कि या अल्लाह तू इस दुआ़ को हुजूर स0अ0व0 के तुफ़ैल में क़बूल करले, तो इस की गुंजाइश है लेकिन हमैशा इस की आ़दत ना बनाये, क्योंकि कुछ ही हदीसों में इस का ज़िक्र है, बाक़ी कुरआन और हदीस में जितनी दुआ़ऐं हैं इन में वासता का ज़िक्र नहीं है बल्कि बराहे रास्त अल्लाह से मांगने का ज़िक्र है।

(2) दूसरी सूरत यह है कि कोई नेक काम करे और इस को अपने दरजात की बुलन्दी के लिए वसीला बनाये यह बहुत बेहतर

है, आयत में इस की तरग़ीब दी गई है।

(3) तीसरी सूरत यह है कि किसी ज़िन्दा आदमी से दरख़्वास्त करे कि आप मेरे लिए दुआ़ करें कि मेरा फ़लां काम हो जाये या मुझे फ़लां नेकी मिल जाये यह दुरूस्त है, बहुत सी अहादीस में है कि सहाबा ने हुज़ूर स0अ0व0 से दुआ़ की दरख़्वास्त की।

(4) चौथी सूरत यह है कि किसी नबी या वली से कहे कि आप दुआ़ करें कि अल्लाह यह काम करदे यह किसी ज़िन्दा वली या नबी से कहे तो बिल्कुल जायज़ है, लेकिन जो नबी वफ़ात पा चुके हैं इन से यह कहें कि आप मेरे लिए दुआ़ करें इस बारे में कोई आयत या हदीस मुझे नहीं मिली बल्कि यह मिलता है कि मौत के बाद आदमी का अ़मल मुनक़तअ़ हो जाता है और दुआ़ करना भी एक अ़मल है इस लिए वो दुआ़ नहीं कर सकेंगे। दूसरी बात यह है कि मुर्दे सुनते हैं या नहीं इसी में इख़तलाफ़ है तो इन से कैसे कहा जायेगा कि आप मेरे लिए दुआ़ करें, इस लिए यह सूरत भी जायज़ नहीं है।

(5) पांचवीं सूरत यह है कि अल्लाह के अलावा किसी और से मांगे और यूं कहे कि ऐ वली या ऐ नबी तू दुआ़ क़बूल कर ले यह नाजायज़ है क्योंकि अल्लाह के अ़लावा से मांगना हुआ जो नाजायज़ है। पाँचों की दलीलें आगे आ रही हैं।

(1) दुआ़ अल्लाह ही से करे लेकिन किसी के तुफ़ैल का वास्ता दें

दुआ़ अल्लाह ही से करे लेकिन किसी के तुफ़ैल का वास्ता दे तो यह जायज़ है।

लेकिन चूंकि दो चार हदीसों में ही वसीला के साथ दुआ़ मांगने का ज़िक्र है, बाक़ी सैकड़ों हदीसों में बग़ैर वसीले के बराहे रास्त अलाह ही से दुआ़ मांगी गई है इस लिए कुरआन और हदीस वाली दुआ़ मांगे तो वो ज़्यादा क़बूल होगी।

(1) वसीला की पहली सूरत यह है कि अल्लाह ही से दुआ़ करे और कहे कि या अल्लाह फ़लां के तुफ़ैल में इस दुआ़ को क़बूल करले, या यह काम करदे यह जायज़ है लेकिन ऐसा ना करे।

इस के लिए अहादीस यह हैं:

1 . عن عثمان بن حنیف ان رجلا ضریر البصر اتی النبی ﷺ ....قال فامره ان یتوضاء فیحسن و ضوئه و یدعوا بهذ الدعاء اللهم انی أسألک و اتوجه الیک بنبیک محمد نبی الرحمة انی اتوجه بک الی ربی فی حاجتی هذه لتقضی لی اللهم فشفعه فی . (ترمذی شریف ، کتاب الدعوات ، باب ، ص ۸۱٦، نمبر ۳۵۷۸/ ابن ماجة شریف ، باب ما جاء فی صلوة الحاجة ، ص ۱۹۷ ، نمبر ۱۳۸۵)

तर्जुमा: एक कम नज़र आदमी हुजूर स0अ0व0 के पास आया......हुजूर स0अ0व0 ने हुक्म दिया कि अच्छी तरह वुजू करो और यह दुआ़ पढ़ो, ऐ अल्लाह आप के नबी मौहम्मद स0अ0व0 जो नबी रहमत भी हैं, इन के वास्ते से सवाल करता हूं और आप की तरफ़ मुतवज्जह होता हूं और इस ज़रूरत के बारे में अपने रब की तरफ़ आप के वास्ते से मुतवज्जह होता हूं ताकि ऐ अल्लाह आप मेरी ज़रूरत पूरी कर दें और हुजूर स0अ0व0 को मेरे बारे में सिफ़ारशी बना दीजिए।

इस हदीस में दो बातें हैं एक तो यह है कि मांगा सिर्फ़ अल्लाह ही से अल्बत्ता हुजूर स0अ0व0 का वास्ता दिया इतना जायज़ है।

2. عن عمر بن الخطابؓ قال قال رسول الله ﷺ لما اقترف آدم الخطیئةقال یا رب اسألک بحق محمد لما غفرت لی ، فقال الله یا آدم و کیف عرفت محمدا و لم أخلقه ؟ قال یا رب لانک لما خلقتنی بیدک و

نفخت فی روحک رفعت رأسی فرأیت علی قوائم العرش مکتوبا لا اله الا الله محمد رسول الله فعلمت انک لم تضف الی اسمک الا احب الخلق الیک فقال الله : صدقت یا آدم انه لاحب الخلق الی ادعنی بحقه فقد غفرت لک و لو لا محمد ما خلقتک . (مستدرک للحاکم ، کتاب توارخ المتقدمین من الانبیاء و المرسلیین ، باب و من کتاب آیات رسول الله ﷺ التی هی دلائل النبوة ، ج ۲، ص ۶۷۲، نمبر ۴۲۲۸)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ग़लती की तो कहा ऐ अल्लाह मौहम्मद स0अ0व0 के हक़ से आप से सवाल करता हूं कि आप मेरी लग़ज़िश को माफ़ कर दें अल्लाह ने पूछा ऐ आदम मौहम्मद को मैंने अभी पैदा भी नहीं किया है आप ने इस को कैसे पहचाना? हज़रत आदम अलैहि0 ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाज जब आप ने मुझ को अपने हाथ से पैदा किया और मेरे अन्दर रूह ड़ाली तो मैं ने अपना सर उठाया तो अ़र्श पर मैंने लिखा हुआ देखा। **لا اله الا الله محمد رسول الله** तो मैं समझ गया कि आप अपने नाम के साथ इसी को रखते जो मख़्लूक़ में सब से ज़्यादा आप का महबूब हो तो अल्लाह ने फ़रमाया आदम! तुम ने सही कहा वो मख़्लूक़ में से सब से ज़्यादा मुझे महबूब हैं, आप ने इन के तुफ़ैल में मुझ से दुआ़ की, इस लिए मैंने आप को माफ़ कर दिया, अगर मौहम्मद स0अ0व0 ना होते तो मैं तुम को पैदा भी ना करता।

3. عن عباس کانت یهود خیبر تقاتل غطفان فکلما التقوا هزمت یهود

خیبر فعاذت الیهود بهذ الدعاء ، اللهم انا اسئلک بحق محمد النبی الامی الذی وعدتنا ان تخرجه لنا فی آخر الزمان . (مستدرک للحاکم باب بسم الله الرحمن الرحیم ، من سورت ، ج ۲، ص ۲۸۹، نمبر ۳۰۴۲)

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि ख़ैबर के

यहूद क़बील ग़तफ़ान से जंग किया करते थे और होता यह था कि जब भी मुकाब्ला होता तो खैबर के यहूद हार जाते, तो यहूद ये दुआ पढ़ कर दुआ मांगने लगे ऐ अल्लाह नबी उम्मी मौहम्मद स0अ0व0 के तुफैल से हम आप से मांगते हैं, जिस का आप ने हम से वादा किया है कि इन को आख़िरी ज़माना में मबऊ़स करेंगे।

इस हदीस में है कि हुजूर के वास्ते से दुआ़ मांगी गई है।

सहाबी के वसीले से दुआ़ मांगी

इस के लिए अ़मल सहाबी यह हैः

4 . عن انس ابن مالک ان عمر بن الخطاب ؓ کان اذاقحطوا استسقی بالعباس بن عبد المطلب فقال اللھم انا کنا نتوسل الیک بنبینا ﷺ قتسقینا و انا نتوسل الیک بعم نبینا فاسقنا قال فسقون . (بخاری شریف ، باب سوال الناس الامام الاستسقاء اذا قحطوا ،ص ۱۶۲ ، نمبر ۱۰۱۰)

तर्जुमाः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जब भी क़हत होता तो हज़रत उ़मर रज़ि0 अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ि0 के वसीले से बारिश के लिए दुआ़ मांगते और यूं दुआ़ करते हम अपने नबी के वसीले से आप से दुआ़ मांगा करते थे तो आप बारिश दे देते थे, अब हम हमारे नबी के चचा के वसीले से दुआ़ मांगते हैं रावी कहते हैं कि इस से बारिश हो जाती थी।

इस क़ौल सहाबी में है कि हम हुजूर स0अ0व0 के वसीले से दुआ़ मांगते थे और अब इन के चचा हज़रत अ़ब्बास रज़ि0 के वसीले से दुआ़ मांगते हं।

यहां यह भी ग़ौर करने की बात है कि सहाबा रज़ि0 ने हज़रत अ़ब्बास रजि0 जो ज़िन्दा थे उन का वसीला दे कर दुआ़ मांगी जो वफ़ात पा गये थे उन का वसीला दे कर के दुआ़ नहीं मांगी हुजूर स0अ0व0 इन्तक़ाल कर गये थे इस लिए इन का वसीला दे कर दुआ़ नहीं मांगी।

5.اوس بن عبد الله قال قحط اهل المدينة قحطا شديدا فشكوا الى عائشة فقالت انظروا قبر النبی ﷺفاجعلوا منه كوی الی السماء حتی لا يكون بينه و بين السماء سقف قال ففعلوا فمطرنا مطراحتی نبت العشب.

(سنن دارمی ، باب ما اكرم الله نبيه بعد موته، ج ١ ، ص ٢٢٧، نمبر ٩٣)

तर्जुमा: ओस बिन अब्दुल्लाह कहते हें के मदीना में क़हत हुवा तो लोगों ने हज़रत आईशा रज़ि० के सामने शिकायत की हज़रत आइशा रज़ी० ने फरमाया के हुजूर स0अ0व0 की क़बर और आसमान के दरमियान खिड़की खोल दो, ताके क़बर और आसमान के दरमियान छत ना रहे, लोगों ने अयसा ही किया, तो इतनी बारिश हुई के घास उग गऐ।

इस अमल सहाबी में है के हुजूर स0अ0व0 की क़बर के पास खिड़की खोली तो बारिश हुई जिस से वसीले के जवाज़ का पता चलता है।

6 .عن مالک الدار قال و كا ن خازن عمر علی الطعام ، قال اصاب الناس قحط فی زمن عمر فجاء رجل الی قبر النبی ﷺ فقال يا رسول الله ! استسق لامتک فانهم قد هلكوا فأتی الرجل فی المنام فقيل له ائت عمر فأقرئه السلام و اخبره انكم مسقيون . (مصنف ابن ابی شيبة ، باب ما ذكر فی فضل عمر بن الخطاب ، ج ٦، ص ٣٥٩، نمبر ٣٢٠٠٢/ ٣١٩٩٣)

तर्जुमा: मालिक इबने दार फरमाते हें के खाने पर हज़रत उमर का एक ख़जांची था उमर के जमाने में क़हत हुवा, एक आदमी हजरत उमर रजी० के जमाने में हुजूर स0अ0व0 की क़बर के पास आया और कहा या रसूलुल्लाह अपनी उम्मत के लिये आप अल्लाह से बारिश मांगये वो हलाक हो चुके हें, उस आदमी को ख्वाब में आया और उसको ये कहा के उमर रजी० के पास जाओ और उसको सलाम कहना और उनको ये बता देना के बारिश होगी।

इस अमल सहाबी में है के सहाबी ने हुज़ूर स0अ0व0 की क़बर के पास उन से ये दरखास्त की आप अल्लाह से उम्मत के लिये बारिश मांगें।

(2/हदीस और 4/अमल सहाबी से मालूम हुवा के मांगे अलाह ही से, लेकिन यू कहे के फ़ला के तुफ़ैल में ये दुआ कुबूल करले तो ये जायज़ है कियों के हदीस में इसका ज़िकर है। लेकिन चुंके कुरआन और हदीस के और तमाम दुआओं में वसीले का जिकर नहीं है, बल्के बराहे रास्त अल्लाह से मांगने का जिकर है इस लिये बराहे रास्त अल्लाह से मांगना अच्छा है अलबत्ता कभी कभार वसीले का जिकर कर लै तो ये जायज़ है, कियों के ऊपर की हदीस में भी कभी कभार ही वसीले से दुआ मांगी है। आप खुद भी गौर करलें।

नेक आमाल कर के उस का वसीला पकड़े

ये सब से बेहतर तरीक़ा हैः

(2) दूसरी सूरत ये है के कोई नेक काम करे और उसको अपने दरजात की बुलंदी के लिये वसीला बनाऐ, ये बहुत बेहतर है।

इस आयत में इसकी तरगीब दी गई है।

1. يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اتَّقُوْا اللّٰهَ وَ ابْتَغُوْا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ . (آیت۳۵،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमाः ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और उस तक पहुंचने के लिये वसीला तलाश करो।

वसीला से हर वो नैक अमल मुराद है जो अल्लाह की खुश्नूदी का जरीया बन सके।

इस आयत का ये मतलब है के अल्लाह तआला का कुरब हासिल करने के लिये नैक आमाल करो और उसको कुरबत का वसीला बनाओ, इस आयत का ये मतलब हरगिज़ नही है के नैक लोगों के वसीले से दुआ मांगो।

हाँ पहले कुछ हदीसें गुज़रीं जिस से साबित होता है के

वसीला से दुआ मांगना जायज़ है। बाज़ हज़रात ने यहां यही मतलब लेने की कोशिश की है के नैक लोगों के वसीले से दुआ मांगो और उसपर भी जियादती ये की के खुद बुजुरग से ही दूआ मांगने लगे।

तफ़सीर इबने अब्बास रजी० में आयत की तफसीर में युं लिखाः

﴿ وَ ابْتَغُوْا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ ﴾ الدرجة الرفيعة و يقال اطلبوا اليه القرب فى الدرجات بالاعمال الصالحة .

यानी आमाल सालिहा कर के अल्लाह की कुरबत हासिल किया करो, दूसरी तफ़सीरों में भी इसी क़िसम के अल्फाज़ हें, इस लिये इस आयत से बुजुरगों से मदद मांगने का सुबूत नहीं होता हाँ ऊपर दो हदीसें गुजरी, जिन से इतनी गुन्जाईश निकलती है के कभी कभार अपनी दुआ में यूँ केह लैं के ऐ अल्लाह उस बुजुर्ग की लाज रखले और मेरी दुआ तू कुबूल करले। या उस बुजुर्ग के तुफैल में या अल्लाह मेरी दुआ कुबूल करले तो इसकी गुन्जाईश है।

दूसरी आयत ये हैः

2. اُولٰئِكَ الَّذِيْنَ يُدْعَوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمِ الْوَسِيْلَةِ . (آیت۵۷،سورت الاسراء۱۷)

तर्जुमाः जिन को ये लोग पुकारते हें वह तो खुद अपने परवर दिगार तक पहुंचने का वसीला तलाश करते हें के उन में से कोन अल्लाह का जियादा करीब होजाऐ।

इस आयत में अल्लाह तआला ने कुफ्फारे मक्का को इस बात पर तन्बीह की है के जो लोग फरिश्तों और जिन्नात को पूजते हें और समझते हें के वो हमें निजात दे देंगे या कोई मदद करेंगें तो ये खयाल गलत है, कियों की इन फरिश्तों और जिन्नात का तो हाल ये है के वह खुद अल्लाह के मुहताज हें, और नैक काम कर के अल्लाह की कुरबत हासिल करने की कोशिश करते हें, तो जब

वो खुद मोहताज हें तो इन पूजने वालों को किया देंगें इस लिये उन कुफ्फारे मक्का को चाहिये के बराहे रास्त अल्लाह ही से मांगें।

तफ़सीर इबने अब्बास में इस आयत की तफसीर यूँ है:

﴿اُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ یَبْتَغُوْنَ اِلٰی رَبِّھِمُ الْوَسِیْلَۃَ﴾ یطلبون بذالک الی ربھم القربۃ و الفضیلۃ .

जिन फ़रिश्तों और जिनों को ये कुफ्फारे मक्का पूजते हें वह खुद अपने रब की कुरबत और फ़ज़ीलत तलाश कर रहे हें तो ये उन पुजारयों को किया देंगें।

इस लिए इस आयत से भी बुजुर्गों से मदद मांगने का मफ़हूम नहीं निकलता, हां कोई ज़बरदस्ती खींच तान करे और बुजुर्गों की तफ़सीर को नज़र अन्दाज़ करके बुजुर्गों से मदद मांगने का मतलब निकाले तो यह इस की मरज़ी है।

ज़िन्दा आदमी से दुआ़ के लिए कहे यह जायज़ है

(3) तीसरी सूरत यह है कि ज़िन्दा आदमी से दुआ़ करने के लिए कहना, या इस से मदद मांगना या इस का वसीला दे कर अल्लाह ही से मांगना जायज़ है। इस के लिए यह आयत है:

3. وَ لَوْ اَنَّھُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ جَآءُوْکَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰہَ وَ اسْتَغْفَرَ لَھُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰہَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا . (آیت ۶۴،سورت النساء ۴)

तर्जुमा: और जब इन लोगों (मुनाफ़िक़ों) ने अपनी जानो पर जुल्म किया था अगर यह इस वक़्त तुम्हारे पास आकर अल्लाह से मग़फ़िरत मांगते और रसूल भी इन के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करते तो यह अल्लाह को बहुत माफ़ करने वाला और बड़ा मेहरबान पाते।

इस आयत से मालूम हुआ कि ज़िन्दा आदमी से दुआ़ के लिए कहना जायज़ है।

4. وَ مَا کَانَ اللّٰہُ لِیُعَذِّبَھُمْ وَ اَنْتَ فِیْھِمْ . (آیت ۳۳،سورت الانفال ۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर अल्लाह ऐसा नहीं है कि इन को इस हालत में अ़ज़ाब दे जब आप इन के दरमियान मौजूद हों। इस आयत से पता चला कि नेक आदमी ज़िनदा हो तो इस से फ़ायदा होता है।

किसी ज़िन्दा आदमी से दुआ़ के लिए कहना जायज़ है

7.عن عبد الله بن عمر بن العاص انه سمع النبی ﷺ یقول ...ثم سلوا لی الوسیلة فانها منزلة فی الجنة لا تنبغی الا عبد من عباد الله و ارجوا ان اکون انا هو. (مسلم شریف ، کتاب الصلاة ، باب استحباب القول مثل ما یقول المؤذن ، ثم یصلی علی النبی ﷺ ثم یسأل الله له الوسیلة ، ص ۱۶۳ ، نمبر ۳۸۴، نمبر ۸۴۹)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन आ़स रजि0 ने हुज़ूर स0अ0व0 को कहते सुना......फिर मेरे लिए वसीला मांगो, इस लिए कि यह जन्नत में एक जगह जो अल्लाह के बन्दे में से एक ही के लिए है और मुझे उम्मीद है कि वो आदमी में ही हूंगा (जिस को यह जगह मिलेगी)।

8. عن عمر انه استأذن النبی ﷺ فی العمرة فقال ای اخی اشرکنا فی دعائک و لا تنسانا . (ترمذی شریف ، کتاب الدعوات ، باب ، ص ۸۱۲، نمبر ۳۵۶۲)

तर्जुमा: हज़रत उ़मर रज़ि0 ने हुज़ूर स0अ0व0 से उ़मरे की इजाज़त मांगी तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया मेरे भाई! अपनी दुआ़ में मुझे शरीक करना और मुझे भूलना नहीं।

इन दोनों हदीसों में हुज़ूर स0अ0व0 ने अपनी उम्मती से दुआ़ के लिए कहा है जो ज़िन्दा थे, या जब वो ज़िन्दा रहेंगे इस लिए यह जायज़ है।

9 . سمع انس بن مالک یذکر ان رجلا دخل یوم الجمعة من باب کان وجاه المنبر و رسول الله ﷺ قائم یخطب فاستقبل رسول الله ﷺ قائما فقال یا رسول الله هلکت الاموال و انقطعت السبل فادع الله یغیثنا قال فرفع رسول الله یدیه . (بخاری شریف ، کتاب الاستسقاء ، باب الاستسقاء فی المسجد الجامع ، ص ۱۶۲ ، نمبر ۱۰۱۳)

तर्जुमा: हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 फ़रमाते हैं कि एक आदमी जुमा के दिन दरवाज़े से दाख़िल हुआ जो मिम्बर के सामने था और हुजूर स0अ0व0 खड़े हो कर ख़ुत्बा दे रह थे, वो हुजूर स0अ0व0 के सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, या रसूलुल्लाह माल हलाक हो गया रास्ता चलना मुश्किल हो गया अल्लाह से बारिश की दुआ़ कीजिए रावी फ़रमाते हैं कि हुजूर स0अ0व0 ने अपने दोनों हाथों को दुआ़ के लिए उठाया।

इस हदीस में हुजूर स0अ0व0 जो ज़िन्दा थे उन से दुआ़ करने की दरख़्वास्त की हैं।

किसी ज़िन्दा आदमी से वसीला पकड़ना उस के लिए अ़मल सहाबी यह है

10. عن انس ابن مالک ان عمر بن الخطاب رضؓ کان اذاقحطوا استسقی بالعباس بن عبد المطلب فقال اللهم انا کنا نتوسل الیک بنبینا ﷺ فتسقینا و انا نتوسل الیک بعم نبینا فاسقنا قال فسقون . (بخاری شریف ، باب سوال الناس الامام الاستسقاء اذا قحطوا ،ص ۱۶۲ ، نمبر ۱۰۱۰)

तर्जुमा: हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जब भी क़हत होते तो हज़रत उ़मर रज़ि अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के वसीले से बारिश के लिए दुआ़ मांगते, और यूं दुआ़ करते हम अपने नबी के वसीले से आप से दुआ़ मांगा करते थे तो आप बारिश दे देते थे अब हम हमारे नबी के चचा के वसीले से दुआ़

मांगते हैं, रावी कहते हैं कि इस से बारिश हो जाती थी।

इस क़ौल सहाबी में है कि हम हुज़ूर स0अ0व0 के वसीले से दुआ़ मांगते थे और अब इन के चचा हज़रत अ़ब्बास रज़ि0 के वसीले से दुआ़ मांगते हैं। इस अ़म्ल सहाबी में है कि ज़िन्दा आदमी से वसीला तलब किया और इन के वासते से दुआ़ मांगी।

इन सब हदीसों और अ़मल सहाबी में इस बात की भी वज़ाहत है कि इन में अल्लाह ही से दुआ़ मांगी गई है किसी आदमी से ज़रूरत पूरी करने के लिए नहीं कहा, अल्बत्ता ज़िन्दा आदमी का वसीला लिया है।

इस लिए किसी मुर्दा आदमी से यूं कहना कि आप यह काम कर दीजिए या आप शिफ़ा दे दीजिए, या आप औलाद दीजिए, या बारिश बरसा दीजिए यह हरगिज़ जायज़ नहीं है।

मुजाविरों की ज़्यादती

अहादीस से सिर्फ़ इतनी बात साबित हुई कि कभी कभार किसी के वसील से दुआ़ मांग ले तो इस की गुंजाइश है, लेकिन हमारे मुजाविर हज़रात को साल भर का ख़र्च निकालना है, अपनी बीवी और बच्चों को भी पालना है है अपना रूअ़ब भी जमाना, अपना रूतबा भी बढ़ाना है, और अपनी शौहरत भी हासिल करनी है इस लिए वो इस छोटी सी गुंजाइश का फ़ायदा उठा कर साहब क़ब्र के सिलसिले में बड़ी बड़ी बातें करते हैं इन की करामात बताते हैं, और फ़ैज़ हासिल करने के नाम पर और हाजात पूरी करवाने देने के नाम पर अच्छी तरह रक़म वसूल करते हैं और ख़ूब अपनी जैब भरते हैं।

फिर ऐसे ऐसे फ़ज़ाइल बयान करते हैं कि यह बार बार आये और बार बार इन से वसूल किया जा सके बल्कि बाज़ मर्तबा बहुत सी ख़ुराफ़ात में मुब्तला कर देते हैं और आदमी फंस कर रह जाता है इस बारे में औ़रतें ज़्यादा फ़ंसती हैं और वो ज़्यादा ख़ुराफ़ात में

मुब्तला होती हं इस लिए बहुत अहतियात करने की ज़रूरत है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और 10 हदीसों में आप हर एक की तफ़सील देखें।

(13) यह पांच अ़क़ीदे इतने अहम हैं

कि अल्लाह ने हुज़ूर स0अ0व0 से قــــل के ज़रिये बाज़ाब्ता ऐलान करवाया कि आप स0अ0व0 ऐलान करदें कि मेरे पास यह चीज़ें नहीं हैं।

इस अ़क़ीदे के बारे में 25 आयतें और 0 हदीसों में आप हर एक की तफ़सील देखें।

यह पांच अ़क़ीदे हैं

(1) हुज़ूर स0अ0व0 इन्सान ही हैं।

(2) हुज़ूर स0अ0व0 के हाथ में नफ़ा और नुक़सान का इख़्तयार नहीं है।

(3) हुज़ूर स0अ0व0 को इल्म ग़ैब नहीं है।

(4) अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करना चाहिए।

(5) निजात के लिए सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 की इताअ़त करें।

नोट: कुछ हज़रात ने कुछ तफ़सीर के जुमले को ले कर इन अ़क़ाइद के बारे में लम्बी लम्बी बहसें की हैं। इस लिए मौहक़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं कि उ़लमा को आगे वाली आयतों को सामने रख कर अ़क़ीदा बयान करना चाहिए।

(1) हुज़ूर स०अ०व० से ऐलान करवाया गया कि मैं इन्सान हूं

इस के लिए आयतें यह हैं:

1. قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰى اِلَيَّ اَنَّمَا اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ.

(آیت ۱۱۰، سورۃ الکہف ۱۸)

2.قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰى اِلَيَّ اَنَّمَا اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ.

(آیت۶،سورة فصلت۴۱)

3.قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَراً رَّسُوْلًا .(آیت۹۳،سورت الاسراء۱۷)

4.قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ . (آیت۱۱،سورة ابراہیم۱۴)

इन चार आयतों में हुजूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया है कि मैं इन्सान ही हूं।

हुजूर स0अ0व0 से बाज़ाब्ता यह ऐलान करवाया गया कि मुझे इल्म गै़ब नहीं है

इस के लिए आठ आयतें हैं:

1. قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهَ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ . (آیت۶۵،سورت النمل۲۷)

2.قُلْ لَّا اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَائِنُ اللّٰهِ وَلَا اَعْلَمُ الْغَيْبَ . (آیت ۵۰، سورت الانعام ۶) 3. وَلَااَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَائِنُ اللّٰهِ وَلَا اَعْلَمُ الْغَيْبَ .

(آیت۳۱،سورت ہود۱۱)

4.قُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُ اِنِّىْ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ .

(آیت۲۰،سورت یونس۱۰)

5.يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسَاهَا قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَا اِلَّا هُوَ . (آیت۱۸۷،سورت الاعراف۷)

6.يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَاللّٰهِ .

(آیت۶۳،سورت الاحزاب۳۳)

हुजूर स0अ0व0 को जो कुछ इल्म दिया गया है वो वही के ज़रिये दिया गया है। इस के लिए आयतें यह हैं:

7.قُلْ اِنَّمَا اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّىْ . (آیت۲۰۳،سورت الاعراف ۷)

8.قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعاً مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَا اَدْرِىْ مَا يَفْعَلُ بِىْ وَ لَا بِكُمْ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَيَّ وَ مَا اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ. (آیت۹،سورت الاحقاف ۴۶)

इन आठ आयतों में हुजूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया है कि मुझे इल्म ग़ैब नहीं है।

(3) हुजूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया कि मैं नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं हूं इस लिए मुझ से मत मांगो, सिर्फ़ अल्लाह से मांगो

इस के लिए आयतें यह हैं:

1.قُلْ لَا اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرّاً وَّ لَا نَفْعاً اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهُ . (آیت۱۸۸،سورۃ الاعراف ۷)

2.قُلْ لَا اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرّاً وَّ لَا نَفْعاً اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهُ . (آیت۴۹،سورۃ یونس ۱۰)

3.قُلْ اِنِّىْ لَا اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرّاً وَّ لَا رَشَداً . (آیت۲۱،سورۃ الجن ۷۲)

4. ،قُلْ اِنِّىْ لَا اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرّاً وَّ لَا رَشَداً (آیت۲۰،سورۃ الجن ۷۲)

5. قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعاً مِّنَ الرُّسُلِ ، وَ مَا اَدْرِىْ مَا يَفْعَلُ بِىْ وَ لَا بِكُمْ ، اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى اِلَيَّ . (آیت۹،سورت الاحقاف ۴۶)

6.قُلْ فَمَنْ يُّمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئاً اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْاَرَادَ بِكُمْ نَفْعاً بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْراً . (آیت۱۱،سورت الفتح ۴۸)

7.قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَداً وَ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَداً . (آیت۲۱،سورۃ الجن ۷۲)

8.قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِىْ . (آیت۱۵،سورت یونس ۱۰)

इन आठ आयतों में हुजूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया है कि मैं नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं हूं।

(4) हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करें

इस के लिए आयतें यह हैं:

.قُلْ اِنَّمَا أَدْعُوْا رَبِّیْ وَ لَا اُشْرِکُ بِهٖ اَحَداً . (آیت۲۰،سورۃ الجن۷۲)

.قُلْ اِنَّمَا اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَ لَااُشْرِکَ بِهٖ . (آیت۳۶،سورت الرعد۱۳)

इन दो आयतों में हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया गया है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक हरगिज़ ना करें।

(5) हुज़ूर स0अ0व0 से ऐलान करवाया कि निजात के लिए हुज़ूर स0अ0व0 की इताअ़त करें

इस के लिए आयतें यह हैं:

.قُلْ اَطِيْعُوْا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِيْنَ.

(آیت۳۲،سورت آل عمران۳)

.قُلْ اَطِيْعُوْا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْا الرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَ عَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ وَ اِنْ تَطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا. (آیت۵۴،سورت النور۲۴)

.قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ .

(آیت۳۱،سورت آل عمران۳)

इन तीन आयतों में है कि आप स0अ0व0 ऐलान करदें कि अगर निजात चाहिए तो सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 की इताअ़त करें।

(14) शिफ़ाअ़त का बयान

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और 8 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

क़यामत में दो क़िस्म की सिफ़ारशें होंगी।

(1) एक शिफ़ाअ़त कुबरा यह सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 को दी जायेगी।

(2) दूसरी शिफ़ाअ़त सुग़रा यह दूसरे अम्बिया और सुलहा को भी दी जायेगी।

य तमाम सिफ़ारिश अल्लाह की इजाज़त से कर पाऐंगे बग़ैर अल्लाह की इजाज़त के कुछ नहीं होगा। इस के लिए आयतें यह हैं:

1.مَنْ ذَا الَّذِی یَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ . (آیت۲۵۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: कौन है जो इस के सामने इस की इजाज़त के बग़ैर किसी की सिफ़ारिश कर सके।

2.مَا مِنْ شَفِیْعٍ اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ .

(آیت۳،سورت یونس۱۰)

तर्जुमा: कोई इस की इजाज़त के बग़ैर इस के सामने किसी की सिफ़ारिश करने वाला नहीं है।

3.وَ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ . (آیت۲۳،سورت سباء۳۴)

तर्जुमा: अल्लाह ने जिस को सिफ़ारिश की इजाज़त दी हो इसी की सिफ़ारिश क़बूल होगी।

4.قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِیْعًا . (آیت۴۴،سورت الزمر۳۹)

तर्जुमा: आप कह दीजिए कि सारी सिफ़ारिश अल्लाह ही के इख़्तयार में है।

क़यामत में सिफ़ारिश करने की आठ सूरतें हैं

(1) शिफ़ाअ़त कुबरा यह शिफ़ाअ़त सिर्फ़ हुज़ूर पाक स0अ0व0 को दी जायेगी।

(2) मौमिन तो है लेकिन गुनाह की वजह से जहन्नुम में जाने का फ़ैसला हो चुका है अब इस की सिफ़ारिश करके जन्नत में दाख़िल करवाया जायेगा, यह सिफ़ारिश हुज़ूर स0अ0व0 के भी होगी और अम्बिया और सुलहा के लिए भी होगी।

(3) आप स0अ0व0 की सिफ़ारिश से बाज़ मौमिनीन को बिला

हिसाब के जन्नत में दाख़िल कर दिया जायेगा।

(4) हुज़ूर स0अ0व0 की सिफ़ारिश की वजह से जहन्नुमी का अ़ज़ाब कम कर दिया जायेगा जैसे हुज़ूर स0अ0व0 की सिफ़ारिश से अबू तालिब का अ़ज़ाब कम किया जायेगा।

(5) हुज़ूर स0अ0व0 की सिफ़ारिश से तमाम मौमिनीन को जन्नत में दाख़िल किया जायेगा।

(6) बाज़ अहल कबाइर जो जहन्नुम में दाख़िल हो चुके हैं सिफ़ारिश से वो जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे।

(7) मौमिन तो है लेकिन इस का गुनाह और नेकी बराबर हैं अब इस को सिफ़ारिश करके जन्नत में दाख़िल करवाया जायेगा यह सिफ़ारिश हुज़ूर स0अ0व0 के लिए भी होगी और अम्बिया और सुलहा के लिए भी होगी।

(8) जन्नती के दरजात को बुलन्द करवाने के लिए सिफ़ारिश की जायेगी यह सिफ़ारिश हुज़ूर स0अ0व0 के लिए भी होगी और अम्बिया और सुलहा के लिए भी होगी।

यह आठ क़िसम की सिफ़ारिश होगी।

शिफ़ाअ़त कुबरा

इस हदीस में क़यामत के दिन उम्मत तमाम अम्बिया के पास जाऐंगे कि वो कम से कम हिसाब किताब हो जाये इस के लिए अल्लाह से सिफ़ारिश करदें, लेकिन तमाम अम्बिया इन्कार कर देंगे और सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 यह सिफ़ारिश करेंगे तो चूंकि सिर्फ़ हुज़ूर स0अ0व0 यह सिफ़ारिश करेंगे इस लिए इस को सिफ़ारिश कुबरा कहते हैं।

(1) हुज़ूर स0अ0व0 को शिफ़ाअ़त कुबरा दी जायेगी। इस की दलील यह हदीस है:

1.عن انس قال قال رسول الله ﷺ يجمع الله الناس يوم القيامة

فیقولون لو استشفعنا علی ربنا حتی یریحنا من مکاننا فیأتون آدم فیقولون انت الذی خلقک اللہ بیدہ و نفخ فھک من روحہ و امر الملائکۃ فسجدوا لک فاشفع لنا عند ربنا فیقول لست ھناکم و یذکر خطیئتہ ، و یقول ائتو نوحا .....فأتونی فأستأذن ربی .....ثم یقال لی : ارفع رأسک و سل تعطہ ، و قل یسمع ، و اشفع تشفع فارفع رأسی . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنۃ و النار ، ص ۱۱۳۶ ، نمبر ۶۵۶۵ص)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया कि अल्लाह लोगों को क़यामत के दिन जमा करेंगे तो लोग केहेंगे कि कोई हमारी सिफ़ारिश कर लेता तो हम को इस जगह से छुटकारा मिल जाता, लोग हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास आएंगे और कहेंगे अल्लाह ने आप को अपने हाथ से पैदा किया है और अपनी रूह ड़ाली है और फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि वा आप को सज्दा करें इस लिए आप अपने रब के पास हमारे लिए सिफ़ारिश करें, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम फ़रमाऐंगे कि मुझे इस की जुरअत नहीं है, फिर वो अपनी ग़लतियों को याद करेंगे, फिर कहेंगे तुम हज़रत नूह अलैहि0 के पास जाओ......वो लोग मेरे पास आऐंगे, मैं अपने रब से सिफ़ारिश करने की इजाज़त मांगूगा......फिर मुझ से कहा जायेगा सर उठाओ, मांगो दिया जायेगा कहो आप की बात सुनी जायेगी, सिफ़ारिश करो सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी फिर मैं अपना सर उठाउंगा अलख़।

दूसरी सिफ़ारिशें

(2) दूसरी सिफ़ारिश

मौमिन तो है लेकिन गुनाह की वजह से जहन्नुम में जाने का फ़ैसला हो चुका है अब इस की सिफ़ारिश करके जन्नत में दाख़िल करवाया जायेगा।

यह सिफ़ारिश हुजूर स0अ0व0 के लिए भी होगी और अम्बिया और सुलहा के लिए भी होती है। इस की दलील यह हदीस है:

2. عن علی بن طالب قال قال رسول الله ﷺ من قرأ القرآن و استظهره فاحل حلاله و حرم حرامه ادخله الله به الجنة و شفعه فی عشرة من اهل بيته كلهم وجبت له النار . (ترمذی شریف ، کتاب فضائل القرآن ، باب ما جاء فی فضل القاری القرآن ، ص ۲۵۳، نمبر ۲۹۰۵)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस ने कुरआन पढ़ा और इस को ज़ैबानी याद किया उस के हलाल को हलाल किया और हराम को हराम किया तो अल्लाह उस को जन्नत में दाख़िल करेंगे और इस के घर वालों में से दस ऐसे आदमियों के लिए सिफ़ारिश क़बूल करेंगे जिन के लिए जहन्नुम वाजिब हो चुकी थी।

इस हदीस में है कि जहन्नुम वालों के लिए भी सिफ़ारिश होगी और आ़म लोग भी इस की सिफ़ारिश करेंगे।

(3) तीसरी सिफ़ारिश

आप स0अ0व0 की सिफ़ारिश से बाज़ मौमिनीन को बिला हिसाब के जन्नत में दाख़िल कर दिया जायेगा इस की दलील यह हदीस है:

3. عن ابی هريرة ان النبی ﷺ قال يدخل من امتی الجنة سبعون الفا بغير حساب فقال رجل يا رسول الله ! ادع الله ان يجعلنی منهم قال اللهم اجعله منهم . (مسلم شریف ، کتاب الایمان ، باب الدليل على دخول طوائف من المسلمين الجنة بغير حساب ، ص ۱۱۱ ، نمبر ۵۲۰/۲۱۶)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार आदमी बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह स0अ0व0 मेरे लिए दुआ़ फ़रमाइये कि मुझे भी इस में दाख़िल कर दे, तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह इस आदमी को भी इस में कर दे।

(4) चौथी सिफ़ारिश

इस सिफ़ारिश की वजह स जहन्नुमी का अ़ज़ाब कम किया जायेगा, इस की दलील यह हदीस है:

4. عن ابی سعید الخدری ، انه سمع النبیؐ ذکر عنده عمه فقال لعله تنفعه شفاعتی یوم القیامه فیجعل فی ضحضاح من النار یبلغ کعبیه یغلی منه دماغه . (بخاری شریف ، کتاب مناقب الانصار ، باب قصة ابی طالب ، ص ۶۵۲، نمبر ۳۸۸۵)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 के सामने आप के चचा अबू तालिब का ज़िक्र हुआ तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया, क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश से आग के निचले गढ़े में रखा जाये, यह आग इस के टख़ने तक पहुंचेगी, जिस से उस का दिमाग़ खोलेगा।

इस हदीस में है कि हुजूर स0अ0व0 की सिफ़ारिश से जहन्नुमी का अ़ज़ाब कम कर दिया गया।

(5) पांचवीं सिफ़ारिश

हुजूर स0अ0व0 की सिफ़ारिश से मौमिनीन को जन्नत में दाख़िल किया जायगा इस की दलील यह हदीसें हैं:

5. عن انس بن مالک قال قال رسول الله ﷺ انا اول الناس یشفع فی الجنة و انا اکثر الانبیاء تبعا. (مسلم شریف ، کتاب الایمان ، باب فی قول النبی ﷺ انا اول الناس یشفع فی الجنة ، ص ۱۰۵ ، نمبر ۱۹۶ / ۴۸۳)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं पहला आदमी हूंगा जो जन्नत के लिए सिफ़ारिश करेगा और जितने भी नबी हैं उन में से सब से ज़्यादा मेरे इत्तबा करने वाले लोग होंगे।

6. حدثنا انس بن مالک ان النبی ﷺ قال لکل نبی دعوة دعاها لامته و انی اختبأت دعوتی شفاوة لامتی یوم القیامة .(مسلم شریف ، کتاب الایمان ، باب اختباء النبی دعوة الشفاعة لامته ، ص ۱۰۶ ، نمبر ۲۰۰/ ۴۹۴)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हर नबी के लिए अपनी उम्मत के लिए एक दुआ़ होती है और मैं क़यामत के दिन अपनी उम्मत की सिफ़ारिश करूंगा यह दुआ़ छुपा कर रखा हूं।

इन दोनों हदीसों के इशारा से मालूम होता है कि आप स0अ0व0 की दुआ़ से आप की उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी।

(6) छटी सिफ़ारिश

जो जहन्नुम में दाख़िल हो चुके हैं इन को निकालने के लिए सिफ़ारिश होगी। इस की दलील यह हदीस है:

7.عن عمران بن حصين رض عن النبى ﷺ قال يخرج قوم من النار بشفاعة محمد ﷺ فيدخلون الجنة يسمون الجهنميين . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار ، ص ١١٣٦ ، نمبر ٦٥٦٦ص)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मौहम्मद स0अ0व0 की सिफ़ारिश से कुछ क़ौम जहन्नुम से निकलेंगी और वो जन्नत में दाख़िल होगी इस का नाम जहन्नुमी होगा।

8.عن انس بن مالک عن النبى ﷺ قال شفاعتى لاهل الكبائر من امتى. (ابو داود شریف ، کتاب السنة ،باب فی الشفاعة ، ص ٦٧٠، نمبر ٤٧٣٩)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत क कबीरा गुनाह करने वाले लोगों के लिए मेरी सिफ़ारिश होगी इन अहादीस में है कि जहन्नुम में जो दाख़िल हो चुके हैं हुज़ूर स0अ0व0 की सिफ़ारिश से वो जन्नत में दाख़िल होंगे।

(7) मौमिन तो है लेकिन इस का गुनाह और नेकी बराबर हैं अब इस को सिफ़ारिश करके जन्नत में दाख़िल करवाया जायेगा यह सिफ़ारिश हुज़ूर स0अ0व0 के लिए भी होगी और अम्बिया और सुलहा के लिए भी होगी।

(8) जन्नती के दरजात को बुलन्द करवाने के लिए सिफ़ारिश की जायेगी यह सिफ़ारिश हुज़ूर स0अ0व0 के लिए भी होगी और

अम्बिया और सुलहा के लिए भी होगी।

इस अ़क़दे के बारे में चार आयतें और आठ हदीसें हें आप हर एक की तफ़सील देखें।

(15) तमाम नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है

इस अ़क़ीदे के बारे में 17 आयतें और दो हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

अम्बिया बहुत से भैजे गये कहते हैं कि एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया भैजे गये हैं उन में से कुछ का ज़िक्र क़ुरआन में है और कुछ का नहीं है, लेकिन एक मुसलमान पर लाज़िम है कि तमाम नबियों पर ईमान रखे कि वो अपने अपने ज़माने में हक़ पर थे, और इन की शरीअ़त हक़ थी अल्बत्ता हुज़ूर स0अ0व0 के तशरीफ़ लाने के बाद इन की शरीअ़त मन्सूख़ हो गई, अब हुज़ूर स0अ0व0 की शरीअ़त पर ईमान लाना और इस पर अ़मल करना ज़रूरी है, तब ही निजात होगी।

इन हज़रात के यहां भी उन्हें छः बातों पर ईमान लाना ज़रूरी था जिन छः बातों पर हुज़ूर स0अ0व0 की शरीअ़त पर ईमान लाना और उस पर अ़मल करना ज़रूरी है यानी (1) अल्लाह पर ईमान। (2) रसूल पर ईमान। (3) किताब यानी क़ुरआन करीम पर ईमान। (4) फ़रिशते पर ईमान। (5) और आख़िरत के दिन पर ईमान। (6) और तक़दीर पर ईमान लाना, अल्बतता इन लोगों के लिए जो जुज़ई मसाइल थे नमाज़ रोज़े के वो अलग अलग थे।

इस लिए इन नबियों पर ईमान लाना कि वो लोग अपने ज़माने के बरहक़ नबी थे और इन की शरीअ़त बरहक़ थी इस बात पर ईमान लाना भी एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है वरना ईमान मुकम्मल नहीं होगा।

सब नबियों को मानना ज़रूरी है वरना ईमान मुकम्मल नहीं होगा

इस्लाम का अ़जीब कमाल है कि तमाम नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी समझता है और उन का पूरा अहतराम करता है। सब नबियों को मानने का मतलब यह है कि हम यह मानें कि तमाम नबी बरहक़ हैं और उन की शरीअ़त इन के ज़माने के लिए बिल्कुल सही थी अल्बत्ता अब वो शरीअ़त मनसूख़ हो चुकी है और इन पर जो किताबें उतरीं हैं वो सब अल्लाह की किताबें हैं और अपने ज़माने के लिए बिल्कुल सही थीं और इन पर ईमान लाना भी ज़रूरी है अल्बत्ता कुरआन के उतरने के बाद वो किताबें अब अ़मल के क़ाबिल नहीं रहीं अब कुरआन पर ही अ़मल करना होगा।

इस के लिए यह आयतें हैं:

1. قُلْ آمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَا اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ مَا اُنْزِلَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ اِسْمَاعِيْلَ وَ اِسْحَاقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطَ وَ مَا اُوْتِىَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى وَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِنْهُمْ وَ نَحْنُ لَهُ مُسْلِمُوْنَ . (آيت٨٤،سورت آل عمران٣)

तर्जुमा: कह दो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये और जो किताब हम पर उतारी गई है उस पर ईमान लाये और जो इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ याकूब आर उन की औलाद पर किताब उतारी गई है उस पर ईमान लाते हैं, और इन बातों पर जो मूसा और ईसा अलैहिस्सलाम और दूसरे नबियों को इन की रब की जानिब से दी गई है इस पर ईमान लाते हैं, हम इन पैग़म्बरों में किसी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं करते ओर हम एक अल्लाह के आगे सर झुकाऐ हुए हैं।

इस आयत में यह भी कहा गया है कि सब नबियों पर ईमान लाओ और यह भी कहा गया है इन में कोई फ़र्क़ भी ना करो।

2.اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُوْمِنُوْنَ كُلٌّ آمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلاَئِكَتِهٖ
وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ لاَنُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِنْ رُّسُلِهٖ . (آیت۲۸۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: यह रसूल (मौहम्मद स0अ0व0) इस चीज़ पर ईमान लाऐ हैं जो इन पर इन के रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है और इन के साथ तमाम मुसलमान भी इन चीज़ों पर ईमान लाते हैं, यह सब अल्लाह पर उस के फ़रिश्तों पर उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाऐ हं, वो यह कहते हैं कि हम इन के रसूलों के दरमियान कोई तफ़रीक़ नहीं करते (कि किसी पर ईमान लाऐं और किसी पर ईमान ना लाऐं)।

3.قُوْلُوْا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَا اَنْزَلَ اِلَیْنَا وَ مَا اَنْزَلَ اِلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَ اِسْمَاعِیْلَ وَ
اِسْحَاقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاِسْبَاطَ وَ مَا اُوْتِیَ مُوْسٰی وَ عِیْسٰی وَ مَا اُوْتِیَ النَّبِیُّوْنَ مِنْ
رَّبِّهِمْ لاَ نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِنْهُمْ وَ نَحْنَ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ . (آیت۱۳۶،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: मुसलमानो कह दो! हम अल्लाह पर ईमान लाऐ हैं और इस कलाम पर भी जो हम पर उतारा गया और इस पर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याकूब और इन की औलाद पर उतारा गया और इस पर भी जो मूसा और ईसा को दिया गया और इस पर भी जो दूसरे नबियों को इन के रब की तरफ़ से दिया गया है हम इन पैग़म्बरों के दरमियान कोई तफ़रीक़ नहीं करते और इसी ख़ुदा के फ़रमांबरदार हैं।

इन आयतों में है कि तमाम नबियों पर ईमान रखना ज़रूरी है वरना ईमान मुकम्मल नहीं होगा।

कुरआन में कुछ नबियों का ज़िक्र है कुछ का नहीं है

अल्बत्ता एक हदीस में है कि अल्लाह ने एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया भैजे इन में से तीन सौ पन्द्रह रसूल हैं। कुछ नबियों

का ज़िक्र किया और कुछ का ज़िक्र नहीं किया इस के लिए यह आयत है:

4.وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلاً مِنْ قَبْلِکَ مِنْھُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَیْکَ وَ مِنْھُمْ مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَیْکَ . (آیت ۷۸،سورت المومن ۲۳)

तर्जुमा: आप से पहले भी मैंने रसूल भैजा इन में से कुछ का ज़िक्र आप के सामने किया है और कुछ का ज़िक्र नहीं किया है।

एक लाख चौबीस हज़ार नबियों के लिए हदीस यह है:

.عن ابی امامة قال کان رسول اللہ ﷺ فی المسجد جالسا ...قال قلت یا رسول اللہ کم وفی عدة الانبیا ء ؟ قال : مأةالف و اربعةو عشرون الفا ، الرسل من ذالک ثلاث مأة و خمسا عشرجما غفیرا . (مسند احمد ، حدیث ابی امامة الباھلی الصدی ، ج۷، ص ۳۵۶، نمبر۲۱۷۸۵ / ۲۲۲۸۸/ طبرانی کبیر ، ، مسند معان بن رفاعة السلامی ، عن علی ، ج ۸، ص ۲۱۷، نمبر ۷۸۷۱)

तर्जुमा: हज़रत अबू उमामा बाहिली फ़रमाते हैं कि हुजूर स0अ0व0 मस्जिद में बैठे हुए थे......मैंने पूछा या रसूलुल्लाह नबियों की तअ़दाद कितनी हैं? तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया: एक लाख चौबीस हज़ार इन में से रसूल, तीन सौ पन्द्रह हैं जो बड़ी जमाअ़त है।

इस हदीस में है कि अल्लाह ने एक लाख चौबीस हज़ार नबी भैजे, और इन में से तीन सौ पन्द्रह रसूल हैं।

इन में से चार रसूल बड़े हैं। इस्लाम में यह चार रसूल बड़े माने जाते हैं और इन पर उतरी हुई किताबें भी बड़ी मानी जाती हैं।

(1) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम।
(2) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम।
(3) हज़रत दाउद अलैहिस्सलाम।

(4) और हज़रत मौहम्मद स0अ0व0

सब नबियों के दीन में था कि अल्लाह एक है

सब नबियों के दीन में था कि अल्लाह एक है और छः बातें जो ईमान में ज़रूरी हैं (अल्लाह एक है, फरिश्तों पर ईमान, अल्लाह की तमाम किताबों पर ईमान, इन के तमाम रसूलों पर ईमान, आख़िरत पर ईमान, मौत के बाद उठाये जाने पर ईमान, और तक़दीर पर ईमान लाना) यह इन हज़रात की शरीअ़त में भी जरूरी था, अल्बत्ता इन की शरीअ़त के अहकाम में थोड़ा थोड़ा फ़र्क़ था, मसलन नमाज़ का तरीक़ा अलग था, रोज़े के दिन कम व बैश थे इस के लिए यह आयतें हैं:

5.لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنهَاجاً . (آیت ۴۸،سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमा: तुम में से हर एक उम्मत के लिए हम ने एक अलग शरीअ़त और तरीक़ा मुक़र्रर किया है।

.اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ، كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰئِكَتِهٖ وُ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍمِّنْ رُّسُلِهٖ . (آیت ۲۸۵،سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमा: यह रसूल (यानी मौहम्मद स0अ0व0) इस चीज़ पर ईमान लाये जो इन की तरफ़ इन के रब की जानिब से नाज़िल की गई है और इन के साथ तमाम मुसलमान भी, यह सब अल्लाह पर, इस के फ़रिश्तों पर, इस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाये वो कहते हैं कि हम इस आयत में है कि पिछले तमाम रसूलों की शरीअ़त में भी अल्लाह तमाम रसूल फ़रिशते और तमाम किताबों पर ईमान लाना ज़रूरी था।

1.عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ انا اولى الناس بعيسى ابن مريم فى الدنيا و الآخرة ، و الانبياء اخوة لعلات امهاتهم شتى و دينهم واحد . (بخاری شریف ، کتاب احادیث الانبیاء ، باب قول الله تعالی اذ قالت الملائكة يمريم ان الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى ابن مريم

[آیت ۴۵، سورت آل عمران] ۵۸۰، نمبر ۳۴۴۳)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि दुनिया और आख़िरत में ईसा से ज़्यादा क़रीब हूं, सब नबी बाप शरीक भाई हैं, इन की मां अलग अलग हैं और दीन एक ही है।

इस आयत और हदीस में है कि सब नबियों का दीन एक है, अल्बत्ता जुज़ई अहकाम अलग अलग हैं।

अब हुज़ूर स0अ0व0 पर ईमान लाना ज़रूरी है

अल्बत्ता हुज़ूर स0अ0व0 के तशरीफ़ लाने के बाद हुज़ूर स0अ0व0 पर ईमान लाना ज़रूरी है और सिर्फ़ आप पर ईमान लाने पर ही निजात होगी। आयतें यह हैं:

6. ان الدين عند الله الاسلام . (آیت۱۹،سورت آل عمران۳)

तर्जुमाः बेशक मोअ़तबर दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है।

7. وَ مَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ . (آیت۸۵،سورت آل عمران۳)

तर्जुमाः जो कोई शख़्स इस्लाम के अ़लावा कोई और दीन इख़्तयार करना चाहेगा तो इस से वो दीन क़बूल नहीं किया जायेगा।

8. وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِيْناً . (آیت۳،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमाः और तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को हमैशा के लिए पसन्द कर लिया है।

इन आयतों में है कि इस्लाम के अ़लावा इस वक़्त कोई दीन अल्लाह के नज़दीक मक़बूल नहीं है।

9. ثُمَّ جَاءَ كُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنَّ بِهِ وَ لَتَنْصُرَنَّهُ .

(آیت۸۱،سورت ال عمران۳)

तर्जुमाः फिर तुम्हारे पास कोई रसूल आये जो इस किताब की

तसदीक़ करे जो तुम्हारे पास है तो तुम इस रसूल पर ज़रूर ईमान लाओगे और ज़रूर इस की मदद करोगे।

इस आयत में है कि हुजूर स0अ0व0 पर ईमान लाना ज़रूरी है और इस्लाम लाने पर ही निजात होगी।

.عن ابی هريرة عن رسول الله ﷺ انه قال و الذی نفس محمد بيده ! لا يسمع بی احد من هذه الامة يهودی و لا نصرانی ، ثم يموت و لم يومن بالذی ارسلت به الا كان من اصحاب النار . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب وجوب الايمان برسالة نبينا محمد الی جميع الناس و نسخ الملل بملته ، ص ٧٦، نمبر ١٥٣ ، نمبر ٣٨٦)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस के क़ब्ज़े में मौहम्मद स0अ0व0 की जान है इस उम्मत में से कोई भी यहूदी हो या नसरानी मेरे बारे में सुने और मैं जो रिसालत ले कर आया हूं इस पर ईमान ना लाये और वो मर जाये तो वो जहन्नुम में जायेगा।

किसी नबी को किसी दूसरे नबी पर ज़्यादा फ़ज़ीलत देना ठीक नहीं है

किसी एक नबी को दूसरे नबी के मुक़ाबले पर इतना बढ़ाना जायज़ नहीं है जिस से इस की तौहीन हो जाये इस हदीस में उस का ज़िक्र है।

2.سمع عمرؓ يقول علی المنبر سمعت النبی ﷺ يقول لا تطرونی كما اطرت النصاری ابن مريم فانما انا عبده فقولوا عبد الله و رسوله . (بخاری شريف ، احاديث الانبياء ، باب قول الله تعالی ﴿و اذكر فی الكتاب مريم اذ انتبذتمن اهلها [آيت ١٦ ، سورت مريم ١٩ ﴾ ص ٥٨٠، نمبر ٣٤٤٥)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 कहा करते थे जिस तरह नसारा ने हज़रत ईसा को बढ़ा चढ़ा कर बयान किया तुम भी मुझे बढ़ा चढ़ा

कर बयान ना करना, मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूं इस लिए मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल कहा करो।

इस हदीस में है कि जैसे नसारा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बहुत बढ़ाया तुम भी मुझे इतना ना बढ़ा देना।

चार बड़ी बड़ी किताबों का ज़िक्र कुरआन में यह है

अल्लाह ने रसूलों पर किताबें तो बहुत उतारी हैं लेकिन चार बड़ी बड़ी किताबें हैं जो चार बड़े रसूलों पर उतारी गई हैं।

कुरआन ज़रत मौहम्मद स0अ0व0 पर। तौरात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर। इंजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर। ज़बूर हज़रत दाउद अलैहिस्सलाम पर और कुछ सहीफ़े हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर।

हुजूर स0अ0व0 पर कुरआन उतारा इस का ज़िक्र इस आयत में है

10. مَا اَنْزَلْنَا اِلَيْکَ الْقُرْآنَ لِتَشْقٰی . (آیت۲،سورت طٰہ۲۰)

तर्जुमाः हम ने तुम पर कुरआन इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तुम तकलीफ़ उठाओ।

इस में कुरआन के उतारने का ज़िक्र है।

तौरात हज़रत मूसा अलैहि0 पर उतारी है

इस का ज़िक्र इस आयत में हैः

11. اِنَّا اَنْزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيْهَا هُدًی وَّ نُوْرٌ . (آیت۴۴،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमाः बेशक हम ने तौरात नाज़िल की थी जिस में हिदायत थी और नूर था।

इस आयत में तारात का ज़िक्र है।

इंजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उतारी है

12.وَ اٰتَیْنَاہُ الْاِنْجِیْلَ فِیْہِ ھُدیً وَّ نُوْرٌ وَ مُصَدِّقاً لِّمَا بَیْنَ یَدَیْہِ .

(آیت ۴۶، سورت المائدة ۵)

तर्जुमा: और हम ने उन को इंजील अ़ता की जिस में हिदायत थी और नूर था और जो अपने से पहली किताब यानी तौरात की तसदीक़ करने।

इस आयत में इजील का ज़िक्र है।

ज़बूर हज़रत दाउद अलैहि0 पर उतारी है

इस का ज़िक्र इस आयत में है।

13. وَ لَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِیِّیْنَ عَلٰی بَعْضٍ وَّ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ زَبُوْراً .

(آیت ۵۵، سورت الاسراء ۱۷)

तर्जुमा: हम ने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है और हज़रत दाउद अलैहि0 को ज़बूर दिया।

14. وَاَوْحَیْنَا .. وَ یُوْنُسَ وَ ھَارُوْنَ وَ سُلَیْمَانَ وَ اٰتَیْنَا زَبُوْراً .

(آیت ۱۶۳، سورت النساء ۴)۔

तर्जुमा: और हम ने यूनुस, हारून और सुलैमान अलैहि0 की तरफ़ वही भैजी और हज़रत दाउद अलैहि0 को ज़बूर अ़ता की।

इन दो आयतों में ज़बूर का ज़िक्र है।

और बहुत सारी किताबें उतारी

इन आयतों में और भी बहुत सारी किताबें उतारने का ज़िक्र है।

15.قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰہِ وَ مَا اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ مَا اُنْزِلَ اِلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَ اِسْمَاعِیْلَ وَ اِسْحَاقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاِسْبَاطَ وَ مَا اُوْتِیَ مُوْسٰی وَ عِیْسٰی وَ مَا اُوْتِیَ النَّبِیُّوْنَ مِنْ رَّبِّھِمْ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِنْھُمْ وَ نَحْنُ لَہٗ مُسْلِمُوْنَ. (آیت ۸۴، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: कह दो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो किताब हम पर उतारी गई है उस पर और जो उतारी गई इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याकूब और उन की औलाद पर उन के रब की तरफ़ से और उन बातों पर जो इन के रब की जानिब से हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और दूसरे नबियों को दी गई हैं।

16. وَ اَنْزَلْنَا اِلَیْکَ الْکِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقاً لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ الْکِتَابِ .

(آیت ۴۸، سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमा: ऐ मौहम्मद स0अ0व0 हम ने आप पर भी हक़ पर मुशतमिल किताब नाज़िल की है जो अपने से पहली किताबों की तसदीक़ करती है और इस की निगहबान है।

17. اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰی ، صُحُفِ اِبْرَاهِیْمَ وَ مُوْسٰی .

(آیت ۱۸-۱۹، سورت الاعلی ۸۷)

तर्जुमा: यह बात यक़ीनन पिछले आसमानी सहीफ़ों में भी दर्ज है और इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में भी दर्ज है।

इन आयतों में और किताबों के उतारे जाने का ज़िक्र है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 17 आयतें और दो हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(16) रसूल स०अ०व० की गुस्ताख़ी

इस अ़क़ीदे के बारे में तीन आयतें और दो हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

रसूल स0अ0व0 की गुस्ताख़ी की तीन सूरतें हैं:

(1) हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली देता हो और समझाने से भी बाज़ ना आता हो।

(2) हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली तो ना देता हो, लेकिन ऐसा जुम्ला इस्तेमाल करता हो जिस से हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन होती हो।

(3) आदमी मुसलमान है इस ने कोई मुबहम जुम्ला इस्तेमाल किया है अब दूसरे मसलक वालों ने या दूसरे मज़हब वालों ने इस जुम्ले को तोड़ मरोड़ कर यह निकाला कि इस ने हुजूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी की है।

(4) ग़ैर मुस्लिम के मुल्कों में बसे हुए वहां किसी ग़ैर मुस्लिम ने ऐसी हरकत की जिस से हुजूर स0अ0व0 की तौहीन होती हो तो अब क्या करें।

हर एक की तफ़सील आगे देखें।

हुजूर स०अ०व० की गुस्ताख़ी बहुत बड़ा वबाल है

हुजूर स0अ0व0 को गाली देना बहुत बड़ा वबाल है, बल्कि किसी भी नबी को गाली देना बहुत बड़ा वबाल है इस से ईमान सलब हो जाता है। कुरआन में नबियों की इज़्ज़त करने और इस की इताअ़त करने की बहुत ताकीद आई है।

इस के लिए यह आयतें यह हैं:

1. اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰہَ وَ رَسُوْلَہٗ لَعَنَھُمُ اللّٰہُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَۃِ وَ اَعَدَّ لَھُمْ عَذَابًا مُّھِیْنًا. (آیت ۵۷، سورت الاحزاب ۳۳)

तर्जुमा: जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाते हैं अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत में इन पर लअ़नत की है और इन के लिए ऐसा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है जो ज़लील करके रख देगा।

2. یٰٓـاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَکُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ وَ لَا تَجْھَرُوْا لَہٗ بِالْقَوْلِ کَجَھْرِ بَعْضِکُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُکُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ .
(آیت ۲، سورت الحجرات ۴۹)

तर्जुमा: ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से बुलन्द मत किया करो आर ना इन से बात करते हुए इस तरह

ज़ौर से बोला करो, जैसे तुम एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो कहीं ऐसा ना हो कि तुम्हारे आ़माल बरबाद हो जाऐं और तुम्हें पता भी ना चलेगा।

3.لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰہِ وَ رَسُوْلِہٖ وَ تُعَزِّرُوْہُ وَ تُوَقِّرُوْہُ وَ تُسَبِّحُوْہُ بُکْرَۃً وَّ اَصِیْلاً ۔

(آیت۹،سورت الفتح ۴۸)

तर्जुमाः ताकि ऐ लोगो! तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उन की ताज़ीम करो और सुबह व शाम अल्लाह की तसबीह करते रहो।

इन आयतो में ताकीद की गई है कि हुज़ूर स0अ0व0 की अदना गुस्ताख़ी ना हो बल्कि हर वक़्त इन के लिए ताज़ीम का जुम्ला निकले नबी और रसूल की गुस्ताख़ी तो दूर की बात है किसी सहाबी की गुस्ताख़ी भी जायज़ नहीं है वो भी बहुत बड़ा गुनाह है।

(1) हुज़ूर स०अ०व० को खुली गाली देता हो और समझाने से भी बाज़ ना आता हो

पहली सूरतः हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली देता हो और समझाने के बावजूद भी बाज़ ना आता हो तो अब यह काफ़िर और मुरतद हो गया क्योंकि ईमान के छः जुज़ में से एक जुज़ रसूल पर ईमान लाना है और जब इस ने रसूल को गाली दी तो अब रसूल पर इस का ईमान नहीं रहा इस लिए अब यह मुरतद हो गा अब इस को क़त्ल किया जायेगा।

मैंने खुली गाली का लफ़्ज़ क्यों इस्तेमाल किया

यहां खुली गाली देता हो का लफ़्ज़ इस लिए इस्तेमाल कर रहा हूं कि कुछ किताबें मेरे सामने से से गुज़रीं, जिन में देखा कि

एक मसलक वाले ने दूसरे मसलक वाले की किताबों से इबारत ली, फिर इस को तोड़ मरोड़ कर यह मतलब बनाया कि उन्होंने हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी की है और इस को इतना फैलाया कि लोगों को यक़ीन होने लगा कि यह गुस्ताख़ रसूल हैं और यह काफ़िर हैं और इन के बारे में यहां तक लिख दिया कि जो इन के कुफ़्र में शक करे वो भी काफ़िर हैः

و من شک فی کفره و عذابه کفر] .(**در مختار ، کتاب الجهاد،، باب المرتد ، مطلب مهم : فی حکم ساب الانبیاء ، ج ٦، ص ٣٥٧**)

तर्जुमाः कि जो इन को गाली देने वाले के कुफ़्र में और इस के अ़ज़ाब में शक करे वो भी काफ़िर है।

मैंने इस मसलक वाले से पूछा और इस की किताबें देखी तो पता चला कि वो मसलक वाले क़तअ़न हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी नहीं करते, और ना इस मुसन्निफ़ ने गुस्ताख़ी की है, हां बाज़ बातें जो आयत और हदीस में नहीं हैं, दूसरे मसलक वाले इस को मनवाना चाहते हैं, लेकिन चूंकि वो हदीस में नहीं हैं, इस लिए मुसन्निफ़ साहब इस को नहीं मानते, इस लिए दूसरे मसलक वालों ने हंगामा खड़ा किया ओर इस को गुस्ताख़ रसूल कह कर काफ़िर क़रार दिया और यहां तक लिख दिया कि जो इस के कुफ़्र में शक करे वो भी काफ़िर है।

अब आप ही इन्साफ़ से बताइये कि कहाँ है हुज़ूर स0अ0व0 को गाली देना और कहां है कुरआन और हदीस के ख़िलाफ़ होने की वजह से दूसरे मसलक वालों की बात ना मानना इन दोनों बातों में कितना बड़ा फ़र्क़ है इस फ़तवे से मुसलमानों की एक बड़ी जमाअ़त के दो टुकड़े हो गये।

इस लिए मैं अपने उ़नवान में यह क़ैद लगा रहा हूं कि हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली देता हो और समझाने के बावजूद ना मानता हो तब वो आदमी मुरतद होगा, इस तरह तोड़ मरोड़ कर

बात बनाने से और गुस्ताख़ रसूल क़रार देने से वो काफ़िर नहीं होगा।

दूसरी मिसाल यह है कि:

अख़बार और टैली वीज़न मे आया कि एक लड़का कॉलिज में पढ़ता था, इस की ज़बान से कोई बात निकल गई, इस का मक़सद हुज़ूर स0अ0व0 को गाली देना नहीं था और ना इस की गुस्ताख़ी करना मक़सूद था, लेकिन इस के साथियों ने इस की बातों को तोड़ कर यह बनाया कि इस ने रसूल स0अ0व0 की गुस्ताख़ी की, इस तालिब इल्म ने बार बार इन्कार किया? कि मेरा यह मक़सद हरगिज़ नहीं था कि मैं हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी करूं, लेकिन साथियों ने एक नहीं मानी और इस को मार मार कर क़त्ल कर दिया, इस बात को मीड़िया वालों ने बहुत उछाला और दूसरी क़ौमों को यह तास्सुर दिया कि मुसलमान बहुत सख़्त होते हैं और ज़रा सी बात पर मुसलमान को ही क़त्ल कर देते हैं, यह मज़हब वाले इतने ख़राब होते हैं और यह बात यूरोप के मुल्कों में कई महीनों तक चलती रही।

इस लिए मेरी गुज़ारिश है कि जब तक साफ़ तौर पर यह पता ना चले कि वाक़ई इस ने जान बूझ कर हुज़ूर स0अ0व0 को गाली दी है, या हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी की है इस वक़्त तक इस पर कुफ़्र का फ़तवा ना लगाऐं इस से बड़ा इन्तशार होता है और ख़ुद मुसलमान दो टुकड़ों में बट जाते हैं और एक दूसरे के पीछे नमाज़ तक नहीं पढ़ते।

तीसरी मिसालः एक मसलक वाला अहल बैत का पूरा अहतराम करता है, इस की मौहब्बत को ईमान का जुज़ मानता है इस को अपने सर पर बैठाता है और इन के बारे में अदना तौहीन का क़ाइल नहीं है।

लेकिन दूसरे मसलक वाले के गुमान में है कि जिस तरह हम लोग कहते हैं इस तरह अहतराम नहीं करता, या अहल बैत को

इस तरह नहीं मानता जिस तरह हम मानते हैं, अब इस की वजह से इस को काफ़िर मानते हैं गुस्ताख़ अहले बैत मानते हैं, और इस के पीछे नमाज़ तक नहीं पढ़ते। तो इस तरह की इल्ज़ाम तराशी की वजह से वो मुरतद नहीं होगा और वो वाजिब उल क़त्ल नहीं होगा बल्कि यह तहक़ीक़ करनी पड़ेगी कि वाक़ई वो हुज़ूर स0अ0व0 को गाली देता है, या इस की गुस्ताख़ी करता है और जान बूझ कर समझते हुए एसा कर रहा है, तब जाकर वो मुरतद होगा इसी लिए मैंने उ़नवान में यह लिखा कि वो हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली देता हो और समझाने से भी बाज़ ना आता हो, क्योंकि आज कल यह रिवाज चल पड़ा है कि हमारी बात नहीं मानते हैं तो आप गुस्ताख़ रसूल हैं या गुस्ताख़ अहल बैत हैं। और समझाने के बाद बाज़ ना आता हो यह इस लिए लिखा कि बाज़ मर्तबा आदमी जाहिल होता है इस को पता ही नहीं होता कि किस जुमले से हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी होती है, इस लिए इस को पहले समझाया जाये कि इस जुमले से गुस्ताख़ी होती है और आप ने यह जुमला कहा है इस से हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी हुई है अब समझाने के बाद भी गुस्ताख़ी करता है तो अब यह काफ़िर शुमार किया जायेगा।

खुली गाली देने वाले को क़त्ल किया जायेगा

इस की दलील यह अहादीस हैं:

1. حدثنا ابن عباس ان اعمى تشتم النبى ﷺ وتقع فيه فينهاها فلا تنتهى ويزجرها فلا تنزجر ،فلما كانت ذات ليلة جعلت تقع فى النبى ﷺ و تشتمه فاخذ المغول فوضعه فى بطنها ..... فقال النبى ﷺ الا اشهدوا ان دمها هدر. (ابو داود شريف ، كتاب الحدود ، باب الحكم فيمن سب النبى ﷺ ، ص ٦١٣، نمبر ٤٣٦١)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि

एक नाबीना आदमी हुजूर स0अ0व0 को गाली देता था और इन की बुराई बयान करता था, इस को रोका, लेकिन वो नहीं रूके इस को डांटा लेकिन इस ने नहीं माना, एक रात का वाक़िआ़ है कि वो हुजूर स0अ0व0 की बुराई बयान कर रहा था और इन को गाली दे रहा था तो एक छुरी ली और इस के पेट में धंसा दिया......तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि लोगो गवाह रहो इस का ख़ून माफ़ है। (यानी मारने वाले से क़िसास नहीं लिया जायेगा)।

इस हदीस में:

فينهاها فلا تنتهى ويزجرها فلا تنزجر.

तर्जुमा: इस को रोका, लेकिन वो नहीं रूके इस को डांटा लेकिन उस ने नहीं माना, से यह भी पता चला कि गाली देने वाले को रोकने से भी ना माने तब वो काफ़िर और मुरतद बनेगा किसी मुबहम जुमले से वो मुरतद नहीं बनेगा।

2.عن علی ان يهودية كانت تشتم النبى ﷺ و تقع فيه فخنقها رجل حتى ماتت فابطل رسول الله ﷺ دمها. (ابو داود شريف، كتاب الحدود، باب الحكم فيمن سب النبى ﷺ، ص ٢١٣، نمبر ٤٣٦٢)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 से रिवायत है कि एक यहूदी औ़रत हुजूर स0अ0व0 को गाली देती थी और इस की बुराई बयान करती थी इस लिए एक आदमी ने इस का गला घोंट दिया जिस से वो मर गई तो हुजूर स0अ0व0 ने इस के ख़ून को माफ़ कर दिया।

इन दोनों हदीसों में हुजूर स0अ0व0 को खुली गानी देने वालों को जिस ने मारा इसके क़िसास को माफ़ कर दिया।

हुज़ूर स०अ०व० को खुली गाली देने से काफ़िर हो जायेगा

हुज़ूर स0अ0व0 को गाली देने के बाद वो काफ़िर हो जायेगा लेकिन इस की तौबा क़बूल की जायेगी या नहीं इस बारे में दो राऐं हैं:

(1) एक राये यह है कि अब अगर वो तौबा करे तो इस की तौबा क़बूल नहीं की जायेगी, अब इस को कत्ल किया जायेगा, अक्सर हज़रात इसी तरफ़ गये हैं।

(2) दूसरी राये यह है कि अगर वो तौबा करे तो इस की तौबा क़बूल की जायेगी, और इस को तौबा करने के लिए तीन दिन की मौहलत दी जायेगी और इन तीन दिनों में तौबा करले तो इस को क़त्ल नहीं किया जायेगा, इस का हुक्म मुरतद की तरह है इस को भी तौबा करने के लिए तीन दिन की मौहलत दी जायेगी और इन तीन दिनों में तौबा करले तो इस को क़त्ल नहीं किया जायेगा, इस का हुक्म मुरतिद की तरह है इस को भी तौबा करने के लिए तीन दिन की मौहलत दी जायेगी।

(1) जो हज़रात कहते हैं कि इस की तौबा क़बूल नहीं की जायेगी इन की दलील दुर्रे मुख़्तार की यह इबारत है:

و كل مسلم ارتد فتوبته مقبولة، الا الكافر بسب نبی) من الانبياء فانه. يقتل حدا و لا تقبل توبته مطلقا ...ومن شک فی عذابه و كفره كفر .(در مختار ، كتاب الجهاد ،، باب المرتد ، مطلب مهم : فی حکم ساب الانبياء ، ج ٢، ص ٣٥٢)

तर्जुमा: हर मुसलमान जो मुरतिद हो जाये इस की तौबा क़बूल है, लेकिन जो हुज़ूर स0अ0व0 को या किसी और नबी को गाली देने की वजह से काफ़िर बना है, उस की तौा क़बूल नहीं है। वो हद के तौर पर क़त्ल किया जायेगा और कभी इस की

तौबा क़बूल नहीं की जाये......आगे यह इबारत भी है जो इस के अ़ज़ाब और कुफ़्र में शक करे वो भी काफ़िर है इस इबारत से इसतदलाल करते हुए एक जमाअ़त ने फ़रमाया कि इस की तौबा भी क़बूल नहीं है।

नोट: आगे आ रहा है कि हद लगाने के लिए इस्लामी हुकूमत होना ज़रूरी है और क़ाज़ी फ़ैसला करे तब हद लगाई जायेगी वरना अ़वाम लगाने जायेगी तो इन्तशार होगा और मीड़िया पर वो जग हंसाई होगी कि बर्दाश्त से बाहर होगा।

(2) दूसरी राये यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 को गाली देने वाला काफ़िर तो है, लेकिन अगर वो तौबा करे तो इस की तौबा क़बूल की जायेगी और अगर इस ने तौबा कर ली तो अब हद नहीं लगाई जायेगी, अल्बत्ता इस को तन्बीह की जायेगी कि आइन्दा वा ऐसा ना करे और कुछ सज़ा भी दी जायेगी।

इस की दलील दुर्रे मुख़्तार की यह दूसरी इबारत है:

.من سب الرسول ﷺ فانه مرتد و حكمه حكم المرتد و يفعل به ما فعل بالمرتد) و هو ظاهر فى قبول توبته كما مر عن الشفاء . (در مختار ، كتاب الجهاد ،، باب المرتد ، مطلب مهم : فى حكم ساب الانبياء ، ج ٦ ، ص ٣٦٠)

तर्जुमा: किसी ने रसूल स0अ0व0 को गाली दी (तो वो काफ़िर हो जायेगा) और इस का हुक्म मुरतिद का हुक्म है इस इबारत से यह ज़ाहिर होता है कि इस की तौबा क़बूल की जायेगी, जैसा कि शिफ़ा किताब से, यह बात अभी गुज़री।

दुर्रे मुख़्तार की तीसरी इबारत:

.و لكن صرح فى آخر الشفاء بان حكمه كالمرتد ،و مفاده قبول التوبة كما لا يخفى(در مختار ، كتاب الجهاد ،، باب المرتد ، مطلب مهم : فى حكم ساب الانبياء ، ج ٦ ، ص ٣٥٧.٣٥٩)

तर्जुमा: अलशिफ़ा, किताब में इस बात की तसरीह है कि गाली देने वाले का हुक्मम मुरतिद की तरह है, इस का फ़ायदा यह होगा कि इस की तौबा क़बूल की जायेगी, जैसा कि पौशीदा नहीं है।

दुर्रे मुख़्तार की चौथी इबारत:

قالوا و یستتاب منها فان تاب نکل ، و ان ابی قتل ، فحکموا له بحکم المرتد مطلقا ، و الوجه الاول اشهر و اظهره : (در مختار ، کتاب الجهاد ،، باب المرتد ، مطلب مهم : فی حکم ساب الانبیاء ، ج ٦ ، ص ٣٥٨)

तर्जुमा: उ़लमा ने फ़रमाया कि गाली देने वाले से कहा जाये कि तुम तौबा करो अगर इस ने तौबा कर ली (तो अब हद तो नहीं लगेगी) लेकिन इबरत नाक सज़ा दी जायेगी, और अगर तौबा करने से इन्कार किया तो क़त्ल किया जायेगा, उ़लमा ने यह फ़ैसला किया है कि इस गाली देने वाले का हुक्म मुतल्लक़न मुरतिद के हुक्म की तरह है लेकिन पहली राये ज़्यादा मशहूर भी है और ज़्यादा ज़ाहिर भी है।

इन तीन इबारतों में है कि हुज़ूर स0अ0व0 को गाली देने वाला भी तौबा करे तो इस की तौबा क़बूल की जायेगी।

एक बुज़ुर्ग को देखा कि दूसरे मसलक वाले की मुबहम इबारत ली और इस को तोड़ मरोड़ कर यह साबित किया कि यह गुस्ताख़ रसूल है और यह फ़तवा भी लगा दिया कि इस की तौबा भी क़बूल नहीं है बल्कि इस के काफ़िर होने में शक करे वो भी काफ़िर है।

इस फ़तवे से मुसलमानों की एक बड़ी जमाअ़त दो टुकड़ों में बट गई और काफ़िर और मुसलमान होने का झगड़ा खड़ा हो गया और बेपनाह इन्तशार फ़ैल गया, इस पर अफ़सोस ही कर सकते हैं और क्या करेंगे!

जिन के यहां गुस्ताख़ रसूल की तौबा है उनके यहां तीन दिनों तक तौबा की मौहलत दी जायेगी

जिन हज़रात के यहां हुजूर स0अ0व0 को गाली देने वाले की तौबा क़बूल की जायेगी, तो इस को तौबा करने के लिए तीन दिन की मौहलत दी जायेगी क्योंकि वो मुरतिद की तरह है।

हज़रत उ़मर रज़ि0 तीन दिन मौहलत देने पर सख़्ती करते थे।

1.لـما قدم على عمر فتح تستر. وتستر من ارض البصرة. سألهم هل من مغـرية ؟قالوا رجل من المسلمين لحق بالمشركين فاخذناه،قال ما صنعتم به؟ قالوا قتلناه ،قال : قال افلا ادخلتموه بيتا واغلقتم عليه بابا و اطعمتموه كل يوم رغيـفـا ثـم استبتموه ثلاثا .فان تاب والا قتلتموه ثم قال اللهم لم اشهد ولم آمر ولـم ارض اذا بلغنى (مصنف ابن ابى شيبة ، ٣٠ ماقالوا فى المرتد كم يستتاب ،ج سـادس، ص ٤٤٤، نـمبـر ٣٢٧٤٤/ سـنـن لـلبيهقى، باب من قال يحبس ثلاثة ايام ، ج ثامن ، ص ٣٥٩، نمبر ١٦٨٨٧)

तर्जुमा: जब हज़रत उ़मर रज़ि0 के पास तसतर की फ़तह की ख़बर आई, तसतर यह बसरा का इलाक़ा है, हज़रत उ़मर रज़ि0 ने पूछा कि मग़रिब का कोई आदमी है? लोगों ने कहा कि मुसलमान का एक आदमी मुश्रिक हो गया था तो हम ने इस को पकड़ लिया हज़रत उ़मर रज़ि० ने पूछा इस के साथ क्या मामला किया? लोगों ने कहा हम ने इस को क़त्ल कर दिया तो हज़रत उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया कि इस को घर में नहीं बन्द कर देते और इस को हर रोज़ रोटी खिलाते, फिर तीन दिनों तक इस से तौबा का मुतालबा करते अगर तौबा कर लेता तो छोड़ देते वरना इस को क़त्ल कर देते, फिर हज़रत उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया अल्लाह गवाह रहना, मैंने

ना इन लोगों को क़त्ल करने का हुक्म दिया था और जब इस के क़त्ल की बात पहुंची तो मैं इस से राज़ी भी नहीं हूं।

2.عن علیؓ قال یستتاب المرتد ثلاثا (مصنف ابن ابی شیبة ، ۳۰ ماقالوا فی المرتد کم یستتاب ، ج سادس، ص ۴۴۴، نمبر ۳۲۷۴۷/ سنن للبیھقی، باب من قال یحبس ثلاثة ایام ، ج ثامن ، ص ۳۵۹، نمبر ۱۶۸۸۷)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 मुरतिद से तीन दिनों तक तौबा करने का मुतालबा करते थे।

इन सहाबी के क़ौल में है कि तीन दिन से पहले क़त्ल करने पर हज़रत उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ना मैं इस में हाज़िर हूं और ना मैंने इस का हुक्म दिया और ना मैं इस से राज़ी हूं, जिस से मालूम हुआ कि तीन दिन तक मौहलत देना ज़रूरी है, तीन दिनों के बाद भी अपने क़ौल पर अड़ा रहे तब जाकर इस को क़त्ल किया जायगा।

(2) ऐसा जुम्ला इस्तेमाल करता हो जिस से हुज़ूर स०अ०व० की तौहीन का शुब्हा होता है

दूसरी सूरत यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 को खुली गाली तो ना देता हो लेकिन ऐसा जुम्ला इस्तेमाल किया हो जिस से हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन का शुब्हा होता हो, चूंकि यह मुबहम जुम्ला है ऐसा भी मुमकिन है कि वो तौहीन करना चाहता है, और यह भी मुमकिन है कि वो तौहीन नहीं करना चाहता, बल्कि नादानी में यह जुमला मुंह से निकल गया है इस को पता ही नहीं है कि मैंने तौहीन की है या नहीं इस लिए इस से पूछा जायेगा कि इस से क्या मुराद है, अगर इस ने कहा कि इस जुम्ले से मेरा मक़सद तौहीन करना नहीं है, बल्कि मुझे तो पता भी नहीं है कि यह जुम्ला हुज़ूर स0अ0व0 के लिए तौहीन की चीज़ है तो इस को माफ़ कर दिया जायेगा लेकिन इस को तन्बीह की जायेगी कि आइन्दा इस क़िस्म के जुम्ले इस्तोल ना करें क्योंकि यह जुम्ला भी ख़तरे से ख़ाली नहीं है।

मैंने यह तफ़सील इस लिए लिखी है कि कई मर्तबा देखा कि आदमी पर शुब्हा वाले जुम्लेसे इल्ज़ाम लगाया वो आदमी बार बार इन्कार कर रहा है कि मैंने तौहीन नहीं की और ना तौहीन का इरादा है मुझे तो इस का पता भी नहीं है लेकिन लोग इस के पीछे लग गये और इस को क़त्ल करके छोड़ा या इस को इतना मारा कि इस की हालत ख़राब कर दी और यह सारा यूट्यूब पर ड़ाल दिया और दुनिया इस हरकत पर अफ़सोस करती रही।

अफ़सोस यह है कि कुछ लोग इल्ज़ाम तराशी पर लगे हुए हैं हर जुम्ले को तौहीन रिसालत बता कर फ़तवा दे देते हैं और इस पर पूरा हंगामा करते हैं।

(3) तीसरी सूरत यह है कि आदमी मुसलमान है इस ने कोई मुबहम जुम्ला इस्तेमाल किया है अब दूसरे मसलक वालों ने या दूसरे मज़हब वालों ने इस जुम्ले को तोड़ कर यह निकाला कि इस ने हुज़ूर स0अ0व0 की गुस्ताख़ी की है।

चूंकि यह मुसलमान है इस लिए ग़ालिबन गुमान यही है कि इस ने हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन नहीं की होगी, क्योंकि इस्लाम की तालीम यही है कि वो ना हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन करे, ना किसी नबी की तौहीन करे, और ना किसी अहल बैत या किसी वली की तौहीन करे, इस लिए उन्होंने या तो नादानी में यह बात कही होगी, इस को यह पता ही नहीं है कि मैंने नबी या वली की तौहीन की है, या इस जुमलेसे गुस्ताख़ी होती है या फिर किसी ने इस के जुम्ले से ग़लत मतलब निकाल कर इस को बदनाम करने की कौशिश की है, इस लिए इस कहने वाले से पूछें कि इस जुम्ले से आप का मतलब क्या है अगर वो कहे कि इस से तौहीन करने का इरादा नहीं था, तो इस को छोड़ दिया जायेगा क्योंकि इस ने जान कर तौहीन ही नहीं की है, अल्बत्ता इस को तन्बीह की जायेगी कि आइन्दा ऐसा जुम्ला इस्तेमाल ना करें।

इस तरह का रवय्या इख़्तयार करने से बहुत सारे हंगामे ख़त्म

हो जाऐंगे और यह जो रोज़ाना मसलकों में इख़्तलाफ़ होता है वो बहुत कम हो जायेगा।

(4) ग़ैर मुस्लिम मुल्क में रसूल की गुस्ताख़ी

चौथी सूरत यह है कि ग़ैर मुस्लिम के मुल्कों में बसे हुए हैं वहां किसी ग़ैर मुस्लिम ने ऐसी हरकत की जिस से हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन होती हो तो अब क्या करें।

आगे मुरतिद की सज़ा में तफ़सील आ रही है कि हद लगाने के लिए तीन शर्तें ज़रूरी हैं।

(1) इस्लामी हुकूमत हो तब ही हद लगाई जायेगी अगर इस्लामी हुकूमत ना हो तो हद नहीं लगाई जायेगी।

(2) शरई क़ाज़ी हद लगाने का फ़ैसला करे तब हद लगाई जायेगी।

(3) शरई क़ाज़ी की निगरानी में हद लगाई जायेगी।

हद लगाने के लिए मुजरिम को अ़वाम के हवाले नहीं किया जायेगा क्योंकि इस से इन्तशार होगा, यूं भी इस वक़्त पूरी दुनिया में ह्यूमन राइट्स जारी है, इस लिए मीड़िया वाले ऐसी बातों को बहुत उछालते हैं। इस लिए जहां इस्लामी हुकूमत नहीं है वहां हद नहीं लगाई जायेगी हां वहां किसी ने गाली दी है या हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन की है तो मुनासिब अन्दाज़ में हुकूमत से तअ़ज़िर करने का मुतालबा किया जायेगा।

अगर ग़ैर मुस्लिम मुल्क में किसी ग़ैर मुस्लिम ने हुज़ूर स0अ0व0 की तौहीन की तो यह भी तौहीन है और अच्छी बात नहीं है लेकिन इस के लिए अहतजाज का तरीक़ा यह है कि मुत्तहिद हो कर इस मुल्क के क़ानून की रिअ़ायत करते हुए अहतजाज करें और हुकूमत से मुतालबा करें कि इस को मुनासिब सज़ा दे और तअ़ज़िर करे ताकि आइन्दा कोई इस क़िस्म की गुस्ताख़ी ना करे।

यह सूरत हरगिज़ ना करें कि इस आदमी को हमारे हवाले करें ताकि हम इस को सज़ा देंगे क्योंकि इस सूरत में मुजरिम का ख़ान्दान और इस के हमनवा लड़ पड़ेंगे और इन्तशार हो जायेगा और कहीं ऐसा ना हो कि यह इख़्तलाफ़ इतना बढ़ जाये कि आप को इस मुल्क से निकलना पड़े और फिर कहीं जगह ना मिले।

या ज़्यादा हंगामा करने की वजह से वहां का मीड़िया वाला आप को मुतशदद वाली क़ौम तसव्वुर करने लगे और आप की तसवीर ख़राब हो जाये, इस लिए यह ना करें, बल्कि इस मुल्क के क़ानून के दायरे में रह कर अहतजाज करें और तअ़ज़ीर का मुतालबा करें जो जायज़ सूरत है।

गुस्ताख़ रसूल इस दौर में एक बड़ा मसला

गुस्ताख़ रसूल इस दौर में एक बड़ा मसला है इस से भी दुनिया में बड़ा इन्तशार हो रहो है। कई किताबों को मुताला करते वक़्त देखा कि एक मसलक वाला हुजूर स0अ0व0 को रसूल मानता है, इन की पूरी इज़्ज़त करता है लेकिन मसलन आयत, لا علم الغيب की वजह से इतना तो मानता है कि आप को बाज़ इल्म ग़ैब दिया गया था, लेकिन ज़र्रे ज़र्रे का इल्म दिया गया जो सिर्फ़ अल्लाह की सिफ़्त है वो नहीं मानता या आयत, لا املک لكم ضرا ولا نفعا की वजह से हुजूर स0अ0व0 को मुख़तार कुल नहीं मानता, तो यहां आयत की वजह से हुजूर स0अ0व0 में एक सिफ़त को नहीं मानता, क्योंकि अल्लाह ने ख़ुद ही इन सिफ़ात की नफ़ी की है, अब दूसरे मसलक वाले मुसिर हैं कि इस ने गुस्ताख़ी की, और गोया कि यह मुरतिद हो गया, और इस के मानने वाले सब मुरतिद हो गये और सब को मुरतिद वाली सज़ा दी जाये और इस पर इतना इसरार किया कि क़ौम की क़ौम दो टुकड़े हो गई......यह बहुत बड़ी बेइन्साफ़ी है कि आयत से सही इस्तदलाल करने वालों को गुसताख और मुरतद क़रार दे रहे हें।

ये तो बहुत बुरी बात है के एक गिरोह मुसलमान है लेकिन अपने ज़अम की बिना पर उसको मुरतद करार दिया और ये भी लिख दिया के जो इस में शक करे वो भी काफिर है और ये हवाला नक़ल कर दिया:

و من شک فی عذابه و کفره کفر . (**رد المحتار ، کتاب الجهاد ، باب المرتد ، مطلب مطلب مهم فی حکم ساب الانبیاء، ج ٢ ، ص ٣٥٢،**)

के जो इस के कुफ्र में शक करे वो भी काफिर है।

इस लिये गुसताखे रसूल, या मुरतद का फ़तवा देते वक़्त ये जरूरी है के वाक़िई इस ने हुज़ूर स0अ0व0 को गालियां दी हो और तीन दिन समझाने के बावजूद भी तोबा ना करता हो तब उसको मुरतद क़रार दिया जाएगा, सिरफ एक मस्लक के शक की बुनयाद पर या अपनी सोच की बुनयाद पर मुरतद और गुस्ताखे रसूल क़रार नहीं दिया जाएगा इसका खयाल रख्खें, कुछ लोगों ने इसका खयाल नही रख्खा और मुसलमानों के दरमियान नफरत की आग भड़का दी, जिसकी वजह से इसलाम के किसी काम के लिये ये आपस में नहीं मिल पाऐ, और लड़ लड़ कर तबाह होगये, उस वक़्त शाम, इराक़, मिसर, लीबया, यमन, अफगानिस्तान के मुसलमान आपस ही में लड़ लड़ कर पूरा पूरा मुल्क तबाह होगया।

इस लिये किसी मुसलमान के लिये गुसताखी का फतावा देने से पहले बहुत सोचने की ज़रूरत है।

इस अक़ीदे के बारे में तीन आयतें और दो हदीसें हें आप हर एक की तफ़सील देखें।

(17) तमाम सहाबा किराम का एहतराम बहुत ज़रूरी है

इस अक़ीदे के बारे में 10/ आयतें और 7/ हदीसें हें, आप हर एक की तफसील देखें।

जिसने हुज़ूर स0अ0व0 को ईमान के साथ देखा और ईमान ही

पर उस की मोत हुई वो सहाबी है, कियों के उन आखों से उन्होंने हुज़ूर स0अ0व0 को देखा है और हुज़ूर के साथ रहे हें और उनकी बे पनाह मदद की है जो बाद के लोगों को नसीब नहीं है, उनहीं की कुर्बानियों से हम तक दीन पहुंचा है इस लिये तमाम सहाबा का एहतराम इन्ताहई जरूरी है चाहे जो सहाबी भी हो।

हर सहाबी की इज़्ज़त करना और दिल से मोहब्बत करना जरूरी है

तमाम सहाबा से मोहब्बत करनी चाहिये, कियों के ये हुज़ूर स0अ0व0 के साथी हें जिन्हों ने हर हाल में हुज़ूर स0अ0व0 का साथ दिया है उन में से किसी को भी बुरे अलफाज़ से याद नहीं करना चाहिये, और जो आपस का इखतिलाफ है उसको इजतिहादी गलती पर महमूल करना चाहिये उनकी गलतियों को पकड़ पकड़ कर बार बार जिकर नहीं करना चाहिये।

उन में से बहुत से सहाबी वो भी हें जो हुज़ूर स0अ0व0 के खुसर होते हें जैसे हजरत अबू बकर रज़ि0, हज़रत उमर रज़ि0 और हज़रत उसमान रज़ि0, हुज़ूर स0अ0व0 के दामाद हें, जिस तरह हज़रत अली रज़ि० हुज़ूर स0अ0व0 के दामाद हें, तो जिस तरह हज़रत अली रज़ि० को बुरा भला कहना जायज़ नहीं है इसी तरह हज़रत उ़समान रज़ि0 को भी बुरा भला कहना जायज़ नहीं है, क्योंकि वो भी हुज़ूर स0अ0व0 के दामाद हैं।

हज़रत उ़मर रज़ि0 के बारे में तो एक और फ़ज़ीलत भी है कि वो हज़रत अ़ली रज़ि0 और हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के दामाद हैं हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की बेटी हज़रत उम्मे कुलसुम रज़ि0 से हज़रत उ़मर रज़ि0 की शादी हुई है इस लिए हज़रत उ़मर रज़ि0 को तो और भी बुरा भला नहीं कहना चाहिए क्योंकि वो हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के दामाद हैं।

हज़रत आ़यशा, हज़रत सौदा रज़ि0 हुज़ूर स0अ0व0 की बीवी

हैं और उम्मत की मां हैं, हज़रत आ़यशा रजि0 इतनी महबूब बीवी है कि इन की गोद में हुजूर स0अ0व0 की वफ़ात हुई है इस लिए जिस तरह हज़रत ख़दीजा रज़ि0 हुजूर स0अ0व0 की बीवी हैं और उम्मत की मां हैं और इन को बुरा भला कहना जायज़ नहीं है इसी तरह हज़रत आ़यशा रज़ि0, हज़रत सौदा रज़ि0 को भी बुरा कहना जायज़ नहीं है, क्योंकि यह भी हुजूर स0अ0व0 की बीवियां हैं, कोई आदमी आप की बीवी को बुरा कहे तो कितना बुरा लगेगा, इसी तरह हुजूर स0अ0व0 की बीवी को बुरा कहोगे तो कितना बुरा लगेगा, इस लिए हुजूर स0अ0व0 की किसी बीवी को भी बुरा कहना जायज़ नहीं है, जो हज़रात ऐसा करते हैं वो बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हैं।

सहाबा किराम से बेपनाह मौहब्बत करें और इमाम तहावी रह0 का हुक्म

. و نحب اصحاب رسول الله ﷺ و لا نفرط فی حب احد منهم ، و لا نتبرأ من احد منهم ، و نبغض من یبغضهم و بغیر الخیر یذکرهم ، و لا نذکر هم الا بخیر و حبهم دین و و ایمان و احسان ، و بغضهم کفرا و نفاقا و طغیانا . (عقیدة الطحاوة ، عقیده نمبر ۹۳، ص ۲۰)

तर्जुमा: हम हुजूर स0अ0व0 के सहाबी से मौहब्बत करते हैं और इन में से किसी की मौहब्बत में गुलू ना करें और इन में से किसी से बराअत का इज़हार ना करें और जो इन सहाबा से बुग़ज़ रखते हैं या इन को ख़ैर के बग़ैर याद करते हैं इन से हम बुग़ज़ रखेंगे और हम इन को ख़ैर से ही याद करेंगे, इन हज़रात से मौहब्बत करना दीन है, ईमान है, और अहसान है, और इन हज़रात से बुग़ज़ रखना कुफ़्र है, निफ़ाक़ है और सरकशी है।

. و من احسن القول فی اصحاب رسول الله ﷺ و ازواجه الطاهرات من کل دنس و ذریاته المقدسین من کل رجس فقد بری من النفاق. (عقیدة الطحاوة ، عقیده نمبر ۹۶، ص ۲۱)

तर्जुमाः रसूलुल्लाह स0अ0व0 के सहाबी और इन की पाक बीवियों की बुराइयों के बारे में जिस ने अच्छी बात कही ओर इन की मुक़द्दस औलाद की अच्छाई बयान की तो वो निफ़ाक़ से बरी हो गया।

इस अ़क़ीदे में है कि हुजूर स0अ0व0 के तमाम सहाबा और इन की बीवियों को अच्छाई सें याद करना चाहिए और इन तमाम से मौहब्बत रखना चाहिए।

सहाबा की फ़ज़ीलत के बारे में यह 8 आयतें हैं:

1.وَ السَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمَهَاجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارَ وَ الَّذِیْنَ اِتَّبِعُوْهُمْ بِاِحْسَانِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّلَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ خَالِدِیْنَ فِیْهَا اَبَداً ذٰالِکَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ . (آیت۱۰۰۔۱۰۲،سورت التوبۃ۹)

तर्जुमाः और मुहाजिरीन और अन्सार में से जो लोग पहले ईमान लाए और जिन्होंने नेकी के साथ इन की पैरवी की अल्लाह इन सब से राज़ी हो गया है और वो इस अल्लाह से राज़ी हैं, और अल्लाह ने इन के लिए ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वो हमैशा हमैशा रहेंगे, यही बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी है।

2.لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُوْمِنِیْنَ اِذْیُبَائِعُوْنَکَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّکِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحاً قَرِیْباً . (آیت۱۸،سورت الفتح۴۸)

तर्जुमाः यक़ीनन अल्लाह इन मौमिनों से बड़ा ख़ुश हुआ जब वो दरख़्त के नीचे आप स0अ0व0 से बैअ़त कर रहे थे और इन के दिलों में जो कुछ था वो भी अल्लाह को मालूम था, इस लिए इस पर सकनियत उतार दी, और इन को इनआ़म में एक क़रीबी फ़तह अ़ता फ़रमा दी।

3.اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِیْنَ هَاجَرُوْ وَ جَاهِدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اُوْلٰئِکَ یَرجُوْنَ

رَحۡمَةَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ غَفُوۡرُ الرَّحِيۡمِ .(آیت۲۱۸،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: यक़ीनन वो लोग जिन्होंने ईमान लाया, और हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया वो अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाले हैं बहुत रहम करने वाले हैं।

4.وَ لٰكِنۡ حُبِّبَ اِلَيۡكُمُ الۡاِيۡمَانَ وَ زَيَّنَهٗ فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ وَ كَرَّهَ اِلَيۡكُمُ الۡكُفۡرَ وَ الۡفُسُوۡقَ وَ الۡعِصۡيَانَ اُوۡلٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوۡنَ، فَضۡلاً مِّنَ اللّٰهِ وَ نِعۡمَةً وَّ اللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ . (آیت۸،سورت الحجرات۴۹)

तर्जुमा: लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे दिल में ईमान की मौहब्बत ड़ाल दी है और उसे तुम्हारे दिलों में पुर कशिश बना दिया है और तुम्हारे अन्दर कुफ़्र की और गुनाहों की और नाफ़रमानी की नफ़रत बिठा दी है ऐसे ही लोग हैं जो ठीक ठीक रासते पर आ चुके हैं, जो अल्लाह की तरफ़ फ़ज़ल और नेअ़मत का नतीजा है और अल्लाह बहुत जानने वाले हैं, हिक्मत वाले हैं।

इस आयत में सहाबा के बारे में फ़रमाया कि इन के दिल में ईमान की मौहब्बत है इस लिए इन में से किसी को काफ़िर कहना या गुनाहगार कहना बहुत बुरी बात है।

5. اِنَّ الَّذِيۡنَ تَوَلَّوۡا مِنۡكُمۡ يَوۡمَ الۡتَقَى الۡجَمۡعَانِ ، اِنَّمَا اسۡتَزَلَّهُمُ الشَّيۡطَانُ بِبَعۡضِ مَا كَسَبُوۡا وَ لَقَدۡ عَفَا اللّٰهُ عَنۡهُمۡ.(آیت۱۵۵ ،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: तुम में से जिन लोगों ने उस दिन पीठ फैरी जब दोनों लशकर एक दूसरे से टकराए दर हक़ीक़त उन के बाज़ आमाल के नतीजे में शैतान ने उनको लग़ज़िश में मुबतला कर दिया था और यक़ीन रख्खो अल्लाह ने उनको माफ कर दिया है यकीनन अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा बुरदबार है।

इस आयत में है के जंग के मोके पर सहाबा से जो गलती हुई थी अल्लाह ने उसको माफ करदिया, इस लिये अब उन

गलतियों को पकड़ पकड़ कर उन को बुरा भला कहना बिल्कुल जायज़ नहीं है।

6. مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعاً سُجَّداً يَبْتَغُوْنَ فَضْلاً مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ، سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ . (آیت۲۹،سورت الفتح۴۸)

तर्जुमा: मोहम्मद स0अ0व0 अल्लाह के रसूल हें और जो लोग उन के साथ हें वो काफिरों के मुकाबले में सख्त हें, और आपस में एक दूसरे के लिये रहम दिल हें, तुम उनहें देखोगे कभी रूकू में हें, कभी सजदे में हें, गर्ज़ अल्लाह की खुशनूदी की तलाश में लगे हुवे हें, उनकी अलामतें सजदे के असर से उनके चेहरे पर नुमायां हें।

इस आयत में सारे सहाबा की तारीफ की है, इस लिये किसी को भी बुरा कहना ठीक नहीं है।

7. لَقَدْ تَابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ اِنَّهٗ بِهِمْ رَؤُفٌ رَحِيْمٌ . (آیت ۱۱۷،سورت التوبۃ ۹)

तर्जुमा: हकीक़त ये है के अल्लाह ने रहमत की नजर फरमाई नबी पर और उन मुहाजिरीन और अन्सार पर जिनहों ने एसी मुशकिल घड़ी में नबी का साथ दिया जब के करीब था के उन में से एक गिरोह के दिल डगमगा जाऐं, फिर अल्लाह ने उन के हाल पर तवज्जा फरमाई, यक़ीनन वो उन के लिये बहुत शफ़ीक़ बड़ा मेहरबान है।

8. لا يستوى منكم من انفق من قبل الفتح و قاتل اولائك اعظم درجة من الذين انفقوا من بعد و قاتلوا و كلا وعده الله الحسنى و الله بما تعملون خبير . (آیت ۱۰،سورت الحدید ۵۷)

तर्जुमा: तुम में से जिन्हों ने मक्का की फतह से पहले ख़र्च किया और लड़ाई लड़ी वो बाद वालों के बराबर नहीं हें, वो दरजे

में उन लोगों से बढ़े हुऐ हें, जिनहों ने फतह मक्का के बाद ख़र्च किया और लड़ाई लड़ी यूं अल्लाह ने उन सब से भलाई का वादा कर रख्खा है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को पुरा खबर है।

इस आयत में है के फतह मक्का से पहले जिनहों ने ख़र्च किया उनका दर्जा बहुत जियादा है और हज़रत अबू बकर रजी० हज़रत उमर रजी० और हज़रत उसमान रजी० फतह मक्का से पहले खरच करने वाले हें इस लिये उन का दर्जा बहुत ज़्यादा है इस लिये उन हजरात को हर गिज़ बुरा भला नहीं कहना चाहिये।

उन आठ आयतों में सहाबा रजी० की बड़ी फज़ीलतें हें और उन आयतों में तमाम सहाबा शरीक हें, इस लिये किसी सहाबी, या किसी सहाबियात को हरगिज़ हरगिज़ बुरा भला नहीं कहना चाहिये इस से ईमान ज़ाऐ होजाता है।

उसका एक बड़ा नुकसान ये भी है के आदमी के दिल से सहाबा की अज़मत निकल जाती है और उन हजरात के वासते से जो दीन आया है, इस पर अमल करने में या उस को मान्ने में सुस्ती और काहिली पैदा हो जाती है उस लिये तमाम सहाबा की अजमत दिल में बैठाना बहुत जरूरी है।

हुजूर स0अ0व0 ने सहाबा को गाली देने से सखती से मना किया है इस लिये किसी अदना सहाबी को भी हरगिज गाली नहीं देनी चाहिये और ना उनको बुरा भला कहना चाहिये, इस के लिये अहादीस ये हें।

1.عن ابی سعید قال قال النبی ﷺ لا تسبوا اصحابی فلو ان احدکم انفق مثل احد ذهبا ما بلغ مد احدهم و لا نصیفهم . (بخاری شریف، کتاب فضائل النبی ﷺ ، باب ، ص ٦١٧ ، نمبر ٣٦٧٣/ مسلم شریف ، باب تحریم سب الصحابة ،ص ١١١٣ ، نمبر ٢٥٤٠/ ٦٤٨٧)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फरमाया के मेरे सहाबी को गाली मत दो, कियों के तुम में से एक अहद के बराबर सोना खरच करेगा तो सहाबी के एक मद और आधा मद के ख़र्च के बराबर भी उसका सवाब नहीं पहुंचेगा (कियों के उनहों ने हुज़ूर स0अ0व0 की मदद के लिये ख़र्च किया था)।

2.عن عطا قال قال رسول الله ﷺ من سب اصحابی فعلیه لعنة الله . (مصنف بن ابی شیبة ، باب ذکر الکف عن اصحاب النبی ﷺ ج ٦، ص ٤٠٥، نمبر ٣٢٤١٩)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फरमाया जिसने मेरे सहाबा को गाली दी उस पर अल्लाह की लानत है।

इस हदीस मुरसल में है के जो सहाबा को गाली दे उस पर अल्लाह की लानत है।

3.عن عبد الله بن مغفل المزنی قال قال رسول الله ﷺ الله الله فی اصحابی ، الله الله فی اصحابی لا تتخذهم غرضا بعدی فمن احبهم فبحبی أحبهم و من ابغضهم فببغضی ابغضهم ، و من آذاهم فقد آذانی و من آذانی فقد آذی الله تبارک و تعالی و من آذای الله فیوشک ان یأخذه . (مسند امام احمد ، باب حدیث عبد الله بن مغفل المزنی ، ج ٦، ص ٤٢، نمبر ٢٠٠٢٦)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फरमाया के मेरे असहाब के बारे में अल्लाह से डरो, मेरे असहाब के बारे में अल्लाह से डरो, मेरे बाद उनको ताअन व तशनी का निशाना ना बनाऐं, जो उन से मोहब्बत करेंगें वो मेरी वजह से मोहब्बत करेंगें और जो उन से बुग़ज़ करेंगें वो मेरी वजा से बुग़ज़ करेंगें, जिस ने उनको तकलीफ दी उसने गोया के मुझे तकलीफ दी, और जिसने मुझे तकलीफ दी तो उसने गोया के अल्लााह को तकलीफ दी और जिसने अल्लाह को तकलीफ दी तो होसकता है अल्लाह उसको अपने पकड़ में ले ले।

हुज़ूर स0अ0व0 ने बड़े दर्द के साथ अपने सहाबी के बारे में फरमाया के उनको ताअन व तशनी का निशाना ना बनाया जाऐं।

4.عن عبد الله بن عمر قال قال رسول الله ﷺ ليأتين على امتى ما اتى على بنى اسرائيل حزو النعل بالنعل .... و ان بنى اسرئيل تفرقت على ثنتين و سبعين ملة و تفترق امتى ثلاث و سبعين ملة كلهم فى النار الا ملة واحدة قال و من هى يا رسول الله ؟ قال ما انا و اصحابى . (ترمذى شريف ، كتاب الايمان ، باب ما جاء فى افتراق هذه الامة ، ص ٦٠٠ ، نمبر ٢٦٤١ / ابو داود شريف ، كتاب السنة ، باب شرح السنة ، ص ٦٥٠ ، نمبر ٤٥٩٧)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत पर बनी इसराईल की तरह वक़्त आयेगा, बिल्कुल बराबर सराबर......बनी इसराईल बहत्तर फ़िरक़ा में बटे थे और तुम तिहत्तर फ़िरक़ा में बटोगे सभी जहन्नुम में जाऐंगे सिवाऐ एक जमाअ़त के लोगों ने पूछा या रसूलुल्लाह स0अ0व0 वो जमाअ़त कौन सी होगी, हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया, जिस पर मैं हूं और मेरे सहाबा हैं।

इस हदीस में है कि मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िरक़ों में बट जायेगी और सब जहन्नुम में जायेगी लेकिन जो फ़िरक़ा मेरे सहाबा के तरीक़े में रहेगा वही निजात पाने वाली होगी।

5.سمعت عمران بن حصين يقول قال رسول الله ﷺ خير امتى قرنى ثم الذين يلونهم ، ثم الذين يلونهم . (بخارى شريف ، باب فضائل اصحاب النبى و من صحب النبى او رأه من المسلمين فهو من اصحابه ، ص ٦١٢ ، نمبر ٣٦٥٠)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वो हं जो मेरे ज़माने में हैं, फिर वो लोग जो इस के बाद में आऐंगे फिर वो लोग जो इस के बाद में आऐंगे।

इस हदीस से मालूम हुआ कि आप के ज़मानें में जो सहाबा थे

वो इस उम्मत के बेहतरीन लोग थे, इस लिए भी इन को बुरा भला नहीं कहना चाहिए।

6.سمعت جابر بن عبد الله يقول سمعت النبى ﷺ يقول لا تمس النار مسلما رأنى او رأى من رانى . (ترمذی شریف ، باب ما جاء فی فضل من رای النبی ﷺ و صحبه ، ص ۸۷۲، نمبر ۳۸۵۸)

तर्जुमाः मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से कहते हुए सुना है जिस ने मुसलमान होने की हालत में मुझे देखा हो या जिस ने मुझे देखा हो (यानी मेरे सहाबी को) इस को देखा हो तो इस को जहन्नुम की आग नहीं छुऐगी।

सहाबा में कोई इख़्तलाफ़ है भी तो इस की ऐसी तावील करें जिस से ज़्यादा से ज़्यादा इत्तफ़ाक़ की सूरत निकल आऐ

क़ुरआन करीम की तालीम यह है कि सहाबा के दरमियान कोई इख़्तलाफ़ है भी तो इस इख़्तलाफ़ को और बढ़ा चढ़ा कर बयान ना करें, बल्कि ऐसी तावील करें जिस से इख़्तलाफ़ की शक्ल कम हो जाये और ज़्यादा से ज़्यादा इत्तफ़ाक़ की शक्ल निकले।

इन दोनों आयतों में इस की तालीम हैः

9.وَ اِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا .

(آیت۹،سورت الحجرات۴۹)

तर्जुमाः और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो इन के दरमियान सुलह कराओ।

10.اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ . (آیت۱۰،سورت الحجرات۴۹)

तर्जुमाः हक़ीक़त तो यह है कि तमाम मुसलमान भाई भाई हैं,

इस लिए अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह कराओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम्हारे साथ रहमत का मामला किया जाये।

इन दोनों आयतों में है कि अगर लड़ाई हो भी जाये तो सुलह कराओ इस लिए सहाबा के दरमियान के इख़्तलाफ़ को इज्तहादी ग़लती पर महमूल करें और ज़्यादा से ज़्यादा इत्तफ़ाक़ की सूरत निकालें। इन के इख़्तलाफ़ में मज़ीद हवा नहीं देनी चाहिए।

सहाबा में इख़्तलाफ़ देखें तो हुज़ूर स०अ०व० ने हमें यह दो नसीहतें की हैं

हुज़ूर स0अ0व0 को वही के ज़रये यह इत्तला दे दी गई थी कि आप के बाद सहाबा किराम में इख़्तलाफ़ होगा और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 को काफ़ी बातों की इत्तला दी थी, हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरे बाद जब सहाबा में इख़्तलाफ़ देखो तो दो बातें करें।

(1) एक बात तो यह है कि जितने ख़ुलफ़ा राशिदीन हैं उन की इत्तबा करें।

(2) और दूसरी बात यह कि सहाबा के बारे में चुप रहो किसी एक की हिमायत में दूसरे पर हरगिज़ तलवार मत उठाना।

इस हदीस में है कि चारों ख़ुलफ़ा की सुन्नतों को अपने ऊपर लाज़िम पकड़ो।

عن العرباض بن سارية ، قال وعظنا رسول الله ﷺ يوما بعد صلاة الغداة موعظة بليغة ذرفت منها العيون و وجلت منها القلوب فقال رجل ان هذه موعظة مودع فبما ذا تعهد الينا يا رسول الله ؟ ...فانه من يعيش منكم ير اختلافا كثيرا و اياكم و محدثات الامور ، فانها ضلالة ، فمن ادرک ذالک منكم فعليكم بسنتى وسنة الخلفاء الراشدين المهديين عضوا عليها بالنواجذ. (ترمذى شريف ، كتاب العلم ، باب ماجاء فى

الاخذ بالسنة و اجتناب البدعة ، ص ٢٠٧، نمبر ٢٦٧٦ / ابن ماجة شريف ، كتاب المقدمة ، باب اتباع سنة الخلفاء الراشدين المهديين ، ص ٦، نمبر ٤٢)

तर्जुमा: हज़रत अरबाज़ बिन सारिया फरमाते हें के एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद हुजूर स0अ0व0 ने हमें नसीहत फरमाई, नसीहत एसी थी के आंखें बह पड़ें, दिल उछल पड़ा, एक आदमी कहने लगे के एसा लगता है के ये अलविदाई नसीहत है इस लिये ऐ अल्लाह के रसूल हम से किया अहद लेना चाहतै हें?...... आप ने फरमाया जो जिन्दा रहेगा वो बहुत इखतिलाफ देखेगा, दैखना कोई नई बात पैदा नहीं कर लेना, इस लिये के वो गुमराही है जो इखतिलाफ का ज़माना पाऐ तो उस पर मेरी सुन्नत और हिदायत याफता खुलाफाऐ राशिदीन कि उस पर लाज़िम है, उनको दांत से पकड़ कर रखना।

इस हदीस में तीन बातें हें:

(1) आप स0अ0व0 ने बहुत दर्द के साथ आखरी नसीहत की इस लिये जो अहद आप ने सहाबा कराम से लिया वो बहुत अहम है।

(2) दुसरी बात फरमाई के मेरे बाद बहुत इखतिलाफ होगा, इस लिये उस वकत में खुलाफाऐ राशिदीन कि सुन्नत को लाजिम पकड़ना।

(3) और तीसरी बात ये फरमाई के चारो खुलाफाऐ राशिदीन हिदायत पर हें अब जो हजरात सिर्फ हज़रत अली रजी० को लेते हें और बाकी तीन खुलाफा को छोड़ देते हें, वो कितनी बड़ी गलती कर रहे हें, फिर चारों खुलाफा हिदायत पर हें तो वो लोग जो तीन खुलाफा को खता और गलती शुमार करते हें वो कित्नी बड़ी गलती कर रहे हें इस लिये ये बहुत सोचने की बात है।

इस हदीस में है के सहाबा के इखतिलाफ के सिलसिले में चुप रहा करो।

قال لی اھبا ن بن صیفی : قال لی رسول اللہ : یا اھبان، اما انک ان بقیت بعدی فستری فی اصحابی اختلافا ، فان بقیت الی ذالک الیوم فاجعل سیفک من عراجین ، قال فجعلت سیفی من عراجین . (طبرانی کبیر ، مسند اھبان بن صیفی الغفاری ،جلد ۱ ، ص ۲۹۵ ، نمبر ۸۲۸) .

तर्जुमा: हज़रत अहबान रजी० ने फरमाया के मुझ से हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया ऐ अहबान अगर मेरे बाद तुम ज़िन्दा रहोगे तो मेरे सहाबा में इखतिलाफ देखोगे अगर तुम उस ज़माने तक जिन्दा रहो, तो अपनी तलवार खुजूर की शाखों की बना लेना (यानी लोहे की तलवार से किसी सहाबी के खिलाफ लड़ाई नहीं करना), हज़रत अहबान फरमाते हें के में ने खुजूर कि शाख की तलवार बना ली है।

सहाबा के दरमियान जो इखतिलाफ हुवा हमें उस में नहीं पड़ना चाहये

हज़रत इमाम शाफिइ रह० का क़ोल:

تلک دماء طھر اللہ ایدینا منھا فلا نلوث السنتنا بھا . (شرح فقہ اکبر ، بحث فی ان المعاصی تضر مرتکبھا خلافا لبعض الطوائف ، ص ۱۱۷)

तर्जुमा: सहाबा में जो खून बहे हें अल्लाह ने हमारे हाथों को उस से पाक रख्खा, तो अब हम अपनी जबान को उस में मुलवविस नहीं करेंगे।

हज़रत इमाम अहमद रह० का क़ोल:

و سئل احمد عن امر علی و عائشةؓ فقال تلک امة قد خلت لھا ما کسبت و لکم ما کسبتم و لا تسئلون عما کانوا یعملون . (شرح فقہ اکبر ، بحث فی ان المعاصی تضر مرتکبھا خلافا لبعض الطوائف ، ص ۱۱۷)

तर्जुमा: हज़रत अली रजी० और हज़रत आईशा रजी० के दरमियान जो इखतिलाफ हुवा उस के बारे में हज़रत इमाम अहमद रह० से पूछा तो उनहों ने फरमाया वो लोग थे जो गुज़र गये, जो कुछ उन्होंनें किया, उस का नुक़सान, या फाईदा उनको मिलेगा और तुम जो करोगे उसका नुक़सान या नफा तुम को मिलेगा, उन लोगों ने जो कुछ किया उस के बारे में तुम से नहीं पूछा जाऐगा।

इन दोनों हज़रात ने फरमाया के सहाबा के दरमियान जो इखतिलाफ था वो उनकी इजतिहादी गलती थी इस लिये हम लोगों को उस में नहीं पड़ना चाहिये, उन दोनों हज़रात ने ऊपर वाली अहादीस से इसतदलाल किया, और उसी पर अमल किया हमें उस पर अमल करना चाहिये।

ये दस सहाबी हैं जिन को दुन्या ही में जन्नत कि बशारत दे दी गई है

उन दस सहाबा रजी० को दुन्या में जन्नत कि बशारत दे दी गई है, और अजीब बात ये है के इसके बावजूद हज़रत अबू बकर, रजी० हज़रत उमर रजी० हज़रत उसमान रजी० वगैरा को कुछ लोग बुरा भला कहते हें।

7.عن عبد الرحمن بن عوف قال قال رسول الله ﷺ ابو بكر فى الجنة ،وعمر فى الجنة ، وعثمان فى الجنة ، وعلى فى الجنة ، و طلحة فى الجنة و الزبيرفى الجنة ، وعبد الرحمن بن عوف فى الجنة، وسعد بن وقا ص فى الجنة ، وسعيد بن زيدفى الجنة، وابو عبيده بن الجراح فى الجنة . (ترمذى شريف ، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف ، ص ٨٥١، نمبر ٣٧٤٧)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया के अबू बकर रजी० जन्नत में हें, व उमर रजी० जन्नत में हें, व उसमान रजी० जन्नत में हें, व अली रजी० जन्नत में हें, व तलहा रजी० जन्नत में हें व जुबैर रजी० जन्नत में हें, व अब्दुर रहमान बिन ओफ रजी० जन्नत

में हें व साद बिन वक़ास रजी० जन्नत में हें, व सईद बिन ज़ैद रजी० जन्नत में हें, व अबू उबैदा बिन जरराह रजी० जन्नत में हें।

ये वो हज़रात हें जिन को दुन्या ही में जन्नत कि बशारत दे दी गई है। अल्लाह करे हमें भी उन का साथ नसीब हो।

इस अक़ीदे के बारे में 10 आयतें और 7 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(18) अहल बैत से मौहब्बत करना ईमान का जुज़ है

इस अक़ीदे के बारे में 7 आयतें और 43 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

हुज़ूर स0अ0व0 की तमाम बीवियां रज़ि0 और हज़रत फ़ातिमा रज़ि0, हज़रत अ़ली रज़ि0, और हज़रत हसन रज़ि0, और हज़र हुसैन रज़ि0 यह सब अहल बैत में दाख़िल हैं, और हमैशा हमैशा अहल बैत में रहेंगे।

यह भी ज़रूरी है कि अहले बैत की मौहब्बत में किसी सहाबी को बुरा भला कहना बिल्कुल ठीक नहीं है। ख़ास तौर पर हज़रत आ़यशा रज़ि0 और हज़रत अबूबकर रज़ि0, हज़रत उ़मर रज़ि0 और हज़र उ़समान रज़ि0 को बुरा भला कहना बिल्कुल सही नहीं है। और जो इन में इख़तलाफ़ हुआ है वो इज्तहादी ग़लती है अल्लाह उन को माफ़ करे।

हज़रत अ़ली रज़ि0 और हज़रत हुसैन रज़ि0 के इतने फ़ज़ाइल के बावजूद वो मुश्किल कुशा या कार साज़ नहीं हैं इस लिए इन से मदद मांगना जायज़ नहीं है क्योंकि हुज़ूर स0अ0व0 उसी की तालीम देने तशरीफ़ लाऐ थे।

हुज़ूर स0अ0व0 की तमन्ना यह थी कि ख़लीफ़ा मुतअ़य्यन करके ना जाऊं बल्कि जमहूरियत बाक़ी रहे और उम्मत ही अपना ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करे, अल्बत्ता आप की तमन्ना यह थी कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 पहले ख़लीफ़ा बने।

इन सब की तफ़सील आगे आ रही है।

अहल बैत में कौन कौन हज़रात दाख़िल हैं

हुज़ूर स0अ0व0 की तमाम बीवियां अहल बैत में दाख़िल हैं, क्योंकि बीवी ही को घर वाली कहते हैं, इस में सब से ज़्यादा हक़दार हज़रत ख़दीजा रज़ि0 हैं जो हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की मां हैं, उन के साथ हज़रत आ़यशा रज़ि0, हज़रत हफसा रज़ि0 और तमाम बीवियां अहल बैत में दाख़िल हैं और इन तमाम के लिए आयत के मिस्दाक़ में पाकीज़गी की फ़ज़ीलत हासिल हैं।

बाद में हुज़ूर स0अ0व0 ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि0, हज़रत अ़ली रज़ि0, हज़रत हसन और हसन हुसैन रज़ि0 को अहल बैत में दाख़िल किया, इस लिए बाद में उन के लिए भी, **يطهركم تطهيرا** की फ़ज़ीलत हासिल होगी।

कुछ लोगों ने यह ज़्यादती की है कि अज़वाज मुतह्हरात, ख़ास तौर पर हज़रत आ़यशा रज़ि0 और हज़रत हफ़सा रज़ि0 को अहल बैत से निकाल दिया है और मज़ीद ज़ुल्म यह है कि इन को बुरा भला कहते हैं, और हज़रत अ़ली रज़ि0 को अहल बैत में दाख़िल करते हैं, और इन हज़रात को इतना बढ़ाते हैं कि नबियों से भी उन का दरजा ऊपर कर देते हैं, यह ठीक नहीं हैं।

बल्कि सही बात यह है कि तमाम अज़वाज मुतह्हरात और हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 हज़रत अ़ली रज़ि0, हज़रत हसन, और हज़रत हुसैन अहल बैत में दाख़िल हैं, और अहल बैत होने के ऐतबार से यह सब बराबर हैं।

अहल बैत में बीवियां दाख़िल हैं इस के लिए यह आयतें देखें।

1. **يَا نِسَاءُ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمِعُ الَّذِىْ فِىْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَ قُلْنَ قَوْلاً مَّعْرُوْفًا ، وَ قَرْنَ فِىْ بُيُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرُّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَ اَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ أَطِعْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ، اِنَّمَا**

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْراً ، وَ اذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللّٰهِ وَ الْحِكْمَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفاً خَبِيْراً.

(آیت ۳۱۔۳۴،سورت الاحزاب ۳۳)۔

तर्जुमा: ऐ नबी की बीवियो, अगर तुम तक़वा इख़तयार करो तुम आ़म औ़रतों की तरह नहीं हो इस लिए तुम नज़ाकत के साथ बात मत किया करो, कभी कोई ऐसा शख़्स बेजा लालच करने लगे जिस के दिल में रोग होता है और बात वो कहो जो भलाई वाली हो, और अपने घरों में क़रार के साथ रहो, और ग़ैर मर्दों को बनाव सिंघार ना दिखाती फिरो, जैसा कि पहली जाहिलियत में दिखाया जाता था, और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और उसके रसूल की फरमांबरदारी करो, ऐ नबी के अहले बैत (घर वालो) अल्लाह तो ये चाहता है कि तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें ऐसी पाकीज़गी अ़ता करे जो हर तरह मुकम्मल हो और तुम्हारे घरों में अल्लाह की जो आयतें और हिक्मत की बातें सुनाई जाती हैं इन को याद रखो, यक़ीन जानो अल्लाह बहुत बारीक ीं और हर बात से बाख़बर है।

इस आयत में आप की तमाम बीवियों को पहले **یا نساء النبی** **لستن کاحد من النساء .** कह कर मुख़ातिब किया फिर **کن** जमा मौन्निस हाज़िर के ज़रिये से ख़िताब किया है, और यह भी हा कि ऐ अहल बैत अल्लाह तुम को पाक करना चाहते हैं, इस लिए बीवियों को अहल बैत में अल्लाह ने दाख़िल किया है।

इस पूरी आयत को देखें कि **انما یرید اللہ ،** से पहले भी **کن** जमा मौन्निस हाज़िर के सीग़े से हुज़ूर स0अ0व0 की बीवियों को मुख़ातिब किया है, और **یطھرکم تطھرا،** के बाद भी **کن** जमा मौन्निस हाज़िर के सीग़े से हुज़ूर स0अ0व0 की बीवियों को मुख़ातिब किया है, इस लिए दरमियान में **انما یرید آلخ** से भी हुज़ूर स0अ0व0 की बीवियां ही मुराद हैं और वो अहल बैत में दाख़िल हैं,

और बाद में हज़रत फ़ातिमा रज़ि0, और हज़रत अ़ली रज़ि0 को हुजूर स0अ0व0 ने अहल बैत में दाख़िल किया है, इस लिए अहल बैत में हज़रत ख़दीजा रज़िव, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0, हज़रत हफ़सा रज़ि0 वग़ैरहा तमाम बीवियां दाख़िल हैं।

नुक्ताः आयत के दरमियान में **ليذهب عنكم الرجس أهل البيت و يطهركم تطهيرا،** में **عنكم** और **يطهركم** में जमा मुज़क्किर हाज़िर का सीग़ा लाया है, इस की वजह यह है कि अहल बैत में हुजूर स0अ0व0 भी दाख़िल हैं इस लिए इन की अ़ज़मत के लिए **كم** जमा मुज़क्किर हाज़िर का सीग़ा लाये हैं और इस में तमाम बीवियां दाख़िल हैं।

1.عن ام سلمة قالت انزلت هذه الآية (انما يريد الخ [آيت ٣٣، سورت الاحزاب ٣٣] ... قلت و انا معكم يا رسول الله ؟ قال و انت معنا . (طبرانى كبير ، مسند ام حبيبة بنت كيسان عن ام سلمة ، ج ٢٣ ، ص ٣٥٧، نمبر ٨٣٩)

तर्जुमाः हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 ने फ़रमाया कि जब आयत **انما يريد الخ** नाज़िल हुई......तो मैंने पूछा कि हम बीवियां भी आप के साथ अहल बैत में दाख़िल हैं? तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम लोग भी हमारे साथ अहल बैत में दाख़िल हो।

इस हदीस में सराहत के साथ है कि हज़रत उम्म सलमा रज़ि0 ने हुजूर स0अ0व0 से पूछा कि हम बीवियां भी अहल बैत और आयत ततहीर में दाख़िल हैं तो हुजूर स0अ0व0 ने जवाब दिया कि तुम लोग भी अहल बैत में दाख़िल हो।

2.عن انس ؓ قال بنى على النبى ﷺ بزينب بنت جحش بخبز و لحم ...فخرج النبى ﷺ فانطلق الى حجرة عائشة فقال السلام عليكم اهل البيت و رحمة الله) فقالت وعليكم السلام و رحمة الله ،كيف وجدت اهلك ؟ بارک الله لک فتقرى حجر نسائه كلهن يقول لهن كما يقول لعائشة و يقلن له كما قالت عائشة .(بخارى شريف ، كتاب التفسير ، باب لا تدخلوا بيوت

النبی الا ان یؤذن لکم الی طعام [آیت ۵۳، سورت] ص ۸۴۳، نمبر ۴۷۹۳)

तर्जुमा: हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि जब हुजूर स0अ0व0 ने रोटी और गौश्त से ज़ैनब बिन्ते जहश का वलीमा किया......हुजूर स0अ0व0 हज़रत आयशा रज़ि0 के कमरे की तरफ़ गये और फ़रमाया: **السلام علیکم اهل البیت و رحمة الله،** तो हज़रत आयशा रज़ि0 ने फ़रमाया: **وعلیکم السلام ورحمة الله و برکاته ،** फिर उन्होंने पूछा कि आप ने अपने अहल यानी अपनी नई बीवी ज़ैनब को कैसे पाया, अल्लाह आप को बरकत दे, हुजूर स0अ0व0 तमाम बीवियों के कमरों में तशरीफ़ ले गए और हर एक बीवी को ऐसे ही कहते जैसे हज़रत आयशा रज़ि0 को कहा था और सब बीवियां वैसे ही कहतीं जैसे हज़रत आयशा रज़ि0 ने कहा था।

इस हदीस में तमाम बीवियों को अहल बैत कहा है, जिस से मालूम हुआ कि बीवी अहल बैत होती है और हज़रत आयशा रज़ि0 और हज़रत हफ़सा रज़ि0 हुजूर स0अ0व0 के अहल बैत में दाख़िल हैं।

3.انطلقت انا و حصین الی زید بن ارقم ....قام رسول الله ﷺ یوما فینا خطیبا بماء یدعی خما بین مکة و المدینة ثم قال و اهل بیتی اذکرکم الله فی اهل بیتی ،اذکرکم الله فی اهل بیتی. اذکرکم الله فی اهل بیتی، فقال له حصین و من اهل بیته ؟ یا زید الیس نسائه من اهل بیته ؟ قال نسائه من اهل بیته و لکن اهل بیته من حرم الصدقة بعده. (مسلم شریف ، باب فضل علی بن طالب ، ص ۱۰۶۱، نمبر ۲۴۰۸/ ۶۲۲۵)

तर्जुमा: मैं और हसीन ज़ैद बिन अरक़म के पास गये......मक्का और मदीना के दरमियान पानी की एक जगह है जिस का नाम ख़ुम है वहां एक दिन हमारे सामने ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए, फिर आप ने फ़रमाया मेरे घर वाले, मैं अपने घर वालों के बारे में तुम को अल्लाह याद दिलाता हूं, मैं अपने घर वालों के बारे में, तुम

को अल्लाह याद दिलाता हूं, मैं अपने घर वालों के बारे में, तुम को अल्लाह याद दिलाता हूं, हज़रत ज़ैद रज़ि0 से हसीन ने पूछाः हुजूर स0अ0व0 के अहल बैत कौन हैं, हज़रत ज़ैद इनि की बीवियां अहल बैत नहीं हैं? तो हज़रत ज़ैद ने फ़रमाया हुजूर स0अ0व0 की बीवियां अहल बैत में हैं, लेकिन जिन लोगों को ज़कात लेना हराम है वो भी बीवियां के अ़लावा अहल बैत में दाख़िल हैं।

इन अहादीस में हुजूर स0अ0व0 की तमाम बीवियों को अहल बैत कहा है इस लिए हुजूर स0अ0व0 की तमाम बीवियां अहल बैत में दाख़िल हैं और इन के लिए ततहीर की फ़ज़ीलत हासिल है।

इस आयत में अहल से मुराद हज़रत मूसा की बीवी हैं।

2. اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْا اِنِّىْ اٰنَسْتُ نَارًا . (آیت۱۰،سورت طہ۲۰)

तर्जुमाः यह इस वक़्त की बात है जब इन को (मूसा) को एक आग नज़र आई तो उन्होंने अपने घर वालों से कहा तुम यहीं ठहरो मैंने एक आग देखी है।

इस आयत में अहल से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बीवी सफ़ूरा रह0 मुराद हैं इस लिए अहल बैत में तमाम बीवियां दाख़िल हैं।

बाद में हुजूर स०अ०व० ने हज़रत अ़ली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ि० को अहल बैत में दाख़िल किया

आयत के अन्दाज़ से मालूम होता है कि अज़वाज मुतह्हरात अहले बैत में पहले से दाख़िल थीं, बाद में हुजूर स0अ0व0 ने हज़रत अ़ली रज़ि0, फ़ातिमा और हसन बऔर हुसैन रज़ि0 को अहल बैत में दाख़िल किया और अब वो हमैशा के लिए अहल बैत में दाख़िल हो गये।

इस की दलील यह हदीस हैः

4. قالت عائشه خرج النبی ﷺ غداة و علیه مرط مرحل من شعر اسود فجاء الحسن بن علی فأدخله ثم جاء الحسین فدخل معه ، ثم جائت فاطمه

فـأدخـلها ثم جاء علی فادخله ثم قال، انما یرید الله لیذهب عنکم الرجس اهل البیـت و یطهر کم تطهیرا. (آیت ۳۳، سورت الاحزاب۳۳) . مسلم شریف ، بـاب فـضـائـل اهل بیت النبی ﷺ ، ص ۱۰۶۷ ، نمبر ۲۴۲۴/ ۶۲۶۱/ ترمذی شریف ، کتاب المناقب ، باب مناقب اهل البیت ، ص ۸۵۹، نمبر ۳۷۸۷)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 एक सुबह को निकले आप पर काले बाल की नक़शीन चादर थी, हज़रत हसन बिन अ़ली रज़ि0 आये आप ने इन को चादर में दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत हुसैन रज़ि0 आये, इन को भी हज़रत हसन के साथ दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत फ़ातिमा आई, आप ने इन को भी दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत अ़ली रज़ि0 आये आप ने इन को भी चादर में दाख़िल कर लिया, फिर यह आयत पढ़ी: **انـمـا یرید الخ** तर्जुमा: ऐ नबी के घर वालो! (अहले बैत) अल्लाह तो यह चाहता है कि तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें ऐसी पाकीज़गी अ़ता करे जो हर तरह मुकम्मल हो। आ़म तमौर पर अहल बैत यानी घर वाले, से लोग घर में रहने वाली बीवियों को ही घर वाले समझते हैं, शादी शुदह बेटी दामाद नवासों को घर वाले नहीं कहते हैं और अगर यह हज़रात दूसरे घर में रहते हों तो और भी इन को घर वाले नहीं कहते हैं इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 ने बाज़ाब्ता इन हज़रात को चादर में दाख़िल किया और बीवियों के साथ हज़रत अ़ली, फ़ातिमा रज़ि0 हसन और हुसैन को अहल बैत में दाख़िल किया और यह हमैशा के लिए अहल बैत में दाख़िल हैं और जिस तरह अज़वाज मुतह्हरात के लिए आयत ततहीर है इसी तरह इन हज़रात के लिए भी इतनी ही ततहीर है इस से कम करना भी अच्छा नहीं है और बढ़ाना भी अच्छा नहीं है।

इस की एक मिसाल यह है:

मदीना तय्यबा हरम नही था, लेकिन हुज़ूर स0अ0व0 ने इस को अल्लाह के हुक्म से हरम बनाया, इसी तरह हज़रत फ़ातिमा

रज़ि0, हज़रत अ़ली रज़ि0 हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 अहल बैत में दाख़िल नहीं थे लेकिन हुज़ूर स0अ0व0 ने अल्लाह के हुक्म से इन को अहल बैत में दाख़िल फ़रमाया और आयह ततहीर में दाख़िल फ़रमाया।

मदीना तय्यबा को हुज़ूर स0अ0व0 ने हरम बनाया इस के लिए हदीस यह है:

عن ابی ہریرہؓ ان النبی ﷺ قال حرم ما بین لابتی المدینة علی لسانی.

(بخاری شریف ، کتاب فضائل المدینة ، باب حرم المدینة ، ص ۳۰۱، نمبر ۱۸۶۹ / ابو داود شریف ، کتاب المناسک ، باب فی تحریم المدینة ، ص ۲۹۵، نمبر ۲۰۳۷)

तर्जुमा: हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मदीना के दोनों के दोनों किनारे मेरी ज़बान पर हरम क़रार दे दिये गये।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने मदीना को हरम क़रार दिया, इसी तरह हुज़ूर स0अ0व0 ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि0, अ़ली रज़ि0, हसन और हुसैन रज़ि0 को अहल बैत में दाख़िल फ़रमाया।

पहले यह हज़रात अहल बैत में दाख़िल नहीं थे और यह भी तेय है कि यह अल्लाह के हुक्म से हुज़ूर स0अ0व0 ने किया।

अहल बैत से मौहब्बत करना ईमान का जुज़ है

अहल बैत का मक़ाम कितना अहम है कि दिन में कम से कम पांच मर्तबा फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी जाती है और पांचों मर्तबा हुज़ूर स0अ0व0 पर दुरूद पढ़ा जाता है और हुज़ूर स0अ0व0 पर दुरूद के साथ इन की आल पर भी दुरूद पढ़ना लाज़मी है, जिस से मालूम हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 के अहल बैत और आप की आल का मक़ाम बहुत ऊंचा है और ईमान का जुज़ है, और इस के अ़लावा जब भी दुरूद शरीफ़ पढ़ा जायेगा और हुज़ूर स0अ0व0 की औलाद और घर वालों के लिए दुआ़ होगी और क़यामत तक होती

रहेगी।

दुरूद इब्राहीमी यह है:

اللهم صلى على محمد وعلى آل محمد الخ.

तर्जुमा: ऐ अल्लाह मौहम्मद स0अ0व0 पर दुरूद अ़ता फ़रमा और मौहम्मद स0अ0व0 के आल पर दुरूद अ़ता फ़रमा।

اللهم بارک على محمد وعلى آل محمد الخ.

तर्जुमा: ऐ अल्लाह मौहम्मद स0अ0व0 पर बरकत अ़ता फ़रमा और मौहम्मद स0अ0व0 के आल पर बरकत अ़ता फ़रमा।

ग़दीर ख़म के मौक़े पर हुज़ूर स0अ0व0 ने तीन मर्तबा लोगों से फ़रमाया कि मेरे अहल बैत के बारे में बचते रहना और तमाम अहल बैत का पूरा अहतराम करना।

लेकिन मुश्किल यह है कि ख़्वारिज ने अहल बैत में से हज़रत अ़ली रज़ि0 को बुरा भला कहा, शामियों ने अहल बैत में से हज़रत हुसैन रज़ि0 को शहीद किया और कुछ ने अहल बैत में से हज़रत आ़यशा रज़ि0 और हज़रत हफ़सा रज़ि0 को बुरा भला कहा, चूंकि हुज़ूर स0अ0व0 को इन तीनों ज़्यादतियों की इत्तला दे दी गई थी, इस लिए आप ने तीन मर्तबा अहल बैत और घर वालों के बारे में अहतराम करने की तरग़ीब दी। हदीस यह है:

5.انطلقت انا و حصينبن سبرة الى زيد بن ارقم....قام رسول الله ﷺ يوما فينا خطيبا بماء يدعى خما بين مكة و المدينة فحمد الله و اثنى عليه و وعظ و ذكر ثم قال اما بعد الا ايها الناس فانما انا بشر يوشک ان يأتى رسول ربى فأجيب ، و انا تارک فيكم ثقلين ، اولهما كتاب الله فيه الهدى و النور فخذوا بكتاب الله و استمسكوا به فحث على كتاب الله و رغب فيه ثم قال و اهل بيتى اذكركم الله فى اهل بيتى ،اذكركم الله فى اهل بيتى.اذكركم الله فى اهل بيتى، فقال له حصين و من اهل بيته ؟ يا زيد اليس نسائه من اهل بيته ؟ قال نسائه من اهل بيته. (**مسلم شريف، كتاب فضائل الصحابة ، باب من**

فضائل علی بن طالب ؓ، ص ١٠٦١، نمبر ٢٤٠٨/ ٦٢٢٥)

तर्जुमा: मैं और हज़रत हुसैन ज़ैद बिन अरक़म रज़ि0 के पास गये......मक्का और मदीना के दरमियान पानी की एक जगह है जिस का नाम ख़म है, वहां हुजूर स0अ0व0 एक दिन हमारे सामने ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए, आप रज़ि0 ने अल्लाह की हम्द व सना की, वअ़ज़ किया और याद दिलाया, फिर कहा अम्मा बाद! लोगो सुनो! मैं इन्सान हूं, हो सकता है कि मेरे रब का क़ासिद आ जाये और मैं उन की बात क़बूल करके दुनिया से चला जाउं, मैं दो अहम चीज़ें तुम्हारे दरमियान छोड़ जाता हूं, पहली चीज़ अल्लाह की किताब है, जिस में हिदायत और नूर है इस को मज़बूती से पकड़ो क़ुरआन को पकड़ने के लिए बहुत तरग़ीब दी, फिर आप रज़ि0 ने फ़रमाया मेरे घर वाले, मैं अपने घर वालों के बारे में, तुम को अल्लाह का अ़हद याद दिलाता हूं, मैं अपने घर वालों के बारे में, तुम को अल्लाह का अ़हद याद दिलाता हूं, मैं अपने घर वालों के बारे में, तुम को अल्लाह का अ़हद याद दिलाता हूं, हज़रत ज़ैद रज़ि0 से हसीन ने पूछा हुजूर स0अ0व0 के अहल बैत कौन हैं, हज़रत ज़ैद? इन की बीवियां अहल बैत में नहीं हैं? तो हज़रत ज़ैद रज़ि0 ने फ़रमाया, हुजूर स0अ0व0 की बीवियां अहल बैत में हैं।

इस हदीस में तीन मर्तबा हुजूर स0अ0व0 ने बड़े दर्द के साथ लोगों से कहा कि मेरे घर वालों के साथ अहतराम और मौहब्बत का मामला करना।

6.عن جابر بن عبد الله قال رأيت رسول الله ﷺ فی حجته یوم عرفة و هو علی ناقته القصواء یخطب فسمعته یقول ، یا ایها الناس انی قد ترکت فیکم ما ان اخذتم به لن تضلوا ، کتاب الله ، وعترتی اهل بیتی . (ترمذی شریف ، کتاب المناقب ، باب مناقب اهل البیت ، ص ٨٥٩، نمبر ٣٧٨٦ / مسند احمد ،حدیث زید بن ثابت ، ج ٦، ص ٢٣٢، نمبر ٢١٠٦٨)

तर्जुमा: जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 कहते हैं कि मैंने हुज्जतुल विदा में अ़रफ़ा के दिन देखा, आप क़सवा ऊंटनी पर सवार थे, और ख़ुत्बा दे रह थे, मैंने आप को कहते हुए सुना, ऐ लोगों तुम्हारे दरमियान दो चीज़ें छोड़ रहा हूं, अगर तुम इस को पकड़े रहो तो कभी गुमराह नहीं होगे, एक अल्लाह की किताब कुरआन, और दूसरी मेरा कुन्बा मेरे घर वाले।

यानी कुरआन और अहल बैत को पकड़ोगे तो गुमराह नहीं होगे।

7. عن ابن عباس قال قال رسول الله ﷺ أحبوا الله لما يغذو كم من نعمه ، و أحبونى بحب الله و أحبوا أهل بيتى بحبى . (ترمذى شريف ، كتاب المناقب ، باب مناقب اهل البيت ، ص ٨٥٩، نمبر ٣٧٨٩)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह से मौहब्बत करो, क्योंकि वो तुम्हें अपनी नेअ़मत से ग़िज़ा देता है, और अल्लाह की मौहब्बत की वजह से मुझ से भी मौहब्बत करा, और मेरी मौहब्बत की वजह से मेरे घर वालों से भी मौहब्बत किया करो।

इन सब अहादीस में तमाम अहल बैत से मौहब्बत करने की ताकीद है।

सय्यदा हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की फ़ज़ीलत

हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 हुज़ूर स0अ0व0 की चहेती बेटी हैं, और जिगर का टुकड़ा हैं जन्नत की सरदार हैं, अहल सुन्नत वलजमाअ़त इन से दिल से मौहब्बत करते हैं, यह हमारे सर के ताज हैं, और इन का अहतराम करना ईमान का जुज़ समझते हैं, यह और बात है कि हद से ज़्यादा नहीं बढ़ते, इन सब की मुख़्तसर फ़ज़ीलत बयान की जा रही है। इस क लिए अहादीस यह हैं:

8.عن مسور بن مخرمة ان رسول الله ﷺ قال فاطمة بضعة منى فمن

أغضبها أغضبنی . (بخاری شریف، باب منقبۃ فاطمۃ علیہ السلام،ص۶۲۶،نمبر۳۷۱۴)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया फ़ातिमा मेरे दिल का टुकड़ा है जिस ने उन को गुस्सा दिलाया उस ने मुझ को गुस्सा दिलाया।

9.عن عائشه قالت كنا ازواج النبى ﷺ عنده لم يغادر منهن واحدة .....فقال يا فاطمة اما ترضى ان تكونى سيدة نساء المومنين او سيدة نساء هذه الامة ؟ قالت فضحكت ضحكى الذى رأيت . (مسلم شريف ، باب فضائل فاطمةؓ ، ص ١٠٧٨ ، نمبر ٢٤٥٠ / ٦٣١٣) .

तर्जुमा: हम हुजूर स0अ0व0 के पास थीं, हम में से किसी ने हुजूर स0अ0व0 को छोड़ा नहीं था......हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया: फ़ातिमा रज़ि0 क्या इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम मौमिनीन की औ़रतों की सरदार बनो, या यूं फ़रमाया कि इस उम्मत की औ़रतों की सरदार बने? हजरत फ़ातिमा रज़ि0 ने फ़रमाया कि तुम लोग जो मुझे हंसते हुए देखी वो इसी वजह से हंस रही थी।

इन अहादीस में है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 मौमिन औ़रतों की सरदार हैं और हुजूर स0अ0व0 के दिल का टुकड़ा हैं।

सय्यदा हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को विरासत क्यों नहीं दी गई

हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 को विरासत नहीं दी इस की वजह यह थी कि नबी की विरासत तक़सीम नहीं होती, ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ि0 ने इस की तसदीक़ की है कि हां नबी की विरासत तक़सीम नहीं होती, वरना हज़रत आ़यशा रज़ि0 और हज़रत हफ़सा रज़ि0 को भी बीवी होने की वजह से आठवां हिस्सा मिलता, इस लिए अब किसी को हज़रत अबूबकर रज़ि0 पर इल्ज़ाम लगाने की गुंजाइश नहीं है। अहादीस यह हैं:

10. عن عائشة ان فاطمة عليها السلام أرسلت الى ابى بكر تسأله

ميـراثهـا من النبى ﷺ مما افاء الله على رسوله ﷺ تطلب صدقة النبى ﷺ التـى بـالـمـديـنـة و فدک و ما بقى من خمس خيبر فقال ابو بكر ان رسـول الـلـه ﷺ قال لا نورث ما تركنا فهو صدقة، انما يأكل آل محمد مـن هـذا المال يعنى مال الله ليس لهم ان يزيدوا على الماكل و انى و الله لا أغير شيئا من صدقات رسول الله ﷺ التى كانت عليها فى عهد النبى ﷺ و لاعـملن فيها بما عمل فيها رسول الله ﷺ، فتشهد على رض ثم قال انـا قـد عـرفنا يا ابا بكر فضيلتک و ذكر قرابتهم من رسول الله و حقهم فتـكـلـم ابـو بـكر فقال و الذى نفسى بيده لقرابة رسول الله احب الى ان اصـل من قرابتى . (بخارى شريف ، باب مناقب قرابة رسول الله ﷺ و منقبة فاطمة عليها السلام ، ص ٦٢٦، نمبر ٣٧١١)

तर्जुमा: हज़रत फ़ातिमा अलैहिहस्सलाम ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 को ख़बर भैजी कि अल्लाह ने जो कुछ माल ग़नीमत दिया है इस में विरासत दें, हुजूर स0ह0व0 को मदीना में मिला था, फ़िदक में मिला था और जो ख़ैबर का ख़ुम्स मिला था इन सब में विरासत दें, तो हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने फ़रमाया कि हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया था कि नबी की विरासत तक़सीम नहीं होती, हम जो कुछ छोडते हैं वो उम्मत पर सदक़ा होता ह, हां इस माल में मौहम्मद स0अ0व0 के अहल व अ़याल भी खाऐं गे, खाने से ज़्यादा इन को नहीं मिलेगा और हुजूर स0अ0व0 के ज़माने में जैसा था मैं इन सदक़ात में कोई तब्दील नहीं कर सकता और जैसा हुजूर स0अ0व0 ने अ़मल किया था, मैं ऐसा ही अ़मल करूंगा, इस पर हज़रत अ़ली रज़ि0 ने गवाही दी (कि हां यही बात है जो आप कह रहे हैं) फिर हज़रत अ़ली रज़ि0 ने यह भी फ़रमाया कि ऐ अबूबकर रज़ि0 में आप की फ़ज़ीलत जानता हूं, फिर हुजूर स0अ0व0 से क्या रिशतेदारी है और इन का क्या हक़ है इस का

ज़िक्र किया, फिर अबूबकर रज़ि0 ने बात की और कहा जिस ख़ुदा के क़ब्ज़े में मेरी जान है इस की क़सम खा कर कहता हूं कि रसूलुल्लाह स0अ0व0 की क़राबत मुझे ज़्यादा महबूब है इस बात से कि मैं अपने रिश्तेदारों के साथ सिला रहमी करूं।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 के माल में विरासत नहीं होती और हज़रत अ़ली रज़ि0 ने इस की तसदीक़ की, फिर यह भी देखें विरासत लेने में सिर्फ़ फ़ातिमा नहीं हैं, बल्कि बीवी होने की हैसियत से हज़रत आ़यशा वग़ैरह को भी आठवां हिस्सा मिलेगा, लेकिन हज़रत अबूबकर ने अपनी बेटी को भी हुज़ूर स0अ0व0 की विरासत तक़सीम करके नहीं दी।

लोग सिर्फ़ हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की बात करते हैं हज़रत आ़यशा रज़ि0 और हज़रत हफ़सा रज़ि0 की विरासत की बात नहीं करते।

11.عن ابی هريرة ان رسول الله ﷺ قال لا تقسم ورثتی دينار و لا درهما ، ما تركت بعد نفقة نسائی و مؤنة عاملی فهو صدقة . (بخاری شريف، كتاب الوصاية ، باب نفقة القيم للوقف ، ص ۴۵۹، نمبر ۲۷۷۶/ مسلم شريف ، كتاب الوصية ، باب ترک الوصية لمن ليس له شیء يوصی فيه ، ص ۷۱۷، نمبر ۱۷۳۴/ ۴۲۲۷)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया: मेरे वारिस दीनार और दिरहम तक़सीम नहीं करेंगे मरी बीवियों के नुफ़क़े और काम करने वालों की मज़दूरी के बाद जो कुछ छोड़ूंगा वो उम्मत पर सदक़ा है।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरी विरासत तक़सीम नहीं होगी, मैं जो कुछ छोड़ूंगा वो उम्मत के लिए सदक़ा है, इस लिए इस मामले को बढ़ा कर हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 पर ज़ुल्म कहना बहुत बड़ी ग़लती है।

12.عن قيس بن كثير ...ان الانبياء لم يورثوا دينار ا و لا درهما انما

ورثوا العلم . (ترمذی شریف ، کتاب العلم ، باب ما جاء فی فضل الفقه علی العبادة ، ص ۶۰۹ ، نمبر ۲۶۸۲ / ابن ماجة شریف ، مقدمة ، باب فضل العلماء و الحث علی طلب العلم ، ص ۳۴، نمبر ۲۲۳)

तर्जुमा: अमबिया दीनार और दिरहम के वारिस नहीं बनाते, वो सिर्फ इल्म के वारिस बनाते हें।

इस हदीस में मोजूद है के अमबिया कि विरासत नहीं होती, इस लिये हज़तर अबूबकर रजी० ने हज़रत फ़ातिमा रजी० को विरासत नहीं दी तो इस बात को बहुत बढ़ाने कि जरूरत नहीं है।

हज़रत अबूबकर रजी० ने अहद किया के अहले बैत को जी भर कर देंगें

हज़रत अबूबकर रजी० ने वादा किया के में विरासत तो नहीं दुंगा, कियों कि वो जाईज़ नहीं है। लेकिन अपने अहलो अयाल से ज़्यादा हुजूर स0अ0व0 के अहलो अयाल और अहले बैअत को दुंगा और उनकी पूरी ख़बर गीरी करूंगा। उस के लिये हज़रत अबूबकर रजी० का क़ोल ये है।

13. عن ابی بکرؓ قال ارقبوا محمدا ﷺ فی اهل بیته . (بخاری شریف ، باب مناقب قرابة رسول الله ﷺ و منقبة فاطمة علیها السلام ، ص ۶۲۶ ، نمبر ۳۷۱۳)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रजी० से ये रिवायत है के हुज़ूर स0अ0व0 के अहले बैत के बारे में पूरा खयाल रख्खा करो।

हज़रत अबूबकर रजी० के इस क़ोल में है के में खुद भी अहले बैत का पूरा खयाल रख्खा करूंगा, और लोगो! तुम भी अहले बैत का पूरा खयाल रख्खा करो।

हज़रत अली रजी० हज़रत अबूबकर रजी० के गले मिले

हज़रत अबूबकर रजी० और हज़रत अली रजी० के इखतिलाफ को लोग बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हें, और अभी भी मुसलमानों में दुशमनी पैदा करने की कोशिश करते हें, हालांके हक़ीक़त ये है के हज़रत अली रजी० ने हज़रत अबूबकर रजी० के हाथ पर बेअत भी की और गले भी मिले, जिस पर तमाम मुसलमान खुश हुवे। हदीस ये है।

14.عن عائشة ...استنكر عليٌّ وجوه الناس فالتمس مصالحة ابى بكر و مبايعته و لم يكن يبايع تلك الاشهر ...فقال عليٌّ لابى بكرٌ موعدك العشية للبيعة فلما صلى ابو بكرٌ الظهر رقى المنبر فتشهد و ذكر شان عليٌّ و تخلفه عن البيعة و عذره بالذى اعتذر اليه ثم استغفر، و تشهد عليٌّ فعظم حق ابى بكرٌ و حدث انه لم يحمله على الذى صنع نفاسة على ابى بكرٌ و لا انكارا للذى فضله الله به و لكنا نرى لنا فى هذ الامر نصيبافاستبد علينا فوجدنا فى انفسنا فسر بذالک المسلمون و قالوا اصبت ، و كان المسلمون الى عليٌّ قريبا حين راجع الامر المعروف (بخارى شريف ، كتاب المغازى ، باب غزوة خيبر ، ص ٧١٩، نمبر ٤٢٤٠) .

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 को ऐसा महसूस हुआ कि लोग मेरी तरफ़ तवज्जो कम दे रहे हैं, इस लिए हज़रत अबूबकर रज़ि0 से सुलह की और इन से बैअत करने की दरख़्वास्त की, उन्होंने इन छः महीनों में बैअ़त नहीं की थी......हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया बैअ़त के लिए शाम का वक़्त ठीक है, जब हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने ज़ौहर की नमाज़ पढ़ी तो मिम्बर पर बैठे और कलमा शहादत पढ़ा और हज़रत अ़ली रज़ि0 की शान बयान की और अब तक बैअ़त से पीछे रहे इस की वजह बयान की, और

हज़रत अ़ली रज़ि0 ने जो उ़ज़्र पैश की इस का भी ज़िक्र किया फिर असतग़फ़ार किया, और हज़रत अ़ली रज़ि0 ने कलिमा शहादत पढ़ा और हज़रत अबूबकर के हक़ की अ़ज़मत बयान की, और यह भी कहा कि मैंने जो किया है वो हज़रत अबूबकर रज़ि0 पर फ़ौक़ियत की वजह से नहीं की है, और अल्लाह ने हज़रत अबूबकर रजि0 को फ़ज़ीलत दी है मुझे इस का इन्कार भी नहीं है, लेकिन मेरा ख़्याल था कि इस मामला (विरासलत में, या ख़िलाफ़त में) मेरा भी कुछ हिस्सा है, लेकिन मुझे वो नहीं मिला जिस की वजह से मेरा दिल उचाट हुआ (और अब मैं ख़ुशी से बैअ़त के लिए आ गया हूं), इस से मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और सब ने कहा कि बहुत अच्छा किया और जब हज़रत अ़ली रज़ि0 ने अमर मारूफ़ की तरफ़ रूजूअ़ किया तो लोग हज़रत अ़ली रज़ि0 के बहुत क़रीब आ गये।

इस हदीस में हज़रत अ़ली रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 की अ़ज़मत की, और इन की फ़ज़ीलत बयान की और हज़रत अबूबकर रज़ि0 से बैअ़त भी की है जिस से इस वक़्त के तमाम मुसलमान बहुत ख़ुश हुए।

लेकिन अफ़सोस है कि हज़रत अ़ली रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर से बैअ़त करके जो इत्तफ़ाक़ पैदा किया था बाद के लोगों ने इस को हवा बनाया और मुसलमानों को दो टुकड़े कर दिये।

तमाम मसालिक वालों की किताबों में यह लिखा हुआ है कि इस बैअ़त के बाद हज़रत अ़ली रज़ि0 ने तीनों ख़ुलफ़ा के ज़माने तक कभी भी ख़िलाफ़त नहीं मांगी, और ना इस की तमन्ना की, बल्कि तमाम ख़ुलफ़ा का दिल से तआ़वुन करते रहे और मशवरे देते रहे ताकि उम्मत में इन्तशार ना हो।

हज़रत अ़ली के तरीक़े पर चलते हुए हम भी उम्मत को जोड़ने के लिए एक बने रहते तो कितना अच्छा होता, लेकिन अफ़सोस है कि हम कितने टुकड़ों में बट गये और क़ौम का शीराज़ा बिखर गया।

अमीर उल मौमिनीन हज़रत अ़ली रज़ि० की फ़ज़ीलत

हज़रत अमीर उल मौमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि0 उम्मत के चौथे ख़लीफ़ा हैं, यह अहल बैत में शामिल हैं और बहुत से फ़ज़ाइल के मालिक हैं, यह बहुत नेक दिल और बहादुर सहाबी थे, वो जबाल उल इल्म थे, उन्होंने सफ़र, हज़र में हुज़ूर स0अ0व0 का साथ दिया, इन के साथ ख़्वारिज ने अच्छा नहीं किया, और बहुत तंग किया, और आख़िर उन को एक ख़ारजी ने शहीद कर दिया, जिस की वजह से आज तक हमारा दिल रो रहा है। इन की फ़ज़ीलतें बहुत हैं, इन में से कुछ फ़ज़ाइल की हदीसें यह हैं:

15.قال النبی ﷺ لعلی ؓ انت منی و انا منک . (بخاری شریف ، کتاب فضائل اصحاب النبی ﷺ ، باب مناقب علی بن طالب ؓ ، ص ۶۲۴، نمبر ۳۷۰۱)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने हज़रत अ़ली रज़ि0 से फ़रमाया: तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूं।

16.سمعت ابراهيم بن سعد عن ابيه قال قال النبی ﷺ اما ترضی ان تکون منی بمنزلة هارون من موسی . . (بخاری شریف ، کتاب فضائل اصحاب النبی ﷺ ، باب مناقب علی بن طالب ؓ ، ص ۶۲۵ ، نمبر ۳۷۰۶)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया अ़ली क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि जिस तरह हारून हज़रत मूसा के लिए थे इसी तरह तुम मेरे लिए हो।

17.عن ابن عباس قال قال رسول الله ﷺ انامدينة العلم و علی بابها ، فمن اراد العلم فليأت الباب . (مستدرک للحاکم ، ، باب و اما قصة اعتزال محمد بن مسلمة، ج ۳ ، ص ۱۳۷ ، نمبر ۴۶۳۷/ طبرانی کبیر ، باب مجاهد عن ابن عباس ، ج ۱۱ ، ص ۶۵، نمبر ۱۱۰۶۱)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया: मैं इल्म का शहर हूं और अ़ली रज़ि0 इस का दरवाज़ा है, जिस को इल्म हासिल करना हो वो दरवाज़े के पास आये (यानी अ़ली रज़ि0 के पास आये)।

इस हदीस से मालूम हुआ कि हज़रत अ़ली रज़ि0 इल्म के आ़ला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे और वाक़ई ऐसे ही थे हज़रत की नहज उल बलाग़ा इस की वाज़ह मिसाल है।

हज़रत अ़ली रज़ि० को हद से ज़्यादा बढ़ाना भी हलाकत है और इन से नफ़रत करना भी हलाकत है

हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया कि मेरे बारे में दो क़िस्म के आदमी हलाक होंगे एक जो मेरी मौहब्बत में हद से ज़्यादा बढ़ेंगे कि नबी से भी ज़्यादा बढ़ाऐंगे और दूसरे वो जो मेरे बुग़ज़ और दुशमनी में हद से ज़्यादा बढ़ेंगे, जैसे ख़्वारिज ने किया। हज़रत अ़ली रज़ि0 का इरशाद यह है:

18.عن ابی حبوة قال سمعت علیاؓ یقول : یھلک فی رجلان : مفرط فی حبی ، و مفرط فی بغضی . (مصنف ابن ابی شیبة ، ج ٦ ،کتاب فضائل ، باب فضائل علی بن ابی طالب ؓ، ص٣٧٧، نمبر ٣٢١٢٥ / ٣٢١٣٤)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 से यह फ़रमाते हुए सुना है कि मेरे बारे में दो क़िस्म के आदमी हलाक होंगे एक वो जो मेरी मौहब्बत में हद से ज़्यादा बढ़ा हो, और दूसरा जो मेरी दुशमनी में हद से ज़्यादा बढ़ा हो।

19.عن ابی سوار العدوی قال قال علیؓ لیحبنی قوم حتی یدخل النار فی حبی ، و لیبغضنی قوم حتی یدخلوا النار فی بغضی . (مصنف ابن ابی شیبة ، ج ٦ ،کتاب فضائل ، باب فضائل علی بن ابی طالب ؓ، ص٣٧٧، نمبر ٣٢١٢٤ / ٣٢١٣٣)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया कि मुझ से कुछ लोग

(हद से ज़्यादा) मौहब्बत करेंगे जिस की वजह से वो जहन्नुम में दाख़िल होंगे और कुछ लोग मुझ से हद से ज़्यादा बुग़ज़ रखेंगे जिसकी वजह से वो जहन्नुम में दाख़िल होंगे।

यह बिल्कुल वाक़िआ है कि कुछ लोग हज़रत अ़ली रज़ि0 की मौहब्बत में हद से गुज़र गये हैं और कुछ हज़रत अ़ली रज़ि0 की नफ़रत में हद सह ज़्यादा गुज़र गये हैं।

अहल सुन्नत वल जमाअ़त बिल्कुल हक़ पर हैं कि वो हज़रत अ़ली रज़ि0 से दिल से मौहब्बत करते हैं, लेकिन इस में गुलू नहीं करते कि नबियों से भी आगे बढ़ा दिया जाये और इन से नफ़रत तो करते ही नहीं बल्कि बेपनाह मौहब्बत करते हैं और अपने सर का ताज समझते हैं।

हज़रत अ़ली रज़ि० तमाम मौमिनीन के वली हैं, यानी दोस्त हैं

बाज़ हज़रात ने इस हदीस से यह साबित करने की कोशिश की है कि हज़रत अ़ली रज़ि0 मददगार हैं और मुश्किल कुशा और हाजत रवा हैं, लेकिन हदीस का टुकड़ा اللهم عاد من عاداه

तर्जुमाः कि जो हज़रत अ़ली रज़ि0 से दुशमनी रखे ऐ अल्लाह तू इस का दुशमन बन जा को देखने से पता चलता है कि यहां मौला का तर्जुमा दोस्त के हैं मददगार और मुश्किल कुशा के नहीं है।

इस बारे में इसी किताब में अल्लाह के अ़लावा से मदद मांगना वाला उ़नवान देखें। कुछ हज़रात ने इस हदीस से यह भी साबित करने की कौशिश की है कि हज़रत अ़ली रज़ि0 को हुज़ूर स0अ0व0 ने ख़लीफ़ा अव्वल बनाया है, क्योंकि हज़रत अ़ली रज़ि0 को हर मौमिन का वली बनाया है, लेकिन सही बात यह है कि वली का मअ़नी दोस्त के हैं कि हज़रत अ़ली रज़ि0 हर मौमिन के

दोस्त हैं, अलमन्जिद में वली का मअ़नी क़रीब और महबूब लिखा है।

दोस्त वाली हदीस यह है:

20.عن البراء بن عاذب قال اقبلنا مع رسول الله ﷺ فی حجته التی حج فنزل فی بعض الطریق فأمر الصلوۃ جامعۃ فأخذ بید علی فقال ألست اولی بالمومنین من انفسهم ؟ قالوا بلی ،قال الست اولی بکل مومن من نفسه ؟ قالوا بلی قال فهذا ولی من انا مولاہ ، اللهم وال من والاہ اللهم عاد من عاداہ . (ابن ماجة شریف ، فضل علی بن طالبؓ ، ص ١٩ ، نمبر ١١٦)

तर्जुमाः हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब फ़रमाते हैं कि एक हज के मौक़े पर हम हुजूर स0अ0व0 के साथ वापिस आ रहे थे, रास्ते में हम नीचे उतरे, हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि नमाज़ की जमाअ़त के लिए तैयार हो जाओ, फिर हज़र अ़ली रज़ि0 का हाथ पकड़ा और फ़रमाया कि क्या मैं मौमिनीन को इस की ज़ात से ज़्यादा महबूब नहीं हूं? लोगों ने कहा हां! फिर फ़रमाया कि हर मौमिन की ज़ात से ज़्यादा महबूब नहीं हूं? लोगों ने फिर कहा हां! तो आप ने फ़रमाया कि जिस का मैं महबूब हूं, इस का यह महबूब है, ऐ अल्लाह जो हज़रत अ़ली रज़ि0 से मौहब्बत करे तू इस का महबूब बन जा और जो इन से दुशमनी करे तू उस का दुशमन बन जा।

इस हदीस में फ़रमाया कि जिस का मैं वली हज़रत अ़ली रज़ि0 इस के वली, फिर फ़रमाया कि हज़रत अ़ली रज़ि0 से जो दोस्ती रखे ऐ अल्लाह तू उस का दोस्त बन जा, और जो उस से दुशमनी रखे, ऐ अल्लाह तू उस का दुशमन बन जा।

नोटः वली के मअ़नी मददगार का भी आता है, लेकिन यहां वली का मअ़नी दोस्त है, वली का मअ़नी ख़लीफ़ा अव्वल के या मददगार के नहीं हे, आप दुआ़ के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करें।

इस आयत में मौला, दोस्त के मअ़नी में इस्तेमाल हुआ है।

3.يوم لا يغنى مولى عن مولى شيئا و لا هم ينصرون . (آیت۴۱،سورت الدخان۴۴)

तर्जुमाः जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त को कोई काम नहीं आयेगा और ना इस की मदद होगी।

इस आयत को सामने रखते हुए वली का मअ़नी दोस्त करना बिल्कुल सही है।

अमीर उल मौमिनीन हज़रत हसन रज़ि० और हज़रत हुसैन रज़ि० की फ़ज़ीलतें

हज़रत हसन और हुसैन अहल बैत में से हैं, जन्नत के सरदार हैं और अमीर उल मौमिनीन भी हैं, लेकिन शामियों ने इन को शहीद कर दिया और आज तक यह झगड़ा मुसलमानों के दरमियान झगड़े का बाइस बना हुआ है, काश कि दोनों सुलह करके आपस में इत्तफ़ाक़ कर लेते और अ़रब के मुल्कों को इख़तलाफ़ से बचा लेते, फ़या आसफ़ा। यह याद रहे कि अहले सुन्नत वल जमाअ़त मदीना के हिमायती हैं, वो ना हज़रत हुसैन रज़ि0 को शहीद करने में शरीक हैं, और ना वो करबला में मौजूद थे, और ना हज़रत अ़ली रज़ि0 को शहीद करने में शरीक हैं, और ना इस से ख़ुश हैं बल्कि आज तक इस ज़ुल्म पर अफ़सोस कर रहे हैं, इस लिए अहल सुन्नत को मुलज़िम ठहराना ठीक नहीं है।

इन के फ़ज़ाइल के बहुत अहादीस हैं इन में से कुछ यह हैं:

21.عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ من أحب الحسن و الحسين فقد احبنى و من ابغضهما فقد ابغضنى .(ابن ماجة شريف ، باب فضل الحسن و الحسين ابنى على بن ابى طالب ؓ ، ص ۲۲، نمبر ۱۴۳)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जो लोग हसन और हुसैन रज़ि0 से मौहब्बत करते हैं तो गोया कि वो मुझ से मौहब्बत करते हैं और जो इन से दुशमनी करते हैं तो गोया कि मुझ से दुशमनी करते हैं।

22.عـن اسـامة بن زيد عن النبی ﷺ انه کان یاخذه و الحسن و یقول اللهم انی احبهما فاحبهما . (بخاری شریف ، باب مناقب الحسن و الحسین رض ، ص ۱ ۲۳ ، نمبر ۳۷۴۷ / مسلم شریف ، باب من فضائل الحسن و الحسین رض ، ص ۱۰۷ ، نمبر ۲۴۲۱ / ۶۲۵۶)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 हज़रत हुसैन और हज़रत हसन को गोद में लेते और फ़रमाते ऐ अल्लाह मैं इन दोनों से मौहब्बत करता हूं आप भी इन से मौहब्बत कीजिए।

23.عـن ابی موسی .....رأیت رسول الله ﷺ علی المنبر و الحسن بن عـلـی رض الـی جـنـبـه و هو یقبل علی الناس مرة و علیه اخری و یقول ان ابنی هذا سیـد و لـعـل الـلـه ان یـصـلـح به بین فئتین عظیمتین من المسلمین . (بخاری شـریف ، کتـاب الـصلح ، باب قول النبی ﷺ للحسن بن علی رض ، ص ۴۴۲ ، نمبر ۲۷۰۴)

तर्जुमाः हज़र अबू मूसा फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर स0अ0व0 को मिम्बर पर देखा कि हज़रत हसन रज़ि0 आप के पहलू में थे, आप कभी लोगों की तरफ़ तवज्जो फ़रमाते हैं और कभी हसन की तरफ़ देखते हैं और यूं कहते मेरा यह बेटा सरदार है और हो सकता है कि मुसलमानों की दो बड़ी जमाअ़तों के दरमियान सुलह करायेगा।

और ऐसे ही हुआ कि आप ने दो बड़ी जमाअ़तों के दरमियान सुलह कराई।

24.عـن ابـن عـمـر قـال رسـول الله ﷺ الحسن و الحسین سیدا شبـاب اهـل الجنة و ابو هما خیر من هما . (ابن ماجة شریف ، باب فضل علی بن طالب ، ص ۱۹ . نمبر ۱۱۸)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया हज़रत हसन और हज़रत हुसैन जन्नत के जवानों के सरदार हैं और इन के वालिद हज़रत

अ़ली इन दोनों से बेहतर हैं।

25.عن زيد بن الارقم قال قال رسول الله ﷺ لعلى و فاطمة و الحسن و الحسين ، انا سلم من سالمتم و حرب لمن حاربتم . (ابن ماجة شريف ، باب فضل الحسن والحسين ابنى على بن ابى طالب ، ص ٢٢ ، نمبر ١٤٥)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने अ़ली, फ़ातिमा, हसन, और हुसैन रज़ि0 से फ़रमाया जिन से आप लोग सुलह करेंगे मैं भी इन से सुलह करूंगा और जिन से तुम्हारी जंग है मेरी भी जंग है।

यह ख़्याल रहे कि अहल सुन्नत वल जमाअ़त ने हज़रत अ़ली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ि0 से कभी दुशमनी नहीं रखी है, बल्कि हमैशा इन से मौहब्बत रखी है और इन का अहतराम किया है इस लिए इन पर दुशमनी का इल्ज़ाम रखना ग़लत है, अल्बत्ता शरीअ़त के हुदूद से ज़्यादा नहीं बढ़े।

उम्मुल मौमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ि० की फ़ज़ीलत

अगर हज़रत ख़दीजा रज़ि0 हयात होतीं तो यह भी अहल बैत में शामिल होतीं और आयत ततहीर के मिस्दाक़ होतीं क्योंकि यह भी हुज़ूर स0अ0व0 के घर वाली हैं यह और बात है कि इन की वफ़ात के बाद اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرُ كُمْ تَطْهِيْراً. (آيت ٣٣، سورت الاحزاب٣٣) आयत नाज़िल हुई आयत ततहीर नाज़िल होते वक़्त यह ज़िन्दा होतीं तो यह भी आयत ततहीर में दाख़िल होतीं यह भी तमाम मौमिनीन की मां हैं।

इन की फ़ज़ीलत के लिए हदीस यह है:

26.سمعت على بن طالب يقول سمعت رسول الله ﷺ يقول خير نسائها خديجة بنت خويلد ، و خير نسائها مريم بنت عمران . (ترمذى شريف ، كتاب المناقب ، باب فضل خديجة ؓ ، ص ٨٧٥ ، نمبر ٣٨٧٧)

तर्जुमा: मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से यह कहते हुए सुना है कि

तमाम औ़रतों में बेहतर ख़दीजा बिन ख़वेलद हैं, और बनी इसराईल की तमाम औ़रतों से अफ़ज़ल मरयम बिन्ते इमरान हैं।

वाक़ई हज़रत ख़दीजा रज़ि0 बहुत अफ़ज़ल हैं, उन्होंने बेबसी के आ़लम में हुजूर स0अ0व0 का बहुत साथ दिया और बहुत तसल्ली दी, अल्लाह इन को इस का बेहतरीन बदला दे आमीन या रब्बुल आ़लमीन।

उम्मुल मौमिनीन हज़रत आ़यशा की फ़ज़ीलत

हज़रत आ़यशा रज़ि0 अहल बैत में से हैं और इन का भी इतना ही अहतराम है जितना दूसरे अहल बैत का है फिर बड़ी बात यह है कि यह हुज़ूर स0अ0व0 की चहेती बीवी हैं और पूरी उम्मत की मां हैं इस लिए इन की अदना तौहीन भी जायज़ नहीं है।

क्या कोई भी आदमी अपनी बीवी की तौहीन बर्दाश्त करेगा यह क्या ज़ुल्म है कि बेटी और दामाद की मौहब्बत में इन की बीवी को बुरा भला कह रहे हैं, ज़रा सौचिये कि यह क्या कर रहे हैं, हुज़ूर स0अ0व0 ज़िन्दा होते तो क्या यह बर्दाश्त करते?

अगर हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने हज़रत अ़ली रज़ि0 के बारे में कोई ग़लती की है तो इस को इज्तहादी ग़लती समझें और उम्मत को जोड़ने के लिए इस को माफ़ कर दें और ग़ैरों के मुक़ाबले में मिल कर बैठें।

आप देखते नहीं कि ग़ैर मुस्लिम आप पर कितना यलग़ार कर रहे हैं और आप के मुल्कों को बरबाद कर रहे हैं।

हज़रत आ़यशा रज़ि0 के बारे में यह आयत है:

4.اِنَّ الَّذِیْنَ جَاؤُ بِالْاُفُکِ عُصْبَةٌ مِنْکُمْ[آیت ۱۱ / سورت النور ۲۴]..

.اِنَّ الَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ الْمُحْصِنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُوْمِنَاتِ لُعِنُوْا فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌ... . وَ الطَّیِّبَاتُ لِلطَّیِّبِیْنَ وَ الطَّیِّبُوْنَ لِلطَّیِّبَاتِ اُوْلٰئِکَ مُبَرَّئُوْنَ مِمَّا یَقُوْلُوْنَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ کَرِیْمٌ . (آیت ۱۱۔۲۶،سورت النور ۲۴)

तर्जुमा: यक़ीन जानो कि जो लोग यह झूटी तोहमत घड़ कर लाये हैं वो तुम्हारे अन्दर ही का एक टोला है......याद रखो कि जो लोग पाक दामन भोली भाली मुसलमान अ़ौरतों पर तोहमत लगाते हैं, इन पर दुनिया और आख़िरत में फटकार पड़ चुकी है और इन को इस दिन ज़बरदस्त अ़ज़ाब होगा......गन्दी अ़ौरतें गन्दे मर्दों के लायक़ हैं और गन्दे मर्द औन गन्दी अ़ौरतों के लाइक़ हें पाकबाज़ अ़ौरतें पाकबाज़ मर्दों के लायक़ हैं, और पाकबाज़ मर्द पाकबाज़ अ़ौरतों के लायक़ हैं, यह पाकबाज़ मर्द और अ़ौरतें इन बातों से बिल्कुल मुबरा हैं, जो यह लोग बना रहे हैं, इन पाकबाज़ों के हिस्से में तो मग़फ़िरत है और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है।

ग़ज़वा बनू अल मुसतलक़ में हज़रत अ़ायशा रज़ि0 क़ाफ़िले से पीछे रह गई थीं और बाद में हज़रत सफ़वान बिन मोअ़तल रज़ि0 के साथ क़ाफ़िले में आईं, जिस की वजह से अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल ने हज़रत अ़ायशा रज़ि0 पर ज़िना की तोहमत लगाई, एक महीने के बाद ऊपर की आयतें नाज़िल हुईं, जिस में हज़रत अ़ायशा रजि0 की पाकदामनी बयान की गई है, इस लिए इस पर ज़िना की तौहमत लगाना सरासर जुल्म है, क्या कोई अपनी मां पर ज़िना की तोहमत लगाता है या इन को बुरा भला कहता है यह कैसी बेहयाई है।

27.عن عائشةؓ ان رسول الله كان يسأل فى مرضه الذى مات فيه يقول اين انا غدا ؟ اين انا غدا ؟ . يريد يوم عائشة . فأذن له ازواجه يكون حيث شاء فكان فى بيت عائشة حتى مات عندها ،قالت عائشة فمات فى يوم الذى كان يدور على فيه فى بيتى فقبضه الله و ان رأسه لبين نحرى و سحرى و خالط ريقه ريقى . (بخارى شريف ، كتاب المغازى ، باب مرض النبى و وفاته ، ص ٧٥٦ ، نمبر ٤٤٥٠)

तर्जुमा: जिस मर्ज़ में हुज़ूर स0अ0व0 की वफ़ात हुई इस में

पूछा करते थे कि कल किस के यहां बारी है? कल किस के यहां बारी है? हुजूर स0अ0व0 यह चाहते थे कि हज़रत आ़यशा रज़ि0 की बारी आ जाये, इस लिए बाक़ी बीवियों ने इस की इजाज़त दे दी कि हुजूर जिस के यहां चाहें रात गुज़ारें, इस लिए वफ़ात तक हज़रत आ़यशा रज़ि0 के घर में रहे, हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि जिस दिन मेरी बारी थी उसी दिन आप की वफ़ात हुई, हुजूर स0अ0व0 मेरे सीने से टेक लगाऐ हुए थे, इस वक़्त अल्लाह ने अपने पास बुलाया, और इस आख़िरी वक़्त में इन का थूक मेरे थूक के साथ मिला।

हज़रत आ़यशा रज़ि0 हुजूर स0अ0व0 की कितनी चहेती बीवी थी कि इन की बारी का इन्तज़ार करते रहे और उन्हीं की गोद में आख़िरी वक़्त गुज़ारा और उन्हीं की गोद में वफ़ात पाई, फिर भी इन को बुरा कहना बहुत बुरी बात है।

28.انہ سمع انس بن مالک یقول سمعت رسول اللہ ﷺ یقول فضل عائشة علی النساء کفضل لثرید علی سائر الطعام . (بخاری شریف ، کتاب فضائل اصحاب النبی ﷺ ، باب فضل عائشة ؓ ، ص ۲۳۳، نمبر ۳۷۷۰)

तर्जुमा: मैंने हुजूर स0अ0व0 को कहते सुना है कि औ़रतों पर हज़रत आ़यशा रज़ि0 की फ़ज़ीलत ऐसी ही है जैसे तमाम खाने पर सरीद की फ़ज़ीलत है।

इन अहादीस में हज़रत आ़यशा रज़ि0 की बड़ी फ़ज़ीलत बयान की गई है।

अमीर उल मौमिनीन हज़रत अबूबकर के फ़ज़ाइल

हज़रत अबूबकर रज़ि0 हुजूर स0अ0व0 के साथ रहे और हर हाल में साथ दिया और वो ख़िदमात दी जो किसी आर के हिस्से में नहीं आई। इन के तदब्बुर, हिक्मत अ़मली, रूअ़ब और दबदबा

और जवान मर्दी से उम्मत दो टुकड़े होने से बच गई, वरना जो हाल हज़रत अली रज़ि0 के आख़िरी ज़माने में हुआ वही हाल हुज़ूर स0अ0व0 की वफ़ात के बाद हो जाती। इस के लिए इन्सानों की फ़ितरत पर ग़ोर करें और इस ज़माने के हालात का मुताअला करके फ़ैसला करें।

इन के फ़ज़ाइल की आयतें यह हैं:

5.اِذْ اَخْـرَجَـهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِىَ الاثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ، اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (آیت۴۰،سورت التوبۃ۹)

तर्जुमा: अल्लाह उस की मदद उस वक़्त कर चुका है जब उन को काफ़िरों ने ऐसे वक़्त मक्का से निकाला था जब वो दो आदमियों में से दूसरे थे, जबे वो दोनों ग़ार में थे, जब वो अपने साथी से कह रहे थे कि ग़म ना करो अल्लाह हमारे साथ है।

यह आयत भी हज़रत अबूबकर रज़ि0 की शान में नाज़िल हुई क्योंकि हुज़ूर स0अ0व0 के साथ सिर्फ़ वही ग़ार सौर में थे।

इस के लिए हदीस यह है:

29. عن البـراء قـال اشترى ابو بكر من عازب رحلا .....هذ الطلب قد لحقنـا يـا رسـول الـلـه فقال لا تحزن ان الله معنا . (بخارى شريف ، كتاب فضـائل اصـحاب النبى ﷺ ، باب مناقب المهاجرين و فضلهم ، ص ٦١٣ ، نمبر ٣٦٥٢/ ٣٦٥٣)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने हज़रत आज़िब रज़ि0 से एक ऊंट ख़रीदा......यह हमें तलाश करने वाले हैं जो हमारे क़रीब आगे हैं या रसूलुल्लाह स0अ0व0 तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया अबूबकर ग़म ना करो अल्लाह हमारे साथ है।

हज़रत अबूबकर रज़ि0 कितने मुदब्बीर और हुज़ूर स0अ0व0 के क़ाबिल ऐतमाद थे कि हिजरत जैसे ख़तरनाक सफ़र के लिए हज़रत अबूबकर रज़ि0 को चुना और उन्होंने बड़ी हिक्मत अ़मली

से इस को अंजाम दिया, और मदीना तक हुज़ूर स0अ0व0 को पहुंचाया।

6.وَ لَا يَاْتَلِ اُولُوْا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ السَّعَةِ اَنْ يُّوْتُوْا اُولِى الْقُرْبٰى وَ الْمَسَاكِيْنَ وَ الْمُهَاجِرِيْنَ فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لْيَعْفُوْا وَ لْيَصْفَحُوْا اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ . (آیت۲۲،سورت النور۲۴)

तर्जुमा: और तुम में से जो लोग अहल खैर हैं और माली वुसअ़त रखते हैं वो ऐसी क़सम ना खाऐं कि वो रिश्ता दारों मिसकीनों और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वालों को कुछ नहीं देंगे और उन्हें चाहिए कि माफ़ी और दरगुज़र से काम लें क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं है कि अल्लाह तुम्हारी ख़ताऐं बख़्श दे और अल्लाह बहुत बख़शने वाला बड़ा मेहरबान है।

हज़रत मुसतह बिन असासा रज़ि0 हज़रत अबूबकर के रिश्तेदार थे हज़रत अबूबकर हज़रत मुसतह की माली मदद करते थे, यह भी हज़रत आ़यशा रज़ि0 की तौहमत में भूल से शरीक हो गये इसलिए हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने क़सम खाई कि इस की मदद नहीं करूंगा इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं, इस के बाद हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने मुसतह की मदद बहाल कर दी थी।

हज़रत अबूबकर रज़ि0 की कितनी बड़ी शान है कि इन की शान में यह आयतें नाज़िल हुईं।

30.عن ابن عباس ؓ عن النبی ﷺ قال لو كنت متخذا خليلا لاتخذت ابا بكر و لكن اخى و صاحبى . (بخاری شریف ، باب قول النبی ﷺ لو كنت متخذا خليلا ، ص ٦١٤، نمبر ٣٦٥٦)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 से रिवायत है कि अगर मैं ख़लील बनाता तो अबूबकर को ख़लील बनाता, लेकिन यह मेरे भाई हैं, मेरे साथ रहने वाले हैं (और ख़लील सिर्फ़ अल्लाह है)।

31.عن حذيفة قال قال رسول الله ﷺ اقتدوا بالذين من بعدى ابى

بـكـر و عمر . (ترمذی شریف ، کتاب المناقب ، باب اقتدوا بالذین من بعدی ابی بکر و عمر ، ص ۸۳۴، نمبر ۳۶۶۲)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया मेरे बाद अबूबकर और उ़मर की इक़्तदा करो।

32.عـن مـحـمـد بـن الـحـنفية قال قلت لابی [علیؓ]ای الناس خير بعد رسـول الـلـه ﷺ قال ابو بكر ، قلت ثم من ؟ قال ثم عمر و خشیت ان يقول: عثـمـان ، قـلـت ثم انت ؟ قال ما انا الا رجل من المسلمين . (بخاری شریف ، فـضـائـل اصـحـاب الـنبی ﷺ ، بـاب ، ص ۶۱۲ ، نمبر ۳۶۷۱/ ابو داود شریف، باب التفضيل ، ص ۶۵۴ ، نمبر ۴۶۲۹)

तर्जुमा: मौहम्मद बिन हनफ़िया ने कहा कि मैंने अपने वालिद अ़ली रज़ि0 से पूछा कि हुजूर स0अ0व0 के बाद सब से बेहतर आदमी कौन हैं तो हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया अबूबकर, मैंने पूछा इस के बाद कौन हैं? तो कहा उ़मर है, मुझे डर हुआ कि इस के बाद हज़रत उ़समान का नाम ना ले लें, इस लिए मैंने पूछा कि आप किस नम्बर पर हैं? तो हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं तो आ़म मुसलमान का एक आदमी हूं।

इस क़ौल सहाबी में ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 की फ़ज़ीलत का इक़रार किया है, तो दूसरे हज़रात इन की फ़ज़ीलत का इन्कार क्यों करते हैं।

33.عـن ابـن عـمـر قـال كـنـا نخير بين الناس في زمان رسول الله ﷺ فـنخير ابا بكر ، ثم عمر ، ثم عثمان رضى الله عنهم . (بخاری شریف ، فضل ابی بکر بعد النبی ﷺ ، ص ۶۱۴، نمبر ۳۶۵۵)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह स0अ0व0 की हयात में लोगों में सब से बेहतर अबूबकर

रज़ि0 को क़रार देते थे, फिर हज़रत उ़मर रज़ि0 को फिर हज़रत उ़समान रज़ि0 को।

34.عن ابن عمر قال كنا فی زمن النبی ﷺ لا نعدل بابی بكر احدا ، ثم عمر ، ثم عثمان ثم نترک اصحاب النبی ﷺ لا نفاضل بینهم . (بخاری شریف ، باب مناقب عثمان بن عفان ابی عمر القرشی ؓ ، ص ۶۲۲ ، نمبر ۳۶۹۸/ ابو داود شریف ، باب التفضیل ، ص ۶۵۴، نمبر ۴۶۲۸)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि0 फ़रमाते हैं हुज़ूर स0अ0व0 के ज़माने में हज़रत अबूबकर रज़ि0 की तरह किसी और क़रार नहीं देते थे फिर हज़रत उ़मर रज़ि0 को, फिर हज़रत उ़समान रज़ि0 को फिर हुज़ूर स0अ0व0 के सहाबियों में से किसी को किसी पर फ़ौक़ियत नहीं देते थे।

इन अहादीस से पता चलता है कि पहले हज़रत अबूबकर रज़ि0, फिर हज़रत उ़मर रज़ि0, फिर उ़समान रज़ि0, फिर हज़रत अ़ली रज़ि0 अफ़ज़ल समझे जाते थे और उम्मत ने इसी तरतीब से इन हज़रात को ख़लीफ़ा बनाया इस बारे में कोई ग़लती नहीं की और ना किसी का हक़ दबाया।

हज़रत अबूबकर रज़ि0 इन सहाबा में से अफ़ज़ल थे

35.فحمد الله ابو بكر و اثنی علیه ......فقال عمر بل نبیعک انت سیدنا و خیرنا و احبنا الی رسول الله ﷺ، فاخذ عمر بیده فبایعه و بایعه الناس . (بخاری شریف ، کتاب فضائل الصحابة باب، ص ۶۱۲، نمبر ۳۶۶۸)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने हम्द व सना की......हज़रत उ़मर रज़ि0 ने कहा कि हम आप से बैअत करते हैं, आप हमारे सरदार हैं, हम में सब से अच्छे हैं और रसूलुल्लाह स0अ0व0 के सब से ज़्यादा महबूब हैं, हज़रत उ़मर रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर

सिद्दीक़ रज़ि0 का हाथ पकड़ा और इन से बैअ़त की और लोगों ने भी इन से बैअ़त की।

इस क़ौल सहाबी में हज़रत उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 हम में से सब से बेहतर भी थे और हुज़ूर स0अ0व0 के सब से ज़्यादा क़रीब भी थे, इसी लिए सब ने मिल कर इन को ख़लीफ़ा बनाया था।

हज़रत अबूबकर रज़ि० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई

अक्सर रिवायत में यही है कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि0 ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाई है, लेकिन इस ज़ईफ़ रिवायत में है कि हज़रत अ़ली रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 से हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की नमाज़े जनाज़ा पढ़वाई।

हज़रत अबूबकर रज़ि0 के लिए यह क्या कम फ़ज़ीलत है कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 से हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 का जनाज़ा पढ़वाया इस के लिए इबारत यह है:

36. عن الشعبی ان فاطمةؓ لما ماتت دفنها علیؓ لیلا و اخذ بضبعی ابی بکر الصدیق فقدمه یعنی فی الصلاة علیها . (بیهقی ،کتاب الجنائز ، باب من قال الوالی احق بالصلاة علی المیت من الوالی ، ج ۴، ص ۴۶، نمبر ۶۸۹۲)

तर्जुमा: हज़रत शोअ़बी फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 का इन्तक़ाल हुआ तो हज़रत अ़ली रज़ि0 ने इन को रात के वक़्त दफ़न की और हज़रत अबूबकर के बाहों को पकड़ कर आगे पड़ाया, यानी हज़रत फ़ातिमा पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाऐं।

हज़रत अबूबकर रज़ि० और हज़रत उ़मर रज़ि० हुज़ूर स०अ०व० के खुसर हैं

यह बहुत बडी फ़ज़ीलत है कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 और हज़रत उ़मर रज़ि0 हुजूर स0अ0व0 के ख़ुसर हैं इन दोनों ने अपनी अपनी बेटियां हुजूर स0अ0व0 को दी हैं, इस लिए इन को बुरा भला नहीं कहना चाहिए, यह कौन बर्दाश्त करेगा कि कोई उन के ख़ुसर को बुरा भला कहे।

इन दोनों हज़रात की हिक्मत अ़मली से मुसलमानों में इन्तशार नहीं हुआ और अगर इन दोनों का रूअ़ब, दबदबा और हिक्मत अ़मली ना होती तो जो इन्तशार और इख़तलाफ़ हज़र अ़ली रज़ि0 के आख़िरी ज़माने में हुआ वही इन्तशार और इख़तलाफ़ हज़रत अबूबकर के ज़माने में हो जाता......इस वक़्त हालात पर ग़ौर करके फ़ैसला करें।

अमीर उल मौमिनीन हज़रत उ़मर रज़ि० के फ़ज़ाइल

37.عن ابی ھریرۃ قال قال النبی ﷺ لقد کان فیما قبلکم من الامم محدثون فان یکن فی امتی احد فانه عمر .

عن ابی ھریرۃ قال قال النبی ﷺ لقد کان فیما فیمن کان قبلکم من بنی اسرائیل رجال یُکلمون من غیر ان یکونوا انبیاء فان یکن فی امتی منھم أحد فعمر .(بخاری شریف ، کتاب فضائل اصحاب النبی ﷺ ، باب مناقب عمر بن الخطاب ، ص ۶۲۰ ، نمبر ۳۶۸۹)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया तुम से पहले बनी इसराईल में कुछ लोग होते थे जो नबी तो नहीं होते लेकिन फ़रिश्ता इन से बात करते थे, अगर उम्मत में कोई मौहद्दिस होता तो वो उ़मर होते।

अबूहुरैरा रज़ि0 ने फ़रमाया कि हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया

तुम स पहले बनी इसराईल में कुछ लोग होते थे जो नबी तो नहीं होते लेकिन फ़रिश्ते उन से बात करते थे अगर उम्मत में यह होते तो हज़रत उ़मर रज़ि0 होते।

इस हदीस में है कि हज़रत उ़मर रज़ि0 में इतनी सलाहियत है कि वो मौहद्दिस बनते, लेकिन इस उम्मत में मौहद्दिस का दरजा नहीं है इस लिए वो मौहद्दिस नहीं बन सकते। बाक़ी फ़ज़ीलतें हज़रत अबूबकर रज़ि0 के उ़नवान में गुज़र चुकी है।

हज़रत उ़मर रज़ि० हज़रत अ़ली रज़ि० के दामाद हैं

एक बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि हज़रत उ़मर रज़ि0 ने हज़रत अ़ली रज़ि0 और हज़रत फ़ातिमा की बेटी उम्मे कुलसुम से 17 हि0 में निकाह किया और हज़रत अ़ली रज़ि0 के दामाद बने, इस लिए इन को बुरा भला कहने की गुंजाइश नहीं है, क्योंकि हज़रत अ़ली रज़ि0 ने इन को अपना दामाद बनाया है। इस के लिए अहादीस यह हैं:

38. ان عمر بن الخطاب قسم مروطا بين نساء من نساء المدينة فبقى مرط جيد فقال له بعض من عنده يا امير المومنين اعط هذا ابنة رسول الله التى عندک يريد ام كلثوم بنت على فقال عمر ام سليط احق . (بخارى شرف ، كتاب الجهاد و السير ، باب حمل النساء القرب الى الناس فى الغزو ، ص ٤٧٦، نمبر ٢٨٨١)

तर्जुमा: हज़रत उ़मर रज़ि0 ने मदीना की औ़रतों में चादर तक़सीम की, एक अच्छी चादर बाक़ी रह गई, तो जो इन के पास थी उनमें से किसी ने कहा, अमीर उल मौमिनीन यह चादर रसूल की बेटी को दीजिए जो आप के पास है, यानी उम्मे कुलसुम बिन्ते अ़ली रज़ि0 को दीजिए तो हज़रत उ़मर ने फ़रमाया कि उम्मे सलीत इस का ज़्यादा हक़दार है।

इस हदीस में है के उम्मे कुलसूम हज़रत अली रजी० की बीवी थी।

39.سمعت نافعا ... و وضعت جنازة ام كلثوم بنت على امرأة عمر بن الخطاب و ابن لها يقال له زيد وضعا جميعا و الامام يومئذ سعيد بن بن العاص . (نسائی شریف ، کتاب الجنائز ، باب اجتماع جنائز الرجال و النساء ، ص ۲۷۸، نمبر ۱۹۸۰)

तर्जुमा: नाफे से सुना है के ... उम्मे कुलसूम बिन्त अली रजी० जो हज़रत उमर रजी० की बीवी थीं उनका जनाज़ा और उनके बेटे ज़ैद का जनाज़ा एक साथ रख्खा गया और उन दोनों की इमामत सईद बिन आस रजी० ने की।

इस क़ौल सहाबी में है कि उम्मे कुलसुम बिन अ़ली रज़ि0, हज़रत उ़मर रज़ी० की बीवी थीं, उन की शादी सन 17 हि0 में हज़रत उ़मर रजी़0 से हुई थी।

जब हज़रत अ़ली रज़ि0 ने हज़रत उ़मर रज़ि0 को दामाद बनाया और इतनी मौहब्बत की तो अब हम लोगों को चीख़ने की ज़रूरत क्या है और क्यों इस की वजह से हम अपने में लड़ाई करें और मुसलमानों के दो टुकड़े करें। यह बहुत समझने की चीज़ है।

अमीर उल मौमिनीन हज़रत उ़समान रज़ि० के फ़ज़ाइल

40.ان عائشة قالت كان رسول الله مضطجعا فى بيتى كاشفا عن فخذه....ثم دخل عثمان فجلست و سويت ثيابک، فقال الا استحيى من رجل تستحيى منه الملائكة . (مسلم شریف ، کتاب فضائل الصحابة ، ص ۱۰۵۲، نمبر ۲۴۰۱/ ۶۲۰۹)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हुजूर स0अ0व0 मेरे घर में पिण्ड़ली खोले लेटे हुए थे......फिर हज़रत उ़समान

रज़ि0 आये तो आप स0अ0व0 बैठ गये और कपड़ा ठीक कर लिया तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिन से फ़रिशते शर्म करते हों तो क्या मैं उन से शर्म ना करूं।

41.عن ابی ھریرۃ ان رسول اللہ ﷺ قال: لکل نبی رفیق فی الجنۃ و رفیقی فیھا عثمان . . (ابن ماجۃ شریف ، کتاب المقدمۃ ، باب فضل عثمانؓ ، ص ۱۷ ، نمبر ۱۰۹)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जन्नत में हर नबी का रफ़ीक़ होगा और मेरे रफ़ीक़ उ़समान रज़ि0 होंगे।

42.عن ابی ھریرۃ ان النبی ﷺ لقی عثمان عند باب المسجد فقال یا عثمان ھٰذا جبریل اخبرنی ان اللہ قد زوجک ام کلثوم بمثل صداق رقیۃ ، علی مثل صحبتھا. (ابن ماجۃ شریف ، کتاب المقدمۃ ، باب فضل عثمانؓ ، ص ۱۸ ، نمبر ۱۱۰)

तर्जुमा: हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 से रिवायत है कि मस्जिद के दरवाज़े के पास हुजूर स0अ0व0 की मुलाक़ात हज़रत उ़समान रज़ि0 से हुई, तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया ऐ उ़समान यह जिब्राईल हैं जो मुझे यह ख़बर दे रहे हैं कि रूक़य्या का जितना महर था इसी के बदले में तुम्हारा निकाह उम्मे कुलसुम से कराया, ओर जिस तरह आप ने इन की ख़िदमतम की थी इसी अन्दाज़ की ख़िदमत में निकाह कराया।

हज़रत उ़समान रज़ि० हुजूर स०अ०व० के इतने प्यारे थे कि हुजूर स०अ०व० ने दूसरी बेटी भी उन के निकाह में देदी

43.عن ابی ھریرہ قال وقف رسول اللہ ﷺ علی قبر ابنتہ الثانیۃ التی کانت عند عثمان فقال الا ابا ایم ، الا اخا ایم تزوجھا عثمان ، فلو کن عشرا لزوجتھن عثمان و ما زوجتھا الا بوحی من السماء ، و ان رسول اللہ ﷺ لقی

عثمان عند باب المسجد فقال یا عثمان هذا جبریل یخبرنی ان الله عز و جل قد زوجک ام کلثوم علی مثل صداق رقیة و علی مثل صحبتها . (طبرانی کبیر ، مسند ام کلثوم بنت رسول الله ، ج ۲۲، ص ۴۳۶،نمبر ۱۰۶۳)

तर्जुमाः हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 अपनी दूसरी बेटी की क़ब्र पर खड़े थे जो हज़रत उ़समान रज़ि0 के निकाह में थी, तो आप ने फ़रमाया ऐ बेवा के बाप, ऐ बेवा के भाई तुम सुनो, मैंने उ़समान से इस की शादी कराई थी, अगर मेरे पास दस बेटियां भी होतीं तो मैं उन सब की उ़समान से निकाह कराता, मैंने उन का निकाह आसमान की वही की वजह से कराया है, और यह बात भी है कि मस्जिद के दरवाज़े पर हुज़ूर स0अ0व0 से हज़रत उ़समान की मुलाक़ात हुई तो आप स0अ0व0 ने फ़रमायाः ऐ उ़समान यह जिब्रईल हैं, यह ख़बर दे रहे हैं कि अल्लाह ने तुम्हारा निकाह उम्मे कुलसुम से कराया, रूक़य्या का जितना महर था इसी के बदले में और जिस तरह आप ने उन की ख़िदमत की थी इसी अन्दाज़ की ख़िदमत में।

इस हदीस में तीन बातें हैंः

(1) हज़रत उम्मे कुलसुम रज़ि0 का निकाह अल्लाह ने कराया था।

(2) हज़रत उ़समान रज़ि0 कितने अच्छे थे कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरे पास अगर दस बेटियां होतीं तो मैं यके बाद दीगरे दसों का निकाह हज़रत उ़समान रज़ि0 से करा देता।

(3) और तीसरी बात यह है कि हज़रत उ़समान रज़ि0 ने हज़रत रूक़य्या बिन्ते रसूल की ख़िदमत कितनी की होगी कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस अन्दाज़ में आप ने हज़रत रूक़य्या रज़ि0 की ख़िदमत की है उसी अन्दाज़ में हज़रत उम्मे कुलसुम रज़ि0 की भी ख़िदमत करने की उम्मीद में इस का निकाह

तुम से करा रहा हूं।

इस का ज़िक्र मैं इस लिए भी कर रहा हूं कि बाज़ हज़रात ने यह इल्ज़ाम लगाया है कि हज़रत उ़समान रज़ि0 ने हुजूर स0अ0व0 की दोनों बेटियों को सताया है, نعوذ بالله من ذٰلک अगर ऐसा होता तो हुजूर स0अ0व0 दूसरी बेटी का निकाह हज़रत उ़समान रज़ि0 से क्यों कराते, और यूं क्यों फ़रमाते कि अगर मेरे पास दस बेटियां होतीं तो मैं यके बाद दीगरे दसों का निकाह हज़रत उ़समान रज़ि0 से करा देता……यह सब सहाबा पर बिला वजह इल्ज़ाम है, हमें इस से बचना चाहिए।

हुजूर स०अ०व० के तमाम रिश्तेदारों से मौहब्बत करने की ताकीद की है

आप स0अ0व0 के जो रिश्तेदार ईमान के साथ इन्तक़ाल फ़रमाये हैं अल्लाह ने उन से दिल से मौहब्बत करने की ताकीद की है चूंकि आयत में इस की ताकीद है इस लिए यह जुज़ व ईमान है, इन में से किसी एक को निकालना सही नहीं है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद यह है:

7. قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْراً اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ، وَ مَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حَسَناً . (آیت۲۳،سورت الشوری۴۲)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर काफ़िरों से कह दो कि मैं तुम से इस तबलीग़ पर कोई उजरत नहीं मांगता सिवाऐ रिश्तेदारी के मौहब्बत के और जो शख़्स कोई भलाई करेगा हम इस की ख़ातिर इस भलाई में मज़ीद ख़ूबी का इज़ाफ़ा कर देंगे।

कुछ हज़रात ने कहा कि इस से सिर्फ़ अहल बैत वाले रिश्तेदार मुराद हैं, लेकिन सही बात यह है कि कुर्बी का लफ़्ज़ आ़म है इस लिए हुजूर स0अ0व0 के तमाम रिश्तेदार मुराद हैं जो ईमान के साथ दुनिया से रूख़सत हुए हैं।

ख़ास तौर पर यह हज़रात बहुत क़रीब के रिश्तेदार हैं इनसे दिल से मौहब्बत करें

हुज़ूर स0अ0व0 की तमाम बीवियों ख़दीजा, आ़यशा, हफ़सा वग़ैरह से मौहब्बत करें इस लिए कि वो आप की बीवियां हैं।

हुज़ूर स0अ0व0 की तमाम बेटियों, फ़ातिमा, ज़ैनब, रूक़य्या, उम्मे कुलसुम से मौहब्बत करें, इस लिए कि वो आप की बेटियां हैं।

हुज़ूर स0अ0व0 के तमाम बेटों इब्राहीम, अ़ब्दुल्लाह, क़ासिम, से भी मौहब्बत करें इस लिए कि वो आप के बेटे हैं।

हुज़ेर स0अ0व0 के दोनों दामाद अ़ली रज़ि0, उ़समान रज़ि0 से मौहब्बत करें, इस लिए कि वो आप के दामाद हैं।

हुज़ूर स0अ0व0 के नवासे, हज़रत हसन और हुसैन से मौहब्बत करें इस लिए कि वो आप के नवासे हैं।

हुज़ूर स0अ0व0 के दोनों ख़ुसर, अबूबकर, उ़मर, से मौहब्बत करें, इस लिए कि वो आप के ख़ुसर ैं, क्योंकि यह सब ज़वी उल कुर्बा (रिश्तेदार) में दाख़िल हैं।

आयत पर ग़ौर करें।

यह मतलब इस वक़्त है जब कुर्बा में हुजूर स0अ0व0 के रिश्तेदारों को शामिल करें, जैसा कि कुछ मुफ़स्सिरीन ने किया है वरना दूसरा मतलब यह है कि हुज़ूर स0अ0व0 से कहलवा रहे हैं कि ऐ अहल मक्का तुम्हारे साथ मेरी रिश्तेदारी है, इस की रिआ़यत करते हुए तुम मुझे ना सताओ (बल्कि बेहतर यह है कि तुम मुझ पर ईमान ले आओ)।

इस अ़क़ीदे के बारे में सात आयतें और 43 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

मेरे असातिजा ने कितना अहतराम सिखाया

नाचीज़ को आज बड़ी ख़ुशी है कि मेरे असातिज़ा किराम ने यह सिखलाया किः

तमाम नबियों का अहतराम करो, और दिल से मौहब्बत करो।

तमाम रसूलों का अहतराम करो, और दिल से मौहब्बत करो।

तमाम सहाबा का अहतराम करो, और दिल से मौहब्बत करो।

तमाम इमामों का अहतराम करो, और दिल से मौहब्बत करो।

तमाम वलियों का अहतराम करो, और दिल से मौहब्ब्त करो।

तमाम आसमानी किताबों का अहतराम करो, और दिल से मौहब्बत करो।

बल्कि वो भी कहते थे कि हिन्दू मज़हब के मुक़्तदा को भी बुरा ना कहो बहुत मुमकिन है कि वो अपने ज़माने के वली और बुज़ुर्ग हों, और बहुत बाद में लोगों ने इन को कुछ और बना दिया हो……वाह रे अहतराम मैंने अपने मादिर इल्मी दारूल उ़लूम में कभी भी किसी मज़हब वालों के बारे में नाज़ेबा जुमले इस्तेमाल करते नहीं सुना।

आज दुनिया की हालत देखता हूं तो अपने असातिज़ा की इस नसीहत पर दिल से दुआऐं निकलती हैं।

(19) ख़िलाफ़त का मसला

इस अ़क़ीदे के बारे में 0 आयतें और 12 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

ख़िलाफ़त का मसला भी एक बहुत बड़ा मसला है जिस में उम्मत के दो तबक़े उलझे हुए हैं और इस वक़्त तो पूरे अ़रब में इतने लड़ रहे हैं कि इस में शाम, इराक़, यमन, लीबिया, बरबाद हो चुके हैं।

यह मसला सहाबा के ज़माने का था, इस वक़्त ना ख़िलाफ़त है और ना ख़िलाफ़त का मसला है, लेकिन लोग इसी ज़माने की

बात को पकड़े हुए हैं और इस को बिला वजह हवा दे दे कर उम्मतों के दरमियान तफ़रक़ा पैदा कर रहे हैं। काश कि इन बातों को भुला दिया जाता और सब मिल कर अपने अपने मुल्कों को तरक़्क़ी देते तो कितना अच्छा होता, इस वक़्त पूरा यूरोप मिल कर फ़ैसला कर लेते हैं और मसले को आसानी से हल कर लेते हैं, लेकिन मुसलमान बैठ कर कोई मसला हल नहीं कर पाते, बल्कि जब भी बैठते हैं तो कोई नया झगड़ा पैदा करके उठते हैं।

ख़िलाफ़त के बारे में इस्लाम का नज़रिया

इस्लाम का नज़रिया यह है कि मलूकियत की तरह किसी आदमी को ज़बरदस्ती थोप ना दिया जाये, बल्कि जम्हूरियत बाक़ी रहे और मुसलमान इत्तफ़ाक़ राये से ख़ुद ही अपना ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करे, अल्बत्ता मुख़्तलिफ़ मौक़े पर हुज़ूर स0अ0व0 ने इशारा किया कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 उम्मत के लिए ज़्यादा बेहतर हैं इन में इन्तज़ामी सलाहियत बहुत अच्छी है।

ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे ख़िलाफ़त की वसियत नहीं की है

इस के लिए अहादीस यह हैं:

1.عن ابی جهیفة قال قلت لعلی هل عندکم کتاب ؟ قال لا : الا کتاب الله او فهم أعطیه رجل مسلم او ما فی هذه الصحیفة قال قلت و ما فی هذه الصحیفة ؟ قال العقل و فکاک الاسیر و لا یقتل مسلم بکافر . (بخاری شریف ، باب کتابة العلم ، ص ۲۴ ، نمبر ۱۱۱)

तर्जुमा: अबू जहीफ़ा रज़ि0 कहते हैं कि मैंने हज़रत अ़ली रज़ि0 से पूछा क्या आप के पास (रसूलुल्लाह स0अ0व0 का) कोई ख़त है, उन्होंने कहा नहीं! सिर्फ़ मेरे पास क़ुरआन है, या एक मुसलमान को जो समझदारी दी जाती है वो है, या जो इस सहीफ़े

में है, मैंने फिर पूछा, इस सहीफ़े में क्या है, फ़रमाया देत के अहकाम क़ैदियों को छुड़ाने के अहकाम और यह हुक्म के मुसलमान को काफ़िर के बदले में क़त्ल नहीं किया जायेगा।

इस हदीस में साइल ने बाज़ाब्ता पूछा है कि क्या ख़िलाफ़त के बारे में आप के पास कोई तहरीर है तो उन्होंने इनकार फ़रमाया कि मेरे पास कोई तहरीर नहीं है।

2. عن عامر بن واثلة قال سأل رجل عليا هل كان رسول الله ﷺ يسر اليک بشیء دون الناس فغضب علی حتی احمر وجهه و قال ما کان یسر الی شیئا دون الناس غیر انه حدثنی باربع کلمات و انا و هو فی البیت فقال لعن الله من لعن والده و لعن الله من ذبح لغیر الله و لعن الله من اوی محدثا و لعن الله من غیر منار الارض . (نسائی ریف ، کتاب الضحایا ، باب من ذبح لغیر الله عز و جل ، ص ۲۱۴، نمبر ۴۴۲۷)

तर्जुमा: आ़मिर बिन वासिला फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अ़ली रज़ि0 को पूछा क्या हुज़ूर स0अ0व0 ने आप को चुपके से कोई बात कही है, जो लोगों को ना कही हो, तो हज़रत अ़ली रज़ि0 का चेहरा गुस्से से लाल हो गया, और कहने लगे कि लोगों को छोड़ कर मुझे चुपके से सिर्फ़ चार बातें की हैं, इस वक़्त में और हुज़ूर स0अ0व0 घर में थे, हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस ने अपने वालिद पर लअ़नत की अल्लाह उस पर लअ़नत करे, जिस ने अल्लाह के अ़लावा के लिए ज़िबाह किया अल्लाह इस पर लअ़नत करे, दीन में नई चीज़ पैदा करने वाले को जिस ने इस को पनाह दी, इस पर लअ़नत करे, और जिस ने ज़मीन के निशान को बदल दिया अल्लाह उस पर लअ़नत करे।

इस हदीस में है कि ख़ुद सवाल करने वाले ने पूछा कि क्या आप को हुज़ूर स0अ0व0 ने कोई ख़ास बात बताई है तो हज़रत अ़ली रज़ि0 ने फ़रमाया कि यह चार बातें बताई और कुछ नहीं

बताया, जिस का मतलब यह था कि ख़िलाफ़त की वसियत के बारे में मुझे कुछ नहीं बताया है।

जब हज़रत अली रजी० ने खुद सखती से फरमाया के मेरे लिये खिलाफत की वसीयत नहीं की है तो दूसरे लोग कियों शोर मचाते हें के हज़रत अली ० खलीफा अव्वल हें, और हुजूर स0अ0व0 ने उन के लिये खिलाफत की वसीयत की है इस बात की ताईद इस से भी होती है के हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रजी० से बेअत के बाद कभी खिलाफ़त का दावा नहीं किया और हज़रत उसमान की शहादत के बाद जब लोगों ने हज़रत अली रजी० को खिलाफत देनी चाही तो उन्होंने साफ इनकार किया और बहुत इसरार के बाद उसको कुबूल फरमाया, जिस से मालूम होता है के वो खलीफा बन्ना नहीं चाहते थे, र्सिफ बादिले ना खासता उम्मत के फाइदे के लिये बहुत इसरार के बाद उस को कुबूल किया, इस लिये ये शोर मचाना के हज़रत अली रजी० के लिये खिलाफत की वसीयत की थी ये ठीक नहीं है और खास तोर पर उस वक़्त चोदा सो साल गुजर जाने के बाद इस मसले को ले कर मुसलमानों को दो टुकड़े करना तो और भी अच्छा नहीं है इस पर गौर फरमाऐं।

3.عن عائشه قالت : ما ترک رسول الله ﷺ دينارا و لا درهما و لا شاة و لا بعيرا و لا اوصى بشىء . (مسلم شريف ، باب ترک الوصية لم ليس له شىء يوصى له ، ص ٧١٧، نمبر ١٦٣٥ / ٤٢٢٩)

तर्जुमा: हज़रत आयशा रजी० ने फरमाया हुजूर स0अ0व0 ने अपनी वरासत में ना देनार छोड़ा, ना दिरहम छोड़ा, ना बकरी छोड़ी, ना ऊंट छोड़े, और ना किसी चीज़ की वसीयत की।

4.عن الاسود بن زيد قال ذكروا عند عائشة ان عليا وصيا فقالت متى اوصى اليه ؟ فقد كنت مسندته الى صدرى . او قالت حجرى . فدعابالطشت فلقد انخنث فى حجرى و ما شعرت انه مات فمتى اوصى اليه ؟ (مسلم

شـــريف ، بـــاب تـــرک الـوصية لـم ليـــس لـه شـیء يوصـی لـه ، ص ۷۱۸،
نمبر ۱۶۳۶ / ۴۲۳۱)

तर्जुमा: हज़रत आयशा रजी० के सामने तज़किरा हुवा के हज़रत अली रजी० खिलाफत के वसी हें, तो हज़रत आयशा रजी० ने फरमाया के ये वसीयत कब की? हुजूर स0अ0व0 तो मेरे सीने से टेक लगाऐ हुवे थे या यूं के मेरी गोद में थे... फिर तुशत मंगवाया, फिर मेरी गोद में झुक गऐ, मुझे तो पता भी नहीं चला के आप का विसाल होगया, तो हज़रत अली रजी० को वसीयत कब की।

इन दोनों हदीसों से मालूम हुवा के हुजूर स0अ0व0 ने खिलाफत की वसीयत नहीं की है।

हुजूर स0अ0व0 ने इशारा किया कि मेरे बाद अबूबकर रजी० को खलीफा मुन्तखब कर लें तो बेहतर है।

हुजूर स0अ0व0 ने सराहत के साथ खलीफा बन्ने के लिये किसी का इन्तखाब नहीं फरमाया, लेकिन हदीसों में इशारा किया है कि हज़रत अबूबकर रजी० को उम्मत मुन्तखब करले तो ये बेहतर है। इस के लिये अहादीस ये हें:

5. عن محمد بن جبير بن مطعم عن ابيه ان امرأة سالت رسول الله ﷺ شيـئـا فـامـرها ان ترجع اليه فقالت يا رسول الله ارأيت ان جئت فلم اجدک ؟ قـال ابـی: كـانهـا تـعـنـی الـمـوت، قـال فـان لـم تجدنی فاتی ابا بكر (مسلم شريف،باب من فضائل ابی بكر، ص ۱۰۵۱ ، نمبر/ ۲۳۸۶/ ۶۱۷۹)

तर्जुमा: एक औ़रत ने हुजूर स0अ0व0 से कुछ पूछा तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि वापिस आओ, फिर पूछा या रसूलुल्लाह अगर आप ना होते तो किस के पास आऊं? मेरे बाप ने इशारा किया कि औ़रत यह पूछ रही थी कि आप के विसाल के बाद किस के पास आऊं? हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अगर तुम मुझे ना पाओ तो अबूबकर के पास आना।

6. عن عائشة قالت قال لی رسول الله ﷺ فی مرضه : ادعی لی ابا بکر أبـاک و اخاک حتی اکتب کتابا فانی اخاف ان یتمنی متمن و یقول قائل ، انا اولـی ، و یـأبی الله و المومنون الا ابا بکر .(مسلم شریف،باب من فضائل ابی بکر، ص ۱۰۵۱ ، نمبر/ ۲۳۸۷/ ۲۱۸۱)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हुजूर स0अ0व0 ने अपने मर्ज़ में मुझ से यह फ़रमाया कि अपने वालिद अबूबकर, और अपने भाई को मेरे पास बुलाओ, ताकि मैं कोई तहरीर लिख दूं, मुझे इस का डर है कि कोई तमन्ना करने वाला तमन्ना करे, या कहने वाला हे कि मैं ज़्यादा बेहतर हूं (यानी ख़िलाफ़त का मैं ज़्यादा मुस्तहिक़ हूं) लेकिन अल्लाह और मौमिनीन अबूबकर ही पसन्द करेंगे।

इस हदीस से दो बातों का पता चलता है: (1) एक तो यह कि हुजूर स0अ0व0 अपने मर्ज़ में जो ख़त लिखवाना चाहते थे वो हज़रत अबूबकर रज़ि0 की ख़िलाफ़त के बारे में लिखवाना चाहते थे, हज़रत अ़ली रज़ि0 के बारे में नहीं इसी लिए तो हज़रत अबूबकर, और इन के बेटे को बुलाने के लिए कहा। (2) और दूसरी बात यह है कि हुजूर स0अ0व0 ने तमन्ना ज़ाहिर की कि अल्लाह और मौमिनीन हज़रत अबूबकर को ही ख़लीफ़ा बनाऐंगे और यह तमन्ना पूरी भी हुई, ताहिम किसी के लिए ख़लीफ़ा बनने की वसियत नहीं की।

7. عـن ابـی موسی قال مرض النبی ﷺ فاشتد مرضه فقال مروا ابا بکر فـلیـصـل بـالناس ، قالت عائشة : انه رجل رقیق اذا قام مقامک لم یستطیع ان یصلی بالناس قال مروا ابا بکر فلیصل بالناس فعادت فقال مری ابا بکر فلیصل بـالناس فعادت فقال مری ابا بکر فلیصل بالناس فانکن صواحب یوسف ، فاتاه الـرسـول فـصـلـی بـالناس فی حیاة النبی . (بخاری شریف ، باب اهل العلم و الفضل احق بالامامة ، ص ۱۱۰ ، نمبر ۶۷۸)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 की मर्ज़ ने शिद्दत इख़तयार की तो आप ने फ़रमाया कि अबूबकर को हुक्म दो कि वो लागों को नमाज़ पढ़ाऐं, इस पर हज़रत अ़ायशा रज़ि0 ने कहा कि वो नर्म दिल आदमी हैं, जब आप की जगह पर खड़े होंगे तो वो लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे, इस पर भी हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अबूबकर को ही नमाज़ पढ़ाने के लिए कहो, हज़रत अ़ायाा रज़ि0 ने दोबारा वही उ़जर पैश किया, हुज़ूर स0अ0व0 ने फिर कहा कि अबूबकर को कहो कि वो लोगों को नमाज़ पढ़ाने के लिए कहो, तुम लोग हज़रत यूसुफ़ अलैहि0 के साथ जो अ़ौरतें साज़िशें कर रही थीं, इस तरह की हो, हज़रत अबूबकर रज़ि0 के पास रसूलुल्लाह स0अ0व0 का क़ासिद आया, जिस की वजह से हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने हुजूर स0अ0व0 की ज़िन्दगी में लोगों की जमाअ़त कराई।

इस हदीस में हुजूर स0अ0व0 ने तीन मर्तबा ज़ौर दे कर हज़रत अबूबकर रज़ि0 को नमाज़ की जमाअ़त करवाने के लिए फ़रमाया जो इस बात का इशारा है कि मेरे बाद भी हज़रत अबूबकर ही नमाज़ पढ़ाऐं और अमीर मुन्तख़ब हों और इसी क़िस्म की अहादीस की बुनियाद पर सहाबा ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया।

लोग बूढ़ों की बात मान लेते हैं

एक बात और भी याद रहे कि लोगों में मुख़तलिफ़ तबीअ़त के लोग होते हैं, इस लिए वो लोग हुक्म मानते हैं उ़मर दराज़ और बूढ़े लोगों की बात मान लेते है, हज़रत अ़ली रज़ि0 इल्म के पहाड़ थे, अहल बैत में से थे, हुज़ूर स0अ0व0 के विसाल के वक़्त इन की उ़म्र 33 साल थी, इस लिए दूसरे लोग जल्दी इन की बात नहीं मानते और हज़रत अबूबकर रज़ि0 की उ़मर इस वक़्त 61 साल थी वो बूढ़े थे इस लिए लोग इन की बात मान लेते इन को

क़ौमों का तजुर्बा भी ज़्यादा था, इस लिए भी लोगों ने इन को मुन्तख़ब किया। इस नुक्ते पर भी ग़ौर करें।

इख़्तलाफ़ के वक़्त ख़ुलफ़ा राशिदीन की इत्तबा करें

इस हदीस में है कि इख़तलाफ़ के वक़्त में ख़ुलफ़ा राशिदीन की इत्तबा करनी चाहिए।

8.عن عرباض بن سارية .....فقال قائل يا رسول الله ﷺ كان هذه موعظة مودع فما ذا تعهد الينا ؟ فقال اوصيكم بتقوى الله و السمع و الطاعة و ان عبدا حبشيا فانه من يعيش منكم بعدى فسيرى اختلافا كثيرا فعليكم بسنتى و سنة الخلفاء الراشدين المهديين تمسكوا بها و عضو عليها بالنواجذ . (ابو داود شريف ، كتاب السنة ، باب فى لزوم السنة ، ص ٦٥١، نمبر ٤٦٠٧/ ترمذى شريف ، نمبر٢٦٧٨)

तर्जुमा: कहने वालों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ऐसा मालूम होता है कि यह आख़िरी नसीहत है, तो आप हमें क्या पैग़ाम देते हैं? तो आप ने फ़रमाया कि अल्लाह के साथ तक़वा इख़तयार करने की वसियत करता हूं और यह भी वसियत करता हूं कि अमीर की बात सुनो और इन की इताअ़त करो चाहे हब्शी ग़ुलाम ही क्यों ना हो, फिर फ़रमाया कि जो मेरे बाद ज़िन्दा रहेगा वो बहुत से इख़तलाफ़ देखेगा, इस वक़्त मेरी सुन्नत और हिदायत याफ़ता ख़ुलफ़ा राशिदीन की सुन्नत को बहुत मज़बूती से पकड़ना।

इस हदीस में है कि मेरे बाद बहुत इख़तलाफ़ होंगे ऐसे मौक़े पर ख़ुलफ़ा राशिदीन की सुन्नत को पकड़ना चाहिए इस लिए इन हज़रात को गाली नहीं देनी चाहिए।

सब ने मिल कर हज़रत अबूबकर रज़ि० को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया

9.فحمد الله ابو بكر و اثنى عليه ......فقال عمر بل نبيعك انت سيدنا و خيرنا و احبنا الى رسول الله ﷺ، فاخذ عمر بيده فبايعه و بايعه الناس .

(بخاری شريف ، كتاب فضائل الصحابة باب، ص ٦١٢، نمبر ٣٦٦٨)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रजी० पे हमद व सना की... हज़रत उमर रजी० ने कहा के हम आप से बेअत करते हें, आप हमारे सरदार हें, हम में सब से अचछे हें और रसूलुल्लाह स0अ0व0 के सब से ज़ियादा महबूब हें, हज़रत उमर रजी० ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रजी० का हाथ पकड़ा और उन से बेअत की और लोगों ने भी उन से बेअत की।

इस हदीस में है कि तमाम लोगों ने खूशी से हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ से बेअत की है इस लिये उन सब ने मिल कर खलीफा बनाया था और वो मुत्तफिक़ा अमीर थे।

इस लिये ये कहना कि हज़रत अबूबकर रजी० खिलाफत पर गासिब थे सही नहीं है। और उस कोल सहाबी में ये भी है कि हज़रत अबूबकर रजी० उन सहाबा में से सब से जियादा अचछे थे, और हुजूर स0अ0व0 के सब से ज़यादा करीब भी थे, और बूढ़े होने की वजा से हर तरह का तर्जुबा भी था इस लिये उनको खलीफा बनाना हर ऐतबार से बेहतर था।

हज़रत अली रजी० ने हज़रत अबूबकर रजी० से बेअत की थी

बाद में हज़रत अली रजी० ने भी हज़रत अबूबकर रजी० से बेअत करली थी, बुखारी शरीफ में इस की पूरी तफसील मोजूद है।

10.عـن عـائشة ...استـنكر علیؓ وجوه الناس فالتمس مصالحة ابی بـكـر و مبـايـعتـه و لـم يـكـن يبـايـع تلک الاشهر ...فقال علیؓ لابی بکرؓ مـوعـدک الـعشية لـلبيـعة فلما صلی ابو بکرؓ الظهر رقی المنبر فتشهد و ذكـر شـان علیؓ و تخلفه عن البيعة و عذره بالذی اعتذر اليه ثم استغفر، و تشهـد عـلـیؓ فـعـظـم حـق ابی بکرؓ و حدث انه لم يحمله علی الذی صنع نـفـاسة عـلی ابی بکرؓ و لا انكارا للذی فضله الله به و لكنا نری لنا فی هذ الامـر نـصيبـافـاستبد علينا فوجدنا فی انفسنا فسر بذالک ا لمسلمون و قالوا اصبت ، و كان المسلمون الی علیؓ قريبا حين راجع الامر المعروف (بـخـاری شـريف ، كتـاب الـمـغازی ، باب غزوة خيبر ، ص ۶۰۹ ، نمبر ۴۲۴۰).

तर्जुमा: हज़रत अली रजी० को ऐसा महसूस हुवा के लोग मेरी तरफ तवज्जो कम दे रहे हें, इस लिये हज़रत अबूबकर रजी० से सुलह की और उनसे बेअत करने की दरखास्त की, उनहों ने इन 6 महीनों में बेअत नही की थी,... हज़रत अली रजी० ने फरमाया बेअत के लिये शाम का वक़्त ठीक है, जब हज़रत अबूबकर रजी० ने जोहर की नमाज़ पढ़ी तो मिम्बर पर बैठै और कलमा शहादत पढ़ा और हज़रत अली रजी० की शान बयान की और अब तक बेअत से पीछे रहे उस की वजा बयान की और हज़रत अली रजी० ने जो उज़र पैश की उस का जिकर किया फिर इसतिगफार किया, और हज़रत अली रजी० ने कलमा शहादत पढ़ा और अबूबकर रजी० के हक़ की अज़मत बयान की और ये भी कहा के में ने जो किया है वो हज़रत अबूबकर पर फोक़ियत की वजा से नहीं की है, और अल्लाह ने हज़रत अबूबकर को फज़ीलत दी है मुझे उसका इनकार भी नहीं है, लैकिन मेरा खयाल था कि इस मामले (वरासत में, या खिलाफत में) मेरा भी कुछ हिस्सा है,

लैकिन मुझे वो नहीं मिला जिस की वजा से मेरा दिल उचाट हुवा (और अब में खुशी से बेअत के लिये आगया हूँ) इस से मुसलमान बहुत खुश हुवे और सब ने कहा कि आप ने बहुत अचछा किया, और जब हज़रत अली रजी० ने अमर मारूफ की तरफ रूजू किया तो लोग हज़रत अली रजी० के बहुत क़रीब आगये।

इस हदीस में दो बातें हें (1) एक तो हज़रत अली रजी० ने भी बाद में हज़रत अबूबकर रजी० से बेअत की, (2) हज़रत अली रजी० ने हज़रत अबूबकर रजी० की फज़ीलत का इक़रार किया और हज़रत अबूबकर रजी० ने भी हज़रत अली रजी० की फज़ीलत का इक़रार किया ये कितनी अचछी बात है। दोनों बड़े हज़रात ने आपस में सुलह करली इस लिये अब हम लोगों को भी इसी सुलह पर राज़ी होना चाहिये, कियों कि अगर हम इसी को पकड़े रहेंगे तो हम दो टुकड़ों में बट जाऐंगे और दूसरी कोमें हमें पीस कर रख देगी जो इस वक़्त हो रहा है और हमेशा के लिये उम्मत में इखतिलाफ बाक़ी रह जाऐगा।

ख़लीफा मुतय्यन होने के बाद बिला वजा उनसे इखतिलाफ करना जाईज़ नहीं है

ख़िलाफ़त के लिए बैअ़त करने के बाद बिला वजह इन से इख़तलाफ़ करना जायज़ नहीं है क्योंकि इस से फ़ितना होगा इस के लिए हदीस यह है:

11.عن عبد الرحمن بن عبد رب الكعبة .....و من بايع اماما فأعطاه صفقة يده و ثمرة قلبه فليطعه ان استطاع فان جاء آخر ينازعه فاضربوا عنق الآخر . (مسلم شريف ، كتاب الامارة ، باب وجوب الوفاء ببيعة الخليفة الاول فالاول ، ص ٨٢٨، نمبر ١٨٤٤/ ٤٧٧٦)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस ने इमाम से बैअ़त की और अपना हाथ दे दिया, और अपना दिल भी दिया तो

जितना हो सके इस की इताअ़त करनी चाहिए और अगर कोई दूसरा आदमी ख़िलाफ़त लेने के लिए झगड़ा करने लगे तो दूसरे की गर्दन मार दो।

इस हदीस में है कि ख़लीफ़ा तअ़य्युन होने के बाद इन की पूरी इताअ़त करनी चाहिए। इस लिए इतना ज़माना गुज़रने के बाद भी जो लोग इख़तलाफ़ का मामला बार बार सामने लाते हैं, यह सही नहीं है इस से बिला वजह मुसलमानों में इख़तलाफ़ होता है और मुसलमान दो टुकड़ों में बट जाता है और दूसरी क़ौमों के सामने इन की कोई हैसियत बाक़ी नहीं रही।

पांच ख़लीफ़ों की ख़िलाफ़त की मुद्दत

हदीस में यह है कि ख़िलाफ़त राशिदा की मुद्दत तीस साल होगी इस के लिए यह हदीस है:

12.عن سفينة قال قال رسول الله ﷺ خلافة النبوة ثلاثون سنة ثم يوتى الله الملك او ملكه من يشاء .

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त नबुव्वत तीस साल है फिर अल्लाह अपना मुल्क जिस को देना चाहे देगा।

قال سعيد قال لى سفينة امسک عليک ابا بكر سنتين ، و عمر عشرا ، و عثمان اثنى عشرا ، و على كذالک ، قال سعيد قلت لسفينة ، ان هٰولاء يزعمون ان عليا لم يكن خليفة قال كذبت استاه بنى الزرقاء ، يعنى بنى مروان.

(ابو داود شريف ، كتاب السنة ، باب فى الخلفاء ، ص ٦٥٢ ، نمبر ٤٦٤٦)

तर्जुमा: हज़रत सईद रज़ि0 फ़रमाते हैं कि फिर हज़रत सफ़ीना रज़ि0 ने इस की तफ़सील बताई कि हज़रत अबूबकर रज़ि0 की ख़िलाफ़त के दो साल, हज़रत उ़मर रज़ि0 के दस साल, हज़रत उ़समान रज़ि0 के बारह साल, इस तरह हज़रत अ़ली रज़ि0 की भी ख़िलाफ़त है, हज़रत सईद ने हज़रत सफ़ीना रज़ि0 से कहा कि यह मरवानी लोग तो यह कहते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ि0

ख़लीफ़ा नहीं थे, तो हज़रत सफ़ीना रज़ि0 ने फ़रमाया कि बनी ज़रक़ा यानी बनी मरवान झूट बोलते हैं।

इस हदीस में है कि ख़िलाफ़त नबुव्वत तीस साल होगी।

इस अ़क़ीदे के बारे में 0 आयतें और 12 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

हज़रत अबूबकर रज़ि0 की ख़िलाफ़त दो साल, तीन माह दस दिन है।

12 रबीअ़ उल अव्वल 11 हि0 मुताबिक़ 7 जून 632 ई0 से।

22 जमादी उल आख़िरी 13 हि0 मुताबिक़ 23 अगस्त 634 ई0 तक।

हज़रत उ़मर रज़ि0 की ख़िलाफ़त दस साल छः माह चार दिन है।

22 जमादी उल आख़िरी 13 हि0 मुताबिक़ 23 अगस्त 634 ई0 से।

26 ज़िल हिज्जा 23 हि0 मुताबिक़ 3 नवम्बर 644 ई0 तक।

हज़रत उ़समान रज़ि0 की ख़िलाफ़त 11 साल, 11 माह 22 दिन है।

3 मौहर्रम 24 हि0 मुताबिक़ 9 नवम्बर 644 ई0 से।

25 ज़िल हिज्जा 35 हि0 मुताबिक़ 24 जून 656 ई0 तक।

हज़रत अ़ली रजि0 की ख़िलाफ़त चार साल आठ माह 25 दिन है।

26 ज़िल हिज्जा 35 हि0 मुताबिक़ 25 जून 656 ई0 से।

21 रमज़ान 40 हि0 मुताबिक़ 28 जनवरी 161 ई0 तक।

हज़रत हसन रज़ि0 की ख़िलाफ़त छः माह तीन दिन है।

22 रमज़ान 40 ई0 मुताबिक़ 29 जनवरी 661 ई0 से।

25 रबी़ उल अव्वल 41 हि0 मुताबिक़ 29 जोलाई 661 ई0 तक।

मज्मूआ़ 30 साल ख़िलाफ़ राशिदा की मुद्दत हुई, इन्टरनेट से यह हवाला लिया है।

(20) वली किस को कहते हैं

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और 5 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

जो अल्लाह पर ईमान रखता हो, शरीअ़त पर पूरा पूरा अ़मल करता हो और मुत्तक़ी और परहैज़गार हो, लोगों के साथ मामलात बहुत अच्छा रखता हो नमाज़ का पूरा पाबन्द हो, रोज़ा रखता हो, ज़कात देता हो, और हराम काम से मुकम्मल बचता हो और ख़ुदा का ख़ौफ़ हो तो इस को वली कहते हैं, और जो लोग शरीअ़त के पाबन्द नहीं होते और विलायत का दिखावा करते हैं वो वली नहीं मक्कार हैं, आज कल तो बहुत से मादरज़ाद नंगे बावा को भी वली समझने लगे हैं इस को समझा करें।

इस हदीस में इस की तफ़सील है:

1. عن عبيد بن عمير ...ان رسول الله ﷺ قال فى حجة الوداع ، الا ان أولياء الله المصلون من يقيم الصلوات الخمس التى كتبت عليه و يصوم رمضان و يحتسب صومه يرى انه عليه حق و يعطى زكاة ماله يحتسبها و يجتنب الكبائر التى نهى الله عنها . (مستدرک للحاكم ، كتاب الايمان ، ج اول ، ص ١٢٧ ، نمبر ١٩٧ / سنن بيهقى ، كتاب الجنائز ، باب ما جاء فى استقبال القبلة بالموتى ، ج ثالث ، ص ٥٧٣، نمبر ٦٧٢٣)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने हुज्जतुल विदा में फ़रमाया सुन लो! अल्लाह के वली वो हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं, पांचों नमाज़ें जो इस पर फ़र्ज़ है इस को क़ायम करते हैं, रमज़ान का रोज़ा रखते हैं वो सिर्फ़ अल्लाह के लिए रखते हैं और यह समझते हैं कि रोज़ा रखना इस पर अल्लाह का हक़ है, और सिर्फ़ सवाब के लिए अपने माल की ज़कात देते हैं अल्लाह ने जिस गुनाहे कबीरा से रोका है इस से बचते हैं।

इस हदीस में है कि नमाज़ पढ़ता हो, रोज़ा रखता हो, ज़कात देता हो और गुनाह कबीरा से बचता हो तो वो वली है और जो यह काम नहीं करता है और गुनाहे कबीरा से नहीं बचता है वो हरगिज़ वली नहीं है।

1. اَلاانَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ، اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ، لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمَاتِ اللّٰهِ ذَالِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ . (آیت ٦٢. ٦٤، سورت یونس ١٠)

तर्जुमा: याद रखो कि जो अल्लाह के दोस्त हैं, इन को ना कोई ख़ौफ़ होगा ना वो ग़मगीन होंगे यह वो लोग हैं जो ईमान लाए और तक़्वा इख़तयार किये रहे इन के लिए ख़ुशख़बरी है दुनियवी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी।

इस आयत में दो बातें हैं:

(1) एक तो यह कि वली पर ख़ौफ़ और ग़म नहीं होगा।

(2) और दूसरी बात यह है कि वली वो हैं जो ईमान लाए और ज़िन्दगी भर तक़्वा इख़तयार करते रहे, इस लिए जो मौमिन नहीं है काफ़िर है तो वो वली नहीं बन सकता और जो तक़्वा इख़तयार नहीं करता, शरीअ़त पर नहीं चलता वो भी वली नहीं बन सकता है।

2. اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقَاكُمْ . (آیت۱۳،سورت الحجرات۴۹)

तर्जुमा: और हक़ीक़त अल्लाह के नज़दीक तुम में से सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो तुम में से सब से ज़्यादा मुत्तक़ी हो।

इस आयत में है कि जो ज़्यादा मुत्तक़ी होगा अल्लाह के नज़दीक वही ज़्यादा बा इज़्ज़त है।

वली की अ़लामत यह है कि इस को देख कर ख़ुदा याद आये

जो शान व शौकत वाला हो और इस को देख कर दुनिया याद आये वो वली नहीं है वो दुनियादार है, और जिस की सादगी परहैज़गारी और ख़ौफ़ ख़ुदा देख कर आख़िरत याद आने लगे वो अल्लाह का वली है। इस के लिए हदीस यह है:

2.عن ابن عباس عن النبی ﷺ قال ابراهیم سئل رسول الله ﷺ من اولیاء الله ؟ قال الذین اذا رئوا ذکر الله . (سنن نسائی کبری ، باب قول الله تعالی ، الا ان اولیاء الله ، ج ١٠ ، ص ١٢٤ ، نمبر ١١١٧١)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 से लोगों ने पूछा कि अल्लाह के वली कौन हैं, तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब इस को देखो तो ख़ुदा याद आने लगे। (तो समझो कि वो अल्लाह का वली है)।

3.ان اسماء بنت یزید انها سمعت رسول الله ﷺ یقول : الا ینبأکم بخیارکم ؟ قالوا بلی یا رسول الله قال خیارکم الذین اذا رؤوا ذکر الله عز و جل . (ابن ماجة شریف ، کتاب الزهد ، باب من لا یؤبه له ، ص ٢٠١ ، نمبر ٤١١٩)

तर्जुमा: हज़रत असमा बिन्त यज़ीद ने कहा कि मैंने हुज़ूर स0अ0व0 को कहते हुए सुना मैं तुम्हें बतलाऊं कि तुम में से अच्छे लोग कौन हैं? लोगों ने कहा, हां या रसूलुल्लाह! आप स0अ0व0 ने फ़रमाया तुम में से अच्छे लोग वो लोग हैं कि जब इन को देखो तो ख़ुदा याद आ जाये।

इन अहादीस में है कि जिसे देख कर ख़ुदा याद आये वो अच्छे लोग हैं, इस लिए पीर ऐसा अल्लाह वाला हो जिस को देख कर ख़ुदा याद आये।

जो शरीअ़त का पाबन्द नहीं वो वली नहीं है

आज कल बहुत से लोग हैं जो वली होने का दअ़वा करते हैं, लेकिन वो ना नमाज़ के पाबन्द हैं ना रोज़े के पाबन्द हैं, ना ज़कात देते हैं, बल्कि लोगों को धोका दे कर इन से पोण्ड़ वसूल करते रहते हैं, ऐसे लोगों को वली नहीं समझना चाहिए और इस की जाल से बचना चाहिए।

कोई वली कितना ही बुलन्द हो जाये वो नबी और सहाबा से अफ़ज़ल नहीं हो सकता

बाद के वली का दरजा से भी कम है, क्योंकि सहाबा ने ईमान के साथ हुजूर स0अ0व0 को देखा है और इन की मदद की है और वली ने हुजूर स0अ0व0 को नहीं देखा है इस लिए बाद के वली सहाबा से अफ़ज़ल नहीं हैं।

दूसरी बात यह है कि हुजूर ने तमाम सहाबा की बहुत फ़ज़ीलत बयान की है, जो वलियों के लिए नहीं है इस लिए बाद के वली कितने ही आगे क्यों ना बढ़ जायें वो सहाबा के दरजे को नहीं पहुंच सकता। बाज़ लोग बाद के वलियों को इतनी फ़ज़ीलत बयान करते हैं कि इन को सहाबा से भी आगे बढ़ा देते हैं, यह सही बात नहीं है। इस के लिए हदीस यह है:

4.عن عبد الله بن مغفل المزنی قال قال رسول الله ﷺ الله الله فی اصحابی ، الله الله فی اصحابی لا تتخذهم غرضا بعدی فمن احبهم فبحبی أحبهم و من ابغضهم فببغضی ابغضهم ، و من آذاهم فقد آذانی و من آذانی فقد آذی الله تبارک و تعالی و من آذای الله فیوشک ان یأخذه . (مسند امام احمد ، باب حدیث عبد الله بن مغفل المزنی ، ج ٦ ، ص ٤٢ ، نمبر ٢٠٠٢٦)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरे असहाब के बारे

में अल्लाह से डरो मेरे असहाब के बारे में अल्लाह से डरो, मेरे बाद इन को तअ़न व तशनीअ़ का निशाना ना बनाऐं, जो इन से मौहब्बत करेंगे वो मेरी वजह से मौहब्बत करेंगे और जो इन से बुग़ज़ करेंगे वो मेरी वजह से बुग़ज़ करेंगे, जिस ने इन को तकलीफ़ दी इस ने गोया कि मुझे तकलीफ़ दी और जिस ने मुझे तकलीफ़ दी तो इस ने गोया कि अल्लाह को तकलीफ़ दी और जिस ने अल्लाह को तकेलीफ़ दी तो हो सकता है अल्लाह इस को अपने पकड़ में लेले।

हज़रत स0अ0व0 ने बड़े दर्द के साथ अपने सहाबी के बारे में फ़रमाया कि इन को तअ़न व तशनीअ़ का निशाना ना बनाया जाये।

5.سمعت جابر بن عبد الله يقول سمعت النبى ﷺ يقول لا تمس النار مسلما رأنى او رأى من رانى . (ترمذى شريف ، باب ما جاء فى فضل من راى النبى ﷺ و صحبه ، ص ٨٧٢، نمبر ٣٨٥٨)

तर्जुमा: हज़रत जाबिर रज़ि0 फ़रमाते हैं मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से कहते हुए सुना है, जिस ने मुसलमान होने की हालत में मुझे देखा हो, या जिस ने मुझे देखा हो (यानी मेरे सहाबी को) इस को देखा हो तो इस को जहन्नुम की आग नहीं छुऐगी।

इन अहादीस में सहाबा की फ़ज़ीलत है जो एक वली के लिए नहीं है, इस लिए अदना सहाबी भी बाद के तमाम वलियों से अफ़ज़ल हैं।

वली से ख़ारिक़ आ़दत बात साबित हो जाये तो इस को करामत कहते हैं

नबी से कोई ख़ारिक़ आ़दत बात ज़ाहिर हो तो इस को मोअ़ज्ज़ा कहते हैं और वली से कोई ख़ारिक़ (अ़जीब) बात ज़ाहिर हो तो इस को करामत कहते हैं, और ग़ैर मुस्लिम से कोई ख़ारिक़

आ़दत चीज़ साबित हो जाये तो इस को इस्तदराज कहते हैं।

वली से भी ख़ारिक़ आ़दत चीज़ (यानी करामत) ज़ाहिर हो सकती है। लेकिन यह बात भी ज़हन में रहे कि बहुत सारे लोग करामत का दअ़वा करते हैं, लेकिन इस में कोई हक़ीक़त नहीं होती, इस लिए इस ज़माने में इस से चौकन्ना रहना चाहिए।

करामात के लिए यह आयत मौजूद है।

3. كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا.

(آیت ۳۷، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: जब भी ज़क्रिया अलैहिस्सलाम हज़रत मरयम रज़ि0 के पास इन की इबादत गाह में जाते इन के पास कोई रिज़्क़ पाते।

इस आयत में है कि हज़रत मरयम अलैहिहस्सलाम जो नबी नहीं थीं, वलिया थीं इन के पास बेमौसम का फल हुआ करता था जो एक करामत है।

जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता वो वली नहीं बन सकता

इस वक़्त दुनिया में बहुत सारे वो लोग हैं जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते, इन में तौहीद नहीं है, या कुफ़्र में मुब्तला हैं, या शिर्क में मुब्तला हैं, और वो दअ़वा करते हैं कि मैं वली हूं, पहुंचा हुआ आदमी हूं वो तपस्या (मुजाहिदा) भी करते हैं, वो लोगों को तअ़वीज़ (जन्तर मन्त्र) देते हैं और कभी अल्लाह के हुक्म से इस का फ़ायदा भी होता है जिस से अ़वाम समझते हैं कि वो अल्लाह के वली हैं और अ़वाम इस के मोअ़तक़िद हो जाते हैं।

लेकिन यह बात समझना चाहिए कि जब तक तौहीद ना हो, ईमान ना हो, अल्लाह के तमाम अहकाम पर अ़मल ना करता हो वो अल्लाह का वली नहीं है, यह इस के लिए ढ़ील है, इसतदराज है, इन के हाथ में कभी भी मुरीद नहीं होना चाहिए, इस से बचना

चाहिए, बहुत मुमकिन है कि इस के क़रीब होने की वजह से आप का ईमान ख़त्म हो जाये। इस के लिए आयत यह है:

4. اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ، اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ، لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمَاتِ اللّٰهِ ذَالِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ . (آیت۶۲۔۶۴،سورت یونس۱۰)

तर्जुमा: याद रखो कि जो अल्लाह के दोस्त हैं, इन को ना कोई ख़ौफ़ होगा ना वो ग़मगीन होंगे यह वो लोग हैं जो ईमान लाये और तक़वा इख़्तयार किये रहे इन के लिए ख़ुशख़बरी है दुनियवी ज़िन्दगी मे भी और आख़िरत में भी।

इस आयत में सब से पहली शर्त है कि वो ईमान रखता हो और दूसरी शर्त है कि तक़वा इख़्तयार करता हो तब वली होगा, इस के बग़ैर वली नहीं बन सकता, इस का ख़्याल रखें।

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और पांच हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

(21) फ़रिश्तों का बयान

इस अ़क़ीदे के बारे 9 आयते और तीन हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

ईमान के बाब में आयेगा कि छ: बातों पर ईमान रखने से आदमी मौमिन बनता है और इन में से एक बात फ़रिश्तों पर ईमान रखना है इस लिए फ़रिश्तों की तफ़सील ज़िक्र की जा रही है। अ़क़ीदा उल तहाविया में इबारत यह है:

.و الایـمـان ، هو الایمان بالله ، و ملائكته ، و كتبه ، و رسله ، و اليوم الآخر ، و القدر خيره و شره ، و حلوه و مره ، (عقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ٢٦، ص ١٥)

तर्जुमा: और ईमान, यह है कि अल्लाह पर इस के फ़रिशतों पर, इस की किताबों पर, इस के रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर और तक़दीर पर ईमान हो।

इस इबारत में है कि छः चीज़ों पर ईमान लाने से आदमी मौमिन बनता है, इन में से एक फ़रिशतों पर ईमान लाना भी है।

बाक़ी तफ़सील ईमान की बहस में देखें।

फ़रिश्ते की पैदाइश नूर से है

फ़रिश्ते अल्लाह की मासूम मख़लूक़ हैं जिन की पैदाइश नूर से है। इस की दलील यह हदीस है:

1.عن عائشة قالت قال رسول الله ﷺ خلقت الملائكة من نور ، و خلق الجان من مارج من نار ، و خلق آدم مما وصف لكم . (مسلم شريف ، باب فى احاديث متفرقة ، باب الزهد ، ص ١٢٩٥ ، نمبر ٢٩٩٦/ ٧٤٩٥)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं, और जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया गया है और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इस चीज़ से पैदा किया जो तुम्हार सामने बयान किया गया है।

इस हदीस में है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं और जिन्नात आग से पैद किये गये हैं।

चार फ़रिश्ते बड़े हैं इन का तज़्किरा इन आयतों में है

फ़रिश्ते बहुत हैं जिन की तअ़दाद अल्लाह ही को मालूम है इन में चार फ़रिश्ते बड़े हैं:

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम।

हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम।

हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम।

हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम।

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम का तज़्किरा नीचे की आयत में है। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम

सब से बड़े फ़रिश्ते माने जाते हैं और इन का काम नबियों पर वही लाना है। हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम का काम बारिश बरसाना है।

यह काम अल्लाह के हुक्म से अंजाम देते हैं, इस लिए बारिश बरसाने के लिए हज़रत मीकाईल अलैहि0 से मांगना जायज़ नहीं है, सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही से बारिश मांगी जायेगी, कुछ ग़ैर मुस्लिम बारिश के लिए देवी की पूजा करते हैं, वो यह मानते हैं कि बारिश बसाना देवी के `इख़्तयार में है, इस लिए वो इस के लिए देवी और देवता को पुकारते हैं यह इस्लाम में हराम है। इस के लिए आयतें यह हैं:

1.و من كان عدو الله و ملائكته و رسله و جبريل و ميكال فان الله عدو للكافرين . (آیت۹۸،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: अगर कोई शख़्स अल्लाह का इस के फ़रिशतों का और रसूल का और जिब्रईल और मीकाईल का दुशमन है तो वो सन रखे कि अल्लाह काफ़िरों का दुशमन है।

2.قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ .

(آیت۹۷،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर कह दें कि अगर कोई शख़्स जिब्रईल का दुशमन है ता हवा करे उन्होंने तो यह कलाम उल्लाह की इजाज़त से आप के दिल पर उतारा है।

इन दोनों आयतों में जिब्रईल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहि0 का ज़िक्र है।

हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम (मलकुल मौत) का तज़्किरा

हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम का काम लोगों को मौत देना है, यह काम भी वो अल्लाह के हुक्म से करते हैं, मौत और हयात

देना सिर्फ़ अल्लाह का काम है, अल्बत्ता अल्लाह के हुक्म से वो इस काम को अंजाम देते हैं, इस लिए ज़िन्दा रखने के लिए सिर्फ़ अल्लाह से दुआ़ मांगी जा सकती है, फ़रिश्ते से नहीं, इस के लिए आयत यह है:

3.قُلْ يَتَوَفَّاكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ .

(آیت ۱۱، سورت السجدة ۳۲)

तर्जुमा: कह दो कि तुम्हें मौत का वो फ़रिश्ता पूरा पूरा वसूल कर लेगा जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम्हें वापिस तुम्हारे परवरदिगार के पास ले जाया जायेगा।

इस आयत में है कि मौत का वक़्त आ जाता है तो एक सिकन्ड भी ताख़ीर नहीं करता, इस आयत में मलकुल मौत का ज़िक्र है।

4.حَتّٰى اِذَا جَاءَ اَحَدُكُمُ الْمَوْتَ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَ هُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ.

(آیت ۶۱، سورت انعام ۶)

तर्जुमा: यहां तक के जब तुम में से किसी के मौत का वक़्त आजाता है तो हमारे भैजे हुवे फरिश्ते उसको पूरा पूरा वसूल कर लेते हें, और वो अभी कोताही नहीं करते।

हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम का तज़्किरा

हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर फूंकने पर मामूर किये गये हैं, यह क़यामत के रोज़ सूर फूंकेंगे। इस के लिए आयतें यह हैं:

5.وَ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمَاوَاتِ وَ مَنْ فِى الْاَرْضِ .

(آیت ۸۷، سورت النمل ۲۷)

तर्जुमा: और जिस दिन सूर फूंका जायेगा तो आसमान और ज़मीन के सब रहने वाले घबरा उठेंगे।

6. وَ نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ

اللّٰہُ ثُمَّ نُفِخَ فِیۡہِ اُخۡرٰی فَاِذَا ھُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ . (آیت۶۸،سورت الزمر۳۹)

तर्जुमा: और सूर फूंका जायेगा तो आसमान और ज़मीन में जितने हैं वो सब बेहौश हो जाऐंगे, सिवाऐ इस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर दूसरी बार फूंका जायेगा तो वो सब लोग पल भर में खड़े हो कर देखने लगेंगे।

2.**عن ابی سعید قال قال رسول اللہ ﷺ ان صاحبی الصور بأیدیھما قرنان یلاحظان النظر متی یومران . (ابن ماجۃ شریف ، کتاب الزھد ، باب ذکر البعث ، ص ۶۲۳ ، نمبر ۴۲۷۳) .**

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि सूर फूंकने वाले के दोनों हाथों में दो सींग हैं, वो टिकटिकी लगाये हुए हैं कि कब इन को सूर फूंकने का हुक्म दिया जाता है (ताकि वो सूर फूंकें)।

इन आयात और हदीस में सूर फूंकने वाला फ़रिश्ता इसराफ़ील अलैहि0 का ज़िक्र है।

किरामन कातिबीन का तज़्किरा

किरामन कातिबीन यह दो फ़रिश्ते हैं, एक दाऐं जानिब और दूसरे बाऐं जानिब, यह दोनों हमारे किये हुए आ़माल को लिखते हैं, दाऐं जानिब वाला फ़रिश्ता नेक आ़माल लिखता है और बाऐं जानिब वाला हमारे बुरे आ़माल को लिखता है, इस के लिए आयत यह है:

7.**وَ اِنَّ عَلَیۡکُمۡ لَحٰفِظِیۡنَ کِرَاماً کَاتِبِیۡنَ یَعۡلَمُوۡنَ مَا تَفۡعَلُوۡنَ.**

(آیت۱۰،سورت انفطار۸۲)

तर्जुमा: हालांकि तुम पर कुछ निगरां (फ़रिश्ते) मुक़र्रर हैं वो मोअ़ज़्ज़िज़ लिखने वाले हैं, जो तुम्हारे सारे कामों को जानते हैं।

इस आयत में किरामन कातिबीन फ़रिश्ते का ज़िक्र है।

मुनकर नकीर का तज़्किरा

यह दो फ़रिश्ते हैं, जब आदमी को क़ब्र में लिटाया जाता है तो यह दोनों फ़रिश्ते आते हैं, और मय्यत से तीन सवालात करते हैं। इस के लिए हदीस यह है:

3.عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ اذا اقبر الميت . او قال احدكم . اتاه ملكان اسودان ازرقان يقال لاحدهما المنكر و الآخر النكير .

(ترمذی شريف ، كتاب الجنائز ، باب ما جاء فی عذاب القبر ، ص ۲۵۸، نمبر ۱۰۷۱)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मय्यत को क़ब्र में लिटाया जाता है, रावी ने यह फ़रमाया कि तुम में से किसी एक को लिटाया जाता है, तो काले फ़रिश्ते आते हैं जिन की आंखें नीली होती हैं, इन में से एक का नाम मुनकर है और दूसरे का नाम नकीर है।

इस हदीस में मुनकिर नकीर फ़रिश्ते का ज़िक्र है।

फ़रिश्ते अल्लाह के फ़रमान के ताबअ़ होते हैं

8.بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ .

(آیت۲۶،سورت الانبیاء۲۱)

तर्जुमा: बल्कि फ़रिश्ते तो अल्लाह के बन्दे हैं जिन्हें इ़ज़्ज़त बख़्शी गई है, वो इस से आगे बढ़ कर कोई बात नहीं करते और वो इसी के हुक्म पर अ़मल करते हैं।

9. وَ الْمَلَائِكَةُ وَ هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ . (آیت۵۰،سورت النحل۱۶)

तर्जुमा: और सारे फ़रिश्ते अल्लाह ही को सज्दा करते हैं और वो ज़रा तकब्बुर नहीं करते, वो अपने इस परवरदिगार से डरते हैं जो इन के ऊपर हैं और वही काम करते हैं जिस का उन्हें हुक्म

दिया जाता है।

इन आयतों में यह बताया गया है कि फ़रिश्ते नाफ़रमानी नहीं करते, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के हुक्मे पर चलते हैं, यही इन की फ़ितरत है।

हमारा अ़क़ीदा यह है कि इन्सान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है और हुज़ूर स0अ0व0 तो तमाम फ़रिश्तों से और तमाम नबियों और तमाम रसूलों से भी अफ़ज़ल हैं, और अल्लाह के बाद सब से बड़ा दरजा हुज़ूर स0अ0व0 का है। इस की तफ़सील नूर व बशर के उ़नवान में देखें।

इस अ़क़ीदे के बारे में 9 आयतें और 3 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(22) जिन का बयान

इस अ़क़ीदे के बारे में 8 आयतें और दो हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें। आयत से मालूम होता है कि इन्सान से पहले अल्लाह ने जिन्नात को पैदा किया था, लेकिन मसलहत की वजह से अल्लाह ने बाद में इन्सान को पैदा किया और इस से इस ज़मीन को आबाद किया।

जिन की पैदाइश आग से है।

इस के लिए यह आयत है:

1. وَ الْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلِ مِنْ نَارِ السَّمُوْمِ . (آیت ۲۷،سورۃ الحجر ۱۵)

तर्जुमा: और जिन्नात को इस से पहले लोकी आग से पैदा किया है था।

2. خُلِقَ الْجَانُّ مِنْ مَارِجٍ مِّنْ نَارٍ . (آیت ۱۵،سورت الرحمٰن ۵۵)

तर्जुमा: और जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया है। इस आयत में है कि जिन्नात को आग से पैदा किया गया है।

इन्सान की पैदाइश मिट्टी से है

इन्सान की पैदाइश मिट्टी से है इस की दलील यह आयत है:

3.هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰى اَجَلاً . (آیت۲،سورۃالانعام۶)

तर्जुमा: वही ज़ात है जिस ने तुम को गीली मिट्टी से पैदा किया, फिर (तुम्हारी ज़िन्दगी की) एक वक़्त मुक़र्रर कर दी इस आयत में है कि इन्सान को मिट्टी से पैदा किया है।

4.وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجاً . (آیت۱۱،سورۃفاطر۳۵)

तर्जुमा: और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर नुतफ़े से फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया।

इस आयत में भी है कि इसान को मिट्टी से पैदा किया है।

बाज़ जिन नेक होते हैं और बाज़ बदकार होते हैं

5. قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ فَقَالُوْا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَباً ، یَهْدِیْ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ وَ لَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا اَحَداً . (آیت۱۔۲،سورت الجن۷۲)

तर्जुमा: ऐ रसूल कह दें के मेरे पास वही आई है के जिन्नात की एक जमाअत ने कुरआन गौर से सुना और वह अपनी क़ौम से जा कर कहा के हम ने एक अजीब कुरआन सुना है, जो राहे रास्त की तरफ़ रहनुमाई करता है, इस लिये हम उस पर ईमान ले आऐ हें, और अब अपने परवरदिगार के साथ किसी को इबादत में हरगिज़ शरीक नहीं मानेंगे।

इस आयत में है के कुछ जिन ईमान लाऐ। जिन्नात और इन्सान अल्लाह की इबादत के लिये पैदा किये गये हें।

۶ . وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ٥ (آیت۵۶،سورۃالذاریات:۵۱)

तर्जुमा: जिन्नात और इन्सान को इबादत के लिये पैदा किया गया है।

जिन्नात इन्सान को परेशान करता है लेकिन इतना नहीं जितना आज कल के ज़माने में इस में ग़ुलू है

इस के लिये अहादीस ये हैं:

(١) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ عِفْرِيتًا مِنَ الْجِنِّ تَفَلَّتَ عَلَيَّ الْبَارِحَةَ - أَوْكَلِمَةً نَحْوَهَا- لِيَقْطَعَ عَلَيَّ الصَّلَاةَ، فَأَمْكَنَنِي اللّٰهُ مِنْهُ.

(بخاری شریف: کتاب الصلاۃ، باب الاسیر اوالغریم یربط فی المسجد: ص ۸۰/نمبر ۴۶۱، مسلم شریف: کتاب المساجد، باب جواز لعن الشیطا فی اثناء الصلاۃ، والتعوذ منه: ص ۲۲۰/نمبر ۵۱، ۱۲۰۹)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि कल रात शरीर जिन ने मुझ पर हमला किया ताके मैरी नमाज़ खराब करदे, लैकिन अल्लाह ने मुझ को उस को पकड़ने की क़ुदरत दी।

इस हदीस से मालूम हूवा के जिन्नात इन्सान को परैशान करते हें।

जिन्नात के ठेकेदारों से चोकन्ना रहें

लेकिन आज कल सूरते हाल ये है के आम तौर पर तावीज़ वालों को और जिन्नात निकालने वालों को कुछ इल्म नहीं होता वह अपने उस्ताज़ से तावीज़ कम और मक्कारी ज़ियादा सीखता होता है, इस लिये जिस तावीज़ वाले के पास आप जाऐं वह बीच बीच की बात केहता है, मस्लन कहेगा के तुम को क़रीब के लोगों ने जादू किया है, तुम पर जिन्नात का असर है, यानी जिन्नात है भी और नहीं भी है।

अब उसकी तावीज़ दी और दो माह में कुछ नहीं हुवा और आप दोबारा उस के पास गये, तो केह देता है के में ने दो जिन्नात

को तो निकाल दिया था, अब उस के खानदान के पांच जिन्नात ने दोबारा हमला कर दिया है अब उस को निकालने के लिये और दो माह लगेंगे, और मज़ीद पांच हज़ार रुपया लगेगा, इस तरह वह कई माहीने तक रुपया खींचता रहता है अवाम परैशान रहता है और होता कुछ नहीं है, ये भी देखा गया है तावीज़ वाले इतना दिल में जिन्नात का खौफ़ डाल देते हें वह जलदी निकलता भी नहीं है, इस लिये एसे लोगों से बहुत बचना चाहिये।

शैतान की पैदाइश भी आग से है

शैतान भी जिन्नात के खानदान से है और उस को भी आग से पैदा किया है, अलबत्ता बहुत इबादत करने की वजा से वह फरिश्तों के दरमियान होगया और जब फरिश्तों को सजदा करने के लिये कहा तो शैतान ने भी समझा था के मुझ को भी सजदा करने के लिये कहा है: लेकिन उसने सजदा नहीं किया और दलील ये दी के मेरी पैदाइश आग से है और मेरा दरजा इन्सान से ज़ियादा है, इस लिये में इन्सान को सजदा नहीं करुंगा। उस की दलील ये आयत है:

7. قَالَ مَا مَنَعَکَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُکَ ؕ قَالَ اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ۝ (آیت/۱۲،سورۃ الاعراف:۷)

तर्जुमा: अल्लाह ने कहा जब में ने तुझे हुकम दे दिया था तो तुझे सजदा करने से किस चीज़ ने रोका? वह बोला: में उस से बेहतर हूं तूने मुझे आग से पैदा किया और उस को (आदम) को मिट्टी से पैदा किया।

इस आयत में है के शैतान की पैदाइश आगे से है, बाद में उस को हमैशा के लिये धुतकार दिया गया।

इन्सान शैतान और उस के क़बीले को नहीं देख सकता

उस के लिये आयत ये है:

٨. اِنَّهٗ يَرٰكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَاتَرَوْنَهُمْ ۭ. (آيت:٢٧،سورة اعراف:٧)

तर्जुमा: शैतान और इस का क़बीला तुम्हें वहां से देखता है जहां से तुम उन्हें नहीं देख सकते।

इस आयत में है कि शैतान को नहीं देख सकते हैं इस लिए इस से बचने की पूरी कौशिश करनी चाहिए।

इस अ़क़ीदे के बारे में आठ आयतें और दो हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(23) हशर क़ायम किया जायेगा

इस अ़क़ीदे के बारे में 16 आयतें और 2 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें। कुछ लोगों का यह ख़्याल यह है कि हम मर गये इस के बाद बरज़ख़ में ज़िन्दा नहीं किया जायेगा, और ना हिसाब होगा, बल्कि मरने के बाद हम मिट्टी हो जाऐंगे और ख़त्म हो जाऐंगे दहरिया का और नास्तिक का यही अ़क़ीदा है इस पर अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं है, बल्कि मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा, इस को मैदान क़यामत में अपने किये का हिसाब देना होगा और फिर इस के लिए या जन्नत होगी या जहन्नुम होगी।

हशर का मतलब यह है अल्लाह पाक क़ब्र में आदमी को ज़िन्दा करेंगे और फिर इस को मैदान महशर तक पहुंचाऐंगे और वहां हिसाब होगा।

इन आयतों में इस का सबूत है:

1.يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَ نَحْشَرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا. (آيت١٠٢،سورت طہٰ٢٠)

तर्जुमा: जिस दिन सूर फूंका जायेगा और इस दिन हम सारे मुजरिमों को घैर कर इस तरह जमा करेंगे कि वो नीले पड़े होंगे।

2.وَ يَوْمَ نَحْشَرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجاً مِمَنْ يُكَذِّبُ بِاٰيَاتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ .

(آیت۸۳،سورت النمل ۲۷)

तर्जुमा: और इस दिन को ना भूलो जब हम हर उम्मत में से इन लोगों की पूरी फ़ौज को घैर लाऐंगे जो हमारी आयतों को झुटलाया करते थे, फिर इन की जमाअ़त बन्दी की जायेगी।

3. يَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَ تَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً وَ حَشَرْنَا هُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ اَحداً وَعِرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنَا كُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِداً. (آیت ۴۸،سورت الكهف ۱۸)

तर्जुमा: जिस दिन हम पहाड़ों को चलाऐंगे और तुम ज़मीन को देखोगे कि वो खुली पड़ी है और हम इन सब को घैर कर इकट्ठा कर देंगे और इन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे और सब को तुम्हारे रब के सामने सफ़ बांध कर पैश किया जायेगा, आख़िर तुम हमारे पास इसी तरह आ गये जिस तरह हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, इस के बरअ़क्स तुम्हारा दअ़वा यह था कि हम तुम्हारे लिए यह मुक़र्रर वक़्त (महशर) कभी नहीं लाऐंगे इन आयात से मालूम हुआ कि क़यामत क़ायम होगी।

मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा

मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा इन को मैदान क़यामत में ले जाया जायेगा और इन से हिसाब लिया जायेगा इस के लिए आयतें यह हैं:

4.ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُوْنَ . (آیت۱۶،سورت المومنون ۲۳)

तर्जुमा: फिर क़यामत के दिन तुम्हें यक़ीनन ज़िन्दा किया जायेगा।

5. وَ اَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٍ . (آیت۶،سورت الحج ۲۲)

तर्जुमाः और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वो हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

6.وَ هُوَ يُحْيِ الْمُوْتٰى وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٍ . (آیت۹،سورت الشوریٰ۴۲)

तर्जुमाः और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।

7. قَالَ يُحْيِ الْعِظَامَ وَ هِيَ رَمِيْمٌ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْ اَنْشَاَهَا اَوَّلَ مَرَّةٍ، وَ هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٍ . (آیت۷۹،سورت یٰسٓ ۳۶)

तर्जुमाः कहता है इन हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जब कि वो गल चुकी होंगी कह दो कि इन को वही ज़िन्दा करेगा जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया था, और वो पैदा करने का हर काम जानता है।

इन आयात में है कि मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा।

6. مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنَ . (آیت۳،سورت الفاتحہ۱)

तर्जुमाः जो बदले के दिन का मालिक है (यानी मैदान मेहशर का मालिक है)।

7.لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ . (آیت۱۶،سورت غافر۴۰)

तर्जुमाः किस की बादशाही है आज? (जवाब एक ही होगा कि) सिर्फ़ अल्लाह की जो एक है क़हार है।

इन आयतों में है कि अल्लाह मेहशर के दिन का मालिक हैं, कोई और इस का मालिक नहीं होगा।

मेहशर में हर शख़्स का हिसाब होगा

मेहशर में पूरा पूरा हिसाब होगा और ज़िन्दगी में जितना ख़ैर और शर क्या था सब का नामा–ए–आ़माल आदमी के सामने पैश किया जाये और सब का हिसाब किया जायेगा जो हिसाब में कामयाब होगा, अल्लाह तआ़ला इस को जन्नत अ़ता फ़रमाऐंगे, जो नाकाम होगा, अल्लाह तआ़ला इस को जहन्नुम में ड़ालेंगे।

इस लिए आदमी को कभी नहीं सौचना चाहिए कि मेरा हिसाब नहीं होगा इस भूल में नहीं रहना चाहिए। इस के लिए आयतें यह हैं:

8.وَوَضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَ يَقُوْلُوْ نَ يَا وَيْلَتَنَا مَا لِ هٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّ لَا كَبِيْرَةً اِلَّا اَحْصٰهَا ، وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِراً وَ لَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَداً . (آیت۴۹،سورت الکھف ۱۸)

तर्जुमा: और आ़माल की किताब सामने रख दी जायेगी, चुनांचे तुम मुजरिमों को देखोगे कि वो इस में लिखी हुई बातों से ख़ौफ़ ज़दह हैं और कह रहे हैं कि हाऐ हमारी बरबादी! यह कैसी किताब है जिस ने हमारा कोई छोटा बड़ा अ़मल ऐसा नहीं छोड़ा जिस का पूरा इहाता ना कर लिया हो और वो अपना सारा किया धरा अपने सामने मौजूद पाऐंगे और तुमहारा रब किसी पर कोई जुल्म नहीं करेगा।

9.فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتَابَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا .

(آیت۸،سورت الانشقاق ۸۴)

तर्जुमा: फिर जिस शख़्स को इस का नामा–ए–आ़माल इस के दाऐं हाथ में दिया जायेगा इस से तो आसान हिसाब लिया जायेगा।

10.اِقْرَأْ كِتَابَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْباً .

(آیت۱۴،سورت الاسراء ۱۷)

तर्जुमा: कहा जायेगा कि लो पढ़ लो अपना नामा–ए–आ़माल, आज तुम ख़ुद अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी हो।

11.لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ اَنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابُ .

(آیت۵۱،سورت ابراہیم ۱۴)

तर्जुमा: ताकि अल्लाह हर शख़्स को इस के किये का बदला

दे, यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है।

12. وَ اِنۡ تَبۡدُوۡا مَا فِیۡۤ اَنۡفُسِکُمۡ اَوۡ تُخۡفُوۡہُ یُحَاسِبۡکُمۡ بِہِ اللّٰہُ .

(آیت ۲۸۴،سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमाः और जो बातें तुम्हारे दिलों में है ख़्वाह तुम इन को ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुम से इन का हिसाब लेगा।

इन तमाम आयतों में यह है कि अल्लाह क़यामत में हिसाब लेंगे।

क़यामत के दिन हाथ में नामा-ए-आ़माल दिया जायेगा

क़यामत के दिन हाथ में नामा-ए-आ़माल दिया जायेगा, जो नेक लोग होंगे और जन्नती होंगे इन के दाऐं हाथ में नामा-ए-आ़माल दिया जायेगा, और जो जहन्नुमी होंगे इन के बाऐं हाथ में नामा आ़माल दिया जायेगा, इस के लिए आयतें यह हैं:

13. فَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِیَ کِتَابَہٗ بِیَمِیۡنِہٖ فَسَوۡفَ یُحَاسَبُ حِسَاباً یَّسِیۡراً وَ یَنۡقَلِبُ اِلٰۤی اَہۡلِہٖ مَسۡرُوۡرًا ، وَ اَمَّا اُوۡتِیَ کِتَابَہٗ وَرَآءَ ظَہۡرِہٖ فَسَوۡفَ یَدۡعُوۡا ثُبُوۡرًا .

(آیت ۸-۱۲،سورت الانشقاق ۸۴)

तर्जुमाः जिस शख़्स को इस का नामा आ़माल इस के दाऐं हाथ में दिया जायेग, इस से तो आसान हिसाब लिया जायेगा और वो अपने घर वालों के पास ख़ुशी मनाता हुआ वापिस आयेगा, लेकिन वो शख़्स जिस को इस की पुश्त के पीछे से दिया जायेगा वो मौत को पुकारेगा।

14. فَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِیَ کِتَابَہٗ بِیَمِیۡنِہٖ فَیَقُوۡلُ ہَآؤُمُ اقۡرَءُوۡا کِتَابِیَہۡ .

(آیت ۱۹،سورت الحاقۃ ۶۹)

तर्जुमाः फिर इस को इस का नामा आ़माल इस के दाऐं हाथ में दिया जायेगा वो कहेगा लो यह मेरा आ़माल नामा पढ़ो।

15.وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ .

(آیت ۲۵،سورت الحاقۃ ۶۹)

तर्जुमा: रहा वो शख़्स जिस का नामा आ़माल इस के बाऐं हाथ में दिया जायेगा तो वो कहेगा ऐ काश मुझे मेरा आ़माल नामा दिया ही ना जाता।

इन आयतों में है कि क़यामत के दिन आ़माल नामा हाथ में दिया जायेगा।

पुल सिरात क़ायम किया जायेगा

मैदान क़यामत में पुल सिरात क़ायम किया जायेगा और लोगों को इस पर से गुज़रना होगा, जो नेक होंगे वो इस पर से गुज़र जाऐंगे और जन्नत में पहुंच जाऐंगे और जो बद होंगे वो इस पर से नहीं गुज़र पाऐंगे वो जहन्नुम में गिर जाऐंगे। इस के लिए आयत और अहादीस यह हैं:

16.وَاِنْ مِنْكُمْ وَارِدُهَا . (آیت ۷۱،سورت مریم ۱۹)

तर्जुमा: और तुम में से कोई नहीं है जिस का इस पुल सिरात पर गुज़र ना हो।

1.ان ابا هريرة اخبرهما .....و يضرب الصراط بين ظهرانى جهنم فاكون اول من يجوز من الرسل بامته . (بخارى شريف ، كتاب الآذان ، باب فضل السجود ، ص ١٣٠ ، نمبر ٨٠٦)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जहन्नुम की पीठ पर पुल सिरात क़ायम किया जायेगा और मैं रसूलों में से सब से पहला होंगा, जो अपनी उम्मत को ले कर इस पर गुज़रेगा।

2.عن المغيرة بن شعبة قال قال رسول الله ﷺ شعار المومنين على الصراط رب سلم سلم . (ترمذى شريف ، كتاب صفة القيامة ، باب ما جاء فى شأن الصراط ، ص ٥٥٤، نمبر ٢٤٣٢)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि पुल सिरात पर मौमिन का शिआ़र, रब सलम सलम होगा।

इस आयत और दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जहन्नुम पर पुल सिरात क़ायम किया जायेगा।

इस अ़क़ीदे के बारे में 16 आयतें और दो हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(24) मीज़ान हक़ है

इस अ़क़ीदे के बारे में 12 आयतें और दो हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

क़यामत के दिन आ़माल तोलने के लिए मीज़ान यानी तराज़ू क़ायम किया जायेगा। आ़माल तोलने का मीज़ान किस तरह का होगा इस की तफ़सील मालूम नहीं है, इस का इल्म अल्लाह ही के पास है लेकिन कुरआन और हदीस से यह मालूम है कि क़यामत में आ़माल तोलने के लिए मीज़ान और तराज़ू होगा। पिछले ज़माने में फ़लस्फ़ा वालों ने यह ऐतराज़ किया था कि आ़माल को जिस्म नहीं है तो कैसे तोले जाऐंगे, लेकिन इस ज़माने में बुख़ार, और दिल की धड़कनों को नापते हैं, और बारीक से बारीक चीज़ नाप लेते हैं, इस लिए अब यह ऐतराज़ नहीं रहा।

मीज़ान में आ़माल तोले जाऐंगे इस की दलील यह आयतें हैं:

1. وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَ اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَ كَفٰى بِنَا حَاسِبِيْنَ . (آیت، ۴۷، سورت الانبیاء ۲۱)

तर्जुमा: और हम क़यामत के दिन ऐसी तराज़ू ला रखेंगे जो सरापा इन्साफ़ होंगी, चुनांचे किसी पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।

2. وَ الْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ، وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِنُهٗ فَاُولٰئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُظْلِمُوْنَ .

(آیت ۸-۹ سورت الاعراف ۷)

तर्जुमा: और इस दिन आ़माल का वज़न होना अटल हक़ीक़त है, चुनांचे जिन की तराजू के पले भारी होंगे वही फ़लाह पाने वाले होंगे, और जिन की तराजू के पल्ले हलके होंगे वही लोग हैं जिन्होंने हमारी आयतों के साथ ज़्यादतियां करके ख़ुद अपनी जानों को घाटे में ड़ाला है।

इन आयतों में मीज़ान यानी तराजू का ज़िक्र है:

1.عـن عائشة انها ذكرت النار فبكت .....فقال رسول الله ﷺ اما فى ثـلاثة مـواطن فلا يذكر احدا احدا عند الميزان حتى يعلم أيخف ميزانه او يثقل

. (ابو داود شريف ، باب فى ذكر الميزان ، ص ٦٧٢، نمبر ٤٧٥٥)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने जहन्नुम का तज़्किरा किया तो वो रोने लगी......हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तीन मौक़े पर कोई किसी को याद नहीं करेगा, एक तराज़ू के वक़्त यहां तक कि यह जान ले कि इस का वज़न हलका हुआ है या भारी।

इस हदीस में मीज़ान का और वज़न आ़माल का तज़्किरा है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 2 आयतें और 1 हदीस है आप हर एक की तफ़सील देखें।

(25) अल्लाह ने जन्नत को पैदा कर दिया है

इस अ़क़ीदे के बारे में 14 आयतें और तीन हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

पहले कुछ इख़तलाफ़ था कि जन्नत और जहन्नुम को भी पैदा किया है या नहीं और कुछ लोगों का नज़रिया यह था कि जन्नत और जहन्नुम को अभी पैदा नहीं किया है, बल्कि मेहशर के बाद पैदा करेंगे क्योंकि अभी इस की कोई ज़रूरत नहीं है, लेकिन आयतों को देखने के बाद यह पता चलता है कि अल्लाह तआ़ला ने जन्नत और जहन्नुम को पैदा कर दिया है।

जन्नत को पैदा कर देने के लिए आयत यह है:

1. وَ جَنَّةٌ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَ الْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ .

(آیت ۱۳۳، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: और जन्नत हासिल करने के लिए एक दूसरे से बढ़ कर तैज़ी दिखाओ जिस की चौड़ाई इतनी है कि इस में तमाम आसमान और ज़मीन समा जाऐं, जो परहैज़गारों के लिए तैयार की गई है।

2. اَعَدَّاللّٰهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارِ خَالِدِيْنَ فِيْهَا.

(آیت ۸۹، سورت التوبۃ ۹)

तर्जुमा: अल्लाह ने इन के लिए वा बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में यह हमैशा रहेंगे।

3. اَعَدَّاللّٰهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارِ . (آیت ۱۰۰، سورت التوبۃ ۹)

तर्जुमा: अल्लाह ने इन के लिए ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं।

इस हदीस में भी है:

1. عن ابی هريرةؓ عن النبی ﷺ يقول الله تعالى أعددت لعبادى الصالحين ما لا عين رأت و لا اذن سمعت و لا خطر على قلب بشر . (بخارى شريف ، باب سورة السجدة ، كتاب التفسير ، ص ۸۴۰، نمبر ۴۷۸۰)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया: अल्लाह फ़रमाते हैं कि मैंने नेक बन्दों के लिए ऐसी चीज़ तैयार कर रखी है, जो ना किसी आंख ने देखी है, ना किसी कान ने सुना है और ना किसी इन्सान के दिल पर यह बात गुज़री है।

इन आयतों और हदीस में **اعــــــدت** माज़ी के सीग़े के साथ ज़िक्र किया गया है जिस से मालूम हुआ कि जन्नत और जहन्नुम पैदा कर दी गई है।

अल्लाह ने जहन्नुम को पैदा कर दिया है

इस के लिए आयतें यह हैं:

4.فَاتَّقُوْا النَّارَ الَّتِیْ وَ قُوْدَھَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَۃَ أُعِدَّتْ لِلْکَافِرِیْنَ.

(آیت۲۴،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: डरो इस आग से जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर होंगे वो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

5.وَ غَضِبَ اللّٰہُ عَلَیْھِمْ وَ اَعَدَّ لَھُمْ جَھَنَّمَ وَ سَآءَتْ مَصِیْراً .

(آیت۶،سورت الفتح۴۸)

तर्जुमा: और अल्लाह इन से नाराज़ हैं, इस ने इन को अपनी रहमत से दूर कर दिया है, और इन के लिए जहन्नुम तैयार कर रखी है और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है।

6. وَ اتَّقُوْا النَّارَ الَّتِیْ اُعِدَّتْ لِلْکَافِرِیْنَ . (آیت۱۳۱،سوررت آل عمران۳)

तर्जुमा: और इस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

इन आयतों से पता चला कि जहन्नुम भी अल्लाह ने पैदा कर दी है।

जन्नत और जहन्नुम को अल्लाह हमेशा बाक़ी रखेंगे

7.سَنُدْخِلُھُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِھَا الْاَنْھَارِ خَالِدِیْنَ فِیْھَا اَبَداً .

(آیت۵۷،سورت النساء۴)

तर्जुमा: इन को हम ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बेहती होंगी, जिन मं वो हमैशा हमैशा रहेंगे।

8.سَنُدْخِلُھُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِھَا الْاَنْھَارِ خَالِدِیْنَ فِیْھَا اَبَداً وَعْدَ اللّٰہِ حَقاً . (آیت۱۲۲،سورت النساء۴)

तर्जुमा: इन को हम ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, जिन में वो हमैशा हमैशा रहेंगे, यह अल्लाह का सच्चा वादा है।

9.قِیْلَ ادْخُلُوْا اَبْوَابَ جَھَنَّمَ خَالِدِیْنَ فِیْھَا . (آیت۷۲،سورت الزمر۳۹)

तर्जुमा: कहा जायेगो कि जहन्नुम के दरवाज़ों में हमैशा हमैशा के लिए दाख़िल हो जाओ।

10. **وَ مَنْ يَّعْصِى اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهُ فَاِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِيْنَ فِيْهَا اَبَداً .**

(آیت۲۳،سورت الجن۷۲)

तर्जुमा: और जो कोई अल्लाह और इस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा, तो इस के लिए जहन्नुम की आग है जिस में ऐसे लोग हमैशा हमैशा रहेंगे।

इन आयतों से मालूम होता है कि जन्नत भी हमैशा रहेगी और जहन्नुम भी हमैशा रहेगी अल्लाह पाक इस को ख़त्म नहीं करेंगे।

जन्नत ऐश की जगह है

11. **اَعَدَّاللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا.**

(آیت۸۹،سورت التوبۃ۹)

तर्जुमा: अल्लाह ने इन के लिए वो बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं जिन में यह हमैशा रहेंगे।

.اِنَّ اَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِىْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ، هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِىْ ظِلَالٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِئُوْنَ ، لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّ لَهُمْ مَا يَدَّعُوْنَ . (آیت۵۷،سورت یٰسٓ۳۶)

तर्जुमा: जन्नत वाले लोग इस दिन मशग़ले में मगन होंगे, वो और इन की बीवियां घने सायों में आराम दह नशिस्तों पर टैक लगाऐ हुए होंगे, वहां इन के लिए मेवे होंगे और उन्हें हर वो चीज़ मिलेगी जो वो मंगवाऐंगे।

जहन्नुम अ़ज़ाब की जगह है

12. **فَاتَّقُوْا النَّارَ الَّتِىْ وَ قُوْدَهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةَ اُعِدَّتْ لِلْكَافِرِيْنَ.**

(آیت۲۴،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: डरो इस आग से जिस का ईंधन इन्सान ओर पत्थर होंगे वो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

इस के अ़लावा भी बहुत सी आयतें हैं जो पहले गुज़र चुकी हैं।

जो जन्नत में दाख़िल हो गया वो हमैशा वहां रहेगा

जो एक मर्तबा जन्नत में दाख़िल हो गया तो वो हमैशा हमैश वहीं रहेगा, कभी वहां से नहीं निकाला जायेगा। लेकिन अगर किसी के पास ईमान मौजूद है और किसी गुनाह की वजह से सज़ा के लिए जहन्नुम में दाख़िल हो गया तो वो कभी ना कभी जहन्नुम से निकाला जायेगा और जन्नत में दाख़िल किया जायेगा। जन्नत में हमैशा रहेगा इस के लिए आयतें यह हैं:

13.اَعَدَاللّٰهُ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ خَالِدِیْنَ فِیْهَا.

(آیت۸۹،سورت التوبۃ ۹)

तर्जुमा: अल्लाह ने इन के लिए वो बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में यह हमैशा रहेंगे।

14.سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارِ خَالِدِیْنَ فِیْهَا اَبَداً وَعْدَ اللّٰهِ حَقاً. (آیت۱۲۲،سورت النساء۴)

तर्जुमा: इन को हम ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, जिन में वो हमैशा हमैशा रहेंगे, यह अल्लाह का सच्चा वादा है।

और ईमान दार जहन्नुम से निकाला जायेगा इस के लिए हदीस यह है:

2. عن عمران بن حصین رض عن النبی ﷺ قال یخرج قوم من النار بشفاعة محمد ﷺ فیدخلون الجنة یسمون الجهنمیین . (بخاری شریف ، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار ، ص ۱۱۳۶ ، نمبر ۶۵۶۶ص)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मौहम्मद स0अ0व0 की सिफ़ारिश से कुछ लोग जहन्नुम से निकाले जाऐंगे और जन्नत

में दाख़िल किये जाऐंगे इन लोगों का नाम जहन्नुमी होगा।

इस हदीस से मालूम होता है कि अहल ईमान जहन्नुम से निकाले जाऐंगे और जन्नत में दाख़िल किये जाऐंगे।

जो लोग जन्नत या जहन्नुम में दाख़िल होंगे अल्लाह के इल्म में पहले से मुतअ़य्यन है

इस के लिए यह हदीस है:

3. عن علیؓ قال كنا فی جنازة فی بقيع الغرقد .....قال ما منكم من احد ، ما من نفس منفوشة الا كتب مكانها من الجنة و النار و الا كتب شقية او سعيده فقال رجل يا رسول الله أفلا نتوكل على كتابنا و ندع العمل ؟ فمن كان منا من اهل السعادة فسيصير الى عمل اهل السعادة ، و اما من كان منا من اهل الشقاوة فسيصير الى عمل اهل الشقاوة ، قال:اما اهل السعادة فييسرون لعمل السعادة ، و اما اهل الشقاوة فييسرون لعمل الشقاوة ، ثم قرأ ﴿فاما من اعطى و اتقى و صدق بالحسنى [آیت ۵ . ۶ ، سورت الليل ۹۲ ﴾(بخاری شريف ، كتاب الجنائز ، باب موعظة المحدث عند القبر و قعود اصحابه حوله ، ص ۲۱۸ ، نمبر ۱۳۶۲)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम जन्नतुल बक़ी में एक जनाज़े में थे...... हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जितने भी इन्सान हैं इन के लिए जन्नत या जहन्नुम लिखी हुई है और नेक होगा या बदबख़्त होगा वो भी लिखा हुआ है, एक आदमी ने कहा तो या रसूलुल्लाह स0अ0व0 हम इस लिखे हुए पर भरौसा ना करलें, और अ़मल ना छोड़ दें? इस लिए कि हम में से जो नेक होंगे वो ख़ुद ही नेक अ़मल कर लिया करेंगे और जो हम में से बद लोग होंगे वो ख़ुद ही बुरे अ़मल करने लगेंगे, तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि नेक लोगों के लिए नेक अ़मल आसान

कर दिया जाता है और बुरे लोगों के लिए बुरा अ़मल आसान कर दिया जाता है, फिर आप स0अ0व0 ने इस्तदलाल के लिए **فاما من اعطىٰ الخ** आयत पढ़ी।

इस हदीस से पता चलता है कि जो लोग जन्नत में दाख़िल होंगे अल्लाह के इल्म में वो पहले से मुतअ़य्यन हैं और जो जहन्नुम में दाख़िल होंगे अल्लाह के इल्म में वो पहले से मुतअ़य्यन हैं।

इस अ़क़ीदे के बारे में 14 आयतें और तीन हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(26) कुरआन अल्लाह का कलाम है

इस अ़क़ीदे के बारे में 13 आयतें और 4 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

नोटः कलाम की तीन क़िस्में हैंः

(1) एक कलाम वो है जो अल्लाह की ज़ाती सिफ़त है, यह अब्दी है, यह हादिस नहीं है, क्योंकि वो अल्लाह की सिफ़त है, इस लिए अल्लाह की तरह वो भी अब्दी हो जायेगा।

(2) इन्सान का कलाम या फ़रिश्तों का कलाम यह हादिस है, क्योंकि इन्सान और फ़रिश्ते हादिस हैं, इस लिए इन से निकली हुई चीज़ भी हादिस होगी।

(3) कुरआन जो अल्लाह का कलाम है यह कलाम अल्लाह के साथ हो तो यह अब्दी है। और इस कलाम को फ़रिश्ते या इन्सान पढ़े तो यह हादिस है, फ़ानी है, क्योंकि हमारा पढ़ना हादिस है।

पिछले ज़माने में कुरआन हादिस है या नहीं इस बारे में काफ़ी कशमकश रही है, लेकिन अगर यह फ़र्क़ कर लें कि अल्लाह के साथ जो कलाम है वो अब्दी है और इन्सान जो कुरआन पढ़ता है या लिखता है वो हादिस है तो अब कोई झगड़ा नहीं रहेगा।

अल्लाह के साथ जो कलाम है वो हमेशा है, और हम जो कुरआन पढ़ते हैं वो हदिस और फानी है (इमाम अबू हनीफा रज़ी० की राय)

इमाम अबू हनीफा रह० की किताब फिक़ा अक्बर में है:

و لفظنا بالقرآن مخلوق و كتابنا له مخلوقة و قرائتنا له مخلوقة و القرآن غير مخلوق....و القرآن كلام الله تعالى فهو قديم لا كلامهم ... و كلام الله تعالى غير مخلوق . (فقه اكبر لامام ابو حنيفه، بحث ان القرآن كلام الله غير مخلوق و لا حادث ، ٥٨.٥٢.٥٠)

तर्जुमा: हम जो कुरआन पढ़ते हें वो मखलूक़ है, जो कुरआन लिखते हें वो मख्लूक़ है और हम जो पढ़ते हें वो मखलूक़ है (यानी वो फानी है, हादिस है) और कुरआन जो अल्लाह का असली कलाम है वो मख़लूक़ नहीं है, (यानी हादिस नहीं है, फानी नहीं है, वो अबदी है) ... कुरआन जो अल्लाह का कलाम है वो क़दीम है (अबदी है) और इन्सान जो कुरआन पढ़ता है वो क़दीम नहीं है... अल्लाह का कलाम मखलूक नही हें (यानी हादिस और फानी नहीं है, बलकि वो अबदी और क़दीम है)।

यहाँ तीन इबारतें पैश की गई हें, उसका हासिल ये है कि जो कलामुल्लाह का है, और जो उसकी सिफत है वो क़दीम है, अबदी है, और इन्सान जो कुरआन पढ़ता है वो हादिस है, फानी है।

कुरआन अल्लाह का कलाम है

कुरआन की दो हैसियतें हैं, एक जो अल्लाह का अपना कलाम है वो अल्लाह की सिफ़त है और अब्दी है। और दूसरी हैसियत यह है कि कुरआन पढ़ते हैं, यह हादिस है फ़ानी है। कुरआन अल्ला का कलाम है इस के लिए आयत यह है:

1.وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلَامَ اللّٰهِ .
(آیت ٦، سورت التوبة ٩)

तर्जुमा: और मुश्रिकीन में से कोई तुम से पनाह मांगे तो उसे इस वक़्त तक पनाह दो जब तक वो अल्लाह का कलाम सुन ले, (यहां अल्लाह के कलाम से कुरआन मुराद है)।

2.وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ . (آیت ٦، سورت النمل ٢٧)

तर्जुमा: और ऐ रसूल! बिला शुब्हा तुम्हें यह कुरआन इस अल्लाह की तरफ़ से अ़ता किया जा रहा है जो हिक्मत का भी मालिक है इल्म का भी मालिक है।

1.قال عمر بن الخطاب : ان هذا القرآن كلام الله فلا يغرنكم ما عطفتموه على أهوائكم . (دارمی ، باب القرآن كلام الله ج ثانی ، ص ٥٣٣ ، نمبر ٣٣٥٥)

तर्जुमा: हज़रत उ़मर रज़ि0 ने फ़रमाया कि यह कुरआन अल्लाह का कलाम है, कहीं इस बात से तुम्हें धौका ना हो जाये कि तुम अपनी ख़्वाहिश की वजह से इस से दूर हो जाओ।

इन आयतों और हदीस में कुरआन को अल्लाह का कलाम कहा है।

यह कुरआन लोहे महफ़ूज़ में भी है

इस के लिए आयतें यह हैं:

3.اِنَّهٗ لَقُرْآنٌ كَرِيْمٌ فِيْ كِتَابٍ مَّكْنُوْنٍ . (آیت ٧٧، سورت الواقعة ٥٦)

तर्जुमा: यह बड़ा बावक़ार कुरआन है जो एक महफ़ूज़ किताब में पहले से दर्ज है।

4. بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيْدٌ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ. (آیت ٢٢، سورت البروج ٨٥)

तर्जुमा: बल्कि यह बड़ी अ़ज़मत वाला कुरआन है जो लोहे महफ़ूज़ में दर्ज है।

इन आयतों से मालूम हुआ कि कुरआन लोह महफ़ूज़ में है।

कुरआन को लोहे महफ़ूज़ से थोड़ा थोड़ा करके उतारा

कुरआन को तैईस साल में थोड़ा थोड़ा करके हुजूर स0अ0व0 पर उतारा गया है। इस आयत में इस की दलील है।

5. وَ قُرْاٰناً فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلاً .

(آیت۱۰۶،سورت الاسراء۱۷)

तर्जुमा: और हम ने कुरआन के जुदा जुदा हिस्से बनाये ताकि तुम उसे ठहर ठहर कर लोगों के सामने पढ़ो और हम ने उसे थोड़ा थोड़ा करके उतारा है।

6. تَنْزِيلٌ مِنْ رَّبِّ الْعَالَمِيْنَ . (آیت۸۰،سورت الواقعہ۵۶)

तर्जुमा: यह तमाम जहानों के रब की तरफ़ से थोड़ा थोड़ा करके उतारा जा रहा है।

7. وَ اِنَّهُ لِتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ، نُنَزِّلُ بِهِ رُوْحِ الْاَمِيْنَ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذَرِيْنَ . (آیت۱۹۲۔۱۹۴،سورت الشعراء۲۶)

तर्जुमा: बेशक यह कुरआन रब्बुल आलमीन का नाज़िल किया हुआ है अमानत दार फ़रिशता इसे ले कर उतरा है, ऐ रसूल तुम्हारे क़लब पर उतरा है ताकि तुम इन पैग़म्बरों में शामिल हो जाऔ जो लोगों को ख़ब्रदार करते हैं।

इन आयतों से मालूम हुआ कि हुजूर स0अ0व0 पर थोड़ा थोड़ा करके कुरआन को उतारा गया है।

जो कुरआन को इन्सान का कलाम कहे वो काफ़िर है

इस के लिए यह आयत है:

8. اِنَّ هٰذَا اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ، سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ . (آیت۲۵۔۲۶،سورت المدثر۷۴)

तर्जुमाः कुछ नहीं यह तो एक इन्सान का कलाम है, अ़नक़रीब इस शख़्स को दौज़ख़ में झोंक दूंगा।

कुरआन को इन्सान का कलाम कहे तो अल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं इस को जहन्नुम में डालूंगा, क्योंकि वो अब काफ़िर हो गया।

दुनिया में अल्लाह तआ़ला जो कलाम करते हैं वो या तो वही के ज़रिये या परदा के पीछे से करते हैं।

दुनिया में अल्लाह जो कलाम करते हैं वो या तो वही के ज़रिये से करते हैं या परदा से करते हैं, क्योंकि इन्सान को इस वक़्त इतनी ताक़त नहीं है कि अल्लाह से बिल मुशाफ़हा कलाम करे, हां आख़िरत में पैदा कर देंगे इस के लिए यह आयत है।

9.وَ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَاءِ حِجَابٍ اَوْيُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِىَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَاءُ .(آیت۵۱،سورت الشوری۴۲)

तर्जुमाः और किसी इन्सान में ताक़त नहीं है कि अल्लाह इस से रूबरू बात करे, सिवाए इस के कि वो वही के ज़रिये या किसी परदे के पीछे से या फिर कोई पैग़ाम लाने वाला फ़रिश्ता भैज दे, और वो इस के हुक्म से जो चाहे वही का पैग़ाम पहुंचा दे।

10. وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْماً .(آیت۱۶۴،سورت النساء۴)

तर्जुमाः और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से तो अल्लह बराहे रास्त हम कलाम हुआ।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से भी परदे के पीछे से ही हम कलाम हुए हैं।

कुरआन में ना तहरीफ़ हुई है और ना होगी

जब से कुरआन नाज़िल हुआ है इस में कोई तहरीफ़ नहीं हुई है, चुनांचे आप पूरी दुनिया के कुरआन को उठा कर देख लें एक हरफ़ का फ़र्क़ नज़र नहीं आयेगा।

एक ही क़िस्म का पूरा कुरआन दुनिया के करोड़ों हुफ़्फ़ाज़ के सीने में महफ़ूज़ है और महफ़ूज़ रहेंगे। इस लिए जो लोग यह

दावा करते हैं कि कुरआन में तब्दीली हुई है वो ग़लत कहते हैं। इस आयत में है कि अल्लाह ने क़यामत तक कुरआन की हिफ़ाज़त का वादा किया है।

11.اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ . (آیت۹،سورت الحجر۱۵)

तर्जुमाः हक़ीक़त यह है कि यह ज़िक्र यानी कुरआन हम ने ही उतारा है और हम ही इस की हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

इस आयत में अल्लाह ने फ़रमाया कि मैंने कुरआन उतारा है और मैं ही क़यामत के दिन इस की हिफ़ाज़त करूंगा, और वो आज तक वैसा ही महफ़ूज़ है जैसा पहले दिन था इस लिए कोई कहे कि कुरआन में तहरीफ़ है तो यह सरासर ग़लत है।

हां सात क़िराअत पर कुरआन पढ़ने की इजाज़त थी

हां यह बात हुई है कि जब कुरआन उतरा तो अ़रब के सात क़बीले मशहूर थे और हर एक का लहजा अलग अलग था तो अल्लाह पाक ने एक ही आयत को सात लहजे में पढ़ने की इजाज़त दी थी, बाद में जब कुरआन को हज़रत उ़समान रज़ि० ने मुसहफ़ में जमा किया तो कुरैश के लहजे पर जमा किया, क्योंकि यह लहजा सब से बेहतर था, और इस वक़्त कुरआन इसी लहजे और इसी किराअत में लिखा हुआ मौजूद है। इस के लिए हदीस यह है:

2. قال سمعت عمر بن الخطاب ...ان القرآن انزل على سبعة أحرف فاقرؤوا منه ما تيسر . (بخارى شريف، كتاب الخصومات ،باب كلام الخصوم بعضهم فى بعض ،ص ۳۸۹ ، نمبر ۲۴۱۹/ مسلم شريف ، كتاب صلاة المسافرين ، باب بيان ان القرآن انزل على سبعة احرف ، ص ۳۲۹، نمبر ۸۱۸/ ۱۸۹۹)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि कुरआन को सात

क़िराअत पर उतारा गया है जो इस में आसान हो इस में पढ़ो।

इस हदीस में है कि आयत और हुक्म तो एक ही है अल्बत्ता इस को पढ़ने के लिए सात लहजे और सात क़िराअत का इस्तेमाल कर सकते हैं।

आख़िरत में अल्लाह तआ़ला जन्नतियों से कलाम करेंगे

आख़िरत में अल्लाह जन्नतियों से कलाम करेंगे, लेकिन इस की क्या कैफ़ियत होगी वो अल्लाह ही जाने इस के लिए आयतें यह हैं:

12. سَلاَمٌ قَوْلًا مِنْ رَّبِّ رَّحِيْمٌ . (آیت۵۸،سورت یٰس۳۶)

तर्जुमाः रहमत वाले रब की जानिब से उन्हें सलाम कहा जायेगा।

13. وَ لَايُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامِةِ وَ لَا يُزَكِّيهِمْ وَ لَهُمْ عَذَا بٌ اَلِيْمٌ.

(آیت۱۷۴،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमाः क़यामत के दिन अल्लाह उन से कलाम भी नहीं करेंगे, और ना इन को पाक करेंगे और इन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

इन आयतों से मालूम हुआ कि अल्लाह क़यामत में जन्नतियों से कलाम करेंगे।

3. **عن جابر بن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ بينا اهل الجنة فى نعيمهم اذ سطع لهم نور فرفعوا رؤوسهم فاذا الرب قد اشرف عليهم من فوقهم، فقال السلام عليكم يا اهل الجنة ، قال﴾ و ذالک قول الله سلام قولا من رب رحيم .(آيت ۵۸، سورت يٓس ۳۶﴾. (ابن ماجة شريف ، كتاب المقدمة ، باب فيما انكرت الجهمية ، ص ۲۸، نمبر ۱۸۴)**

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जन्नत वाले अपने आराम

में होंगे कि इन को एक रौशनी नज़र आयेगी, इस की तरफ़ यह सर उठाऐंगे तो वो देखेंगे कि ख़ुदावन्दे कुद्दूस ऊपर से देख रहे हैं, और वो कहेंगे जन्नत वाले, अस्सलामु अ़लैयकुम, आयत **سلام قولا من رب رحيم،** की यही तफ़सीर है।

इस हदीस में है कि अल्लाह जन्नतियों से कलाम करेंगे।

4.عن ابی سعید الخدری قال قال النبی ﷺ ان الله يقول لاهل الجنة يا اهل الجنةفيقولون لبيک ربنا و سعديک و الخير فی يديک . (بخاری شریف ، باب کلام الرب مع اهل الجنة ، ص ۱۲۹۶ ، نمبر ۷۵۱۸)

नबी करीम स0अ0व0 ने फ़रमायाः अल्लाज जन्नत वालों से कहेंगे, ऐ जन्नत वालो! तो जन्नत वाले कहेंगे **لبيک ربنا و سعديک و الخير فی يديک ،** ऐ मेरे रब।

लेकिन अल्लाह तआ़ला का यह कलाम इन्सान के कलाम की तरह हादिस नहीं है, बल्कि यह क़दीम है, और कैफ़ियत से पाक है, क्योंकि अल्लाह का कलाम कायनात में से किसी के मुशाबा नहीं है, क्योंकि कुरआन में है

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ. (آیت ۱۱، سورت الشوری ۴۲)

अल्लाह की ज़ात, या इस की सिफ़ात की तरह कोई चीज़ नहीं है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 13 आयतें और चार हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(27) अल्लाह कहां है?

अल्लाह कहां है, इस बारे में बड़ा इख़तलाफ़ है और इस की वजह यह है कि इस बारे में मुख़तलिफ़ आयतें और मुख़तलिफ़ अहादीस हैं, इस लिए किसी एक को मुतअय्यन करना मुश्किल है। इस लिए इस बारे में 6 जमाअ़ते हो गई हैं।

इस अ़क़ीदे के बारे में 38 आयतें और 6 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

अल्लाह के बारे में चार बातें याद रखना ज़रूरी है

(1) अल्लाह वाजिब उल वजूद है, हमैशा से है और हमैशा रहेंगे, वो तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है इस में फ़ना नहीं, इस लिए इन की ज़ात या सिफ़ात में फ़ना नहीं है।

(2) वो जहत से पाक है, यानी किसी जहत में नहीं है, यानी ऊपर, या नीचे, या दाऐं`या बाएं नहीं है।

(3) वो कैफ़ियत से पाक है, यानी इन्सानों और चीज़ों में मुख़तलिफ़ कैफ़ियात हैं, अल्लाह मैं यह नहीं हैं, क्योंकि अल्लाह तो ख़ुद कैफ़ियत को पैदा करने वाला है, तो अल्लाह में कैफ़ियत कैसे होगी।

(4) अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है ना सिफ़ात में उस की मिसल है और ना ज़ात में कोई मिसल है। इस लिए किसी सिफ़त के बारे में यह है कि वो अल्लाह की सिफ़त की तरह है, तो इस का मतलब यह है कि लफ़्ज़ी तौर पर वो हमारी सिफ़त की तरह मालूम होता है, लेकिन हक़ीक़ी मअ़नी में वो चीज़ ही कोई और है, जिस का हम इदराक नहीं कर सकते, और ना इस का शऊ़र रख सकते हैं, इस लिए अल्लाह की किसी भी सिफ़त को मख़लूक़ात की सिफ़ात पर हरगिज़ क़यास ना करें।

इस की दलील के लिए यह आयत और हदीस हैः

1. لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ. (آیت ۱۱، سورت الشوری ۴۲)

तर्जुमाः कोई चीज़ अल्लाह के मिसल नहीं है और वही है जो हर बात सुनता है, सब कुछ देखता है।

इस आयत में है कि अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है, तो हम कैसे यह क़ियास कर सकते हैं कि हमारी तरह वो कुर्सी पर बैठे हैं, या हमारी तरह इन के हाथ और पांव हैं या हमारी सिफ़त

की तरह इन की सिफ़त है।

1.عن ابی هریرة قال قال رسول الله ﷺ قال الله : اعددت لعبادی الصالحین ما لا عین رأت و لا اذن سمعت و لا خطر علی قلب بشر ، فاقروا ان شئتم ﴿ فلا تعلم نفس ما اخفی لهم من قرة اعین﴾ . (آیت ١٧ ، سورت السجدة ٣٢) (بخاری شریف ، کتاب بدء الخلق ، باب جاء فی صفة الجنة و انها مخلوقة ، ص ٥٤١ ،نمبر ٣٢٤٤/ مسلم شریف ، کتاب الجنة و صفة نعیمها و اهلها ، باب صفة الجنة ، ص ١٢٢٨ ، نمبر ٢٨٢٤، نمبر ٧١٣٢)

तर्जुमा: हुजूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने फ़रमाया कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेअ़मत तैयार की हैं कि किसी आंख ने देखी नहीं है, किसी कान ने सुना नहीं है, किसी इन्सान के दिल पर इस का ख़्याल भी नहीं गुज़रा और इस की दलील के लिए यह आयत पढ़ो (किसी मुतनफ़्फ़िस को कुछ पता नहीं है कि ऐसे लोगों के लिए आंखों की ठण्ड़क का क्या सामान छुपा रखा है)।

इस हदीस में है कि जन्नत की नेअ़मतें ना आंख ने देखी है और ना कान ने सुना है और ना दिल में इस का ख़्याल गुज़रा है, जब जन्नत की नेअ़मतों का यह हाल है जो मख़लूक़ हैं, तो हम अल्लाह की ज़ात का और इन की सिफ़ात की कैफ़ियत का तसव्वुर कैसे कर सकते हैं, इस लिए अल्लाह की ज़ात कहां है और इस की कैफ़ियत क्या है, इस बारे में अपनी राये क़ायम ना करें और ना अपने और मख़लूक़ पर क़ियास करें।

(1) पहली जमाअ़त

पहली जमाअ़त की राये है कि अल्लाह अपनी शान के मुताबिक़ हर जगह मौजूद है, लेकिन किस कैफ़ियत से मौजूद है, ज़ात के साथ मौजूद है, या इल्म व कुदरत, व बसीरत के साथ

मौजूद है इस बारे में वो कुछ बहस नहीं करती, क्योंकि अल्लाह जहत और कैफ़ियत से पाक है। इन की दलील यह आयतें हैं, जो हज़रात कहते हैं कि अल्लाह हर जगह मौजूद है, इन की दलील यह आयतें हैं:

1. هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ . (آیت۴،سورت الحدید۵۷)

तर्जुमा: तुम जहां भी रहो अल्लाह तुम्हारे साथ है, तुम जो कुछ करते हो अल्लाह इस को ख़ूब देख रहा है।

2. وَ لَا اَدْنٰى مِنْ ذَالِكَ وَ لَا اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا .
(آیت۷، المجادلة ۵۸)

तर्जुमा: इस से कम हों या ज़यादा वो जहां भी हों अल्लाह इन के साथ होता है।

3. اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا . (آیت۴۰،سورت التوبة۹)

तर्जुमा: जब हुज़ूर स0अ0व0 अपने साथी हज़रत अबूबकर रज़ि0 से कह रहे थे ग़म मत करो, अल्लाह हमारे साथ हैं।

4. فَلَا تَهِنُوْا وَ تَدْعُوْا اِلَى السِّلْمِ وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ وَ اللّٰهُ مَعَكُمْ .

(آیت۳۵, محمد۴۷)

तर्जुमा: ऐ मुसलमानो! तुम कमज़ोर पड़ कर सुलह की दअ़वत ना दो, तुम ही सर बुलन्द रहोगे, अल्लाह तुम्हारे साथ है।

5. وَ اِذَا سَأَلَكَ عِبَادِىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ. (آیت۱۸۶،سورت البقرة۲)

तर्जुमा: ऐ हुज़ूर स0अ0व0 जब आप से मेरा बन्दा पूछता है, तो कह दो कि मैं बहुत क़रीब हूं।

6. وَ نَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ.

(آیت۱۶،ق۵۰)

तर्जुमा: और इन्सान के दिल में जो ख़्यालात आते हैं उन तक से हम ख़ूब वाक़िफ़ हैं और हम उस की शह रग से भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं।

इस आयत में है कि इन्सान के शह रग से भी ज़्यादा क़रीब हूं।

7. وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ. (آیت۱۱۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: मश्रिक़ और मग़रिब सब अल्लाह ही की हैं इस लिए जिस तरफ भी तुम रूख़ करागे वहीं अल्लाह का रूख़ होगा, बेशक अल्लाह बहुत वुसअ़त वाला है, बड़ा इल्म रखने वाला है।

इन सात आयतों से पता चलता है कि अल्लाह हर जगह मौजूद है, लेकिन बग़ैर मकान और बग़ैर कैफ़ियत के है।

यह जमाअ़त एक नुक्ता भी उठाती है कि अगर हम अल्लाह को अ़र्श पर मुस्तवा मान लें और यह कहें कि अल्लाह अ़र्श पर मुस्तवा है तो यह इश्काल होगा कि अ़र्श बनाने से पहले अैल्लाह कहां थे?

(2) दूसरी जमाअ़त

दूसरी जमाअ़त की राये यह है कि अल्लाह अपनी शान के मुताबिक़ अ़र्श पर है। लेकिन किस कैफ़ियत से है वो इस के बारे में बहस नहीं करती, क्योंकि अल्लाह जहत से और कैफ़ियत से बिल्कुल पाक है। वो फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने सात आयतों में कह दिया कि अल्लाह अ़र्श पर है तो हम इस को मान लेते हैं और इन की आयतों पर ईमान रखते हैं और इस की कोई तावील करना मुनासिब नहीं समझते। यह हज़रात ऊपर की सात आयतें जिन में है कि अल्लाह हर जगह है यह जवाब देते हैं कि अल्लाह इल्म व बसीरत और कुदरत के साथ हर जगह हैं। इन की दलील यह सात आयतें हैं:

8. اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى. (آیت۵،سورت طٰہٰ۲۰)

तर्जुमा: वो बड़ी रहमत वाला अ़र्श पर अस्तवा फ़रमाऐ हुए हैं।

9. اِنَّ رَبَّکُمُ اللّٰہُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فِیْ سِتَّۃِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۔ (آیت۵۴،سورت الاعراف۷)

तर्जुमा: यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार वो अल्लाह है, जिस ने सारे आसमान और ज़मीन छः दिन में पैदा किया फिर इस ने अ़र्श पर अस्तवा फ़रमाया।

10. اِنَّ رَبَّکُمُ اللّٰہُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فِیْ سِتَّۃِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۔ (آیت۳،سورت یونس۱۰)

तर्जुमा: यक़ीनन तुम्हारा परवरदिगार वो अल्लाह है जिस ने सारे आसमान और ज़मीन छः दिन में पैदा किया फिर इस ने अ़र्श पर असतवा फ़रमाया।

11. اَللّٰہُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَہَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۔ (آیت۲،سورت الرعد۱۳)

तर्जुमा: अल्लाह वो है जिस ने ऐसे सुतूनों के बग़ैर आसमानों को बुलन्द किया जो तुम्हें नज़र आ सकें फिर इस ने अ़र्श पर असतवा फ़रमाा।

12. اَلَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَہُمَا فِی سِتَّۃِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۔ (آیت۵۹،سورت الفرقان۲۵)

तर्जुमा: वो अललाह जिस ने छः दिन में सारे आसमान और ज़मीन और इन के दरमियान की चीज़ें पैदा कीं, फिर उस ने अ़र्श पर असतवा फ़रमाया।

13. اَللّٰہُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَہُمَا فِی سِتَّۃِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۔ (آیت۴،سورت السجدۃ۳۲)

तर्जुमा: अल्लाह वो है जिस ने सारे आसमान और ज़मीन और जो इन के दरमियान में हैं छः दिन में पैदा किया फिर उस ने अ़र्श पर असतवा फ़रमाया।

14. هُوَالَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فِی سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ. (آیت۴،سورت الحدید۵۷)

तर्जुमा: वही है जिस ने सारे आसमान और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर उस ने अ़र्श पर असतवा फ़रमाया।

इन सात आयतों में है कि अल्लाह ने अ़र्श पर असतवा फ़रमाया: इस लिए यह दूसरी जमाअ़त इस बात की क़ाइल हुई कि अल्लाह अ़र्श पर मुस्तवा है, बाक़ी किस अन्दाज़ में है यह मालूम नहीं, बस अल्लाह की शान के मुताबिक़ मुस्तवा है।

लुग़त: **استوی** अ़रबी लफ़ज़ है इस का मअ़नी है सीधा होना, क़ायम होना, क़ाबू पाना और बाज़ औक़ात इस के मअ़नी, बैठने के भी होते हैं, यह लफ़ज़ मुशतबहात में से है इस लिए अल्लाह के लिए इस का कोई मअ़नी मुतअ़य्यन करना मुश्किल है, क्योंकि वो सीधा खड़े होने और क़ायम होने से पाक है, वो किसी कैफ़ियत से भी पाक है।

अ़र्श एक बहुत बड़ी मख़्लूक़ है

15. اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمُ . (آیت۲۶،سورت النمل۲۷)

तर्जुमा: अल्लाह वो है जिस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और जो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

16. لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ . (آیت۱۲۹،سورت التوبۃ۹)

तर्जुमा: इस के सिवा कोई माबूद नहीं है इसी पर मैंने भरौसा किया है और वही अ़र्श अ़ज़ीम का मालिक है।

यह आयतें और बहुत सी आयतों से मालूम हुआ कि अ़र्श एक बड़ी और अ़जीम मख़्लूक़ है, जिस को अल्लाह ने पैदा किया है।

कुर्सी

कुर्सी भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ है, लेकिन अ़र्श के मुक़ाबले पर कुर्सी की हैसियत बहुत कम है, जैसे सहरा में एक

कड़ा ड़ाल दिया गया हो, तो सहरा के मुक़ाबले में लोहे के हलक़े की कोई हैसियत नहीं रहती, इसी तरह अ़र्श के मुक़ाबले में कुर्सी की कोई ख़ास हैसियत बाक़ी नहीं रहती बाक़ी यह कैसी है अल्लाह ही जाने लेकिन यह कुर्सी फिर भी इतनी बड़ी है कि तमाम ज़मीन और आसमान को घैरे हुई है। इस आयत में कुर्सी का सबूत है।

17. وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَ لَا يَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ . (آیت،۲۵۵سورت البقرة۲)

तर्जुमा: इस की कुर्सी ने सारे आसमानों और ज़मीन को घैरा हुआ है और इन दोनों की निगहबानी से इसे ज़रा भी बोझ नहीं होता और वो बड़ा आ़ली मक़ाम अ़ज़मत वाला है।

(3) तीसरी जमाअ़त

तीसरी जमाअ़त की राये यह है कि अल्लाह कायनात में इल्म, कुदरत, और बसीरत के साथ है, ज़ात के साथ कायनात में नहीं है, बाक़ी कहां है इस बारे में वो ख़ामौश है। इन की दलीलें यह हैं:

वो फ़रमाते हैं कि कायनात अल्लाह ही का पैदा करदह है, तो वो कायनात में कैसे होंगे।

दूसरी बात यह है कि कायनात फ़ानी है, पस अगर अल्लाह की ज़ात इस में मौजूद हो तो अल्लाह की ज़ात भी फ़ानी हो जायेगी इस लिए यह कहा जाये कि इल्म व बसीरत के ऐतबार से अल्लाह कायनात में है।

इन की आयतें यह हैं:

18. وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطاً . (آیت۱۲۶،سورت النساء۴)

तर्जुमा: और अल्लाह ने हर चीज़ को अपनी कुदरत के इहाते में लिया हुआ है।

19. اَلَا اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٍ . (آیت۵۴،سورت فصلت۴۱)

तर्जुमा: याद रखो कि अल्लाह हर चीज़ को इहाते में लिए हुए है।

20.وَ اللّٰهُ بِمَا يَعْلَمُوْنَ مُحِيْطٌ . (آیت ۴۷،سورت الانفال ۸)

तर्जुमा: जो कुछ तुम करते हा अल्लाह सारे को इहाते में लिए हुए है।

इन तीन आयतों में है कि अल्लाह सब चीज़ को इहाते में लिए है, इस लिए वो इल्म के ऐतबार से कायनात में है, ज़ात के ऐतबार से नहीं।

21. يُحْيِىْ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ . (آیت ۲،سورت الحدید ۵۷)

तर्जुमा: अल्लाह ही ज़िन्दगी बख़्शता है और मौत देता है और वो हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है।

22.بَلٰى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ .(آیت ۳۳،سورت الاحقاف ۴۶)

तर्जुमा: वो बेशक हर चीज़ की पूरी कुदरत रखने वाला है।

23.تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ .

(آیت ۱،سورت الملک ۶۷)

तर्जुमा: बड़ी शान है इस ज़ात की जिस के हाथ में सारी बादशाही है, और वो हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है।

24.وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَاءُ عَقِيْمًا اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ .(۵۰،سورت الشوری ۴۲)

तर्जुमा: और जिस को चाहता है बांझ बना देता है, यक़ीनन वो बहुत जानने वाला भी, बहुत कुदरत वाला भी है।

इन सात आयतों में है कि अल्लाह इल्म कुदरत और मिल्कियत के ऐतबार से पूरी कायनात को घैरे हुआ है। इस लिए यह तीसरी जमाअ़त कहती है कि अल्लाह इल्म, कुदरत, और बसीरत के ऐतबार से कायनात में मौजूद है, ज़ात के ऐतबार से नहीं।

(4) चौथी जमाअ़त

चौथी जमाअ़त की राये यह है कि अल्लाह अपनी शान के मुताबिक़ बुलन्दी पर है, यह जमाअ़त कोई बड़ी नहीं है अल्लाह कितनी बुलन्दी पर है वो इस बारे में कोई तअ़य्युन नहीं करती, लेकिन इन की शान के लिहाज़ से वो बुलन्दी पर है। इन की दलील यह आयतें हैं:

25.يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ . (آیت۵۰،سورت النحل۱۶)

तर्जुमा: वो अपने रब से डरते हैं, जो इन के ऊपर हैं और वही काम करते हैं जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है।

26.اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَ الْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ . (آیت۱۰،سورت فاطر۳۵)

तर्जुमा: पाकीज़ा कलिमा इसी की तरफ़ चढ़ता है और नेक अ़मल इस को ऊपर उठाता हे।

27.مِنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ، تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَ الرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ . (آیت۴،سورت المعارج ۷۰)

तर्जुमा: वो अ़ज़ाब अल्लाह की तरफ़ से आयेगा जो चढ़ने के तमाम रास्तों का मालिक है, फ़रिश्ते और रूह उल क़ुदुस इस की तरफ़ एक ऐसे दिन में चढ़ कर जाते हैं जिस की मिक़्दार पचास हज़ार साल है।

28.يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ . (آیت۵،سورت السجدۃ۳۲)

तर्जुमा: वो आसमान से ले कर ज़मीन तक हर काम का इन्तज़ाम करता है, फिर वो काम एक ऐसे दिन में इस के पास ऊपर पहुंच जाता है जिस की मिक़्दार तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल होती है।

इन चार आयतों में इस का इशारा है कि अल्लाह बुलन्दी पर है।

1.عن ابی هريرة ان رسول الله ﷺ قال ينزل ربنا عز و جل كل ليلة الى سماء الدنيا حين يبقى ثلث الليل الآخر . (ابو داود شريف ، كتاب التطوع ، باب اى الليل افضل ، ص ١٩٧ ، نمبر ١٣١٥) .

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हमारा रब हर रात में जब तीन पहर बाक़ी रह जाता है तो समा दुनिया की तरफ़ उतरता है।

इस हदीस के इशारे से भी पता चलता है कि अल्लाह बुलन्दी पर है। इस लिए इस चौथी जमाअ़त की राये यह है कि अल्लाह बुलन्दी पर है, बाक़ी किस कैफ़ियत में है इस बारे में हम बहस नहीं करते, बस अपनी शान के मुताबिक़ है।

(5) पांचवीं जमाअ़त

अल्लाह तआ़ला अपनी शान के मुताबिक़ आसमान पर है। यह कोई बड़ी जमाअ़त नहीं है बल्कि कुछ लोगों की राये है और यह राये ऊपर की राये के क़रीब है। इन की दलील यह हदीस है:

2.عن معاوية بن الحكم السلمى قال بينا انا اصلى مع رسول الله ﷺ ...قال و كانت لى جارية ترعى غنما لى ...قال ائتنى بها فأتيته بها فقال لها ، اين الله ؟ ، قالت فى السماء ، قال من انا قالت انت رسول الله ، قال اعتقها فانهامؤمنة . (مسلم شريف ، كتاب المساجد ، باب تحريم الكلام فى الصلاة و نسخ ما كان من اباحته . ص ٢١٨ ، نمبر ٥٣٧ / ١١٩٩)

तर्जुमाः हम लोग नमाज़ पढ़ रहे थे......मेरे पास एक बान्दी थी, जो मेरी बकरी चराती थी......हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि बान्दी को मेरे पास लाओ, तो हम बान्दी को हुज़ूर स0अ0व0 के पास लाये, तो आप स0अ0व0 ने बान्दी से पूछा कि अल्लाह कहां है? बान्दी ने कहा, आस्मान में, फिर पूछा कि मैं कौन हूं, बान्दी ने कहा आप अल्लाह के रसूल हैं, हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि

इस बान्दी को आज़ाद कर दो यह मौमिना है।

इस हदीस में है कि बान्दी ने कहा कि अल्लाह आसमान में हैं, तो आप स0अ0व0 ने इस को क़बूल फ़रमाया, इस लिए इस जमाअ़त की राये हे कि अल्लाह आस्मान पर है, अब किस कैफ़ियत में है इस बारे में वो बहस नहीं करती, बस इस की शान के मुताबिक़ है।

(6) छटी जमाअ़त

छटी जमाअ़त की राये यह है कि अस्तवा अ़लल अ़र्श अल्लाह कहां है, अल्लाह का चेहरा, अल्लाह का हाथ, अल्लाह का क़दम, अल्लाह की उंगली, अल्लाह का नुजूल, यह सब मुतशाबिहात में से हैं, इस लिए इन के बारे में यह कहा जाये कि इन का मअ़नी मालूम है, लेकिन कैफ़ियत मालूम नहीं है, इस पर ईमान रखना वाजिब है, और इन के बारे में बहस करना बिदअ़त है, इस लिए इस के बारे में चुप रहना ही बेहतर है।

इन के यहां हज़रत इमाम मालिक रह0 का यह क़ौल बहुत मशहूर है:

سمعت یحی بن یحی یقول کنا عند مالک بن انس فجاء رجل فقال یا ابا عبد اللہ ، الرحمن علی العرش الستوی (آیت ۵، سورت طه) کیف استوی ، قال فاطرق مالک رأسه حتی علاہ الرحضاء ثم قال الاستوی غیر مجھول ، و الکیف غیر معقول ،و الایمان به واجب ، و السوال عنه بدعة ، و ما اراک الا مبتدعا ، فامر به ان یخرج ، قال الشیخ : و علی مثل ھذا درج اکثر علمائنا فی مسئلة الاستوی ، و فی مسئلة المجی ، و الاتیام ، و النزول . (اسماء و الصفات ، للبیھقی ، کتاب الاعتقاد للبیھقی ، باب القول فی الاستوی، ج ۱، ص ۱۱٦ / شرح فقه اکبر ، ص ۷۰)

तर्जुमा: हम मालिक बिन अनस रज़ि0 के पास मौजूद थे एक

आदमी आया और कहने लगा कि ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! रहमान तो अ़र्श पर मुस्तवा है, तो अस्तवा की कैफ़ियत है? हज़रत मालिक रह0 ने अपना सर नीचा किया, यहां तक कि इन पर पसीना आ गया, फिर उन्होंने फ़रमाया कि अस्तवा के मअ़नी मजहूल नहीं है, इस की कैफ़ियत समझ में नहीं आता, इस पर ईमान रखना वाजिब है और इस के बारे में सवाल करना बिदअ़त है, फिर फ़रमाया कि मैं समझता हूं कि यह आदमी बिदअ़ती है, इस लिए इस आदमी को निकाल देन का हुक्म दिया, शैख़ फ़रमाते हैं हमारे उ़लमा ने अल्लाह के आने का इतयाम, का और उतरने के मामले को भी, इसी अस्तवा में ही शामिल किये हैं (यानी इस के बारे में में भी सवाल करना बिदअ़त है)।

इस इबारत में यहां तक है कि हज़रत इमाम मालिक रह0 ने असतवा के बारे में सवाल करने वाले को बिदअ़ती कहा और इस को कमरे से निकाल दिया।

इन की दलील यह आयत है:

29. هُوَ الَّذِیْ اَنْزَلَ عَلَیْکَ الْکِتَابُ مِنْهُ اٰیَاتٌ مُحْکَمَاتٌ هُنَّ اُمُّ الْکِتَابِ وَاُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ، فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَاءَ تَأْوِیْلَهٗ وَ مَا یَعْلَمُ تَأْوِیْلَهٗ اِلَّا اللّٰهُ وَ الرَّاسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ کُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَ مَا یَذْکُرُ اِلَا اُوْلُوْا اَلْبَابُ . (آیت ۷ سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: ऐ रसूल वही अल्लाह है, जिस ने तुम पर किताब नाज़िल की है, जिस की कुछ आयतें तो महकम हैं, जिन पर किताब की असल बुनियाद है, और कुछ दूसरी आयतें मुतशाबा हैं, अब जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वो इन मुतशाबा आयतों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि फ़ितना पैदा करें और इन आयतों की तावीलात तलाश करें हालांकि इन आयतों का ठीक ठीक मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और जिन लोगों का इल्म पुख़्ता है वो यह कहते हैं कि हम इस मतलब पर ईमान लाते हैं

जो अल्लाह को मालूम है, सब कुछ हमारे रब ही की तरफ़ से है और नसीहत वही लोग हासिल करते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं।

इस आयत में नसीहत की गई है कि मुतशाबेहा अल्फ़ाज़ के पीछे ना पड़ें, बल्कि ऐसे मौक़े पर इन आयतों पर ईमान रखें और चुप रहें, इस लिए हम अस्तवा की तहक़ीक़ में नहीं पड़ते, बल्कि चुप रहते हैं।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० की राये

इस बारे में इमाम अबू हनीफा रह० की राये ये है कि यूँ कहा जाऐ कि इसका मानी मालूम है, लेकिन केफियत मालूम नहीं है, कियों कि केफियत का इलम हमें नहीं है, शरह फिक़्हे अकबर जो इमाम अबू हनीफा की मशहूर किताब है उसकी इबारत ये है।

و لـه يـد و وجه و نفس كما ذكره الله تعالى فى القرآن ، فما ذكره الله تعالى فى القرآن من ذكر الوجه و اليد و النفس فهو له صفات بلا كيف ، و لا يقال: ان يده قدرته او نعمته لان فيه ابطال الصفة و هو قول اهل القدر و الاعتزال ، و لكن يده صفته بلا كيف، وغضبه و رضاه صفتان تعالى بلا كيف . (شرح كتاب الفقه الاكبر ، ص ٦٢.٦٨)

तर्जुमा: अल्लाह के लिये हाथ, चेहरा, नफस, जैसा कि कुरआन में जिकर है (इस पर ईमान रख्खे) पस अल्लाह तआला ने कुरआन में जो जिकर किया है, चेहरा, हाथ, नफस, तो ये अल्लाह की सिफत है, लेकिन बगैर केफियत के है। और ये ना कहा जाऐ कि अल्लाह के हाथ का मतलब उसकी कुदरत है, या अल्लाह की नेमत है, इस लिये कि उस तावील करने में अल्लाह की सिफत को बातिल करना है, क़दरिया और मोतज़िला जमात की राये यही है कि (अल्लाह का हाथ का मतलब उसकी कुदरत या उसकी नेमत है) लेकिन असल बात ये है कि अल्लाह के हाथ का मतलब

है, उसकी सिफत, लेकिन बगैर केफियत के अल्लाह का गुस्सा और अल्लाह की रज़ामन्दी दोनों अल्लाह की सिफतें हें, लेकिन बगैर केफियत के।

और शारिहीन ने, الرحمن على العرش استوى को भी उसी में दाखिल किया है कि استوى का मआनी मालूम है, लेकिन किस केफियत में अल्लाह ने अर्श पर असतवा किया है ये मालूम नहीं है और ना किसी आयत, या हदीस से उसकी केफियत का पता चलता हैध इस लिये ये मुताशाबिहात में से है इस लिये इस पर खामूश ही रहना चाहिये।

इमाम ग़ज़ाली रह० की राये

इमाम ग़ज़ाली रह0 ने फ़रमाया कि अस्तवा का तर्जुमा अ़र्श पर मुस्तक़र होने, या बैठने का नहीं है, बल्कि इस का तर्जुमा है अ़र्श की हिफ़ाज़त, अ़र्श पर क़ब्ज़ा किया, अ़र्श को बाक़ी रखा, अगर "على العرش استوى" का तर्जुमा अ़र्श की हिफ़ाज़त की, अ़र्श पर क़ब्ज़ा किया, अ़र्श को बाक़ी रखा, किया जाये तो इस में अल्लाह की कैफ़ियत नहीं आती, इस लिए इस तर्जुमे में कैफ़ियत की बहस करने की ज़रूरत नहीं है इन की इबारत यह है:

अस्तवा का मफ़हूम यह बयान किया गया है: "عَلَى العرش استوى" قهر، حفظ وابقى (क़वाइदुल अक़ाइद स:167) अ़र्श पर मुस्तवी हुए, यानी इस पर क़ाहिर हुए, इस की हिफ़ाज़त की, और इस को बाक़ी रखा, उन्होंने यह तर्जुमा नहीं किया कि अल्लाह अ़र्श पर मुस्तक़र हुए, या मुस्तवा हुए।

इमाम तहावी रह० का मसलक

इमाम तहावी रह0 ने यह मसलक इख़तयार किया है कि अ़र्श और कुर्सी हक़ है, लेकिन अल्लाह और कुर्सी से बेनियाज़ है, इन की इबारत यह है:

و العرش و الكرسى حق، و هو عزو جل مستغنى عن العرش و ما دونه .

(العقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ۴۹. ۵۰، ص ۱۳)

तर्जुमा: अ़र्श और कुसी हक़ है, लेकिन अल्लाह तआ़ला अ़र्श और कुर्सी से बेनियाज़ है।

यह 6 जमाअ़तें और 4 बुज़ुर्गों की राये आप के सामने हैं, आप ख़ुद भी ग़ौर करें।

यह अल्फ़ाज़ भी मुतशाबिहात में से हैं

(1) अस्तवा अ़लल अ़र्श के अ़लावा यह 9 अल्फ़ाज़ भी मुतशाबिहात में से हैं। अभी ऊपर आयत गुज़री।

ليس كمثله شيء . (آیت۱۱،سورت الشوری۴۲)

तर्जुमा: कोई चीज़ अल्लाह के मिस्ल नहीं।

इस लिए कि अल्लाह का हाथ, चेहरा वग़ैरह हमारे हाथ चेहरे की तरह नहीं हो सकते, इन का हक़ीक़ी मअ़नी अल्लाह ही को मालूम है, इस लिए यह अल्फ़ाज़ और आ़ज़ा मुतशाबिहात में से हैं, और मुतशाबिहात में ज़्यादा घुसने से आयत में मना फ़रमाया है, इस लिए इन अल्फ़ाज़ पर ईमान रखे और ज़्यादा घुसने से एहतराज़ करे।

मुफ़स्सिर हज़रात ने मौक़ा महल के ऐतबार से इन अल्फ़ाज़ का तर्जुमा किया है, जो हक़ीक़ी तर्जुमा तो नहीं है, लेकिन लोगों को समझाने के लिए इन जुम्लों का क़रीब क़रीब मफ़हूम बयान करने की कौशिश की है। वो 9 आ़ज़ा यह हैं:

1– अल्लाह का हाथ।

2– अल्लाह का चेहरा, वजह अल्लाह।

3– अल्लाह का नफ़्स।

4–अल्लाह की आंख।

5– दाऐं हाथ।

6– उंगली।

7– क़दम।

8– अल्लाह का उतरना।

9– हज़रत आदम अलैहि0 को अपनी सूरत पर पैदा करना।

(1) अल्लाह का हाथ के लिए यह आयतें हैं:

30. وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَ لُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوْطَتَانِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ . (آیت۶۴ سورت المائدة۵)

तर्जुमा: और यहूदी कहते हैं कि अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं, हाथ तो ख़ुद उन के बंधे हुए हैं, और जो बात उन्होंने कही हे उस की वजह से उन पर लअ़नत अलग पड़ी वरना अल्लाह के दोनों हाथ पूरी तरह कुशादा हैं, वो जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है।

31. اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ، يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ .

(آیت۱۰، الفتح۴۸)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर जो लोग तुम से बैअ़त कर रहे हैं, वो दरहक़ीक़त अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं अल्लाह का हाथ उन के हाथों पर है।

32. فَسُبْحَانَ الَّذِیْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ . (آیت ۸۳، سورت یٰسین ۳۶)

तर्जुमा: ग़र्ज़ पाक है वो ज़ात जिस के हाथ में हर चीज़ की हुकूमत है।

इन तीन आयतों में अल्लाह के हाथ का ज़िक्र है।

(2) अल्लाह का वजह यानी चेहरे के लिए यह आयतें हैं:

33. وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ . (آیت۱۱۵، سورت البقرة۲)

तर्जुमा: और मश्रिक़ और मग़रिब सब अल्लाह ही की हैं, लिहाज़ा जिस तरफ़ भी तुम रूख़ करोगे वहीं अल्लाह का रूख़ होगा बेशक अल्लाह बहुत वुसअ़त वाला बड़ा इल्म रखने वाला है।

34.وَ مَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ خَیۡرٍ فَلِاَنۡفُسِکُمۡ ، وَ مَا تُنۡفِقُوۡنَ اِلَّا ابۡتِغَاءَ وَجۡهُ اللّٰهِ .

(آیت۲۷۲،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: और जो माल भी तुम ख़र्च करते हो वो तुम्हारे लिए फ़ायदे के लिए होता है, जब कि तुम अल्लाह की ख़ुशनुदी हासिल करने के सिवा किसी और ग़र्ज़ से ख़र्च नहीं करते हो।

35.وَ مَا اٰتَیۡتُمۡ مِنۡ زَکٰوۃٍ تُرِیۡدُوۡنَ وَجۡهُ اللّٰهِ فَاُوۡلٰٓئِکَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ .

(آیت۳۹،سورت الروم۳۰)

तर्जुमा: और जो ज़कात तुम अल्लाह की ख़ुशनुदी हासिल करने के इरादे से देते हो, तो जो लोग भी ऐसा करते हैं वो हैं जो अपने माल को कई गुना बढ़ा लेते हैं।

इन तीनों आयतों में अल्लाह की वजह, यानी चेहरे का ज़िक्र है।

(3) नफ़्स के लिए यह आयत है:

36.تَعۡلَمُ مَا فِیۡ نَفۡسِیۡ وَ لَاۤ اَعۡلَمُ مَا فِیۡ نَفۡسِکَ .(آیت۱۱۶،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमा: आप वो बातें जानते हैं जो मेरे दिल में पौशीदा हैं, और मैं आप की पौशीदा बातों को नहीं जानता......इस आयत में नफ़्स का ज़िक्र है।

(4) आंख के लिए यह आयत है:

37.وَ لِتُصۡنَعَ عَلٰی عَیۡنِیۡ .(آیت۳۹،سورت طہ ۲۰)

तर्जुमा: और यह सब इस लिए किया था ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ, यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था।

इस आयत में ऐन, यानी आंख का ज़िक्र है।

(5) यमीन के यानी दाऐं हाथ के लिए यह आयत है:

38.وَ السَّمٰوٰتُ مَطۡوِیّٰتٌۢ بِیَمِیۡنِهٖ .(آیت۶۷،سورت الزمر۳۹)

तर्जुमा: और सारे के सारे आसमान इस के दाऐं हाथ में लेटे हुए होंगे।

(6) उंगली के लिए यह हदीस है:

3.ان قلوب بنی آدم کلها بین اصبعین من اصابع الرحمن .(مسند احمد، مسند عبد الله بن عمر بن العاص ،ج ١١، ص ١٣٠، نمبر ٦٥٦٩)

तर्जुमा: तमाम इब्ने आदम के दिल रहमान की उंगलियों में हैं।

इस हदीस में अल्लाह की उंगलियों का ज़िक्र है।

(7) क़दम के लिए यह हदीस है:

4.عن ابی هریرة ...یقال لجهنم هل امتلأت و تقول هل من مزید ؟ فیضع الرب تبارک و تعالی قدمه علیها فتقول قط قط (بخاری شریف ، کتاب سورة ق، اب قوله و تقول هل من مزید ، ص ٨٥٨، نمبر ٤٨٤٩)

तर्जुमा: जहन्नुम से पूछा जायेगा क्या तुम भर गई? तो जहन्नुम कहेगी कि और भी दें तो अल्लाह इस पर अपने क़दम को रख देंगे, तो जहन्नुम कहने लगेगी, बस बस......इस हदीस में अल्लाह के कदम का सबूत है।

(8) उतरने के लिए यह हदीस है:

5.عن ابی هریرة ان رسول الله ﷺ قال ینزل ربنا عز و جل کل لیلة الی سماء الدنیا حین یبقی ثلث اللیل الآخر . (ابو داود شریف ، کتاب التطوع ، باب ای اللیل افضل ، ص ١٩٧ ، نمبر ١٣١٥)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हमारा रब हर रात में, जब तीन पहर बाक़ी रह जाता है तो समा दुनिया की तरफ़ उतरता है......इस हदीस में अल्लाह के उतरने का सबूत है।

(9)......हज़रत आदम अलैहि0 को अल्लाह ने अपनी सूरत पर पैदा किया है:

6. عن ابی هریرة عین النبی ﷺ قال خلق الله آدم علی صورته طوله ستون ذراعا .(بخاری شریف ، کتاب لاستئذان ، باب بدء السلام ، ص

۱۰۸۴ نمبر ۲۲۲۷/ ۶۲۲۲ مسلم شریف ، کتاب الجنة و نعیمها ، باب یدخل الجنة اقوام أ فئدتهم مثل أفئدة الطیر ، ص ۱۲۳۴ ، نمبر ۲۸۴۱/ ۷۱۶۳)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने आदम अलैहि0 को अपनी सूरत पर पैदा किया, इन की ऊंचाई साठ हाथ थी।

इस हदीस में है कि हज़रत आदम अलैहि0 को अल्लाह ने अपनी सूरत पर पैदा किया है। यह अल्फ़ाज़ मुतशाबिहात में से हैं, इस के अन्दर के मअ़नी निकालने में ज़्यादा ना पड़ें।

इस अ़क़ीदे के बारे में 38 आयतें और 6 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(28) क़लम क्या चीज़ है

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और 2 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

कुरआन और हदीस से मालूम होता है कि अल्लाह ने लिखने के लिए क़लम पैदा किया और इस को लिखने के लिए कहा, तो इस ने वो तमाम चीज़ें लिख दीं जो इस को लिखने के लिए कहा गया, लेकिन इस की कैफ़ियत क्या है यह मालूम नहीं है, यह अल्लाह ही जाने। इस के लिए आयतें यह हैं:

1. نٓ وَ الْقَلَمُ وَ مَا يَسْطُرُوْنَ . (آیت ۱، سورت القلم ۶۸)

तर्जुमाः नून, ऐ पैग़म्बर क़सम है क़लम की, और उस चीज़ को जो लिख रहे हैं।

2. اِقْرَءَ وَ رَبُّکَ الْاَکْرَمُ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ . (آیت ۴، سورت العلق ۹۶)

तर्जुमाः पढ़ो और तुम्हारा रब सब से ज़्यादा करम वाला है, जिस ने क़लम से तालीम दी।

1. قال عبادہ بن الصامت لابنه .....سمعت رسول الله ﷺ یقول ، ان اول ما خلق الله تعالی القلم ، فقال له اکتب فقال رب و ما ذا اکتب ؟ قال

اکتب مقادیر کل شیء حتی تقوم الساعة ، یا بنی انی سمعت رسول اللہ ﷺ یقول من مات علی غیر ھذا فلیس منی . (ابو داود شریف ، کتاب السنة ، باب فی القدر ، ص ۶۶۴ ، نمبر ۴۷۰۰/ ترمذی شریف ، کتاب القدر ، باب اعظام امر الایمان بالقدر ، ص ۴۹۵، نمبر ۲۱۵۵)

तर्जुमा: हज़रत इबादा बिन साबित रज़ि0 ने अपने बेटे से कहा......हुज़ूर स0अ0व0 से मैंने कहते हए सुना अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले क़लम को पैदा किया, उस से कहा कि लिखो, क़लम ने कहा मेरे रब मैं क्या लिखूं? अल्लाह ने फ़रमाया कि क़यामत के क़ायम होने के तक हर चीज़ की तक़दीर लिखो, फिर हज़रत इबादा बिन सामित ने कहा ऐ बेटे मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से यह सुना है जो इस तक़दीर के अ़लावा पर मरेगा वो मुझ में से नहीं हे, यानी मुसलमान नहीं है।

इन आयतों और हदीस से पता चला कि क़लम अल्लाह की कोई ख़ास चीज़ है जिस को सब से पहले पैदा किया और क़यामत तक और इस के बाद आने वाली तमाम बातों को लिखने का हुक्म दिया और क़लम ने इन तमाम बातों को लिख दिया, लेकिन यह क़लम हमारे क़लम की तरह नहीं है, यह कैसा है इस को अल्लाह ही जानता है।

लोह क्या चीज़ है

लोह का मअ़नी तख़ती के है, लेकिन यह कैसा लोह है इस को अल्लाह ही जानता है, श्यातीन और जिन्नात इस लोह तक नहीं पहुंच सकते कि इस में तब्दीली या तहरीफ़ कर सकें, इसी लोह में कुरआन करीम महफ़ूज़ था, और अभी भी है, इस से निकाल कर के हुज़ूर पाक स0अ0व0 पर उतारा गया जो आज हमारे सामने मौजूद है।

3.بَلْ ھُوَ قُرْآنٌ مَجِیْدٌ فِیْ لَوْحٍ مَحْفُوْظٍ . (آیت۲۲،سورت البروج۸۵)

तर्जुमा: बल्कि यह बड़ी अ़ज़मत वाला कुरआन है जो लोहे महफ़ूज़ में दर्ज है।

4.اِنَّهٗ لَقُرْآنٌ کَرِیْمٌ فِیْ کِتَابٍ مَکْنُوْنٍ . (آیت ۷۷،سورت الواقعہ ۵۶)

तर्जुमा: यह बड़ा बावक़ार क़ुरआन है जो एक महफ़ूज़ किताब में पहले से दर्ज है।

2.عن عمران ن حصين قال قال رسول الله ﷺ ...قال كان الله قبل كل شيء ، و كان عرشه على الماء ، و كتب فى اللوح ذكر كل شيء . (مسند احمد ، حديث عمران بن حصين ، ج ٣٣، ص ١٠٧ ، نمبر ١٩٨٧٦)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि सब से पहले अल्लाह था, और अल्लाह का अ़र्श पानी पर था और हर चीज़ का ज़िक्र लोहे महफ़ूज़ में लिख दिया।

इन आयात और हदीस से पता चला कि कुरआन लोहे महफ़ूज़ में था, वहां से फिर हुजूर स0अ0व0 पर उतारा गया और यह भी पता चला कि लोहे महफ़ूज़ में हर चीज़ का ज़िक्र है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और 2 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(29) ईमान की तफ़सील

इस अ़क़ीदे के बारे में 14 आयतें और 6 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

छः चीज़ों पर ईमान हो तो आदमी को मौमिन क़रार दिया जायेगा

इन छः चीज़ों में से किसी एक का इन्कार करेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा, लेकिन अगर इन छः चीज़ों में से किसी एक का इन्कार नहीं करेगा तो वो काफ़िर नहीं होगा, वो मुसलमान ही रहेगा, इस लिए ज़रा ज़रा सी बात पर कुफ़्र का फ़तवा देना जायज़ नहीं है।

1– अल्लाह पर ईमान हो।

2– रसूल पर ईमान हो।

3– किताब यानी कुरआन करीम पर ईमान हो।

4– फ़रिश्ते पर ईमान हो।

5– आख़िरत के दिन पर ईमान हो।

6– और तक़दीर पर ईमान हो तो वो मौमिन है।

अक़ीदतुल तहाविया में है कि इन छः चीज़ों पर ईमान होना ज़रूरी है

و الايمان ، هو الايمان بالله ، و ملائكته ، و كتبه ، و رسله ، و اليوم الآخر ، و القدر خيره و شره ، و حلوه و مره. (عقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ٦٢ ، ص ١٥)

तर्जुमा: अल्लाह पर ईमान हो, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर, इस के रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, तक़दीर पर कि ख़ैर और शर, अच्छा और ख़राब सब अल्लाह की जानिब से है, इस पर ईमान हो।

इस इबारत में है कि छः चीज़ों पर ईमान लाने से आदमी मौमिन बनता है।

इन छः बातों की दलील यह हैं। आयत यह है:

1. **اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ .** (آیت۲۸۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: यह रसूल (मौहम्मद स0अ0व0) इस चीज़ पर ईमान लाऐ हैं जो इन पर इन के रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है और इन के साथ तमाम मुसलमान भी इन चीज़ों पर ईमान लाते हैं, यह सब अल्लाह पर, इस के फ़रिश्तों पर, इस की किताबों पर, और इस के रसूलों पर ईमान लाऐ हैं, वो यह कहते हैं कि हम इन के रसूलों के दरमियान कोई तफ़रीक़ नहीं करते (कि किसी पर

ईमान लाएें और किसी पर ईमान ना लाएें)।

इस आयत में चार चीज़ों पर ईमान लाने का ज़िक्र है।

2.وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰئِكَةِ وَ الْكِتَابِ وَ النَّبِيِّيْنَ .

(آیت ۱۷۷، سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमा: बल्कि नेकी यह है कि लोग अल्लाह पर, आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, और अल्लाह की किताबों पर, और उस के नबियों पर ईमान लाऐं।

इस की दलील यह अहादीस हैं:

1. عن يحى ابن يعمر ...قال فاخبرنى عن الايمان ؟قال ان تومن بالله و ملائكته ، و كتبه ، و رسله ، و اليوم الآخر ، و تومن بالقدر خيره و شره قال صدقت . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، ص ٢٥ ، نمبر ٨/ ٩٣)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 से पूछा कि मुझे ईमान के बारे में बताऐ, तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह पर ईमान लाओ, इस के फ़रिश्तों पर, इस की किताबों पर, इस के रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, ख़ैर और शर अल्लाह की जानिब से है, इस तक़दीर पर ईमान लाओ, फ़रिश्ते ने कहा आप ने सच कहा।

2. عن ابى سعيد قال لقى رسول الله ﷺ ابن صائد فى بعض طرق المدينة ......فقال اتشهد انت انى رسول الله ؟ فقال النبى ﷺ آمنت بالله و ملائكته و كتبه و رسله و اليوم الآخر . (ترمذى شريف ، باب ما جاء فى ذكر ابن صياد ، ص ٥١٦، نمبر ٢٢٤٧)

तर्जुमा: मदीने के एक रास्ते में हुजूर स0अ0व0 की इब्ने साइद से मुलाक़ात हुई......इब्ने साइद ने कहा कि क्या आप इस बात की गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूं? तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं ईमान लाता हूं, अल्लाह पर, इस के फ़रिश्तों पर, इस की किताबों पर, इस के रसूलों पर, और आख़िरत के दिन पर।

इन आयात और अहादीस में छः चीज़ों पर ईमान लाने का ज़िक्र है, इस लिए इन छः चीज़ों पर ईमान लाऐगा तो मौमिन बनेगा वरना नहीं।

अल्लाह पर ईमान का मतलब

अल्लाह पर ईमान का मतलब यह है कि अल्लाह को एक माने।

काफ़िरः अब कोई अल्लाह को, ख़ालिक़ मानता ही नही है वो कहता है कि पूरी दुनिया ख़ुद बख़ुद पैदा हो गई है, जैसे दहरिया कहते हैं या इस ज़माने के नास्तिक कहते हैं, तो ऐसे आदमी को, काफ़िर, कहते हैं।

मुश्रिकः और अगर ख़ुदा को तो मानता है, दुनिया को पैदा करने वाला मानता है, लेकिन कई ख़ुदा मानता है तो इस को मुश्रिक कहते हैं, बाक़ी तफ़सील शिर्क की बहस में देखें।

किताब, कुरआन को मानने का मतलब

कुरआन को मानने की तीन सूरतें:

(1) कुरआन के मानने का मतलब यह है कि इस की हर हर आयत को माने कि यह अल्लाह की जानिब से उतरी हुई आयत है, इन में से एक आयत का भी इन्कार करेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा।

(2) सरीह आयत से कोई हुक्म साबित हो तो इस को मानना भी ज़रूरी है, इस से इन्कार करेगा तो काफ़िर हो जायेगा।

मसलनः नमाज़, रोज़ा, सरीह आयत से साबित है इस लिए इस का इन्कार करेगा मसलन यह कहे कि मैं नमाज़ को नहीं मानते या रोज़े को नहीं मानता तो वो काफ़िर हो जायेगा, क्योंकि इस ने आयत का इन्कार कर दिया। फ़िक़्हा की किताबों में इसी बात को कहा है कि उमूरे दीनिया का इन्कार करेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा, यानी वो उमूरे दीनिया जो सरीह आयत से साबित हो

तो इस को इन्कार करने से आयत का इन्कार करना लाज़िम आता है, इस लिए अब वो काफ़िर होगा। लेकिन कोई आदमी मानता है कि नमाज़ फ़र्ज़ है, रोज़ा फ़र्ज़ है, इस का इन्कार नहीं करता, लेकिन सुस्ती की वजह से नमाज़ नहीं पढ़ता, या रोज़ा नहीं रखता है तो यह अब काफ़िर नहीं होगा, अल्बत्ता इस को फ़ासिक़ कहा जायेगा।

मुग़लक़ आयत की तफ़सीर मानने का उसूल

(३) तीसरी सूरत यह है कि आयत मुग़लक़ है, इस का मअ़नी वाज़ह नहीं है और किसी सरीह हदीस में इस का मअ़नी बयान भी नहीं हुआ है, अब दो मुफ़स्सिरों ने दो मअ़ैनी बयान किये हैं, अब एक आदमी आयत को तो मानता है कि यह अल्लाह की जानिब से उतरी हुई आयत है, लेकिन एक तफ़सीर को मानता है और दूसरी तफ़सीर के ऐतबार से जो मअ़नी बनता है या दूसरी तफ़सीर के ऐतबार से जो हुक्म बनता है वो नहीं मानता है तब भी यह आदमी काफ़िर नहीं बनेगा, क्योंकि इस ने आयत को तो माना है, अल्बत्ता इस की मुग़लक़ तफ़सीर को नहीं माना, इस लिए वो काफ़िर नहीं बनेगा। यह उसूल याद रखना बहुत ज़रूरी है, वरना बहुत से मसलक वाले ऐसा करते हैं कि मुबहम आयत का मअ़नी अपनी तफ़सीर के ऐतबार से करते हैं, और दूसरे मसलक वाले इस को नहीं मानतमे हैं तो इस को काफ़िर क़रार दे देते हैं और इतना तशद्दुद करते हैं कि इस के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते हैं, और कोई इस का नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दे तो जनाज़ा पढ़ाने वाले, और जनाज़ा पढ़ने वाले सब को काफ़िर क़रार दे देते हैं और इन सब का निकाह तुड़वा देते हैं। इस नुक्ते पर ग़ौर करें कि ऐसे फ़तवा से मुसलमान कितने टुकड़ों में बट गये और आज मुसलमानों का क्या हशर बना हुआ है।

आयत के इन्कार से काफ़िर हो जायेगा इस के लिए आयतें यह हैं:

3.ان الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد (آیت۴،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, इन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

4.و من يكفر بآيات الله فان الله سريع الحساب (آیت۱۹،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: और जो शख़्स भी अल्लाह की आयतों को झुटलायेगा तो उसे याद रखना चाहिए कि अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

5.اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ .

(آیت۲۱،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: जो लोग अल्लाह की आयतों को झुटलाते हैं और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते हैं (उन को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दो)।

6.وَ لٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ . (آیت۳۳،سورت الانعام۶)

तर्जुमा: बल्कि यह ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं।

इन सारी आयतों में है कि जो अल्लाह की आयतों को नहीं मानेगा वो काफ़िर है। और आयत के इन्कार का मतलब पहले गुज़रा कि कुरआन की किसी आयत का इन्कार करे, या आयत से जो सरीह हुक्म साबित होता हो उस से इन्कार करने से आदमी काफ़िर बनेगा।

किताबों और रसूलों पर ईमान लाने का मतलब

आयत में وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ . (آیت۲۸۵،سورت البقرۃ۲) जमा का सीग़ा आया है, इस का मतलब देखें।

:كتبه आयत में **كتبه،** जमा का सीग़ा है, जिस का मतलब

यह है कि अल्लाह ने जितनी किताबें उतारी हैं वो सब बरहक़ हैं, हम इन सब पर ईमान रखें कि वो किताबें अपने अपने ज़माने के ऐतबार से रहनुमाई के लिए काफ़ी थीं, और इन में भी, ऊपर के ईमान के वो छः जुज मौजूद था जिन पर हम को ईमान लाना ज़रूरी है, अल्बत्ता इन के जुज़याती मसाइल अलग अलग थे, अब इस पर अ़मल करना जायज़ नहीं है, क्योंकि वो मसाइल अब मन्सूख़ हो गये हैं, अब तो हुजूर स0अ0व0 की शरीअ़त ही पर अ़मल करना होगा।

इन तमाम आसमानी किताबों का अहतराम करें और इन से दिल से मौहब्बत करें।

ورسله: आयत में **رسله** जमा का सीग़ा है जिस का मतलब यह है कि हम तमाम रसूलों पर ईमान रखें कि वो अपने अपने ज़माने में बरहक़ रसूल और नबी थे, और इन की शरीअ़त बरहक़ थी, इन में ईमान के जो छः जुज़ हैं (अल्लाह, रसूल, किताब, फ़रिश्ता, आख़िरत और तक़दीर पर ईमान लाना) यह तमाम नबियों में एक ही थे, अल्बत्ता इन के जा जुज़याती मसले थे, मसलन नमाज़ के तरीक़े, रोज़े के तरीक़े, यह अलग अलग थे, इस लिए इन के जुज़याती मसले पर अब अ़मल नहीं करेंगे और छः जुज़ पर तो हमारा ईमान होगा ही।

पिछले रसूलों की शरीअ़त में था कि इन छः चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है

इस की दलील यह आयत है:

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ، كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ . (آیت۲۸۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: यह रसूल (यानी मौहम्मद स0अ0व0) इस चीज पर ईमान लाये जो इन की तरफ़ इन के रब की जानिब से नाज़िल

की गई है और इन के साथ तमाम मुसलमान भी, यह सब अल्लाह पर, इस के फ़रिश्तों पर, इस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाये, वो कहते हैं कि हम इस के रसूलों के दरमियान कोई तफ़रीक़ नहीं करते इस आयत में है कि पिछले तमाम रसूलों की शरीअ़त में अल्लाह तमाम रसूल, फ़रिश्ते और तमाम किताबों पर ईमान लाना ज़रूरी थे।

इन तमाम रसूलों पर ईमान भी रखें कि वो बरहक़ रसूल, और बरहक़ नबी थे, और इन का अहतराम करना भी लाज़िम है, और इन से दिल से मौहब्बत भी करें, इस में अदना बराबर कमी कोताही करना जायज़ नहीं है यही इस्लाम की तालीम है।

इन 6 चीज़ों में से किसी एक का इन्कार करेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा

इन छः चीज़ों में से किसी एक का इन्कार करेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा, लेकिन अगर इन छः चीज़ों में से किसी एक का इन्कार नहीं करेगा तो वो काफ़िर नहीं होगा वो मुसलमान ही रहेगा, इस लिए ज़रा ज़रा सी बात पर कुफ़्र का फ़तवा देना जायज़ नहीं है। इस की दलील अ़क़ीदतुल तहाविया की यह इबारत है:

. و لا يخرج العبد من الايمان الا بجهود ما ادخله الله فيه . (عقيدة اطحاوية ، عقيده نمبر ٦١، ص ١٥)

तर्जुमा: अल्लाह ने जिन चीज़ों पर ईमान रखने से ईमान में दाख़िल किया इसी के इन्कार से वो ईमान से निकलेगा।

इस इबारत में है के जब उन छ बातों के इक़रार से आदमी मुसलमान होता है, इस लिये उसी में से किसी एक के इनकार से वो ईमान से निकलेगा, लेकिन अगर उन में से किसी एक का इनकार नहीं करता तो वो मोमिन ही रहेगा, इसी तरह गुनाह कबीरा करने से वो काफिर नहीं होगा, हां गुनाह कबीरा करने को

हलाल समझने लगे तब वो काफिर होजाएगा, कियों कि गुनाह कबीरा को हलाल समझने का मतलब ये है कि वो गुनाह कबीरा वाली आयत का इनकार कर रहा है।

दिल से तसदीक़ और जुबान से इक़रार करने का नाम ईमान है

ईमान के लिये जो 6 बातें ज़रूरी हें इन सब को दिल से तसदीक़ करे और जुबान से भी उसका इक़रार करे कि में मुसलमान हूँ तब वो मोमिन बनेगा और अगर वो दिल से तसदीक़ नहीं करता सिर्फ ज़बान से उसका इक़रार करता है तो वो मोमिन नहीं है, शरीअत में उसको मुनाफिक़ कहते हें और बाज़ में ये भी है के आज़ा से उस पर अमल करे। जुबान से इक़रार इस लिये ज़रूरी है ताके उस पर दुनयावी अहकाम जारी किये जाऐं, मसलनः उस पर नमाजे जनाज़ा पढ़ी जाये, इस से मुसलमान औरत का निकाह किया जाये, कियों कि इसलाम का इक़रार नहीं करेगा तो अहले दुन्या को कैसे मालूम होगा कि ये मुसलमान है, और उस पर इसलामी अहकाम जारी किये जाऐं। अक़ीदतुत तहावी में इबारत ये है:

و الایمان هو الاقرار باللسان ، و التصديق بالجنان . (عقيدة الطحاويه ، عقيده، نمبر ٦٢ ، ص ١٥)

तर्जुमाः जबान से इक़रार करना, और दिल से तसदीक़ करने का नाम ईमान है।

इस इबारत में है कि दिल से तसदीक़ करना और ज़बान से उसका इक़रार करने का नाम ईमान है।

क़तल के ख़ोफ़ से ईमान का इनकार

अगर दिल में ईमान मोजूद है, लेकिन के खोफ़ से ज़बान से अल्लाह का इनकार किया तब भी वो मोमिन ही रहेगा कियों कि

असल ईमान दिल में अल्लाह को एक मान्ना है। उसकी दलील ये आयत है:

7. مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ -

(آیت ۱۰۶، سورت النحل ۱۶)

तर्जुमा: जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाने के बाद के उसके साथ कुफ़्र का इर्तकाब करे (तो वो काफिर है) वो काफिर नहीं है जिस को ज़बरदस्ती कल्मा कुफ़्र कहने पर मजबूर कर दिया गया हो, जब कि उसका दिल ईमान पर मुतमइन हो, बल्के वो शख़्स जिसने अपना सीना कुफ़्र के लिये खोल दिया हो (तो वो काफिर हो गया) तो ऐसे लोगों पर अल्लाह की तरफ से ग़ज़ब नाजिल होगा, और उनके लिये ज़बरदस्त अज़ाब तय्यार है।

इन आयात में दो बातें हें (1) दिल से एक अल्लाह को नहीं मानता हो तब तो ज़बान से कहने से भी वो अल्लाह के यहाँ मोमिन नहीं है। (2) और दूसरी बात ये है कि दिल में ईमान जमा हुवा है, लेकिन किसी मजबूरी से ज़बान से अल्लाह का इनकार किया तो वो मोमिन है, उस पर कुफ़्र का फतवा लगाना सही नहीं है।

8. اُوْلٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانُ . (آیت ۲۲، سورت المجادلۃ ۵۸)

तर्जुमा: ये वो लोग हें जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श कर दिया है।

इस आयत से पता चलता है कि दिल में अल्लाह की तोहीद के जम जाने का नाम असल ईमान है।

3. عن انس عن النبی ﷺ قال يخرج من النار من قال لا اله الا الله و فی قلبه وزن شعيرة من خير . (بخاری شریف ، کتاب الایمان ، باب زيادة الايمان و نقصانه ، ص ۱۰ ، نمبر ۴۴)

तर्जुमा: मौहम्मद स0अ0व0 ने फरमाया कि जिस ने **لا الٰــه الّا الــلّـــــه** कहा और उसके दिल में जो के बराबर ईमान है तो वो जहन्नम से निकाला जाऐगा।

इन आयात और अहादीस से मालूम हुवा के जररा बराबर दिल में ईमान हो तो जन्नत में दाख़िल होगा, जिस का मतलब ये है कि दिल के तसदीक़ का नाम असल ईमान है।

हम दिल की तफतीश करने के मुकल्लफ नहीं हैं

अगर ज़बान से ईमान का इक़रार करता है तो हम इस बात के मुकल्लफ नहीं हें कि ये तफतीश करें कि उसने दिल से कहा के नहीं कहा, बल्के हम उसको मोमिन मान कर इस पर इसलाम के अहकाम जारी करदेंगें हाँ अगर वो जाहिरी तोर पर कुफर या शिर्क का अमल करता है तो अब उसको काफिर माना जाऐगा, मसलन वो ईमान का इक़रार भी करता है और बुतों के सामने सजदा भी करता है तो अब उस को काफिर समझा जाऐगा कियों कि अमल के ऐतबार से उस ने कुफ़र किया है।

عـن اسـامة بن زيد .... فادركت رجلا فقال لا اله الا الله فطعنته فوقع فى نفسى من ذالک فذكرته للنبى ﷺ فقال رسول الله ﷺ أقال لا اله الا الله و قتلته ؟ قال قلت يا رسول الله انما قالها خوفا من السلاح قال افلا شققت عن قـلبـه حتـى تـعـلـم أقـالها ام لا ، فما زال يكررها على حتى تمينت انى اسلمت يوميذ. (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب تحريم قتل الكافر بعد قوله لا اله الا الـلـه ، ص ٥٦، نـمبـر ٩٦/ ٢٧٧/ ابو داود شريف ، كتاب الجهاد ، باب على ما يقاتل المشركون ، ص ٣٨١، نمبر ٢٦٤٠)

तर्जुमा: ह़ज़रत ख़ालिद फरमाते हें कि में एक आदमी से मिला तो वो **لا الٰـه الا اللّٰه** कहने लगा लेकिन फिरभी में ने उसको क़तल करदिया, मेरे दिल में उस के बारे में बात आई तो में ने नबी

स0अ0व0 के सामने उसका जिर्क किया, तो आप ने फरमाया कि لا الٰہ الا اللّٰہ कहा फिर भी आप ने उसको क़तल कर दिया? में ने कहा या रसूलूल्लाह उसने हथयार के डर से ऐसा कहा था, तो हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया किया तुमने उसका दिल चीर कर देखा था! ताके तुम जान लो के उसने सच कहा था या नहीं और इस बात को बार बार दोहराते रहे, यहां तक कि में ने तमन्ना की के आज ही मुसलमान होता तो अचछा था।

इस हदीस से मालूम हुवा के ज़बान से لا الٰہ الا اللّٰہ कहा तो आगे दिल में ईमान है या नहीं उस की तफ़तीश की ज़रूरत नहीं है ये अल्लाह जाने, हम उस को मुसलमान जानेगें और उस पर इसलामी अहकाम जारी करेंगें आज कल ज़रा ज़रा उसी बात पर लोग दूसरों को काफिर और मुशरिक होने का फतवा दे देते हें, और उस पर तशद्दुद करते हें ये बात हदीस के खिलाफ है।

ईमान का एक हिस्सा अ़मल करना भी है

ईमान का एक हिस्सा अ़मल करना भी, इसी लिए बाज़ किताब में वलअ़मल बिल अरकान भी लिखा हुआ है कि अल्बत्ता एक बात ज़रूर है कि असल ईमान के ख़िलाफ़ अ़मल करेगा तो इस को काफ़िर शुमार कर दिया जायेगा, मसलन आयत में है कि अल्लाह के अ़लावा किसी को सज्दा ना करो, और इस ने बुतों के सामने सज्दा कर दिया तो इस अ़मल से वो काफ़िर हो जायेगा, क्योंकि इस ने सरीह आयत के ख़िलाफ़ अ़मल किया। अ़मल की दलील यह आयत है:

9. وَ اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰی ۔

(آیت۸۲،سورت طٰہٰ۲۰)۔

तर्जुमा: और यह हक़ीक़त है कि जो शख़्स तौबा करे, ईमान

लाये और नेक अ़मल करे फिर सीधे रास्ते पर क़ायम रहे तो मैं उस के लिए बहुत बख़्शने वाला हूं।

10.اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوْا الصَّالِحَاتِ . (آیت۳،سورت العصر۱۰۳)

तर्जुमा: सिवाऐ उन लोगों के जो ईमान लाऐं, और नेक अ़मल करें (तो वो नुक़सान में नहीं हैं)।

11.مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحاً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ .

(آیت۶۲،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आऐंगे और नेक अ़मल करेंगे वो अपने रब के पास अपने अजर के मुस्तहिक़ होंगे।

इन आयतों में है कि ईमान लाऐ और नेक अ़मल करे, जिस से मालूम हुआ कि नेक अ़मल करना भी ईमान का हिस्सा है।

हम जो कलिमे पढ़ते हैं, वो दो आयतों के मज्मूऐ हैं

कलिमा तैय्यबा दो आयतों का मज्मूआ़ है एक है: لا الـه الا الـله और दूसरा है: محمد رسول الله इस आयत में इस की दलील है।

12. فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْبِکَ . (آیت۱۹،سورت محمد۴۷)

तर्जुमा: इस लिए ऐ पैग़म्बर यक़ीन जानो! कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं है और अपने क़सूर पर भी बख़्शिश की दुआ़ मांगते रहो।

13.اِنَّهُمْ كَانُوْا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ .

(آیت۳۵،سورت الصافات۳۷)

तर्जुमा: इन का हाल यह था कि जब इन से यह कहा जाता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, तो यह अकड़ दिखाते थे इन दोनों आयतों में لا اله الا الله، ज़िक्र है।

और रसूलुल्लाह स0अ0व0 के लिए यह आयत है:

14. مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَشِدَّاءُ عَلَی الْکُفَّارِ رُحَمَاءُ بَیْنَہُمْ
(آیت۲۹،سورت الفتح ۴۸)

तर्जुमा: मौहम्मद स0अ0व0 अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग इन के साथ हैं वो काफ़िरों के मुक़ाबले में सख़्त हैं, और आपस में एक दूसरे के लिए रहम दिल हैं।

इस हदीस में लाइलाह इल्लल्लाहु मौहम्मदुर्रसूलुल्लाह एक साथ है।

6. عن ابن عمر قال قال رسول الله ﷺ بنی الاسلام علی خمس ، شهادة ان لا اله الا الله ، و ان محمد رسول الله . (بخاری شریف ، کتاب الایمان ، باب قول النبی ، بنی الاسلام علی خمس ، ص ۵، نمبر ۸)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया इसलाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है। **شهادة ان لا اله الا الله، و ان محمد رسول الله.**

(30) तक़दीर

इस अ़क़ीदे के बारे में दो आयतें और छः हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

तक़दीर का मतलब यह है कि अल्लाह ने किसी की क़िस्मत में एक चीज़ लिख दी है वो होकर रहेगी, अल्लाह ने हर आदमी की तमाम बातों को पहले से लिख दिया है, फिर जो आदमी नेक बख़्त है वो अपनी ख़ुशी से और अपनी चाहत से नेक काम करता रहता है और वो जन्नत में दाख़िल हो जाता है और बद आदमी अपनी चाहत से और अपने इख़्तयार से बुरा काम करता रहता है, और इस की वजह से जहन्नुम में दाख़िल होता है, यह दाख़िल हुआ अपने अ़मल से अगरचे तक़दीर में पहले से लिखा था।

आदमी को इस को इस पर ईमान रखना चाहिए, ईमान के छः अज्ज़ा में से एक जुज़ तक़दीर भी है।

इस के लिए आयतें यह हैं:

1.وَ مَا يَعْزَبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِيْ الْاَرْضِ وَ لَا فِي السَّمَاءِ وَ لَا اَصْغَرَ مِنْ ذَالِكَ وَ لَا اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتَابٍ مُّبِيْنٌ . (آيت ٦١، سورت يونس ١٠)

तर्जुमा: और तुम्हारे रब से कोई ज़र्रा बराबर भी पौशीदा नहीं है, ना ज़मीन में ना आसमान में ना इस से छोटी, ना बड़ी, मगर वो एक वाज़ह किताब में दर्ज है।

2.وَ كُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرُ وَ كُلُّ صَغِيْر وَ كَبِيْرٍ مُسْتَطَرٌ.

(آيت ٥٢-٥٣، سورت القمر ٥٤)

तर्जुमा: और जो काम उन्होंने किये हैं वो सब आ़माल नामों में दर्ज हैं, और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है।

इन आयतों में तक़दीर का तजक़िरा है, इस लिए तक़दीर पर ईमान रखना ज़रूरी है।

1. و قال ﷺ اول ما خلق الله القلم فقال له اكتب فقال القلم ما ذا اكتب يا رب ؟ فقال الله تعالى اكتب ما هو كائن الى يوم القيامة . (ابو داود شريف ، نمبر ٤٧٠٠ / ترمذى شريف ، نمبر ٢١٥٥)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने सब से पहले क़लम को पैदा किया, और इस को कहा लिखो, क़लम ने कहा ऐ रब मैं क्या लिखूं, अल्लाह ने फ़रमाया क़यामत तक जितनी बातें होने वाली हैं सब लिख दो।

2.عن عبد الله بن عمر بن العاص قال سمعت عمر بن العاص قال سمعت رسول الله ﷺ يقول كتب الله مقادير الخلائق قبل ان يخلق السماوات و الارض بخمسين الف سنة قال عرشه على الماء . (مسلم شريف ،باب حجاج آدم و موسىٰ ، ص ١١٥٦ ، نمبر ٢٦٥٣ / ٦٧٤٨)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ज़मीन और आसमान के पैदा होने से पचास हज़ार साल पहले अल्लाह ने मख़लूक़ की तक़दीर लिख दी है और यह भी फ़रमाया कि अल्लाह का अ़र्श पानी पर था।

3.عن جابر بن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ لا يومن عبد حتى يومن بالقدر خيره و شره حتى يعلم ان ما اصابه لم يكن ليخطئه ، و ان ما أخطأه لم يكن ليصيبه . (ترمذى شريف ، باب ما جاء ان اليمان بالقدر خيره و شره ، ص ۴۹۳، نمبر ۲۱۴۴)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तक़दीर में जो ख़ैर और शर लिखा हुआ है, इस पर जब तक ईमान ना रखे, आदमी मौमिन नहीं बन सकता, यह भी जान ले कि जो इस को पहुंचना है वो कभी ख़ता नहीं कर सकता, और जो इस को नहीं पहुंचना है, इस में भी ग़लती नहीं होगी यह यक़ीन करले।

इन अहादीस और आयात में है कि तक़दीर हक़ है और इस पर ईमान रखना ज़रूरी है।

(1) तक़दीर मुबर्रम (2) तक़दीर मुअ़ल्लक़

तक़दीर की दो क़िस्में हैं: तक़दीर मुबर्रम और तक़दीर मुअ़ल्लक़।

तक़दीर मुबर्रम: का मतलब यह है कि यह तक़दीर बदलती नहीं है यह हतमी है, जैसे ज़ैद की तक़दीर में लिख दिया कि वो पचास साल की उ़म्र में मरेगा तो यह तय है कि वो पचास साल की उ़म्र में मरेगा।

दूसरी है तक़दीर मुअ़ल्लक़: का मतलब यह है कि किसी काम के करने पर वो मुअ़ल्लक़ है और इस काम के करने पर तक़दीर बदल सकती है, मसलन यह कहे कि अगर आप ने मां की ख़िदमत की तो इस से आप की उ़म्र बढ़ जायेगी, तो यहां ख़िदमत से उ़म्र बढ़ी, यह तक़दीर मुअ़ल्लक़ है, लेकिन अल्लाह के इ़ल्म में है कि यह आदमी मां की ख़िदमत करेगा या नहीं और इस की उ़म्र बढ़ेगी या नहीं, यह तक़दीर मुबर्रम है।

दलील: तक़दीर मुअ़ल्लक़ की दलील यह हदीस है:

4. عن سلمان قال قال رسول الله ﷺ : لا يرد القضاء الا الدعاء ، و لا يزيد العمر الا البر . (ترمذی شریف ، باب ما جاء لا یرد القدر الا الدعاء ، ص ۴۹۲، نمبر ۲۱۳۹)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि दुआ ही अल्लाह के फ़ैसले को बदलती है, और नेकी ही उ़म्र को ज़्यादा करती है।

जो जैसा होता है वैसा ही काम करने की तौफ़ीक़ हो जाती है

हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तक़दीर हक़ है, लेकिन जो आदमी नेक होता है उस को नेकी के काम करने की तौफ़ीक़ होती रहती है, और वो अपने नेक काम की वजह से जन्नत में जायेगा और जो बद है उस को बुरा काम करने की तौफ़ीक़ रहती है, फिर वो बुरे काम की वजह से जहन्नुम में जायेगा।

इस के लिए हदीस यह है:

5. عن علیؓ قال كنا فی جنازة فی بقیع الغرقد ......قال ما منكم من احد ، ما من نفس منفوشة الا كتب مكانها من الجنة و النار و الا كتب شقية او سعيد ه فقال رجل يا رسول الله أفلا نتوكل على كتابنا و ندع العمل ؟ فمن كان منا من اهل السعادة فسيصير الى عمل اهل السعادة ، و اما من كان منا من اهل الشقاوة فسيصير الى عمل اهل الشقاوة ،

قال اما اهل السعادة فييسرون لعمل السعادة،واما اهل الشقاوة فييسرون لعمل الشقاوة ، ثم قرأ ﴿فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَ اتَّقٰى وَ صَدَّقَ بِالْحُسْنٰى [آيت ۵ .۶ ، سورت الليل ۹۲﴾ (بخاری شریف ، کتاب الجنائز، باب موعظة المحدث عند القبر و قعود اصحابه حوله ، ص ۲۱۸، نمبر ۱۳۶۲)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम जन्नत उल बक़ीअ़ में एक जनाज़े में थे......हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हम

में से जितने भी नफ़्स हैं इस की जगह जन्नत या जहन्नुम में लिखी हुई है और हर एक का नेक और बद लिखा हुआ है, एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह हम अपने लिखे हुए पर भरौसा ना करलें? और अ़मल ना छोड़ दें, ताकि जो हम में से नेक लोग हों वो ख़ुद नेक अ़मल की तरफ़ चले जाऐं और हम में से जो बद लोग हों वो ख़ुद ही बद अ़मल की तरफ़ चले जाऐं, तो आप ने फ़रमाया नेक आदमी के लिए नेक काम आसान हो जाता है और बुरे आदमी के किलए बुरा काम आसान हो जाता है, फिर हुज़ूर स0अ0व0 ने यह आयत पढ़ी:

﴿فَاَمَّا مَنْ اُعْطِیَ وَ اتَّقٰی وَ صَدَّقَ بِالْحُسْنٰی-(آیت۵-۶،سورت اللیل۹۲)

इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस की तक़्दीर में नेकी लिखी है वो नेक अ़मल ही करता रहेगा और जिस की तक़्दीर में बुरा लिखा है वो बुरा काम ही करता रहता है।

तक़्दीर के बारे में ज़्यादा बहस नहीं करनी चाहिए

तक़्दीर का समझना मुश्किल है इस लिए इस बारे में ज़्यादा बहस करने से मना किया है, हदीस यह है:

6 .عن ابی هريرة قال خرج علينا رسول اله ﷺ و نحن نتنازع فی القدر فغضب حتی احمر وجهه حتی كانما فقیء فی وجنتيه الرمان ، فقال : أبهذا أمرتم ام بهذا أرسلت اليكم ؟ انما هلک من كان قبلكم حين تنازعوا فی هذا الامر ، عزمت عليكم عزمت عليكم الا تنازعوا فيه . (ترمذی شريف ، باب ما جاء فی التشديد فی القدر، ص ۴۹۰، نمبر ۲۱۳۳)

तर्जुमा: हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम तक़्दीर के बारे में झगड़ रहे थे कि हमारे सामने हुज़ूर स0अ0व0 तशरीफ़ लाऐ तो हुज़ूर स0अ0व0 इतने गुस्से हुए कि आप का चेहरा सुर्ख़ हो गया, ऐसा लगता था कि आप के चेहरे पर अनार फाड़ दिया गया हो, और कहने लगे कि क्या तुम लोगों को इस का हुक्म

दिया गया है क्या इस के लिए मैं मबऊ़स हुआ हूं, तुम से पहले जो लोग इस बारे में झगड़े तो वो हलाक हो गए, तुम को बार बार ज़ौर दे कर कहता हूं कि तक़दीर के बारे में हरगिज़ ना झगड़ा करो।

(31) इस्तताअ़त, ख़ुल्क़ और कसब, क्या हैं

इस अ़क़ीदे के बारे में 8 आयतें और 2 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें इस बाब में तीन बातें हैं, ख़ुल्क़, इस्तताअ़त और कसब। इन तीनों को समझना ज़रूरी है।

इस्तताअ़त क्या है

इस्तताअ़त का मतलब यह है कि वो काम करने की आप के पास सारी सहूलतें मौजूद हों, तमाम असबाब मुहय्या हों, इसी पर अल्लाह के हुक्म का मदार है।

अहकाम बजा लाने के लिए यह चार बातें हों तो इस को इस्तताअ़त कहते हैं।

(1) इस आदमी की सेहत इतनी अच्छी हो कि वो इबादत कर सके।

(2) इस कामको करने की ताक़त हो।

(3) इस काम को करने पर क़ुदरत हो।

(4) और इस काम को करने के लिए आ़ज़ा सही सालिम हों, तब वो काम इन्सान पर वाजिब होता है, इसी को क़ुदरत मयस्सरह कहते हैं।

इन चार बातों के होने के बाद काम से पहल आदमी का इरादा हो और इस पर अल्लाह वो काम करवा दे और इस काम को तख़लीक़ करदे, इस को तौफ़ीक़ कहते हैं, इसी पैदा करने का नाम, तख़लीक़ है, जो अल्लाह का काम है।

इस बारे में अ़क़ीदतुल तहाविया की इबारत यह है:

. و الستطاعة التی یجب بھا الفعل من نحو التوفیق الذی لا یجوز ان یوصف المخلوق بہ (تکون) مع الفعل و اماالاستطاعة من جھة الصحة و الوسع ، و التمکن ، و سلامة الآلات ، فھی قبل الفعل و بھا یتعلق الخطاب ، و ھو کما قال تعالی . لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَھَا . (آیت ۲۸۶ ، سورت البقرة ۲) . (عقیدة الطحاوة ، عقیدہ نمبر ۸۵، ص ۱۸)

तर्जुमा: एक वो इस्तताअ़त जो फ़अ़ल के साथ होती है, जिस को तौफ़ीक़ कहते हैं, यह मख़लूक़ की सिफ़त बन ही नहीं सकती, यह फ़अ़ल के साथ होती है (यह अल्लाह की सिफ़त है। दूसरी इस्तताअ़त यह है कि आदमी की सेहत ठीक हो, इस को इबादत करने की गुंजाइश हो, इबादत करने पर कु़दरत हो, इस की आ़ज़ा सही सालिम हों, यह इस्तताअ़त फअ़ल से पहले होती है)।

इस इबारत में दो इस्तताअ़त का ज़िक्र है एक है, फ़अ़ल, यानी काम को पैदा करना, यह अल्लाह की सिफ़त है, यह सिफ़त मख़लूक़ की नहीं हो सकती और दूसरी इस्तताअ़त है, सेहत दुरूस्त हो, गुंजाइश हो, काम करने पर कु़दरत हो, आ़ज़ा सही सालिम हों इसी दूसरी इस्तताअ़त पर अल्लाह का हुक्म आता है।

इन आयतों में इस्तताअ़त का ज़िक्र है

1. وَ عَلَی النَّاسِ حَجُّ الۡبَیۡتِ مَنِ اسۡتَطَاعَ سَبِیۡلًا . (آیت ۹۷، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: और लोगों में से जो लोग बैतुल्लाह तक पहुंचने की इस्तताअ़त रखते हों उन पर अल्लाह के लिए इस घर का हज करना फ़र्ज़ है।

2. وَ مَنۡ لَّمۡ یَسۡتَطِعۡ مِنۡکُمۡ طَوۡلًا اَنۡ یَّنۡکِحَ الۡمُحۡصَنَاتِ الۡمُؤۡمِنَاتِ فَمِنۡ مَّا مَلَکَتۡ اَیۡمَانُکُمۡ . (آیت ۲۵، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: और तुम में से जो लोग इस बात की ताक़त ना रखते हों कि आज़ाद मुसलमान औ़रतों से निकाह कर सकें, तो वो

मुसलमान बान्दियों में से किसी एक से निकाह कर सकते हैं जो तुम्हारी मिल्कियत में हो।

1.عن عمران بن حصينؓ قال كانت بى بواسير فسألت النبى ﷺ عن الصلاة ؟ فقال صل قائما فان لم يستطع فقاعدا فان لم يستطع فعلى جنب . (بخارى شريف ، كتاب التقصير ، باب اذا لم يطق قاعدا صلى الى جنب ، ص ١٧٩، نمبر ١١١٧)

तर्जुमा: हज़रत इमरान बिन हुसैन फ़रमाते हैं कि मुझे बवासीर का मर्ज़ था, इस लिए मैंने हुजूर स0अ0व0 से नमाज़ के बारे में पूछा? तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो, और इस पर कुदरत ना हो तो बैठ कर, और इस पर भी कुदरत ना हो तो पहलू के बल लेट कर नमाज़ पढ़ो।

इन आयतों और हदीस से मालूम हुआ कि तमाम असबाब के मुहय्या होने का नाम इस्तताअ़त है और इसी पर अहकाम का मदार है।

कसब

कसब का मअ़नी है कमाना, किसी काम का आप इरादा करते हैं फिर उस काम के लिए असबाब इख़तयार करते हैं और इस काम को अपने इरादे से करते हैं, इसी काम करने को, कसब कहते हैं और इस पर अ़ज़ाब और सवाब का मदार है, क्योंकि आप ने अपने इरादे से यह काम किया है अगरचे काम करने पर अल्लाह तआ़ला इस काम को तख़लीक़ कर देते हैं।

इन आयतों में कसब का ज़िक्र है और यह भी ज़िक्र है कि तुम्हारे कसब करने की वजह से यह अ़ज़ाब, या सवाब दिया जायेगा।

इस के लिए आयतें यह हैं:

3.وَ وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ . (آيت ٢٥، سورت آل عمران ٣)

तर्जुमा: और हर हर शख़्स ने जो कुछ कमाई की होगी वो इस को पूरी पूरी दे दी जायेगी और किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा।

4.ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ . (آیت۱۶۱،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: फिर हर शख़्स को इस के किये का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और किसी पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।

5. بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْئَةٌ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارُ .

(آیت۸۱،سورت بقرۃ۲)

तर्जुमा: जो लोग बदी कमाते हैं और उन की बदी उन्हें घैर लेती है तो ऐसे लोग ही जहन्नुम के बासी हैं।

इन आयतों से पता चला कि हम जो अपने इरादे से कसब करते हैं, इस का बदला दिया जायेगा और इसी पर अ़ज़ाब या सवाब का दारो मदार है।

ख़ुल्क़

ख़ुल्क़ का मअ़नी है पैदा करना, किसी चीज़ को पैदा करना यह अल्लाह का काम है यहां तक कि जो कुछ हम ख़ुद करते हैं, वो भी अल्लाह ही पैदा करता है, लेकिन चूंकि हम कसब करते यानी अच्छा या बुरा काम करने का इरादा करते हैं और फिर इस को अपने इरादे से करने लगते हैं, जिस की वजह से अल्लाह हमारे काम को पैदा कर देते हैं, यानी इस को तख़्लीक़ कर देते हैं तो इस कसब करने की वजह से इन्सान को सवाब या अ़ज़ाब दिया जाता है।

इन आयतों में है कि हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह ही है।

6.اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ وَّ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ . (آیت۶۲،سورت الزمر۳۹)

तर्जुमा: अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का रखवाला है।

7.ذَالِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ . (آیت۶۲،سورت غافر۴۰)

तर्जुमा: अल्लाह वो है जो तुम्हारा पालने वाला है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, इस के सिवा कोई माबूद नहीं है।

इन आयतों में है कि ख़ैर हो या शर हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह ही है, इस लिए हमारे कसब के बाद जो कुछ फ़अ़ल पैदा होगा वो भी अल्लाह ही पैदा करता है।

इस मसले में पिछले ज़माने में बड़ा इख़तलाफ़ रहा है।

बाक़ी तफ़सील अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, के उ़नवान में देखें।

अ़हद अलस्तु

अज़ल में अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम की औलाद को पीठ से निकाला और सब से यह अ़हद लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं, सब ने कहा कि हां आप हमारे रब हैं, इसी को अ़हद अलस्तु कहते हैं, इस आयत में अहद अलस्तु का सबूत है।

8.اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِیْ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى شَهِدْنَا اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غَافِلِيْنَ . (آیت۱۷۲،سورت الاعراف۷)

तर्जुमा: और ऐ रसूल! लोगों को वक़्त याद दिलाओ जब तुम्हारे रब ने आदम के बेटों की पुश्त से उन की सारी औलाद को निकाला था और उन को ख़ुद अपने ऊपर गवाह बनाया था ओर पूछा था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब ने जवाब दिया था कि क्यों नहीं? हम सब इस बात की गवाही देते हैं।

2.عن ابن عباس عن النبی ﷺ قال اخذالله الميثاق من ظهور آدم بنعمان .يعنى عرفة .فاخرج من صلبه كل ذرية ذرأها فنثر هم بين يديه كالذر ثم كلمهم فتلا قال ،الست بربكم. الخ (آيت ۱۷۳ ، سورت الاعراف ۷)

(مسند احمد ، مسند عبد الله بن عباس ، ۴، ص ۲۶۷ ، نمبر ۲۴۵۵)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने नोअ़मान यानी अ़रफ़ा के मक़ाम पर हज़रत आदम की पुश्त से निकाल कर यह अ़हद लिया, हर पुश्त से हर औलाद को निकाला और अपने सामने उन को ज़र्र की तरह फैला दिया, फिर उन सब से बात की (कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं, और ऊपर आयत **الست بربكم ، الخ** पढ़ी। इस आयत और हदीस में **الست بربكم** की पूरी तफ़सील है।)

इस अ़क़ीदे के बारे में 8 आयतें और 2 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(32) शिर्क तमाम आसमानी किताबों में ममनूअ़ है

इस अ़क़ीदे के बारे में 34 आयतें और 6 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

सब से बड़ा गुनाह शिर्क और कुफ़्र है, इस लिए इस से बचना चाहिए। इन आयतों में है कि पहले लोगों को भी शिर्क ना करने का हुक्म दिया गया था और इस शरीअ़त में भी यही है।

1. قُلْ يَا اَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٌ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدُوْا اِلَّا اللّٰهُ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْئاً وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضاً اَرْبَاباً مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ .

(آیت ۶۴، سورت آل عمران ۳)۔

तर्जुमा: मुसलमानो! यहूद व नसारा से कह दो कि ऐ अहल किताब एक ऐसी बात की तरफ़ आ जाओ जो हम और तुम में मुश्तरिक हो और वो यह है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करें और इस के साथ किसी को शरीक ना ठहराऐं और अल्लाह को छोड़ कर हम एक दूसरे को रब ना बनाऐं।

2.وَ لَقَدْ اُوْحِىَ اِلَيْكَ وَ اِلٰى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتُ لَيُحْبِطَنَّ عَمَلُكَ وَ لِتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ ، بَلِ اللّٰهُ فَاعْبُدُوْا وَكُنْ مِّنَ الشَّاكِرِيْنَ.

(آیت ۶۵، سورت الزمر ۳۹)

तर्जुमाः और हक़ीक़त है कि तुम और तुम से पहले तमाम रसूलों को वही के ज़रिये यह बात कह दी गई थी कि अगर तुम ने शिर्क का इरतकाब किया तो तुम्हारा किया कराया सब ग़ारत हो जायेगा और तुम यक़ीनी तौर पर सख़्त नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे, इस लिए सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र गुज़ार लोगों में शामिल हो जाओ।

3. قُلْ اِنِّیْ اُمِرْتُ اَنْ اَکُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَ لَا تَکُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ .

(آیت۱۴،سورت الانعام۶)

तर्जुमाः कह दो कि मुझे यह हुक्म दिया गया है कि फ़रमांबरदारी में सब लोगों से पहल करने वाला बनों और तुम मुश्रिकों में हरगिज़ शामिल ना होना।

4. قُلْ اِنِّیْ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَ لَا اُشْرِکَ بِهٖ اِلَیْهِ اَدْعُوْا وَ اِلَیْهِ مَاٰبِ .

(آیت۳۶،سورت الرعد۱۳)

तर्जुमाः कह दो कि मुझे तो यह हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और इस के साथ किसी को ख़ुदाई में शरीक ना मानूं इसी बात की मैं दअ़वत देता हूं और इसी अल्लाह की तरफ़ मुझे लोट कर जाना है।

इन तमाम आयतों में ये कहा गया है के शिर्क हर गिज़ ना करें।

अहल अ़रब एक ख़ुदा मानते थे लेकिन वो शिर्क भी करते थे

अहल अ़रब एक ख़ुदा को मानते थे, लेकिन इस के साथ दूसरों को भी सिफ़ात में शरीक करते थे। इस की दलील यह आयात हैंः

5. قُلْ مَنْ یَّرْزُقُکُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ ، اَمَنْ یُّمْلِکُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ

، وَمَنْ يَخْرُجُ الحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يَخْرُجُ الْمِيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ، وَ مَنْ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهَ ، فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ . (آیت ۳۱،سورت یونس ۱۰)

तर्जुमा: ऐ रसूल इन मुश्रिकों से कहो कि कौन है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ पहुंचाता है? या भला कौन है जो सुनने और देखने की कुव्वतों का मालिक है और कौन है जो जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से बाहर निकाल लाता है? और कौन है जो हर काम का इन्तज़ाम करता है? तो यह लोग कहेंगे अल्लाह! तो तुम इन से कहो कि क्या फिर भी तुम अल्लाह से नहीं डरते?

6.وَ لَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلَنَّ اللّٰهَ، بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ . (آیت ۶۳،سورت العنکبوت ۲۹)

तर्जुमा: और अगर तुम इन से पूछो कि कान है जिस ने आसमान से पानी बरसाया फिर इस के ज़रिये ज़मीन के मुर्दा होने के बाद इसे ज़िन्दगी बख़्शी? तो वो ज़रूर यह कहेंगे कि ''अल्लाह'' कहो अल्हम्दु लिल्लाह! लेकिन इन में से अक्सर लोग अक़्ल से काम नहीं लेते।

7. وَ لَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مِنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلَنَّ اللّٰهَ . (آیت ۸۷،سورت الزخرف ۴۳)

तर्जुमा: और अगर तुम इन लोगों से पूछो कि इन को किस ने पैदा किया है तो वो ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह ने।

8.وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖ اَوْلِيَاءَ وَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَا اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى .

(آیت ۳،سورت الزمر ۳۹)

तर्जुमा: और जिन लोगों ने अल्लाह के बजाये दूसरों को रखवाले बना लिए हैं, यह कह कर किहम इन की इबादत सिर्फ़ इस लिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह से क़रीब कर देंगे।

इस आयत में है कि मुश्रिकीन मक्का मानते थे कि अल्लाह एक है, लेकिन देवी, देवताओं और बुतों की पूजा इस लिए करते

थे कि वो अल्लाह तक पहुंचा देंगे क्योंकि इन का ख़्याल यह था कि इन देवी, देवताओं को अल्लाह ने यह ताक़त दी है कि वो अल्लाह तक पहुंचा दें, अल्लाह ने तन्बीह की कि यह बिल्कुल ग़लत कर रहे हैं।

शिर्क को अल्लाह तआ़ला कभी माफ़ नहीं करेंगे

9.اِنَّ اللّٰـهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرِكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذَالِكَ مَنْ يَّشَاءُ ، وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰى اِثْماً عَظِيْماً . (آیت ۴۸،سورت النساء ۴)

तर्जुमा: बेशक अल्लाह इस बात को माफ़ नहीं करता कि इस के साथ किसी को शरीक ठहराया जाये और इस से कमतर हर बात को जिस के लिए चाहता है माफ़ कर देता है और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता है वो ऐसा बोहतान बांधता है जो बड़ा ज़बरदस्त गुनाह है।

10.وَ لَقَدْ اُوْحِىَ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبِطَنَّ عَمَلُكَ وَ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ ، بَلِ اللّٰهِ فَاعْبُدْ وَ كُنْ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ .

(آیت ۶۵،سورت الزمر ۳۹)

तर्जुमा: और हक़ीक़त है कि तुम और तुम से पहले तमाम रसूलों को वही के ज़रिये यह बात कह दी गई थी कि अगर तुम ने शिर्क का इरतकाब किया तो तुम्हारा किया कराया सब ग़ारत हो जायेगा और तुम यक़ीनी तौर पर सख़्त नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे, इस लिए सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र गुज़ार लोगों में शामिल हो जाओ।

11.اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَ مَأْوَاهُ النَّارُ ، وَ مَا لِلظَّالِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ . (آیت ۷۲،سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमा: यक़ीन जानो कि जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराये अल्लाह ने इसके लिए जन्नत हराम कर दी है और इस का ठिकाना जहन्नुम है और ज़ुल्म करने वालों के लिए

कोई मददगार मयस्सर नहीं आऐंगे।

इन आयतों में है कि अगर कोई शिर्क करते हुए मर गया और मौत से पहले इस गुनाह से तौबा नहीं किया तो अल्लाह तआ़ला इस को कभी माफ़ नहीं करेंगे बल्कि हमैशा हमैश इस को जहन्नुम में जलना पड़ेगा।

अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक करना हराम है

शिर्क की बहुत सारी क़िस्में हैं, लेकिन इन में से दो क़िस्म बहुत अहम हैं। एक है अल्लाह की ज़ात के साथ शिर्क करना, यानी दो ख़ुदाओं को मानना और दूसरा है ख़ुदा के अ़लावा किसी और की इबादत करना, इस की पूजा करना। इस लिए सिर्फ़ एक ही ख़ुदा मानना चाहिए, इस में किसी को शरीक नहीं करना चाहिए। इन आयतों में है कि सिर्फ़ एक ही ख़ुदा है दूसरा ख़ुदा हरगिज़ नहीं है।

12. وَ قَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْنَ اِلٰهَیْنِ اثْنَیْنِ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاِیَّایَ فَارْهَبُوْنَ ۔

(آیت ۵۱، سورت النحل ۱٦)

तर्जुमा: और अल्लाह ने फ़रमाया कि दो दो माबूद ना बना बैठना, वो तो बस एक ही माबूद है, इस लिए बस मुझ ही से डरा करो।

13. اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰی قُلْ لَّا اَشْهَدُ ۔ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَاحِدٌ وَ اِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۔ (آیت ۱۹، سورت انعام ٦)

तर्जुमा: क्या सच मुच तुम यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? कह दो कि मैं तो ऐसी गवाही नहीं दूंगा, कह दो कि वो तो सिर्फ़ एक ख़ुदा है और जिन जिन चीज़ों को तुम इस की ख़ुदाई में शरीक ठहराते हो मैं उन सब से बेज़ार हूं।

14. لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٌ وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اِلٰهٌ وَّاحِدٌ .

(آیت ۷۳، سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमाः वो लोग भी यक़ीनन काफ़िर हो चुके हैं, जिन्होंन यह कहा कि अल्लाह तीन मैं का तीसरा है, हालांकि यह एक ख़ुदा के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है।

15. وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ . (آیت ۱۶۳، سورت البقرۃ ۲)

तर्जुमाः तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है उस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है जो सब पर मेहरबान बहुत मेहरबान है।

16. لَوْ كَانَ فِيْهِمَا اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا . (آیت ۲۲، سورت الانبیاء ۲۱)

तर्जुमाः अगर आसमान और ज़मीन में अल्लाह के सिवा दूसरे ख़ुदा होते तो वो दोनों दरहम बरहम हो जाते।

17. وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ . (آیت ۶۲، سورت آل عمران ۳)

तर्जुमाः और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और यक़ीनन अल्लाह ही है जो ग़ालिब है हिक्मत वाला है।

क़रीबन एक सौ चालीस आयतों में है कि एक ख़ुदा है दूसरा हरगिज़ नहीं है।

अल्लाह की इबादत में शरीक करना हराम है

इबादत की जितनी क़िसमें हैं सज्दा करना, रूकूअ़ करना, इबादत के तौर पर इस के सामने खड़ा होना, या इस को पूजना, अल्लाह के अ़लावा किसी और के सामने यह करना शिर्क है, इस के लिए आयतें यह हैं:

18. وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اِيَّاهُ . (آیت ۲۳، سورت الاسراء ۱۷)

तर्जुमाः और तुम्हारे रब ने यह हुक्म दिया है कि इस के सिवा किसी की इबादत ना करो।

19. قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَاءَنِىَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّىْ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ . (آیت ۶۶، سورت غافر ۴۰)

तर्जुमा: ऐ रसूल काफ़िरों से कह दो कि मुझे इस बात से मना कर दिया गया है कि जब मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से खुली खुली निशानियां आ गईं तो फिर भी मैं उन की इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के बजाये पुकारते हो और मुझे हुक्म दिया गया है कि रब्बुल आ़लमीन के आगे सर झुका दूं।

20. اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسْتَعِیْنَ .(آیت۳،سورت الفاتحۃ۱)

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं।

21. اَنْ لَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اللّٰہُ . (آیت۲،سورت ہود۱۱)

तर्जुमा: अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करो।

22. اَنْ لَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اللّٰہُ .(آیت۲۶،سورت ھود۱۱)

तर्जुमा: अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करो।

23. اَنْ لَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اللّٰہُ . (آیت۱۴،سورت فصلت۴۱)

तर्जुमा: अल्लाह के किसवा किसी की इबादत ना करो।

इन आयतों में है कि अल्लाह के अ़लावा हरगिज़ किसी की इबादत ना करें और इबादत में सज्दा करना रूकूअ़ करना इबादत के लिए क़याम करना, यह सब शामिल है इस लिए इन सब बातों से परहैज़ करना चाहिए।

इस से भी आदमी मुश्रिक बन जाता है जिस का अंजाम यह है कि अल्लाह इस को कभी माफ़ नहीं करेंगे और इस को हमैशा हमैश जहन्नुम में रहना पड़ेगा। लोग इस में बहुत बेअहतियाती करते हैं।

अल्लाह के अ़लावा किसी के लिए सज्दा और रूकूअ़ जायज़ नहीं है

इबादत के तौर पर किसी के सामने सज्दा करने से आदमी मुश्रिक हो जाता है और ताज़ीम के तौर पर किसी के सामने सज्दा करना हराम है, इसी तरह इबादत के तौर पर किसी के

सामने रूकूअ़ करना भी जायज़ नहीं है, क्योंकि यह भी नमाज़ और इबादत का हिस्सा है। इस के लिए यह आयतें हैं:

24.لَا تَسۡجُدُوۡا لِلشَّمۡسِ وَ لَا لِلۡقَمَرِ وَ اسۡجُدُوۡا لِلّٰهِ الَّذِیۡ خَلَقَهُنَّ اِنۡ کُنۡتُمۡ اِیَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ . (آیت ۳۷،سورت فصلت ۴۱)

तर्जुमा: ना सूरज को सज्दा करो ना चांद को, और इस अल्लाह को सज्दा करो, जिस ने उन्हें पैदा किया है अगर तुम्हें इसी की इबादत करनी है।

25.یَا اَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا ارۡکَعُوۡا وَ اسۡجُدُوۡا وَ اعۡبُدُوۡا رَبَّکُمۡ .

(آیت ۷۷،سورت الحج ۲۲)

तर्जुमा: ऐ ईमान वालो, रूकूअ़ करो, और सज्दा करो, और अपने रब की बन्दगी करो।

26.فَاسۡجُدُوۡا لِلّٰهِ وَ اعۡبُدُوۡا . (آیت ۶۲،سورت النجم ۵۳)

तर्जुमा: अल्लाह के लिए सज्दा करो और इस की बन्दगी करो।

27.یَا مَرۡیَمُ اقۡنُتِیۡ لِرَبِّکِ وَ اسۡجُدِیۡ وَ ارۡکَعِیۡ مَعَ الرّٰکِعِیۡنَ .

(آیت ۴۳،سورت آل عمران ۳)

तर्जुमा: ऐ मरयम तुम अपने रब की इबादत में लगी रहो और सज्दा करो और रूकूअ़ करने वालों के साथ रूकूअ़ भी किया करो।

28.وَ اَقِیۡمُوا الصَّلَاةَ وَ اٰتُوا الزَّکَاةَ وَ ارۡکَعُوۡا مَعَ الرّٰکِعِیۡنَ .

(آیت ۴۳،سورت البقرة ۲)

तर्जुमा: और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रूकूअ़ करने वालों के साथ रूकूअ़ करो।

इन आयतों में यह बतलाया गया है कि अल्लाह ही के लिए रूकूअ़ और सज्दा करो, इस लिए किसी ओर के लिए ना सज्दा करना जायज़ है और ना इबादत के तौर पर किसी के सामने

रूकूअ़ करना जायज़ है।

1.عن قيس بن سعد قال أتيت الحيرة فرأيتهم يسجدون لمرزبان لهم فقلت رسول الله ﷺ احق ان يسجد له قال فأتيت النبى ﷺ فقلت انى اتيت الحيرة فرأيتهم يسجدون لمرزبان لهم فانت يا رسول الله ! احق ان نسجد لک ،قال: أرأيت لو مررت بقبرى أكنت تسجد له ؟ قال قلت لا ، قال:فلا تفعلوا ،لو كنت آمرا احدا ان يسجد لاحد لامرت النساء ان يسجد ن لازواجهن لما جعل الله لهم عليهن من الحق . (ابو داود شريف ، كتاب النكاح، باب فى حق الزوج على المرأة ، ص ٣٠٩، نمبر ٢١٤٠/ ابن ماجة شريف، كتاب النكاح ، باب حق الزوج على المرأة ، ص ٢٦٥، نمبر ١٨٥٣)

तर्जुमा: क़ैस बिन सअ़द फ़रमाते हैं कि मैं हैरह मक़ाम पर आया तो देखा कि वो लोग अपने सरदारों को सज्दा करते हैं तो मैंने कहा कि रसूलुल्लाह स0अ0व0 तो ज़्यादा हक़दार हैं कि इन को सज्दा किया जाये, मैं हुजूर स0अ0व0 के पास आया और कहा कि मैं हैरह गया था, वहां देखा कि वो अपने सरदारों को सज्दा करते हैं, इस लिए आप या रसूलुल्लाह स0अ0व0 ज़्यादा हक़दार हैं कि हम आप को सज्दा करें, हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अगर तुम मेरी क़ब्र पर गुज़रो तो क्या इस को सज्दा करोगे, क़ैस ने जवाब दिया नहीं! तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ज़िन्दगी में भी मुझे सज्दा मत करो, अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रतों को हुक्म देता कि वो अपने शौहरों को सज्दा किया करें, इस लिए कि अल्लाह ने शौहरों को बीवियों पर बहुत हुकूक़ दिये हैं।

इस हदीस में है कि अल्लाह के अ़लावा किसी को सज्दा ताज़ीम करना भी हराम है।

शख़्सी तौर पर हम किसी को हतमी तौर पर जन्नती, या जहन्नुमी नहीं कह सकते

किसी के बारे में हतमी तौर पर यह फ़ैसला नहीं कर सकते कि यह जन्नती है या जहन्नुमी है जब तक क़ुरआन या हदीस में इस की तसरीह ना हो।

क़ुरआन या हदीस में किसी का नाम ले कर जन्नती, या जहन्नुमी कहा गया है तो इस के बारे में कह सकते हैं यह जन्नती या जहन्नुमी है, लेकिन इस का नाम ले कर जन्नती या जहन्नुमी नहीं कहा है तो बहुत मुमकिन है कि ज़ाहिरी तौर पर वो जन्नती हो लेकिन अन्दरूनी तौर पर वो अल्लाह के यहां जहन्नुमी हो, या ज़ाहिरी तौर पर वो जहन्नुमी हो लेकिन अन्दरूनी तौर पर वो अल्लाह के यहां जन्नती हो क्योंकि ईमान और तसदीक़ का मामला दिल है और दिल का हाल अल्लाह ही जानता है। हां किसी पर कुफ़्र की अ़लामत हो तो यह कह सकते हैं कि इस में कुफ़्र की अ़लामत है इस लिए मुमकिन है कि यह काफ़िर हो और इस पर काफ़िर के अहकाम जारी किये जाऐंगे, लेकिन हतमी तौर पर इस को काफ़िर नहीं कह सकते, इस लिए जो लोग अपनी तक़रीरों में नाम ले ले कर किसी को काफ़िर कहते हैं या जन्नती कहते हैं यह नहीं कहना चाहिए। अ़क़ीदतुल तहाविया की इबारत यह है:

. و لا ننزل احدا منهم جنة و لا نارا ، و لا نشهد عليهم بالكفر و لا بشرک و لا بنفاق مالم يظهر منهم شیء من ذالک و نذر سرائرهم الی الله تعالی . (عقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ۷۰، ص ۱۲)

तर्जुमा: हम किसी को जन्नती या जहन्नुमी क़रार नहीं देते और ना हम इस पर कुफ़्र और शिर्क की गवाही देते हैं जब तक कि इस से इन में से कोई चीज़ ज़ाहिर ना हो जाये, और जो छुपी हुई बातें हैं इन को अल्लाह के सुपुर्द करते हैं।

इस इबारत से मालूम हुआ कि हम किसी के बारे में हतमी तौर पर जन्नती या जहन्नुमी नहीं कह सकते। इस की दलील यह है:

29. يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اجْتَنِبُوْا كَثِيْراً مِنَ الظَّنِّ ، اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ .

(آیت۱۲،سورت الحجرات۴۹)

तर्जुमा: ऐ ईमान वालो, बहुत से गुमानों से बचो, बाज़ गुमान गुनाह होते हैं।

30. يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنَ خَيْراً مِنْهُمْ.

(آیت۱۱،سورت الحجرات۴۹)

तर्जुमा: ऐ ईमान वालो! ना कोई मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाऐं हो सकता है कि जिन का मज़ाक़ उड़ा रहा है ख़ुद इन से बेहतर हो।

इन आयतों में गुमान करने से मना फ़रमाया है, जिस से मालूम हुआ कि हम किसी को हतमी तौर पर जन्नती या जहन्नुमी नहीं कह सकते।

2.عن عائشة ام المومنين قالت دعى رسول الله الى جنازة صبى من الانصار فقلت يا رسول الله طوبى لهذا عصفور من عصافير الجنة ! لم يعمل السوء و لم يدركه ، قال اوغير ذالک ؟ يا عائشة ! ان الله خلق للجنة اهلا خلقهم لها و هم فى اصلاب آبائهم و خلق للنار اهلا خلقهم لها وهم فى اصلاب ابائهم. (مسلم شريف ، كتاب القدر، باب معنى كل مولود يولد على الفطرة و حكم موتى اطفال الكفار و اطفال المسلمين ، ص۱۱۵۹،نمبر۶۷۶۸/۲۶۶۲)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 अन्सार के एक बच्चे के जनाज़े में बुलाऐ गये, मैंने कहा कि या रसूलुल्लाह यह जन्नत की चिड़िया है, इस के लिए ख़ुशख़बरी हो इस ने कोई गुनाह भी नहीं किया और इस को गुनाह का वक़्त भी

नहीं मिला, हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमायाः कुछ और भी कहना चाहती हो? ए आ़यशा! जब लोग अपने बाप की पीठ में थे तब ही अल्लाह ने जन्नत में जाने वालों को पैदा कर दिये थे, और जब वो अपने बाप की पीठ में थे तब ही जहन्नुम में जाने वालों को पैदा कर दिये थे।

इस हदीस में है कि अल्लाह के इल्ममें पहले से है कि कौन जन्नती है और कौन जहन्नुमी है, इस लिए हम किसी को देख कर जन्नती या जहन्नुमी होने का फ़ैसला नहीं कर सकते।

गुनाहे सग़ीरा, व गुनाहे कबीरा की तारीफ़

गुनाहे कबीराः जिन गुनाह पर वईद आई हो या दुनिया में लअ़नत की गई हो और बहुत डांट पड़ी हो, इस को गुनाहे कबीरा कहते हैं।

गुनाहे कबीराः तौबा करने से माफ़ होता है इस से पहल माफ़ नही होता, हां अल्लाह चाहे तो किसी का गुनाहे कबीरा भी माफ़ कर सकता है, अल्बत्ता शिर्क ऐसा गुनाहे कबीरा है कि बग़ैर तौबा के अल्लाह माफ़ नहीं करेंगे गुनाहे कबीरा करने से आदमी मुश्रिक, या काफ़िर नहीं बनता, क्योंकि इस के दिल में ईमान और तसदीक़ बिल क़ल्ब मौजूद है, अल्बत्ता यह गुनाह बहुत बड़ा है, इस से हर हाल में बचना चाहिए, और कभी हो गया हो तो फ़ौरन तौबा कर लेना चाहिए।

गुनाहे सग़ीराः और जिन गुनाह पर वईद ना हो इस को गुनाहे सग़ीरा कहते हैं।

गुनाहे सग़ीराः छोटे छोटे नेकी के काम करने से भी माफ़ हो जाता है।

गुनाहे सग़ीराः बग़ैर तौबा के भी अल्लाह माफ़ कर देते हैं। इस के लिए आयतें यह हैंः

31.اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَ نُدْخِلُكُمْ مُدْخَلاً كَرِيْماً . (آیت۳۱،سورت النساء۴)

तर्जुमा: अगर तुम बड़े बड़े गुनाहों से परहैज़ करो जिन से तुम्हें रोका गया है तो तुम्हारी छोटी बुराइयो का हम ख़ुद कफ़्फ़ारा कर देंगे और तुम को एक बा इज़्ज़त जगह दाख़िल करेंगे।

32.اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبَائِرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ. (آیت۳۲،سورت النجم۵۳)

तर्जुमा: इन लोगों को जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामो से बचते हैं, अल्बत्ता कभी कभार फिसल जाने की बात और है, यक़ीन रखो तुम्हारा रब बहुत वसीअ़ मग़फ़िरत वाला है (इन को माफ़ कर देंगे)।

इन आयतों के अन्दर इशारा है कि बड़े बड़े गुनाहों से बचोगे तो हो सकता है कि छोटे छोट गुनाह माफ़ कर देंगे।

गुनाहे कबीरा करने वाला जन्नत में जायेगा

शिर्क और कुफ़्र के अ़लावा कोई और गुनाह कबीरा किया हो और तौबा किये बग़ैर मर गया तो हो सकता है कि इस को गुनाह की सज़ा मिले और जहन्नुम में काफ़ी मुद्दत सज़ा भुगतना पड़े, लेकिन सज़ा काटने के बाद कभी ना कभी जन्नत में जायेगा, क्योंकि इस के दिल में ईमान है और मौमिन कभी ना कभी जन्नत में जायेगा।

और अगर गुनाहे कबीरा से तौबा कर ली और इस की तौबा क़बूल हो गई तो इस की सज़ा भुगते बग़ैर जन्नत में जायेगा, क्योंकि उस ने तौबा कर ली है और उस की तौबा क़बूल हो गई है।

इस के लिए हदीस यह है:

3.عن ابی زر رض قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم آتانی آت من ربی . فاخبرنی ، او قال بشرنی . انه من مات من امتی لا یشرک بالله شیئا دخل الجنة فقلت و ان زنی و ان سرق ؟ قال و ان زنی و ان سرق . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ،

ص ۱۹۸ ، نـمبر ۲۳۷ ۱ ؍ مسلم شریف ،کتاب الایمان ، باب الدلیل علی من مات لا یشرک باللہ دخل الجنۃ ، ص ۵۴، نمبر ۹۲ ؍ ۲۷۸ ۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरे रब की जानिब से कोई आने वाला आया और मुझ को ख़बर दी, या यूं फ़रमाया कि मुझ को ख़ुशख़ब्री सुनाई कि मेरी उम्मत में से जो अल्लाह के साथ शिर्क ना करता हो और उस की वफ़ात हुई तो वो जन्नत में दाख़िल होगा, मैंने पूछा कि चाहे वो ज़िना करता हो और चौरी भी करता हो तब भी? तो ख़ुशख़बरी देने वाले ने कहा कि चाहे वो ज़िना करता हो और चौरी भी करता हो तब भी वो जन्नत में दाख़िल हो जायेगा।

इस अदीस में है कि कोई मुश्रिक ना मरा हो तो वो जन्नत में दाख़िल होगा, इस लिए गुनाहे कबीरा करने वाला भी जन्नत में दाख़िल होगा।

4.عـن انـس بن مالک قال قال رسول اللہ ﷺ .....ثم یخرج من النار مـن قـال لا الـہ الا الـلـہ و کان فی قلبہ من الخیر ما یزن ذرۃ . (مسلم شریف ، کتــاب الایـمــان ، بــاب ادنـی اھل الجنۃ منزلۃ فیھـا ، ص۱۰۲،نمبر۱۹۳/۴۷۸ ۳/ بـخـاری شـریف، بـاب کتـاب التـوحید، باب کلام الرب تعالی یوم القیامۃ مع الانبیاء وغیرھم ، ص۱۲۹۴،نمبر۷۵۱۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ... जिस ने **لا الــہ الا الـلـہ** कहा और इस के दिल में ज़र्रा बराबर ख़ैर, यानी ईमान है तो वो जहन्नुम से निकाला जायेगा।

इन आयात और अहादीस से मालूम हुआ कि ज़र्रा बराबर दिल में ईमान हो तो जन्नत में दाख़िल होगा, जिस का मतलब यह हुआ कि गुनाहे कबीरा करने वाला भी जन्नत में दाख़िल होगा।

गुनाहे कबीरा को हलाल समझेगा तो वो काफ़िर हो जायेगा

बेख़बरी में या मजबूरी में गुनाहे कबीरा कर लिया जब कि इस गुनाह को वो गुनाह समझ रहा है तो इस की सज़ा मिलेगी, लेकिन इस से आदमी काफ़िर नहीं होगा, लेकिन अगर ऐसा गुनाह कबीरा है जिस की मुमानिअ़त सरीह आयत में मौजूद है अब इस गुनाह को हलाल समझते हुए करेगा तो यह मुजरिम काफिर हो जायेगा। क्योंकि जब हलाल समझते हुए गुनाह किया तो इस ने सरीह आयत का इन्कार किया जिस में इस गुनाह की मुमानिअ़त है और पहले गुज़र चुका है कि ईमान के छः जुज़ में से एक जुज़ कुरआन को और आयत को मानना है और इस ने आयत का इन्कार कर दिया इस लिए अब यह काफ़िर हो जायेगा, मसलन ज़िना की हुरमत आयत में मौजूद है, अब वो हलाल समझ कर ज़िना करता है, तो गोया कि ज़िना वाली आयत का इन्कार किया, इस लिए अब वो काफ़िर बन जायेगा, और अब इस से तौबा करेगा, तब वो मुसलमान होगा। अ़क़ीदतुल तहाविया में इबारत यह है:

و لا نكفر احدا من اهل القبلة بذنب ما لم يستحله . (عقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ۵۷ ، ص ۱۴)

तर्जुमा: किसी गुनाह की वजह से अहल क़िब्ला को काफ़िर क़रार नहीं देता, जब तक कि इस गुनाह को हलाल ना समझ ले।

इस इबारत में **مالم يستحله** का मतलब यही है कि गुनाह को हलाल समझने लगे, जिस की वजह से सरीह आयत का इन्कार हो जाए, और इस की वजह से इस को काफ़िर क़रार दिया जायेगा।

गुनाहे कबीरा की तअ़दाद

गुनाहे कबीरा की तअ़दाद मुतअ़य्यन नहीं है, अल्बत्ता यह सब गुनाहे कबीरा में शामिल हैं, शिर्क, कुफ़्र, क़त्ल, ज़िना करना, ज़िना की तौहमत ड़ालना, चौरी करना, शराब पीना, सूद खाना, वालिदैन की नाफ़रमानी, झूटी क़सम खाना, मैदाने जिहाद से भागना, यतीम के माल को खाना। इस की दलील यह आयत है:

33. وَ الَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهاً اٰخِرَ وَ لَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّذِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لَا يَزْنُوْنَ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذَالِکَ يَلْقَ اَثَاماً . (آیت ۶۸، سورت الفرقان ۲۵)

तर्जुमा: और जो अल्लाह के साथ किसी भी दूसरे माबूद की इबादत नहीं करते और जिस जान को अल्लाह ने हुरमत बख़्शी है उसे नाहक़ क़त्ल नहीं करते और ना वो ज़िना करते हैं और जो शख़्स भी यह काम करेगा उसे अपने गुनाहों के वबाल का सामना करना पड़ेगा।

इस आयत में तीन गुनाहे कबीरा का ज़िक्र है।

5.عن ابی هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اجتنبوا السبع الموبقات ، قيل يا رسول الله ما هن ؟قال الشرک بالله ، و السحر ، و قتل النفس التی حرم الله الا بالحق ، و اکل مال اليتيم، و اکل الربا ، و التولی يوم الزحف ، و قذف المحصنات الغافلات المومنات . (مسلم شريف ، کتاب الايمان ، باب الکبائر و اکبرها ، ص۵۳، نمبر۸۹/۲۶۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो, लोगों ने पूछा वो क्या हैं? फ़रमाया अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू, अल्लाह ने जिस नफ़्स को हराम किया है, इस को क़त्ल करना, हां जिस को क़त्ल करने का हक़ बनता है, उस को क़त्ल करे तो नहीं यतीम के माल को खाना, सूद खाना, मैदाने जंग से पीठ फैर कर भागना, पाक दामन मौमिन

औ़रतों पर ज़िना की तौहमत ड़ालना।

इस हदीस में सात क़िस्म के गुनाहे कबीरा को गिनाया गया है।

6.عـن ابـی بـکـــرة قال کنا عند رسول اللہ ﷺ فقال ألا انبئکم باکبر الـکبـائـر ثـلاثا ؟.الاشراک باللہ، و عقوق الوالدین ، و شھادة الزور . (مسلم شریف ، کتاب الایمان ، باب الکبائر و اکبرھا ، ص ۵۳، نمبر ۲۵۹۸۷)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम हुजूर स0अ0व0 के पास थे तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम को सब से बड़े तीन गुनाह ना बताऊं? अल्लाह के साथ शिर्क करना वालिदैन की नाफ़रमानी करना और झूटी गवाही देना।

34.وَ مَـنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِناً مُتَعَمِّداً فَجَزَاؤُهٗ جَهَنَّمَ خَالِداً فِيْهَا وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ لَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ عَذَاباً اَلِيْماً . (آیت۹۳،سورت النساء۴)

तर्जुमा: और जो शख़्स किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस की सज़ा जहन्नुम है, जिस में वो हमैशा रहेगा और अल्लाह इस पर ग़ज़ब नाज़िल करेगा, और लअ़नत भैजेगा और अल्लाह ने इस के के लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

इस आयत में है कि किसी ने नाहक़ क़त्ल किया तो इस की सज़ा हमैशा के लिए जहन्नुम है, लेकिन यह ताकीद के लिए है वरना ईमान की वजह से कभी ना कभी जन्नत में जायेगा।

इस अ़क़ीदे के बारे में 34 आयतें और 6 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(33) मुसलमान मुरतिद कब बनता है

इस अ़क़ीदे के बारे में एक आयत और 8 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें:

ईमान की बहस में गुज़रा कि छः चीज़ों पर ईमान रखेगा तो

वो मौमिन बनेगा, वो छः चीज़ें यह थीं।

1– अल्लाह।

2– रसूल।

3– किताब यानी कुरआन करीम।

4– फ़रिश्ता।

5– आख़िरत केदिन पर ईमान हो।

6– और तक़दीर पर ईमान हो तो वो मौमिन है।

. و لا يخرج العبد من الايمان الا بجهود ما ادخله الله فيه . (عقيدة اطحاوية ، عقيده نمبر ۶۱، ص ۱۵)

तर्जुमा: जिन चीज़ों की वजह से ईमान में दाख़िल हुआ है, उन्हीं के इन्कार करने की वजह से बन्दा ईमान से निकलता है।

इस इबारत में है कि जब इन छः बातों के इक़रार से आदमी मुसलमान होता है, इसी में से किसी एक के इन्कार से वो ईमान से निकलेगा, लेकिन अगर इन में से किसी एक का इन्कार नहीं करता तो वो मौमिन ही रहेगा।

मुरतिद को क़ाज़ी शरई की सज़ा देगा

इस के लिए यह आयत है:

1 .وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُوْلٰئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالَهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاُوْلٰئِكَ اَصْحَابَ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ . (آیت ۲۱۷،سورۃ البقرۃ ۲)

तर्जुमा: और अगर तुम में से कोई मुरतिद हो जाये और काफ़िर होने की हालत ही में मरे, तो ऐसे लोगों के आ़माल दुनिया और आख़िरत दोनों में इकारत हो जाऐंगे ऐसे लोग दोज़ख़ वाले हैं और वो हमैशा इसी में रहेंगे।

1 .قال اتى علىؓ بزنادقة فاحرقهم ... لقول رسول الله ﷺ من بدل دينه فاقتلوه. (بخارى شريف، باب حكم المرتد والمرتدة واستتابتهم ، ص ۱۱۹۳،نمبر ۶۹۲۲)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 के पास एक ज़न्दीक़ को लाया गया तो आप ने इस को जला देने का हुक्म दिया......इस लिए कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जो दीन बदल दे इस को क़त्ल कर दो।

2. عـن ابـی موسیؓ قال...، فاذا رجل عنده(عند ابی موسی) موثق،قال مـاهـذا؟ قـال كـان يهـوديا فاسلم ثم تهود،قال اجلس !قال لا اجلس حتی یقتل قـضـاء الـلـه ورسـولـه ثـلاث مـرات فـامر به فقتل (بخاری شریف، باب حکم المرتد والمرتدة واستتابتهم ، ص ۱۱۹۳ ،نمبر ۶۹۲۳)

तर्जुमा: हज़रत मुआ़ज़ रज़ि0 आये वहाँ अबी मूसा रज़ि0 के पास एक आदमी बांधा हुआ था, हज़रत मुआ़ज़ रज़ि0 ने पूछा यह क्या है, तो लोगों ने कहा कि यह यहूदी था, फिर मुसलमान हुआ, अब फिर यहूदी हो गया, फिर हज़रत मुआ़ज़ से कहा गया कि आप बैठ जाऐं, तो उन्होंन कहा कि जब तक इस को क़त्ल नहीं करोगे मैं नहीं बैठूंगा, यह अल्लाह और उसके रसूल का फ़ैसला है, यह तीन मर्तबा फ़रमाया, हाकिम ने हुक्म दिया और वो यहूदी क़त्ल कर दिया गया।

लेकिन मुरतिद को क़त्ल करने के लिए तीन शर्तें हैं

(1) पहली शर्त यह है कि इस्लामी हुकूमत हो।

पहली शर्त यह कि इस्लामी हुकूमत हो तब क़त्ल किया जायेगा ताकि दूसरा मुसलमान भी मुरतिद ना हो जाये, इस के लिए क़ौल सहाबी यह है:

3.عـن زيـد بن ثابتؓ قال لا تقام الحدود فی دار الحرب مخافة ان یلحق اهـلهـا بـالـعـدو. (سـنـن كـبـرى لـلبيهقی ، كتاب السير ، باب من زعم لا تقام الـحـدود فـی ارض الـحـرب حتـی يـرجـع ، ج ۹، ص ۱۷۸، نـمـبـر ۱۸۲۲۵/الاصل لامام محمد ، كتاب السير فی ارض الحرب ، باب اقامة

الحدود فی دار الحرب و تقصیر الصلاۃ ، ج ۷، ص ۳۶۲)

तर्जुमा: हज़रत ज़ैद बिन साबित ने फ़रमाया कि दारूल हरब में हद क़ायम नहीं की जायेगी, इस डर से कि जिस पर हद क़ायम हुई वो कहीं हरबियों के साथ ना मिल जाये।

4.عن حکیم بن عمیر کتب الی عمیر بن سعد الانصاری و الی عماله ، ان لا یقیموا حدا علی احد من المسلمین فی ارض الحرب حتی یخرجوا الی ارض المصالحة . (سنن کبری للبیهقی ، کتاب السیر ، باب من زعم لا تقام الحدود فی ارض الحرب حتی یرجع ، ج ۹، ص ۱۷۸ ، نمبر ۱۸۲۲۶)

तर्जुमा: हज़रत हकीम रह0 ने अ़मीर और इस के आ़मिला को लिखा दारूल हरब में किसी मुसलमान पर हद क़ायम ना करें, जब तक कि वो सुलह की ज़मीन पर ना आ जाये।

इन क़ौल सहाबी में है कि मुसलमान अमीर हो तब भी दारूल हरब में हुदूद क़ायम ना की जाये तो जहां इस्लामी हुकूमत भी ना हो तो वहां हुदूद कैसे क़ायम की जायेगी।

(2) दूसरी शर्त यह है कि शरई क़ाज़ी हो जो हद का फ़ैसला करे।

दूसरी शर्त यह है कि इसलामी क़ाज़ी हो वो तमाम तहक़ीक़ात करके क़त्ल का फ़ैसला करे, तब क़त्ल किया जायेगा, यह अ़वाम का काम नहीं है।

5.عن عقبة بن الحارث ، ان النبی ﷺ اتی بنعمان او بابن نعمان و هو سکران فشق علیه و امر من فی البیت ان یضربوه ، فضربوه بالجرید و النعال . (بخاری شریف ، کتاب الحدود ، باب الضرب بالجرید و النعال ، ص ۱۱۶۸ ، نمبر ۶۷۷۵)

तर्जुमा: नोअ़ान या इब्ने नोअ़मान को हुज़ूर स0अ0व0 के पास लाया गया इस में कि वो नशा में था यह बात हुज़ूर स0अ0व0 पर गिरां गुज़री, फिर जो लोग घर में थे उन को हुक्म दिया कि इस

को मारे, तो लोगों ने खजूर की टहनी और जूतों से मारा।

6.عن انس قال جلد النبی ﷺ فی الخمر بالجرید و النعال . (بخاری شریف ، کتاب الحدود ، باب الضرب بالجرید و النعال ، ص۱۱۶۸، نمبر۶۷۷۶)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने शराब की सज़ा में खजूरी छड़ी और जूतों से मारा।

इन दोनों हदीसों में हुज़ूर स0अ0व0 ने हद का फ़ैसला किया है जो इस वक़्त हाकिम और क़ाज़ी थे, इस लिए क़ाज़ी के फ़ैसले से ही हद की सज़ा दी जा सकेगी।

इस लिए जहां शरई क़ाज़ी नहीं है वहां हद की सज़ा नहीं होगी, वरना अ़वाम में इन्तशार होगा, अल्बत्ता वहां के हाकिम से तअ़ज़ीर का मुतालबा कर सकते हैं, कि वो ऐसी ग़ैर इस्लामी हरकत करने वाले को तन्बीह करे।

(3) तीसरी शर्त यह है कि तीन दोनों तक तौबा की मौहलत दी जायेगी:

तीसरी शर्त यह है कि तीन दिन तक मौहलत दी जायेगी, इस आदमी को बार बार समझाया जायेगा और इस्लाम की हक़ानियत वाज़ह की जाये, तीन दिनों तक समझाने के बाद भी नहीं मानेगा तब जाकर उस को क़त्ल किया जायेगा।

तीन दिनों तक समझाने की दलील यह सहाबी का क़ौल है।

7.عن علیؓ قال یستتاب المرتد ثلاثا (مصنف ابن ابی شیبة ، ۳۰ ماقالوا فی المرتد کم یستتاب ، ج سادس، ص ۴۴۴، نمبر ۳۲۷۴۷/ سنن للبیهقی، باب من قال یحبس ثلاثة ایام ، ج ثامن ، ص ۳۵۹، نمبر ۱۶۸۸۷)

तर्जुमा: हज़रत अ़ली रज़ि0 मुरतिद से तीन दिन तक तौबा करने का मुतालबा करते थे।

हज़रत उ़मर रज़ि0 तीन दिन मौहलत देने पर सख़ती करते थे।

8.لما قدم علی عمر فتح تستر . وتستر من ارض البصرة. سألهم هل من

مغرية ؟قالوا رجل من المسلمين لحق بالمشركين فاخذناه،قال ما صنعتم به؟ قالوا قتلناه ،قال : قال افلا ادخلتموه بيتا واغلقتم عليه بابا و اطعمتموه كل يوم رغيفا ثم استبتموه ثلاثا .فان تاب والا قتلتموه ثم قال اللهم لم اشهد ولم آمر ولم ارض اذا بلغني (مصنف ابن ابی شيبة ،۳۰ ماقالوا فی المرتد كم يستتاب، ج سادس، ص ۴۴۴، نمبر ۳۲۷۴۴/ سنن للبيهقی، باب من قال يحبس ثلاثة ايام ، ج ثامن ، ص ۳۵۹، نمبر ۱۶۸۸۷)

तर्जुमा: जब हज़रत उमर रज़ि0 के पास तसतर की फ़तह की ख़बर आई तसतर ये बसरा का इलाक़ा है, हज़रत उमर रज़ी० ने पूछा के मग़रिब का कोई आदमी है? लोगों ने कहा मुसलमान का एक आदमी मुशरिक हो गया था तो हम ने उसको पकड़ लिया, हज़रत उमर रजी० ने पूछा उस के साथ किया माम्ला किया? लोगों ने कहा हमने उसको क़तल कर दिया, तो हज़रत उमर रजी० ने फरमाया के उसको घर में नहीं बन्द कर देते, और उसको हर रोज़ रोटी खिलाते, फिर तीन दिनों तक उस से तोबा का मुतालबा करते, अगर तोबा कर लेता जो छोड़ देते, वरना उसको क़तल कर देते, फिर हज़रत उमर रजी० ने फरमाया के अल्लाह गवाह रहना, में ने ना उन लोगों को क़तल करने का हुकुम दिया था और जब उसको क़तल की बात पहुंची तो में उस से राज़ी भी नहीं हूँ।

उन सहाबी के कौल में है तीन दिन से पहले क़तल करने पर हज़रत उमर रजी० ने फरमाया कि ऐ अल्लाह ना में उस में हाज़िर हूँ और ना में ने उस का हुकम दिया और ना में उस से राज़ी हूँ, जिस से मालूम हुवा कि तीन दिन तक मोहलत दैना ज़रूरी है, तीन दिनों के बाद भी अपने कोल पर अड़ा रहे तब जाकर उसको क़तल किया जाएगा।

इन शरतों पर उस वक़्त अमल करना इस लिये भी ज़रूरी है के देखा गया है के एक आदमी किसी पर शिर्क का या गुसताखी

का इलज़ाम डालता है और उस की सज़ा के लिये एक भीड़ जमा हो जाती है और वो ये मुतालबा करती है कि इस मुलज़िम को हमारे हवाले करो ताके हम लोग उस को सज़ा दें और सड़क पर पीट पीट कर मारदें और क़ानून को अपने हाथ में ले लें, इस सूरते हाल से पूरे मुल्क में इनतिशार पैदा होता है और मिडिया वाले उसको उछालते हें कि देखो इसलाम कितना ख़तरनाक मज़हब है।

इस लिये उसका ख़ास खयाल रख्खें के हद की सज़ा देने के लिये शरअी क़ाज़ी का होना ज़रूरी है, ये अवाम का काम नहीं है।

आधे जुमले से मुशरिक ना बनाऐं

इस वक़्त कई मुल्कों में ये दैखा गया है कि किसी की बात को तोड़ मरोड़ कर पैश करदिया, या उस ने तक़रीर के दोरान कोई ऐसी बात केह दी जो किसी छोटे ज़ज्ये के खिलाफ था, उसको लोगों ने रिर्काड कर लिया अब उसी को ले कर बैठा है और उसको क़तल करने का मुतालबा किया जा रहा अब वो लाख मर्तबा उस से इन्कार करता है या तोबा करता है तब भी नहीं माना जाता है और उसको फांसी पर लटका कर दम लेते हें, उन हरकतों को गेर मुसलिम मुल्क मिडया पर बार बार दिखलाते हें और लोगों को समझाते हें के इसलाम نعوذباللّٰه जालिम है के अपने इखतियार से एक मज़हब इखतियार करता है, उस की भी आज़ादगी छीन लेता है और उस को सरेआम फांसी पर लटका देता है हालां कि अभी गुज़रा के हक़ीक़ी मुर्तद होने के बावुजूद अगर वो तोबा कर लेता है तो उस को छौड़ दिया जाऐगा।

मैंने एक किताब देखी जिस को ख़त्म नबुव्वत करने के लिए लिखी थी और मुसन्निफ़ ने हुजूर स0अ0व0 को इन्सान जिन्नात और फ़रिश्तों और सारी दुनिया के लिए आख़िरी नबी साबित किया था, लेकिन कुछ हज़रात को देखा कि कहीं कहीं से जुमले काटे और यह साबित किया कि यह साहब ख़त्मे नबुव्वत के क़ाइल नहीं

हैं और इस की इतनी तशहीर की कि बहुत से आदमी यह समझने लगे कि वाक़ई वो मुसन्निफ़ ख़त्म नबुव्वत के क़ाइल नहीं हैं, मैंने असल किताब को देखा तो हैरान हो गया कि किस तरह जुम्लों को काट कर बदनाम किया गया है।

इस लिए इस क़िस्म के फ़ैसलों के लिए ज़रूरी है कि इन्कार करने वालों को तीन दिन तक समझाया जाये और किसी सूरत से भी मुसलमान साबित हो तो इस को क़त्ल ना किया जाये, वरना तो बेपनाह इन्तशार होता है और इस्लाम बदनाम होता है।

आज कल मीड़िया वाले यह सवाल बहुत उठाते हैं कि आयत में

لاَ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْتَبَيَّنَ الرُّشْدِ مِنَ الْغَيِّ. (آیت۲۵۶،سورت البقرۃ۲)

है दीन और मज़हब को क़बूल करवाने में ज़बरदस्ती नहीं है कि तो मुरतिद ने अपनी मरज़ी से दूसरा दीन क़बूल किया तो इस को क़त्ल क्यों किया जाता है?

इस को समझाये कि यह इन मुल्कों में किया जायेगा जहां इस्लामी हुकूमत है, यह मसला यूरोप और अमरीका के लिए है ही नहीं इस लिए इस बारे में बहस करना बेकार है।

तअ़ज़ीर क्या है

कुरआन में कई जुर्मों के लिए हद मुक़र्रर की है, ग़ैर मुस्लिम मुल्कों में क़ाज़ी ना होने की वजह से वो हद नहीं लगाई जा सकती है इस लिए हद से कम यानी चालीस कोड़े से कम उन्तालीस कोड़े तक लगाने का मुतालबा करना तअ़ज़ीर है, या मुजरिम पर कोई मुनासिब जुर्माना लाज़िम करना तअ़ज़ीर है, ग़ैर मुस्लिम मुल्कों में इस का मुतालबा करना जायज़ है।

मुरतिद को सज़ा देने की हुरमत क्या है

मुरतिद की सज़ा में असल हिक्मत यह है कि इस्लामी हुकूमत

में यह छूट दी जाये तो दूसरों को कुफ़्र इख़्तयार करने का मौक़ा मिलेगा और इस से इस की आख़िरत बरबाद हो जायेगी, कि हमैशा हमैशा जहन्नुम में जायेगा, इस लिए इस की आख़िरत बचाने के लिए यह इक़्दाम किया जाता है, इस में ख़ुद मुरतिद का फ़ायदा है जो वो समझ नहीं रहा है।

इस अक़ीदे के बारे में एक आयत और 8 हदीसें हें।

(34) अहले क़िब्ला कौन लोग हैं

इस अक़ीदे के बारे में दो आयतें और 5 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें:

हुजूर स0अ0व0 की लाई हुई तमाम बातों को दिल से मानने का नाम अहले क़िब्ला है:

अक़ीदतुल तहाविया में इबारत यह है:

. و نسمی اهل قبلتنا مسلمین مومنین ،ما داموا بما جاء به النبی ﷺ معترفین، و له بکل ما قال و اخبر مصدقین . (العقیدة الطحاوية ، عقیده نمبر ۵۴، ص ۱۴)

तर्जुमा: जो अहले क़िब्ला हैं हम उस को मुसलमान और मौमिन समझते हैं बशर्तेकि हुजूर स0अ0व0 जो कुछ ले कर आये हैं उन का ऐतराफ़ करने वाला हो और जो कुछ आप ने कहा है और ख़बर दी है उन की तसदीक़ करने वाला हो।

इस इबारत में फ़रमाया कि हुजूर स0अ0व0 जो कुछ लाऐ हैं उन का ऐतराफ़ करता हूं कि यह अल्लाह की जानिब से हैं और जो कुछ आप ने कहा है इस की दिल से तसदीक़ करता हूं तो वो मौमिन है, मुसलमान है, और वही अहले क़िब्ला है।

इन अहादीस में इस की दलील है:

1. عن انس بن مالک قال قال رسول الله ﷺ من صلی صلاتنا و استقبل قبلتنا و اکل ذبیحتنا فذالک المسلم الذی له ذمة الله و ذمة رسوله

فلا تکفروا اللہ فی ذمتہ . (بخاری شریف ، کتاب الصلاۃ ، باب فضل استقبال القبلۃ ، ص ٦٩ ، نمبر ٣٩١)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस ने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी हमारे क़िब्ला का इस्तक़बाल किया हमारा ज़िबाह किया हुआ गौश्त खाया तो यह मुसलमान है, जिस के लिए अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा है इस लिए अल्लाह के ज़िम्मे को मत छुपाओ।

2.عن انس بن مالک قال قال رسول اللہ ﷺ امرت ان اقاتل الناس حتی یقولوا لا الہ الا اللہ ، فاذا قالوھا و صلوا صلاتنا و استقبلوا قبلتنا و ذبحوا ذبیحتنا فقد حرمت علینا دمائھم و اموالھم الا بحقھا و حسابھم علی اللہ . (بخاری شریف، نمبر ٣٩٢)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जब तक कि ला इलाहा इल्लल्लाह ना कहे इस वक़्त तक मुझे जंग करने का हुक्म दिया गया है, फिर जब लाइलाहा इल्लल्लाह कह ले और हमारी तरह नमाज़ पढ़ने लगे हमारे क़िब्ले का इस्तक़बाल करने लगे, हमारा ज़िबाह किया हुआ गौश्त खाने लगे तो इस का ख़ून करना इस का माल छीनना हम पर हराम है, हां जो अल्लाह का हक़ है हम वो लेंगे बाक़ी इस का हिसाब अल्लाह पर है।

और अगली हदीस में है:

فھو مسلم لہ ماللمسلم و علیہ ما علی المسلم .(بخاری شریف ، کتاب الصلاۃ ، باب فضل استقبال القبلۃ ، ص ٦٩ ، نمبر ٣٩٢/ ٣٩٣)

अगली हदीस के टुकड़े का **तर्जुमा:** यह लोग मुसलमान हैं मुसलमान का जो हक़ है यह इस को भी मिलेगा और मुसलमान पर जो ज़िम्मा दारियां हैं उन पर भी यह ज़िम्मेदारियां होंगी।

इन तीनों हदीसों में यह है कि अहल क़िब्ला हो तो वो मुसलमान है इस को ना काफ़िर कहो और ना काफ़िर जैसा बरताव करो।

जो लोग इन छः चीज़ों को दिल से मानता हो उस को अहले क़िब्ला कहते हैं

1– अल्लाह को।

2– रसूल को।

3– अल्लाह की किताब, यानी कुरआन करीम को।

4– फ़रिश्तो को।

5– आख़िरत क दिन को।

6– और तक़दीर को मानता हो उस को मौमिन कहते हैं और वो अहले क़िब्ला हैं।

अ़क़ीदतुल तहाविया में इबारत यह है:

. و الايمان هو الايمان بالله ، و ملائكته ، و كتبه ، و رسله و اليوم الآخر ، و القـدر خيره و شره و حلوه و مره من الله تعالى . (عقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ٦٢ ، ص ١٥)

तर्जुमा: इन बातों पर ईमान लाये अलख़। इस की दलील ईमान की बहस में गुज़र चुकी है।

इस से पहले की इबारत में भी है कि हुज़ूर स0अ0व0 की लाई हुई बातों का ऐतराफ़ करता हूं, और इन को दिल से मानता हो तो वो मौमिन है मुसलमान है, और वही अहले क़िब्ला है, सिर्फ़ हमारा ज़बीहा खाने से अहले क़िब्ला नहीं हो जायेगा।

इन की पूरी तफ़सील ईमान की बहस में देखें।

फ़ाजिर की इमामत जायज़ है अल्बत्ता मकरूह है

किसी को अपने इख़तयार से इमाम मुतअ़य्यन करे तो मुत्तक़ी और परहैज़गार को इमाम मुतअ़य्यन करे, लेकिन कहीं मजबूरी के दरजे में किसी फ़ासिक़, फ़ाजिर के पीछे नमाज़ पढ़नी पड़े तो इस

के पीछे नमाज़ पढ़ ले ताकि जमाअ़त से नमाज़ अदा हो जाये और आप के छोड़ने की वजह से इन्तशार भी ना हो।

आज कल ज़रा ज़रा सी बात पर इख़्तलाफ़ कर लेते हैं और नमाज़ नहीं पढ़ते हैं, ग़ैर मुल्कों में इत्तहाद बरक़रार रखने के ख़ातिर इससे बचने की ज़रूरत है।

फ़ाजिर की इमामत के बारे में अ़क़ीदतुल तहाविया की इबारत यह है:

و نرى الصلوة خلف كل بر و فاجر من اهل القبلة و على من مات منهم.

(عقيدة الطحاوة ، عقيده نمبر ٦٩، ص ١٦)

तर्जुमा: जो अहले क़िब्ला हें, उन में से हर नैक और फाजिर के पीछे नमाज़ पढ़ना जाईज़ समझते हें और अहले क़िबला में से जो नैक या नया फाजिर मर गया हो उस पर नमाज़ जनाज़ा पढ़ना भी जाईज़ समझते हें। लेकिन कभी फाजिर के पीछे नमाज़ पढ़नी पड़े तो पढ़ले कियों कि उस के पीछे नमाज़ पढ़ना जाईज़ है।

इस के लिए हदीस यह है:

3. عن ابى هريرة قال قال رسول الله ﷺ الصلاة المكتوبة واجبة خلف كل مسلم برا كان او فاجرا ، و ان عمل الكبائر. (ابو داود شريف ، كتاب الصلاة ، باب امامة البر و الفاجر، ص ٩٧، نمبر ٥٩٤)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि फ़र्ज़ नमाज़ हर मुसलमान के पीछे पढ़ना वाजिब है, चाहे वो नेक हो या फ़ाजिर हो और चाहे वो गुनाहे कबीरा करता हो।

इस हदीस में है कि इन्सान नेक हो या फ़ाजिर हो उस के पीछे नमाज़ जायज़ है बशर्तेकि वो मुसलमान हो, काफ़िर और मुश्रिक ना हो।

ताहिम नेक इमाम मिल जाये तो हमैशा के लिए इस को इमाम बनाना बेहतर है। इस के लिए यह हदीस है:

4. عـن جـابـر بـن عبـد الله قال خطبنا رسول الله ﷺ .....الا لا تؤمن امـراـة رجـلا و لا يـؤم اعـرابـى مهـاجرا و لا يوم فاجر مؤمنا الا يقهره بسلطان يـخـاف سيـفـه و سـوطـه . (ابـن ماجة شريف ، كتاب اقامة الصلوة ، باب فى فرض الجمعة ، ص ١٥٢ ، نمبر ١٠٨١)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने हम को ख़ुत्बा दिया......सुन लो औ़रत मर्द की इमामत ना करे, देहाती हिजरत किये हुए सहाबी की इमामत ना करे, फ़ाजिर मुत्तक़ी मौमिन की इमामत ना करे, हां कोई बादशाह इस को जबूर करदे और आदमी की तलवार और उसके कोड़े से डरता हो तो (तो फिर इस फ़ाजिर के पीछे नमाज़ पढ़ले)।

लेकिन अगर वो आदमी ऐतक़ाद के ऐतबार से हर तरह से मुश्रिक है तो अब उस की इमामत जायज़ नहीं है, क्योंकि वो तो मुसलमान ही नहीं रहा।

इस वक़्त का आ़लम यह है कि बहुत सी जगह एक मसलक वाला दूसरे मसलक वाले के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते हैं जिस से इतना इन्तशार है कि क़ौम तबाह हो रही है। अल्लाह हमें समझ अ़ता फ़रमाये।

इस्लाम में तशद्दुद भी नहीं है और बहुत ढ़ील भी नहीं है

इस्लाम में तशद्दुद भी नहीं है और बहुत ढ़ील भी नहीं है इस के दरमियान है। अ़क़ीदतुल तहाविया में इबारत यह है:

.و هـو [يعنى الاسلام] بين الغلو و التقصير ، و بين التشبيه و التعطيل ، و بيـن الـجبـر و الـقـدر ، و بيـن الامـن و اليـاس . (عقيدة الطحاويه، عقيده نمبر ١٠۴ ، ص ٢٢)

तर्जुमाः (बहुत ज़्यादा गुलू करना, और बहुत ज़्यादा कमी करना, अल्लाह को किसी के मुशाबा क़रार देना, और अल्लाह को बेकार समझना, अल्लाह को मजबूर समझना, इन्सान को क़ादिर समझना, गुनाह से बेख़ौफ़ हो जाना, अल्लाह से बिल्कुल मायूस हो जाना, इस्लाम इस के दरमियानी रास्ते को कहते हैं)।

इस इबारत में है कि ज़्यादा गुलू करना भी ठीक नहीं है, और बहुत कमी करना भी ठीक नहीं, इस के दरमियानी रास्ते को इस्लाम कहते हैं। इस के लिए आयत यह है:

1. **يَااَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقِّ .**

(آیت ۱۷۱، سورت النساء ۴)

तर्जुमाः ऐ अहले किताब! अपने दीन में हद से ना बढ़ो, और अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा कोई बात ना कहो।

2. **يَـاأَيُّهَـا الَّـذِيْـنَ اٰمَـنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبَاتٌ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ .** (آیت ۸۷، سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो पाकीज़ा चीज़ें हलाल की हैं उन को हराम क़रार ना दो, और हद से तजावुज़ ना करो, यक़ीन जानो अल्लाह हद से तजावुज़ करने वालों को पसन्द नहीं करते।

इन दोनों आयतों में है कि हद से तजावुज़ करना ठीक नहीं है।

5.عن انس ان نفرا من اصحاب النبی ﷺ سألوا ازواج النبی ﷺ عن عـمـلـه فی السر ؟ فقال بعضهم لا اتزوج النساء و قال بعضهم لا آكل اللحم و قـال بـعـضـهـم لا انام فی فراش، فحمد الله و اثنى عليه فقال: ما بال اقوام قالوا كـذا كـذا ؟ لكنی اصلی و انام و اصوم و افطر و اتزوج النساء ، فمن رغب عن سنتی فليس منی . (مسلم شریف ، کتاب النکاح ، ص۵۸۶، نمبر ۱۴۰۱/۳۴۰۳)

तर्जुमाः हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि कुछ सहाबा ने हुज़ूर स0अ0व0 की बीवियों से हुज़ूर स0अ0व0 की ख़ानगी अ़मल के बारे में पूछा? फिर इन में से एक ने कहा मैं अ़ौरतों से शादी ही नहीं करूंगा, दूसरे ने कहा मैं गौश्त नहीं खाउंगा, एक ने कहा कि मैं बिस्तर पर नहीं सोउंगा, तो हुज़ूर स0अ0व0 ने हम्द व सना के बाद फ़रमाया कि लोगों को क्या हुआ कि इस इस तरह कहते हैं, लेकिन मैं तो नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं, रोज़ा भी रखता हूं और कभी रोज़ा नहीं भी रखता हूं, और अ़ौरतों से निकाह भी करता हं, यह मेरी सुन्नत है, जो मेरी सुन्नत से बेरग़बती करे वो मुझ में से नहीं है।

इस हदीस में है कि इतना तशद्दुद भी ना करे कि लोग तंग आजाऐ और इतनी सहूलत भी ना दे के लोग हराम का इरतकाब करने लगे।

इस अक़ीदे के बारे में दो आयतें और 5 हदीसें हें, आप हर एक की तफसील देखें।

(35) पीरी मुरीदी

इस अक़ीदे के बारे में 3 आयतें और 7 हदीसें हें आप हर एक की तफसील देखें:

पीरी मुरीदी का फाईदा

पीर मुखलिस हो, मुरीद को नैक इंसान बनाने की तड़प हो, और खुद भी नैक इंसान हो तो उस से मुरीद को फाइदा होता है, वो भी नैक इंसान बन जाता है जैसे उस्ताद अचछा हो और अचछी तरह पढ़ाता हो तो उस से शागिर्द बहुत अचछा निकलता है, इसी तरह पीर का हाल है। लेकिन उस के लिये शर्त ये है कि मुरीद में भी नैकी हासिल करने की सलाहियत हो और नैक बन्ने के लिये पूरी मेहनत करता हो, तब वो नैक बनता है वरना खाली

रह जाता है। इसी शागिर्दी में आने के लिये पीर के हाथ पर अहद करते हें कि में वादा करता हूँ कि आप की नसीहत मानुंगा और शरीअत पर पाबन्दी से अमल करूंगा इसी अहद का नाम बेअत है।

पीर अपने मुरीद को ये चार फाइदे दे सकते हें

हुज़ूर स0अ0व0 को इन चार कामों के लिये भैजा गया है एक पीर का भी यही काम है के अपने मुरीद को ये चार काम सिख्लाऐ।

(1) उम्मत के सामने कुरआन पढ़े।
(2) उनको कुरआन सिखाऐ।
(3) हिक्मत सिख्लाऐ।
(4) और तज़किया करे।

उसके लिये आयतें ये हें:

1.هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِنْ اَنْفُسِهِمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیَاتِهٖ وَ یُزَکِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْکِتَابَ وَ الْحِکْمَةَ وَ اِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلِ لَفِیْ ضَلَالٍ مُّبِیْنٍ .
(آیت۲،سورۃ الجمعۃ۶۲)

तर्जुमा: वही है जिस ने उम्मी लोगों में उनही में से एक रसूल को भेजा जो उनके सामने उसकी आयतों की तिलावत करें और उनको पाकिज़ा बनाऐं और उनहें किताब और हिक्मत की तालीम दें, जब के वो उस से पहले खुली गुमराही में पड़े हुवे थे।

2.رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیَاتِکَ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْکِتَابَ وَ الْحِکْمَةَ وَ یُزَکِّیْهِمْ . (آیت۱۲۹،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: और हमारे पर्वरदिगार! उनमें एक ऐसा रसूल भी भैजना जो उनहीं में से हो जो उनके सामने तेरी आयतों की तिलावत करे, उन्हें किताब और हिक्मत की तालीम दे और उनको पाकीज़ा बनाऐ।

इस आयत में है कि हुज़ूर स0अ0व0 को चार काम के लिये

मबऊस किया गया है (1) कुरआन की तिलावत करने के लिये (2) कुरआन सिख्लाने के लिये (3) हिक्मत सिख्लाने के लिये (4) और तज़किया करने के लिये, पीर साहब अचछे हों तो यही चार काम वो सिख्लाते हें और मुरीद को यही फाइदा होता।

यहां तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में तज़्किया का मअ़नी क्या है कि पीर साहब तौहीद समझा कर शिर्क से बचाने की कौशिश करेंगे और तौबा करवा कर गुनाह से बचाने की कौशिश करेंगे **يــزكيهم** का यही मतलब है।

यह मतलब नहीं है कि पीर साहब कोई ख़ास क़िसम की दिल की सफ़ाई कर देंगे जैसा कि बाज़ हज़रात समझते हैं अगर ऐसा होता तो पीर साहब पहले अपनी औलाद का तज़्किया कर लेते और हर पीर का बेटा वली कामिल होता, हालांकि हम देखते हैं कि बहुत से पीर की औलाद नाकारा और ना अहल होती है।

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास की इबारत यह है:

﴿و يـزكيهم﴾يطهرهم بالتوحيد من الشرک ، و يقال بالزكاة و التوبة من الـذنـوب ، اى يـدعـوهـم الـى ذالک (تفسير ابن عباس ، آيت ٢، سوره الجمعة ٦٢)

तर्जुमा: लोगों को पाक करते हैं, यानी तौहीद के ज़रिये शिर्क से पाक करते हैं, बाज़ हज़रात ने यह भी फ़रमाया कि ज़कात का मतलब यह है कि गुनाहों से तौबा करवाते हैं, तौबा करने की तरफ़ लोगों को बुलाते हैं।

इस तफ़सीर में है कि तौहीद के ज़रिये मुरीदों को शिर्क से पाक की कौशिश करेंगे और गुनाहों से तौबा करवाने की कौशिश करेंगे इस लिए यह मतलब नहीं है कि दिल की कोई ख़ास क़िस्म की सफ़ाई करेंगे। और यह शिर्क से तज़किया भी इस वक़्त होती है जब ख़ुद मुरीद में सलाहियत हो और ख़ुद भी शिर्क से बचने की मेहनत करे अगर वो मेहनत ना करे तो पीर साहब लाख सर मारे कुछ नहीं होता।

पीर ख़ुदा तरस हो तो इस का ज़्यादा असर पड़ता है

1. ان اسماء بنت یزید انها سمعت رسول الله ﷺ یقول : الا ینبأکم بخیارکم ؟ قالوا بلی یا رسول الله قال خیارکم الذین اذا رؤوا ذکر الله عز و جل . (ابن ماجة شریف ، کتاب الزهد ، باب من لا یؤبه له ، ص۶۰۱، نمبر۴۱۱۹)

तर्जुमा: मैंने हुज़ूर स0अ0व0 को कहते हुए सुना है कि तुम में से अच्छे कौन हैं इस की ख़बर दूं? लोगों ने कहा, हां या रसूलुल्लाह स0अ0व0! आप स0अ0व0 ने फ़रमाया तुम में से अच्छे वो लोग हैं जब इन को देखो तो ख़ुदा याद आ जाये।

इस हदीस में है कि जिसे देख कर ख़ुदा याद आये वो अच्छे लोग हैं इस लिए पीर ऐसा अल्लाह वाला हो जिस को देख कर ख़ुदा याद आये और अगर पीर की शान व शौकत देख कर दुनिया याद आने लगती है तो या इस की मक्कारी को देख कर आप का जी घबराता है तो इस पीर के पास बैठ कर आप को क्या मिलेगा।

इस हदीस में है कि नेक लोग हो तो इस के पास बैठने का असर पड़ता है कि आख़िरत में जी लगने लगता है और बदकार आदमी हो या मक्कार पीर हो तो इस के पास बैठने से इस का भी असर पड़ता है कि दुनिया दारी में जी लगने लगता है।

हदीस यह है:

2. سمعت ابا برده بن ابی موسی عن ابیه رض قال قال رسول الله ﷺ مثل الجلیس الصالح و الجلیس السوء کمثل صاحب المسک و کیر الحداد ، لا یعدمک من صاحب المسک اما تشتریه او تجد ریحه ، و کیر الحداد یحرق بیتک ، او ثوبک ، او تجد منه ریحا خبیثة . (بخاری شریف ، کتاب البیوع، باب فی العطار و بیع المسک ، ص ۳۳۸، نمبر ۲۱۰۱ / مسلم شریف ، کتاب البر و الصلة ، باب استحباب مجالسة الصالحین و مجانبة قرناء السوء، ص ۱۱۴۶ ، نمبر ۲۶۲۸ نمبر ۶۶۹۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि नेक बैठने वाले और बुरे बैठने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क वाला और लुहार की भट्टी, मुश्क वाल से आप को कुछ ना कुछ मिलेगा ही, या इस से मुश्क ख़रीदेंगे या इस की ख़ुशबू तो ज़रूर मिलेगी और लुहार की भट्टी या आप का घर जलायेगी या आप का कपड़ा जलायेगी, या इस की बदबू ज़रूर मिलेगी।

इस हदीस में है कि नेक लोगों का और बुरे लोगों का असर पड़ता है।

इन अहादीस से पता चला कि पीर साहब अच्छे हों और मुख़लिस हों और इन से फ़ायदा हासिल करने वाला भी मुख़लिस हो और लगन के साथ हासिल करे तो इस से ऊपर के चार फ़ायदे और चार फ़ैज़ हासिल होते हैं।

दुनिया तलब करने के लिए पीर बनाना, या मुरीद बनाना अच्छी बात नहीं है

इस के लिए यह हदीस है:

3.سمعت ابا هريرةؓ يقول قال رسول الله ﷺ ثلاثة لا ينظر الله اليهم يوم القيامة و لا يزكيهم و لهم عذاب اليم .....و رجل بايع امامه لا يبايعه الا لدنيا فان اعطاه منها رضى و ان لم يعطه منها سخط ....ثم قرأ ﴿ان الذين يشترون بعهد الله و ايمانهم ثمنا قليل﴾ا [آيت ٧٧، سورت آل عمران ٣) . (بخارى شريف ، كتاب المساقاة باب اثم من منع ابن السبيل من الماء ، ص ٣٧٩، نمبر ٢٣٥٨)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तीन आदमियों की तरफ़ अल्लाह नहीं देखेंगे और ना इस को पाक करेंगे, और इस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होगा...... एक आदमी जिस ने अपने इमाम से बैअ़त की और सिर्फ़ दुनिया कमाने के लिए

बैअ़त की, अगर इमाम ने दिया तो इस से राज़ी हो गया और अगर नहीं दिया तो उस से नाराज़ हो गया......पर हुज़ूर स0अ0व0 ने यह आयत पढ़ी, जिस का तर्जुमा यह है कि जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों से थोड़ा सा माल ख़रीदते हैं अलख़।

इस हदीस में है कि दुनिया के लिए जो बैअ़त करता है अल्लाह क़यामत के रोज़ इस की तरफ़ रहमत की निगाह से नहीं देखेंगे और ना इस को पाक करेंगे और इन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।

इस दौर में कुछ लौगौं ने मुरीद करना भी एक धंदा बना लिया है मालदार मुरीदों से ख़िलाफ़त और मुरीदी के नाम पर बहुत लूटते ऐसे पीरों से चौकन्ना रहने की ज़रूरत है, यह दीन के लिए और तरबियत देने के लिए मुरीद नहीं बनाते बल्कि पैसा कमाने के लिए पीरी मुरीदी की जाल बिछाते हैं ऐसे पीरों से बचना चाहिए।

इस दुनिया में अच्छे पीर भी हैं जो लोगों की तरबियत करते हैं, मेरे एक उस्ताज़ थे जो पीर थे वो हम लोगों को उलटा पैसा दिया करते थे और बहुत मुख़्लिस थे एक अ़ज़ीम मुफ़ती होने के बावजूद पूरी ज़िन्दगी फ़क़्र व फ़ाक़ा में गुज़ार दी मैं आज तक इन से मुतास्सिर हूं। मेरी ज़िन्दगी में दो तीन पीर ऐसे ही आये जिन्होंने ने अपनी पूरी ज़िन्दगी फ़क़्र व फ़ाक़ा में गुज़ारी और मुरीदों की तरबियत में गौशां रहे। फ़लिल्लाहिल हम्द।

मैं किसी से नफ़रत के लिए नहीं बल्कि लोगों को ख़ुराफ़ात से बचाने के लिए यह सब लिख रहा हूं आप मेरे तजुर्बे से फ़ायदा उठाऐं।

बैअ़त की चार क़िस्में होती हैं

(1) ईमान पर बरक़रार रहने के लिए बैअ़त करना।

(2) जिहाद के लिए बैअ़त करना।

(3) ख़िलाफ़त के लिए बैअ़त करना।

(4) आमाले सालिहा करने के लिए और इस में तरक़्क़ी करने के लिए बैअ़त करना।

(1) ईमान पर बरक़रार रहने के लिए और आमाले सालिहा के लिए बैअ़त करना।

उसके लिये ये आयत है:

3.يَـا اَيُّهَـا النَّبِىُّ اِذَا جَآءَ كَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـئًا وَّلَا يَسْـرِقْـنَ وَ لَا يَـزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَأْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْـدِيْهِـنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِى مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْلَهُنَّ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ . (آیت۱۲،سورت الممتحنۃ ۶۰)

तर्जुमा: ऐ नबी जब तुम्हारे पास मुसलमान औ़रतें इस बात पर बैअ़त करने के लिए आएें कि वो अल्लाह के साथ किसी भी चीज़ को शरीक नहीं मानेंगी और चौरी नहीं करेंगी और ज़िना नहीं करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी और ना कोई ऐसा बोहतान बांधेंगी जो उन्होंने अपने हाथों और पांव के दरमियान घड़ लिया हो और ना किसी भले काम में तुम्हारी नाफ़रमानी करेंगी तो तुम इन को बैअ़त कर लिया करो और इन के हक़ में अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ़ किया करो यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत मेहरबान है।

इस आयत में हुज़ूर स0अ0व0 से नेक आ़माल करने पर बैअ़त लेने के लिए कहा गया।

(2) जिहाद के लिए बैअ़त करना, इस के लिए यह आयतें हैं:

4.اِنَّ الَّـذِيْـنَ يُبَـايِـعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ فَمَنْ نَكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ وَ مَنْ اَوْفٰى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا .

(آیت۱۰،سورت الفتح ۴۸)

तर्जुमा: ऐ रसूल जो लोग आप से बैअ़त कर रहे हैं वो हक़ीक़त से बैअ़त कर रहे हैं वो हक़ीक़त में अल्लाह से बैअ़त कर

रहे हैं, अल्लाह का हाथ इन के हाथों पर है इस के बाद जो कोई अ़हद तोड़ेगा उस का वबाल इसी पर पड़ेगा और जो कोई इस अ़हद को पूरा करेगा जो उस ने अल्लाह से किया है तो अल्लाह ज़बरदस्त सवाब अ़ता करने वाला है।

5.لَقَدُ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُوْمِنِیْنَ اذْ یُبَایِعُوْنَکَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّکِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحاً قَرِیْباً. (آیت۱۸،سورت الفتح۴۸)

तर्जुमा: यक़ीनन अल्लाह इन मौमिनों से बड़ा ख़ुश हुआ जब वो दरख़्त के नीचे आप से बैअ़त कर रहे थे, और उन के दिलों में जो कुछ था वो भी अल्लाह को मालूम था, इस लिए इन पर सकनियत उतार दी और इन को इनआ़म में एक क़रीबी फ़तह अ़ता फ़रमा दी।

इन दोनों आयतों में जिहाद पर बैअ़त करने का ज़िक्र है।

(3) ख़िलाफ़त पर बैअ़त के लिए सहाबी का यह अ़मल है।

4.فحمد الله ابو بکر و اثنی علیه ......فقال عمر بل نبیعک انت سیدنا و خیرنا و احبنا الی رسول الله ﷺ، فاخذ عمر بیده فبایعه و بایعه الناس .

(بخاری شریف ، کتاب فضائل الصحابة باب، ص ۶۱۲ ، نمبر ۳۶۶۸)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने अल्लाह की हम्द व सना की......हज़रत उ़मर रज़ि0 ने कहा कि आप हमारे सरदार हैं, हम में से अच्छे हैं, हुजूर स0अ0व0 को आप बहुत महबूब थे, यह कह कर हज़रत उ़मर रज़ि0 ने हज़रत अबूबकर रज़ि0 का हाथ पकड़ा और उन से बैअ़त कर ली, फिर लोगों ने भी हज़रत अबूबकर रज़ि0 से बैअ़त की।

इस हदीस में ख़िलाफ़त पर बैअ़त करने का सबूत है।

(4) आ़माले सालिहा करने के लिए और इस में तरक़्क़ी करने के लिए बैअ़त करना।

5.سمعت جریر بن عبد الله ؓ یقول بایعت رسول الله ﷺ علی شهادة

ان لا الـه الا الـلـه ، و ان مـحـمـد رسـول الـلـه و اقامة الصلاة و ايتاء الزكوة و السـمـع و الـطاعة و النصح لكل مسلم . (بخارى شريف كتاب البيو ع ، باب هل يبيع حاضر لباد بغير اجر ، ص ۳۴۵، نمبرر ۲۱۵۷)

तर्जुमाः हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं हुजूर स0अ0व0 से इन बातों पर बैअ़त की, **شهادة ان لا اله الا الله ، و ان محمد رسول الله**، और नमाज़ क़ायम करूं, ज़कात, दूं, हुजूर स0अ0व0 की बात सुनूं, इन की इताअ़त करूं और हर मुसलमान के साथ ख़ैर ख़्वाही का मामला करूं।

इस हदीस में है कि आ़माल सालिहा करने के लिए हुजूर स0अ0व0 के हाथ पर बैअ़त की थी।

हुजूर स०अ०व० औ़रतों को बैअ़त करते थे लेकिन इन के हाथ को नहीं छूते थे

हुजूर स0अ0व0 औ़रतों से बैअ़त करते थे इन के हाथ को नहीं छूते थे, परदे में रह कर बैअ़त करते थे, इस के लिए यह हदीस है:

6.عن عائشة زوج النبى ﷺ..... قالت عائشة فمن اقر بهذ الشرط من الـمـومـنـات فـقـد اقـر بالمحنة، فكان رسول الله ﷺ اذا اقررن بذالك من قـولهـن قـال لهـن رسـول الله ﷺ انطلقن فقد بايعتكن ، لا و الله ما مست يد رسول الله ﷺ يد امراة قط غير انه بايعهن بالكلام ، و الله ما اخذ رسول الله عـلـى الـنـسـاء الا بـمـا امره الله ،يقول لهن اذا أخذ عليهن قد بايعتكن كلاما . (بـخـارى شـريف ، كـتـاب الـطـلاق ، بـاب اذا اسلمت المشركة او النصرانية تحت الذمى او الحربى ، ص ۹۴۵، نمبر ۵۲۸۸)

तर्जुमाः हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं: मौमिन औ़रतों में से जो आयत की शर्तों का इक़रार कर लेती तो गोया कि उस ने इम्तिहान देने की बातों का इक़रार कर लिया, औ़रतें जब बातों से

इन चीज़ों का इक़रार कर लेतीं, तो हुज़ूर स0अ0व0 कहते, तुम लोग चली जाओ मैंने तुम से बैअ़त कर ली है ख़ुदा की क़सम हुज़ूर स0अ0व0 के हाथ ने किसी औ़रत का हाथ कभी नहीं छुआ, सिर्फ़ बात से ही बैअ़त कर लिया करते थे, अल्लाह ने जितना हुक्म दिया था हुज़ूर स0अ0व0 औ़रतों के साथ उतना ही मामला करते हुज़ूर स0अ0व0 जब औ़रतों से बैअ़त लेते तो यही कहते मैंने बात (कलाम) से ही तुम से बैअ़त कर ली है।

इस हदीस में है कि औ़रतों से सिर्फ़ कलाम से बैअ़त की इस का हाथ नहीं छुया। आज कल देखा जा रहा है कि मुरीदा औ़रत पीर के सामने बेमहाबा बैठी हुई है और बेपर्दगी के वो सारे खेल करते हैं जो नहीं होनी चाहिए, इस से हर हाल में बचना चाहिए।

पीर साहब आप को कोई मअ़नवी फ़ैज़ दे देंगे ऐसा नहीं है

बाज़ पीर हज़रात यह तास्सुर देते रहते हैं कि मेरी ख़िदमत करोगे तो मैं तुम्हें कोई मअ़नवी फ़ैज़ दे दूंगा और मुरीद इस के हासिल करने के लिए बरसों ख़िदमत में लगा रहता है और वो इस हदीस से इस्तदलाल करते हैं लेकिन याद रहे कि यह मअ़नवी चीज़ देने का वाक़िआ हदीस में सिर्फ़ एक मर्तबा है जो मोअ़ज्ज़ा के तौर पर था, इस के बाद फिर सादिर नहीं हुआ......वरना हर पीर अपनी औलाद को यह फ़ैज़ पहले द देता। हदीस यह है:

हदीस ये है:

7. عن ابی هريرةؓ .... و قال النبی ﷺ يوما لن يبسط احد منكم ثوبه حتی اقضی مقالتی هذه ثم يجمعه الی صدره فينسی من مقالتی شيئا ابدا ، فبسطت نمرة ليس علی ثوب غيرها ، حتی قضی النبی ﷺ مقالته ثم جمعتها الی صدری فوالذی بعثه بالحق ما نسيت من مقالته تلک الی يومی هذا .

(بخاری شریف ، کتاب الحرث و المزارعة ، باب ما جاء فی الغرس، ص۳۷۷، نمبر ۲۳۵۰)

तर्जुमा: हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने एक दिन फ़रमाया कि कोई अपना कपड़ा फैलाऐ ताकि मैं इस में अपनी कोई बात कह दूं और इस को अपने सीने से लगाले तो कभी वो मेरी बात नहीं भूलेगा, पस मैंने अपनी एक चादर फैला दी, मेरे पास इस के अ़लावा थी भी नहीं, हुज़ूर स0अ0व0 ने अपनी बात इस में कही, फिर इस चादर को अपने सीने पर चिपका लिया, पस क़सम है उस ज़ात की जिस ने हक़ के साथ आप को मबऊ़स किया आप की कोई बात अभी तक नहीं भूली।

यह हदीस मोअ़ज्ज़ा के तौर पर है हमैशा यह बात नहीं थी वरना बार बार हुज़ूर स0अव0 यह फ़ैज़ देते।

इस अ़क़ीद के बारे में तीन आयते और सात हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(36) तअ़वीज़ पहनना कैसा है

इस अ़क़ीदे के बारे में 4 आयतें और 29 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें:

तअ़वीज़ की सात क़िसमें हैं:

(1) कुरआन और हदीस की जायज़ तअ़वीज़ को जायज़ मक़सद के लिए पढ़ी जाये या की जाये तो यह जायज़ है।

(2) तअ़वी़ या मन्त्र में अल्लाह के अ़लावा से मदद मांगी गई हो तो यह हराम है।

(3) तअ़वीज़, या मन्त्र में ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये गये हैं जिन का मअ़नी का पता नहीं है, तो हो सकता है कि इस में अल्लाह के अ़लावा से मदद मांगी गई हो तो यह भी जायज़ नहीं है।

(4) नज़र बद लगना।

(5) जादू, यह करना हराम है।

(6) अ़राफ़, जो ग़ैब जानने का दअ़वा करता हो, इसके पास जाना हराम है।

(7) जिन्नात निकालना।

तअ़वीज़ करने की दो सूरतें हैं

(1) एक है कुरआन और हदीस को पढ़ कर फूंकना, इस का सबूत हदीस में है।

(2) दूसरा है कि आयत या हदीस को लिख कर गले में लटकाना, हदीस से इस की मुमानिअ़त मालूम होती है। हर एक के लिए आगे आयत और हदीस देखें।

बाज़ तअ़वीज़ करने वालों का मकर

दुनिया में अच्छे लोग भी हैं लेकिन कुछ लोग ऐसा करते हैं। सब नहीं, बाज़ तअ़वीज़ करने वाला, बीच बीच की बातें करता है वो ना यह कहता कि जिन्नात है और ना वो इस का इन्कार करता है, बल्कि यूं कहता है कि इस पर जिन्नात का साया है यानी जिन्नात है भी और नहीं भी है और इस के उतारने के लिए काफ़ी पैसे वसूल कर लेता है और महीनों बाद ना उतरे तो यह कह देता है कि मैंने एक जिन्नात को निकाल दिया था लेकिन अब उस के ख़ान्दान के लोग आ गये हैं अब इस को उतारने के लिए और पैसे लगेंगे। कभी यह भी कह देते हैं कि आप के क़रीब के लोगों ने जादू किया है या तअ़वीज़ की है और क़रीब में पड़ौसन, भावी, सास, और नन्द होतीं हैं तो इन में से किसी एक से ज़िन्दगी भर के लिए अन्दर ही अन्दर दुशमनी हो जाती है, और बाज़ मर्तबा बड़ा हंगामा हो जाता है और यह सब तावीज़ वाला करवाता है कि ख़ुद तअ़वीज़ वाले को इस का कुछ पता नहीं होता है इस लिए ऐसे तअ़वीज़ और जादू वालों से परहैज़ करना ही बेहतर है। इस

आयत में इस की वज़ाहत है:

1. فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ زَوْجِهٖ وَ مَا هُمْ بِضَارِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ . (آیت۱۰۲،سورت البقرة۲)

तर्जुमा: फिर भी यह लोग इन से वो चीज़ें सीखते थे जिस के ज़रिये शौहर, और बीवी में जुदाई पैदा कर दें, और यह वाज़ह रहे कि वो इस के ज़रिये किसी को अल्लाह की मशिय्यत के बग़ैर कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते थे।

इस आयत में फ़रमाया कि यह जादू करने वाले उ़मूमन ऐसी हरकतें करते हैं कि मियां बीवी में भी इख़्तलाफ़ हो जाता है, बाज़ मर्तबा रिश्तेदारों में दुशमनी करवा देता है, वाक़ई बाज़ तअ़वीज़ वालों को एक बात का पता लगता है तो इस में सौ झूट मिला कर मरीज़ को बताते हैं ताकि इस को यक़ीन आ जाये और इस की दुकान ख़ूब चले। इस के लिए हदीस यह है:

1.عن عائشة قالت قلت یا رسول الله ! ان الكهان كانوا يحدثونا بالشیء فنجده حقا ، قال تلک الكلمة الحق يخطفها الجنی فيقذفها فی اذن وليه ، و يزيد فيها مائة كذبة . (مسلم شریف ، کتاب السلام ، باب تحريم الكهانة و اتيان الكهان ، ص ۹۸۹، نمبر ۲۲۲۸ / ۵۸۱۲)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैंने कहा काहिन कुछ बात हम लोगों से कहता है कि हम इस को सच पाते हैं! तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिन्नात कोई एक सच्ची बात को कहीं से पा लेता है वो अपने मौक्किल को बताता है और मौक्किल इस में सौ झूट मिला देता है।

इस हदीस में है कि मौक्किल सौ झूट मिला कर लोगों को कहता है।

जिस घर में तअ़वीज़ का रिवाज हो जाता है इस की जान नहीं छुटती

बाज़ मर्तबा यह देखा गया है कि जिस घर में तावीज़ का रिवाज बहुत हो जाता है तो इन के घर वालों को इस का वहम हो जाता है और कोई भी परेशानी आये तो यह समझते हैं कि किसी ने कोई जादू कर दिया है यहां तक कि हाथ से अचानक बरतन गिर जाये तो भी समझते हैं कि किसी ने कोई जादू कर दिया है यहां तक कि हाथ से अचानक बर्तन गिर जाये तो भी समझते हैं कि किसी के जादू करने से या तावीज़ करने से ही बर्तन गिरा है, इस को लाख समझाओ कि यह अचानक बर्तन गिरा है, या यह दर्द या बीमारी की वजह से है तो वो नहीं समझते क्योंकि इन के दिमाग़ में तो तावीज़ या जादू का भूत है, फिर इस जादू के उतरवाने के लिए तावीज़ वाले के पास जाते हैं और वो बीच बीच की बात करके अच्छी ख़ासी रक़म करते रहते हैं और ज़िन्दगी भर फंसाऐ रखते हैं क्योंकि इस को तो पोण्ड़ वसूल करना है और मुआ़शरे में अपनी शौहरत हासिल करनी है, इस लिए मौअबाना गुज़ारिश है कि इन वहमों से दूर रहें इसी लिए हुजूर स0अ0व0 ने बाज़ तअ़वीज़ और जादू को मना भी किया है, इस के लिए आगे देखें।

तावीज़ से ज़हनी तौर पर थोड़ी तसल्ली हो जाती है

एक तावीज़ करने वाले ने मुझे चार बातें बताईं।

(1) जिस पर हम झाड़ फूंक करते हैं वो उ़मूमन ज़हनी मरीज़ होते हैं या तो इस को नींद नहीं आती या इस के ज़हन पर ख़ौफ़ होता है, जिस की वजह से वो डरता रहता और कोई आवाज़ आ जाये तो वो समझता है कि यह जिन्नात, या शैतान की आवाज़ है,

ओर अब वो हम पर हमला करेगा, इस ख़ौफ़ से, या इस वहम से वो डरता रहता है, और बाज़ मर्तबा इस को इस ख़ौफ़ की वजह से आठ घण्टे की पूरी नींद नहीं आती वो थोड़ी देर सोता है और उठ जाता है अब इस कम सोने की वजह से पूरा दिन दिमाग़ में दर्द रहता है, गर्दन में दर्द रहता है, जिस की वजह से वो समझता है कि मेरे ऊपर जिन्नात सवार है, और इस से वो बेचैन हो जाता है। हालांकि कोई जिन्नात नही होता इस को कहां फ़ुरसत है कि वो इस के गर्दन पर सवार हो और अपना काम छोड़ कर यहां बसैरा करे, असल मामला यह है कि ख़ौफ़ की वजह से या घरेलू टैन्शन की वजह से इस को नींद नहीं आई है जिस की वजह से पूरा जिस्म टूट रहा है।

जब मेरे पास मरीज़ आता है तो में समझ जाता हूं के इस को टैनशन है और नीन्द नहीं आई है, लेकिन सीधा कहने से काम नहीं बनता, इस लिये कहता हूं के ये तावीज़ लो इस से सारे जिन्नात भाग जऐंगे, इस झाड़ फूंक से मरीज़ को तसल्ली हो जाती है के जिन्नात और जादू बिल्कुल भाग गया, इस से उस का खौफ़ ख़तम हो जाता है, वह आराम से सो जाता है और इस सूने की वजा से उस की बेमारी ख़तम होजाती है इस लिये हमारी तावीज़ एक क़िस्म की तसल्ली है।

(2) उनहों ने दूसरी बात ये बताई के हमारे हाथ में कोई करिश्मा नहीं होता, हम लोग तो मुख्तलिफ क़िस्म की दूआऐं लिख कर दे देतें हें इस में असर डालना सिर्फ खुदा का काम है, अगर वह चाहें तो उस से शिफा हो जाती है वरना चाहें तो कुझ भी नहीं होता, इस लिये हमारे हाथों में कोई करिश्मा नहीं होता।

(3) और दूसरी बात ये बताई के उमूमन हमारे हाथ में कोई जिन्नात या मोअक्किल ताबे नही होता अवाम का ये वहम इतना सही नहीं है मुमकिन है के ये होता हो लेकिन मेरे इल्म तक यही है के जिन्नात ताबे नहीं होता, पैसा बनाने के लिये बहुत से लौग

ये शोशा छोड़ देते हें के मेरे पास मोअक्किल है, अगर ऐसे ही है तो इस मोअक्क्लि से पैसा कियों नहीं जमा कर वा लेता ये दूसरों से कियों मांगते फिरते हैं।

(4) और चौथी बात ये बताई के हमें गैब का भी पता नहीं होता, हम लोग ये करते हें के बिमार को इधर उघर से कुछ बातें पूछ लेते हें इस से एक अन्दाज़ा होजाता है, फिर अपनी ज़हानत से और अपने तजुर्बा से बीच बीच की बात समझाने लगते हें और ये तअस्सुर देते हें के मुझे गैब का इल्म है, या मुझे आप के बारे में जिन्नात ने सारी मालूमात दे दी हें, चूंके वह लौग आमी लौग होते हें इस लिये हमारी बातों पर यक़ीन कर लेते हें, और समझने लगते हें के हम लौगों को इल्म गैब है, या हम पहुंचे हुवे बाबा हें जो बिमार की हर बात जानते हें। और अगर कोई ज़हीन आदमी आगया और उस ने हमारी बातों को परख्ना शुरु कर दिया तो हम लौग उस से ज़ियादा बात नहीं करते, बलकि उस से जान छुड़ाते हें ताकि हमारी बनी बनाई शोहरत ख़ाक में ना मिल जाए, और आने वाले पैसे बन्द ना हो जाऐं, कियों कि हमारे पास पैसा कमाने के लिये यही एक अच्छी दुकान होती है जिस में मिलता बहुत है और ख़र्च कुछ भी नहीं होता।

इस मुख़लिस तावीज़ वाले की बात कहां तक सच्ची है ये वही जाने अलबत्ता इस की बातों में कुछ जान तो है आप भी उन की बातों से फाइदा उठाऐं और धोका खाने से महफूज़ रहें। वल्लाहु आलमु बिस्सवाब

(1) कुरआन और हदीस की जायज़ तअ़वीज़

यह ज़रूरी है कि तावीज़ के ज़रिये लोगों की परेशानी दूर करना मक़सूद हो तो ठीक है, और अगर तावीज़ इस लिए कर रहा हो कि किसी को सताना मक़सूद हो या बीवी और शौहर के दरमियान नफ़रत करना मक़सूद हो या रिश्तेदारों के दरमियान

नफ़रत बढ़ाना मक़सूद हो तो ऐसी तावीज़ जायज़ नहीं है इस का सख़्त गुनाह होगा।

तावीज़ में ऐसे कलिमात हों जिन से सिर्फ़ अल्लाह से मदद मांगी गई हो तो यह जायज़ है, बल्कि तअ़वीज़ में वो कलिमात हों जिन से हुज़ूर स0अ0व0 ने तावीज़ की है तो बहुत बेहतर है और चूंकि हुज़ूर स0अ0व0 के कलिमात हैं इस लिए इस से असर भी ज़्यादा होगा और सवाब भी मिलेगा।

2. عن عبد العزيز قال دخلت انا و ثابت على انس بن مالک ، فقال ثابت : يا ابا حمزة اشتكيت فقال انس الا ارقيک برقية رسول الله ﷺ ؟ قال بلى قال اللهم رب الناس مذهب الباس ، اشف انت الشافى ، لا شافى الا انت ، شفاء لا يغادر سقما . (بخارى شريف ، كتاب الطب ، باب رقية النبى ﷺ ، ص ١٠١٤ ، نمبر ٥٧٤٢)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं और साबित हज़रत अनस रज़ि0 के पास आये तो हज़रत साबित ने कहा, ऐ अबू हमज़ा मैं बीमार हूं? तो हज़रत अनस ने फ़रमाया हुज़ूर स0अ0व0 ने जो तावीज़ की है मैं वो तावीज़ ना करूं? तो साबित ने कहा हां! तो हज़रत अनस रज़ि0 ने यह दुआ़ पढ़ी इस का तर्जुमा यह है: ऐ इन्सान के रब तकलीफ़ दूर करने वाले, शिफ़ा दे दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं है, ऐसी शिफ़ा जो किसी बीमारी को ना छोड़े।

इस हदीस में है कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही शिफ़ा देने वाला है, इस लिए सिर्फ़ इसी से मदद मांगनी चाहिए।

फिर तअ़वीज़ करने के दो तरीक़े हैं

(1) एक है तावीज़ के कलिमात पढ़ कर मरीज़ पर फूंकना, यह जायज़ है क्योंकि हुज़ूर स0अ0व0 ने मरीज़ पर पढ़ कर दम फ़रमाया है।

(2) दूसरा है कि तावीज़ के कलिमात काग़ज़ पर लिख कर गले में या बांहों पर लिटकाना यह सूरत इतनी अच्छी नहीं है इस की पूरी तफ़सील आगे आ रही है।

हुज़ूर स०अ०व० ने तावीज़ के कलिमात पढ़ कर मरीज़ पर दम फ़रमाया है

इस के लिए अहादीस यह हैं:

3. عن عائشة قالت كان رسول الله ﷺ اذا اشتكى من انسان مسحه بيمينه ثم قال أذهب الباس رب الناس و اشف انت الشافى لا شفاء الا شفائك شفاء لا يغادر سقما . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب استحباب رقية المريض ، ص ٩٧٢ ، نمبر ٢١٩١ / ٥٧٠٧)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि कोई आदमी बीमार होता तो हुज़ूर स0अ0व0 अपने दाऐं हाथ से इस को पूछते, फिर कहते, ऐ इन्सान के रब, तकलीफ़ दूर कर दे और शिफ़ा दे, आप ही शिफ़ा देने वाले हैं, सिर्फ़ तेरी ही शिफ़ा है, ऐसी शिफ़ा दे जो किसी बिमारी को ना छोड़े।

4. عن عبد العزيز قال دخلت انا و ثابت على انس بن مالک ، قال ثابت يا ابا حمزة اشتكيتُ فقال انس : ألا أرقيک برقية رسول الله ﷺ ؟قال بلى ، قال الهم رب الناس مذهب الباس ، اشف انت الشافى لا شافى الا انت ، شفاء لا يغادر سقما . (بخارى شريف ، باب رقية النبى ﷺ ، ص١٠١٤، نمبر٥٧٤٢)

तर्जुमा: मैं और साबित हज़रत अनस रज़ि0 के पास आये, तो हज़रत साबित ने कहा ऐ अबु हमज़ा में बीमार हूं? तो हज़रत अनस ने फ़रमाया हुज़ूर स0अ0व0 ने जो तावीज़ की है मैं वो तावीज़ ना करूं? तो साबित ने कहा हां! तो हज़रत अनस रज़ि0 ने यह दुआ़ पढ़ी, इस का तर्जुमा यह है: ऐ इन्सान के रब, तकलीफ़ दूर करने वाले, शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे

सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं है, ऐसी शिफ़ा जो किसी बीमारी को ना छोड़े।

आयत पढ़ कर दम किया करते थे इस की दलील यह हदीस है।

5. عن علیؓ قال قال رسول الله ﷺ خير الدواء القرآن . (ابن ماجة شريف ، كتاب الطب ، باب الاستشفاء بالقرآن ، ص ٥٠٩ ، نمبر ٣٥٣٣)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि कुरआन बेहतरीन दवा है।

6. عن عائشةؓ ان النبی ﷺ كان ينفث على نفسه فی مرضه الذی قبض فيه بالمعوذات . (بخاری شريف ، كتاب الطب ، باب المرأة الرجل ، ص ١٠١٥ ، نمبر ٥٧٥١)

तर्जुमा: जिस मर्ज़ में हुजूर स0अ0व0 की वफ़ात हुई इस में हुजूर स0अ0व0 अपने ऊपर **قل اعوذ برب الفلق ، اور ،قل اعوذ برب الناس ،** पढ़ कर फूंका करते थे।

7. عن عائشة ان النبی ﷺ كان ينفث فی الرقية . (ابن ماجة شريف ، كتاب الطب ، باب النفث، ص ٥٠٨ ، نمبر ٣٥٢٨)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 तावीज़ में दम किया करते थे।

इन अहादीस से तीन बातों को पता चला: (1) एक तो यह कि आयत और हदीस के अल्फ़ाज़ से तावीज़ करना जायज़ है। (2) दूसरी बात यह है कि तावीज़ात में सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांगी जाये वही शिफ़ा देने वाले हैं, किसी और से हरगिज़ शिफ़ा तलब करना जायज़ नहीं है, बाज़ मर्तबा वो शिर्क शुमार हो जाता है। (3) और तीसरी बात यह है कि अल्फ़ाज़ पढ़ फूंकना जायज़ है।

पागल पन उतारने के लिए यह दुआ़ हदीस में है

हुजूर स0अ0व0 ने यह आयतें पढ़ कर पागल पर दम किया

और वो ठीक भी हो गया। हदीस यह है:

.عن عبد الرحمن بن ابی لیلی عن ابیه ابی لیلی قال کنت جالسا عند النبی ﷺ اذ جاءہ اعرابی ، فقال ان لی أخا وجعا قال ما وجع أخیک ؟ قال به لمم ، قال اذهب فأتنی به قال فذهب فجاء به فاجلسه بین یدیه فسمعته عوذه بفاتحة الکتاب و اربع آیات من اول البقرة و آیتین من وسطها ﴿وَ اِلٰهُکُمۡ اِلٰهٌ وَاحِدٌ ﴾[آیت ۱۶۳ ، سوره البقرة ۲] و آیة الکرسی ، و ثلاث آیات من خاتمتها ، و آیة من آل عمران أحسبه قال ﴿ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ﴾ و آیة من الاعراف ﴿ان ربکم الله ﴾[آیت ۵۴، سوره الاعراف۷]و آیة من المومنین ﴿وَ مَنۡ یَّدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرۡهَانَ لَهٗ بِهٖ ﴾[آیت ۱۱۷ ، سورت المومنون ۲۳] و آیة من الجن ﴿و انه تعالی جد ربنا ﴾[آیت ۳، سوره الجن۷۲]و عشرة آیات من اول الصافات و ثلاث آیات من آخر الحشر ، و ﴿قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴾ [آیت ۱ ، سورت الاخلاص ۱۱۲] و المعوذتین ، فقام الاعرابی قد برأ ، لیس به بأس . (ابن ماجة شریف ، کتاب الطب ، باب الفزع و الارق و ما یتعوذ به منه ، ص ۵۱۱، نمبر ۳۵۴۹)

तर्जुमा: हज़रत अबू लैला फ़रमाते हैं कि मैं हुजूर स0अ0व0 के पास बैठा हुआ था एक देहाती आया और कहने लगा मेरे भाई को कुछ तकलीफ़ है, हुजूर स0अ0व0 ने पूछा तुम्हारे भाई को तकलीफ़ क्या है? देहाती ने कहा कि इस को कुछ पागल पनी का असर है, हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि इस को मेरे पास ले कर आओ, देहाती जाकर ले आया और उन को हुजूर स0अ0व0 के सामने बैठाया तो मैंने सुना कि इन की इन आयतों से तावीज़ कर रहे थे, सूरह फ़ातिहा पढ़ी और सूरह बक़रा से चार आयतें पढ़ीं, और इस के दरमियान से **﴿وَ اِلٰهُکُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ﴾[آیت ۱۶۳ ، سوره البقرة ۲]** पढ़ी। और आयतुल कुर्सी पढ़ी, और सूरह बक़रा के अख़ीर से तीन

आयतें पढ़ीं, और सूरह आल इमरान से एक आयत पढ़ी मेरा ख़्याल यह है कि: ﴿شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ﴾ पढ़ी। और सूरह ऐराफ़ से ﴿ان ربكم الله﴾ पढ़ी और सूरह मौमिनीन से एक आयत ﴿وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهاً اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ﴾ पढ़ी और एक आयत सूरतुल जिन से ﴿و انه تعالى جد ربنا﴾ पढ़ी, और सूरह साफ़ात के शुरू से दस आयतें पढ़ीं और सूरह हशर के अख़ीर से तीन आयतें पढ़ीं, और सूरह इख़लास ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ पढ़ी और **قل اعوذ برب الفلق** और **قل اعوذ برب الناس ،** पढ़ कर दम किया तो देखा कि वो पागल बिल्कुल ठीक हो चुका था, इस को कोई बीमारी नहीं थी।

इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने इतनी सारी आयतें पढ़ कर पागल का इलाज किया और वो ठीक भी हो गया। यह हक़ीक़त तो है लेकिन इस वक़्त पागल के इलाज में ज़हीन लोगे लूटते बहुत हैं इन से चौकन्ना रहें।

(2) दूसरा है कि आयत या हदीस को लिख कर गले में लटकाना

अहले अ़रब कोड़ियों को धागा में पिरो कर हार बनाते थे और इस को बीमार के गले में लटका देते थे और बाज़ मर्तबा अल्लाह के अ़लावा जिन, शैतान और भूत से मदद भी मांगते थे कोड़ियों के ऐसे हार को, **تميمة** कहते हैं, हुज़ूर स0अ0व0 ने ऐसे **تميمة** को लटकाना शिर्क फ़रमाया है।

इस की दलील यह हदीस है:

8. عن عبد الله سمعت رسول الله ﷺ يقول ان الرقى و التمائم و التولة شرك . (ابو داود شريف ، كتاب الطب، باب في تعليق التمائم ، ص ۵۵۲، نمبر ۳۸۸۳/ ابن ماجة شريف ، كتاب الطب ، باب تعليق التمائم ، ص ۵۰۸، نمبر ۳۵۳۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जादू के लिए झाड़

फूंक करना कोड़ी का हार लटकाना, और जादू करना शिर्क है।

9.عـن عـقبة بـن عـامـر الجهنى ان رسول الله ﷺ اقبل اليه رهط فبايع تسـعة و امسک عـن واحـد فـقالوا يا رسول الله بايعت و تركت هذا ؟ قال ان عليه تميمة فادخل يده فقعها فبايعه و قال من علق تميمة فقد اشرک . (مسند احمد ، باب حديث عقبة بن عامر الجهنى ، ج ۵، ص ۱۵۶ ، نمبر ۱۶۹۶۹)

तर्जुमा: हज़रत उ़क़बा बिन आ़मिर फ़रमाते हैं कि हुजूर स0अ0व0 के पास एक जमाअ़त आई, तो नो आदमियों से बैअ़त की और एक से नहीं की, तो लोगों ने पूछा कि या रसूलुल्लाह स0अ0व0 आप ने सब से बैअ़त की और इस एक को छोड़ दिया! तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि इस पर कोड़ी का हार लटका हुआ है इस आदमी ने अपना हाथ दाख़िल किया और हार को निकाल दिया, फिर आप स0अ0व0 ने बैअ़त की और यूं फ़रमाया कि जिस ने हार लटकाया तो गोया कि उस ने शिर्क किया।

इस हदीस में है कि जिस ने तावीज़ लटकाया उस ने शिर्क किया।

10. ان ابـن مسـعـود كان يقول كان النبى ﷺ يكره عشر خلال ....و الـرقـى الا بالمعوذات و عقد التمائم . (ابو داود شريف ، كتاب الخاتم ، باب ما جاء فى خاتم الذهب ، ص ۵۹۲، نمبر ۴۲۲۲)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 दस बातों को अच्छा नहीं समझते थे قل اعوذ برب الفلق ओर ، قل اعوذ برب الناس के अ़लावा से तावीज़ करना और हार लटकाना (यानी दस बातों को नापसन्द फ़रमाते थे)।

तावीज़ ना लटकाये और सब्र करे तो यह तक़्वा का आ़ला दर्जा है

इस के लिए हदीस यह है:

11.عن ابن عباس ؓ قال خرج علینا النبی ﷺ یوما ..... فرأیت سوادا کثیرا سد الافق فقیل ھٰولاء امتک و مع ھٰولاء سبعون الفا یدخلون الجنة بغیر حساب .... فقال ھم الذین لا یتطیرون و لا یکتون و لا یسترقون و علی ربھم یتوکلون . (بخاری شریف ، باب من لم یرق، ص ۱۰۱۲ ، نمبر ۵۷۵۲)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 एक दिन हमारे सामने तशरीफ लाए ... आप स0अ0व0 ने फरमाया कि में ने एक बड़ी जमाअत देखी जो उफ्क़ को घेरे हुवी थी, मुझ से ये कहा गया कि ये आप की उम्मत है, उनके साथ सत्तर हज़ार आदमी बगैर हिसाब के जन्नत में दाखिल होंगे ... आप स0अ0व0 ने फरमाया कि ये वो लोग हें जो बदफाली नहीं लेते, जिस्म को नहीं दागते, तावीज़ नहीं करते, सिर्फ अपने रब पर तवक्कुल करते हें।

इस आयत में भी ये हुक्म दिया गया है कि अल्लाह पर तवक्कुल करना चाहियेः

2. وَ اِلَیۡهِ یُرۡجَعُ الۡاَمۡرُ کُلُّهٗ فَاعۡبُدۡهُ وَ تَوَکَّلۡ عَلَیۡهِ . (آیت ۱۲۳، سورت ھود ۱۱)

तर्जुमाः तमाम मामला अल्लाह ही की तरफ लोटता है इसी लिये उसी की इबादत करो और उसी पर तवक्कुल करो।

इस आयत और हदीस में ये तरगीब दी गई है कि तावीज़ ना करे और अल्लाह पर भरोसे करे तो बहुत बेहतर है, वाक़िया ये है कि इस ज़माने में तावीज़ वाले अवाम को बहुत बेवकूफ बनाते हें और बहुत लूटते हें।

कभी कभार तावीज़ लटका ली जिस से तसल्ली हो जाऐ तो उसकी थोड़ी सी गुन्जाइश है

हदीस में तावीज़ लटकाने को मना फरमाया है, लेकिन सहाबी और ताबिई के कोल और अमल से उसकी थोड़ी सी गुन्जाइश मालूम होती है इस लिये कभी कभार कर लिया और उस में भी अल्लाह पर भरोसा किया, कि तावीज़ से कुछ नहीं होता करने

वाली ज़ात सिरफ अल्लाह ही है तो उसकी गुन्जाइश है, इस से दिल की तसल्ली होजाती है।

तावीज़ लटकाने में सहाबी का अमल ये है:

12.عن عمر بن شعيب عن ابيه عن جده ان رسول الله ﷺ قال ؛ اذا فزع احدكم فى النوم فليقل ، اعوذ كلمات الله التامات من غضبه و عقابه و شر عباده و من همزات الشياطين و ان يحضرون ، فانها لن تضره ، قال فكان عبد الله بن عمر يعلمها من بلغ من ولده ، و من لم يبلغ منهم كتبها فى صك ثم علقها فى عنقه . (ترمذى شريف ، كتاب الدعوات ، باب دعاء الفزع من النوم ، ص ٨٠٤، نمبر ٣٥٢٨)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया के किसी को नीन्द में घबराहट हो तो ये कहे:

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَ أَنْ يَحْضُرُوْنِ".

रावी कहते हें के हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर ये दुआ अपने बालिग़ ओलाद को सिख्लाते थे और जो बालिग़ नहीं थी तो एक कागज़ पर लिख कर उसकी गरदन में लटका देते थे। ताबिई का क़ोल ये है:

13. عن عطاء قال لا بأس ان يعلق القرآن .(مصنف ابن ابى شيبة ، ج ٥ ،كتاب الطب ، باب من رخص فى تعليق التعاويذ ، ص٤٣،نمبر٢٣٥٤٠/٢٣٥٥٠)

तर्जुमा: हज़रत अता रह० फरमाते हें कि कुरआन में से किसी चीज़ को तावीज़ के तोर पर लटका दे तो कोई हरज नहीं है।

14.عن الضحاك لم يكن بأسا ان يعلق الرجل الشيء من كتاب الله اذا وضعه عند الغسل و عند الغائط .(مصنف ابن ابى شيبة ، ج ٥ ،كتاب الطب ، باب من رخص فى تعليق التعاويذ ، ص ٤٣، نمبر ٢٣٥٤٢/ ٢٣٥٥٢)

तर्जुमा: हज़रत जुहाक फरमाते हें कि कोई आदमी कुरआन में से कोई चीज़ तावीज के तोर पर लटकाऐ तो कोई हरज की बात नहीं है, बशरते कि गुसल के वक़्त में और पैखाना के वक़्त में उसको निकाल कर अलग रख दे।

15. عن يونس بن خباب قال سألت ابا جعفر عن التعويذ يعلق على الصبيان ، فرخص فيه ،(مصنف ابن ابى شيبة ، ج ۵ ،كتاب الطب ، باب من رخص فى تعليق التعاويذ ، ص ۴۳، نمبر ۲۳۵۵۱)

तर्जुमा: हज़रत यूनुस रह० फरमाते हें कि में ने बच्चों पर तावीज़ लटकाते हें उसके बारे में हज़रत अबू जाफर रह० से पूछा तो उन्हों ने उसकी गुन्जाइश दी।

हदीस में तो तावीज़ लटकाना मना है, अलबत्ता उसको पढ़ कर फूंकना जाईज़ है, अलबत्ता उन ताबिई के अक़वाल से मालूम होता है कि तावीज़ लटकाने की थोड़ी सी गुंजाईश है, लेकिन उसको धन्दा ना बनाले।

तावीज करने के लिये मुआवजा लेने की थोड़ी सी गुंजाईश है

उस के लिये ये हदीस है:

16. عن ابى سعيد الخدرى ان ناسا من اصحاب رسول الله ﷺ كانوا فى سفر فمروا بحى من احياء العرب .....فاتاه فرقاه بفاتحة الكتاب فبرأ الرجل فاعطى قطيعا من غنم ....ثم قال خذوا منهم و اضربوا لى سهم . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب جواز اخذ الاجرة على الرقية بالقرآن و الاذكار ، ص۹۷۵، نمبر ۲۲۰۱ / ۵۷۳۳/ بخارى شريف ، كتاب الطب ، باب الرقى بفاتحة الكتاب ، ص ۱۰۱۳ ، نمبر ۵۷۳۶)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 के कुछ सहाबी सफर में थे वो अरब के एक गावं से गुजरे ... आदमी मरीज़ के पास आया और सूरा

फातिहा पढ़ कर फूंका, जिस की वजा से मरीज़ ठीक होगया, और उसने चन्द बकरियां दीं ... आप ने फरमाया उस से बकरियां ले लो और उस में मेरा भी हिस्सा रख्खो।

इस हदीस से मालूम होता है कि कभी कभार थोड़ा तावीज का पैसा ले लिया तो उसकी गुनजाइश है।

लेकिन तावीज का धनदा बना लेना ठीक नहीं है

इस के लिये ये अहादीस हैं:

17.عن عبادة بن الصامت قال علمت ناسا من اهل الصفة القرآن و الكتابة فأهدى الى رجل منهم قوسا فقلت ليست بمال و ارمى عنها فى سبيل الله ، فسألت رسول الله ﷺ عنها فقال ، ان سرک ان تطوق بها طوقا من نار فاقبلها . (ابن ماجة شريف ، كتاب التجارات ، باب الاجر على تعليم القرآن ، ص ٣١٠، نمبر ٢١٥٧)

तर्जुमा: हज़रत उबादा बिन सामत से रवायत है कि उनहों ने फरमाया कि में ने सुफ्फा के कुछ लोगों को कुरआन और किताबत सिखलाया, तो उनमें से एक ने मुझे एक कमान हदया में किया, में ने दिल में कहा कि ये तो माल नहीं है, में उस के जरीऐ अल्लाह के रासते में तीर फेकुंगा, में ने उस बारे में हुजूर स0अ0व0 से पूछा तो हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया के अगर तुम को ये खूशी हो कि आग का तोक़ पेहनो तो उस को कुबूल करलो।

18.عن ابى بن كعب قال علمت رجلا القرآن فاهدى الى قوسا فذكرت ذالک لرسول الله ﷺ فقال ان اخذتها اخذت قوسا من نار ، فرددتها . (ابن ماجة شريف ، كتاب التجارات ، باب الاجر على تعليم القرآن ، ص ٣١٠، نمبر ٢١٥٨)

तर्जुमा: हज़रत अबी बिन कअ़ब रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने एक आदमी को कुरआन सिखाया तो उन्होंने मुझे एक कमान हदया में

दिया, मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से इस का ज़िक्र किया तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अगर तुम ने इस को लिया तो गोया कि आग का कमान लिया तो मैंने इस को वापिस कर दिया।

यानी कुरआन पढ़ाने के बदले में तीर का लेना गोया कि आग को लेना है, इस लिए तावीज़ के बदले में पैसे लेने का धंदा बना लेना ठीक नहीं है।

इस हदीस में है कि दवाई इस्तेमाल करना जायज़ है

बीमारी की दवाई करना और इस का इलाज करवाना सुन्नत है।

19.عن جابر عن رسول الله ﷺ انه قال لكل داء دواء فاذا اصيب دواء الداء برأ باذن الله تعالى . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب لكل داء دواء و استحباب التداوى ص٩٧٧، نمبر ٢٢٠٤ / ٥٧٤١)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 से रिवायत है कि हर बीमारी की दवा है अगर बीमारी की सही दवा मिल जाये तो अल्लाह के हुक्म से वो बीमारी ठीक हो जाती है।

(1) तावीज़ या मन्त्र में अल्लाह के अ़लावा से मदद मांगी गई हो तो यह हराम है।

(2) तावीज़, या मन्त्र में ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये गये हैं जिन का मअ़नी का पता नहीं है तो हो सकता है कि इस में अल्लाह के अ़लावा से मदद मांगी गई हो तो यह भी जायज़ नहीं है क्योंकि अल्लाह के अ़लावा से मदद मांगना जायज़ नहीं है। ग़ैर मुस्लिम लोग जो जन्त्र मन्त्र करते हैं वो उ़मूमन अपनी देवी, देवता से मदद मांगते हैं और इस में शिरकिया कलिमातम होते हैं इसलिए उन से जन्त्र मन्त्र (तावीज़) नहीं करवाना चाहिए।

इन दोनों के लिए हदीस यह है:

20.عن عوف بن مالك الاشجعى قال كنا نرقى فى الجاهلية ،فقلنا يا

رسول الله ! كيف ترى في ذالك ؟ ، فقال اعرضوا على رقاكم، لا بأس بالرقى ما لم يكن فيه شرک . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب لا بأس بالرقى ما لم يكن فيه شرک ، ص ۹۷۵، نمبر ۲۲۰۰ / ۵۷۳۲)

तर्जुमाः औफ़ बिन मालिक रह0 फ़रमाते हैं कि हम ज़माना जाहिलियत में झाड़ फूंक किया करते थे, मैंने कहा या रसूलुल्लाह इस बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपनी झाड़ फूंक मुझे बताओ, फिर आप ने फ़रमाया कि अगर इस में शिर्क नहीं है ता झाड़ फूंक करने में कोई हरज नहीं है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि शिरकिया कलिमात से झाड़ फूंक करना जायज़ नहीं है, हां अल्लाह से मदद मांगी गई हो तो इस तावीज़ के पढ़ने से कोई हरज नहीं है।

(4) नज़र बद लगना

किसी की नज़र किसी को लग जाये जिस से इस को नुक़सान हो जाये यह हक़ है। जिस आदमी की नज़र लगती है उस में उस का कोई इख़तयार नहीं होता ख़ुद बख़ुद नज़र लग जाती है, इस लिए इस को बुरा भला कहना नहीं चाहिए, क्योंकि इस का कोई क़सूर नहीं है। जिस आदमी की नज़र लगती है उस को चाहिए कि जब कोई अ़जीब चीज़ देखे तो माशाअल्लाह कह दे तो इस कहने से इस की नज़र नहीं लगेगी। इस का इलाज यह है कि जिस की नज़र लगी हो उस को ग़ुस्ल दो, और ग़ुस्ल के पानी के मरीज़ पर डाल दो, तो उस से नज़र बद ख़त्म हो जायेगी। इस के लिए हदीस यह हैः

21.عن ابى هرهرة عن النبى ﷺ قال العين حق . (بخارى شريف ، كتاب الطب ، باب العين حق ، ص ١٠١٤ ، نمبر ٥٧٤٠)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि नज़र लगना हक़ है।

22.عن ابن عباس عن النبى ﷺ قال العين حق ، و لو كان شىء سابق

القدر سبقته العين ،و اذا استغسلتم فاغسلوا .(مسلم شريف ،كتاب السلام ، باب الطب و المرض و الرقى ، ص ٩٧١ ، نمبر ٢١٨٨/ ٥٧٠٢)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया है कि नज़र लगना हक़ है, अगर तक़दीर से कोई चीज़ आगे बढ़ सकती है तो नज़र लगना बढ़ सकता है, अगर तुम से कोई कहे कि गुस्ल करो, तो गुस्ल कर लिया करो।

इस हदीस में है कि जिस की नज़र लगी है उस को गुस्ल करने के लिए कहे तो उस को गुस्ल कर लेना चाहिए।

(5) जादू करना हराम है

इस के लिए यह आयत है:

3 . **وَ مَا كَفَرَ سُلَيْمَانَ وَ لكِنَّ الشَّيَاطِيْنَ كَفَرُوْا يَعْلَمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ .**

(آيت١٠٢،سورت البقرة٢)

तर्जुमा: हज़रत सुलैमान अलैहि0 ने कोई कुफ़्र नहीं किया अल्बत्ता शैतान लोगों को जादू की तालीम दे कर कुफ़्र का इरतकाब करते थे।

इस आयत में ह कि जादू करना कुफ़्र है:

23. **عن ابى هريرة عن النبى ﷺ قال ان رسول الله ﷺقال اجتنبوا السبع الموبقات قالوا يا رسول الله ما هن ؟قال الشرك بالله ، و السحر ، و قتل النفس التى حرم الله الا بالحق . (بخارى شريف ، كتاب الوصايا ، باب قول الله تعالى ، ان الذين يأكلون اموال اليتمٰى ظلما ، الخ ، ص ٤٥٨، نمبر ٢٧٦٦/ مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب الكبائر و اكبرها ، ص ٥٣، نمبر ٨٩/ ٢٦٢)**

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो, लोगों ने पूछा वो किया हैं? फ़रमाया कि अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू, अल्लाह ने जिस नफ़्स को

हराम किया है, उस को क़त्ल करना हां जिस को क़त्ल करने का हक़ बनता है उस को क़त्ल करे तो नहीं।

इस हदीस में है कि जादू करना गुनाहे कबीरा है।

सहर की एक हक़ीक़त है

इस आयत में इस का ज़िक्र है:

4. فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَ عِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى .
(آیت٦٦،سورت طٰہٰ٢٠)

तर्जुमा: फिर अचानक इस की ड़ाली हुई रस्सियां और लाठियां इन के जादू के नतीजे में हज़रत मूसा को ऐसी महसूस होने लगीं जैसे दौड़ रही हैं।

24.عن عائشة ، ان النبى ﷺ سحر حتى كان يخيل اليه انه صنع شيئا و لم يصنعه . (بخارى شريف ، كتاب الجزية و الموادعة ، باب هل يعنى عن الذمى اذا سحر ، ص ٥٢٩، نمبر ٣١٧٥)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 को जादू किया गया जिस की वजह से आप को ख़्याल होता था कि फ़लां काम कर लिया है, हालांकि वो काम आप नहीं किये होते थे।

25.عن عائشة قالت سحر رسول الله ﷺ يهودى من يهود بنى زريق يقال له لبيد بن الاعصم ، قالت :حتى كان رسول الله ﷺ يخيل اليه انه يفعل الشىء و ما يفعله . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب سحر ، ص ٩٧١، نمبر ٢١٨٩/ ٥٧٠٣)

तर्जुमा: बनी ज़रीक़ के एक यहूदी ने रसूलुल्लाह स0अ0व0 पर जादू किया इस का नाम लुबैद बिन आ़सम था, हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हुजूर स0अ0व0 का हाल यह हो गया था कि आप को ख़्याल होता था कि फ़लां काम आप ने कर लिया है, हालांकि वो नहीं किया होता था।

इस हदीस से मालूम होता है कि जादू की एक हक़ीक़त है और हुज़ूर स0अ0व0 पर भी इस का असर हुआ था। लेकिन आज कल हर तावीज़ वाले जादू और जिन का जो असर बताते हैं, वो अक्सर झूट होता है।

(6) ऐराफ़ जो ग़ैब का दअ़वा करता हो

कुछ लोग यह दअ़वा करते हैं कि मुझे ग़ैब का इल्म है और कुछ लोग साफ़ तो नहीं कहते, लेकिन तास्सुर देते रहते हैं कि मुझे मरीज़ के बारे में सारा इल्म है ऐसे लोगों को ऐराफ़ कहते हैं बहुत ज़्यादा जानने वाला। उमूमन यह देखा गया है कि जो लोग तावीज़ और जादू की दुकान ले कर बैठे हैं, वो आने वाले लोगों को यह तास्सुर देने की कौशिश करते हैं कि मुझे सब कुछ मालूम हो गया है ओर बीच बीच की बातें करके सामने वालों के दिल में यह पुख़्ता कर देते हैं कि यह वाक़ई में ग़ैब की बात जानते हैं और हमारा हाल इस को मालूम है, इस लिए यह जादू निकाल देंगे और इस के लिए वो अच्छा ख़ासा रूपया देते हैं आज के दौर में यह भी एक क़िस्म का ग़ैब दां और ऐराफ़ है इस लिए इन के फैरे में नहीं पड़ना चाहिए।

ऐराफ़ की बातों की तसदीक़ करना जायज़ नहीं

अ़क़ीदतुल तहाविया में इबारत यह है:

و لا نصدق كاهنا و لا عرافا ، و لا من يدعى شيئا يخالف الكتاب و السنة و اجماع الامة . (عقيدة الطحاوية ، عقيده نمبر ۱۰۱، ص ۲۱)

तर्जुमा: हम काहिन और ऐराफ़ की तसदीक़ नहीं करते, इसी तरह जो कुरआन, हदीस और इज्मा उम्मत की मुख़ालफ़त बातें हों इन चीज़ों का दअ़वा करता हो तो हम इस की भी तसदीक़ नही करते।

ऐराफ़ के पास जाने से चालीस दिन की इबादत क़बूल नहीं होती

इस के लिए हदीस यह है:

26. عن بعض ازواج النبی ﷺ قال من اتی عرافا فساله عن شیء لم تقبل له صلاة اربعین لیلة . (مسلم شریف ، کتاب السلام ، باب تحریم الکهانة و اتیان الکهان ، ص ۹۹۰، نمبر ۲۲۳۰ / ۵۸۲۱)

तर्जुमा: बाज़ बीवियों ने हुज़ूर स0अ0व0 से नक़ल किया है जो आदमी ऐराफ़ के पास आये और इस से कुछ पूछे तो इस की चालीस दिनों की नमाज़ क़बूल नहीं होती।

27. عن معاویة الحکم السلمی قال قلت یا رسول الله ! امور کنا نصنعها فی الجاهلیة ، کنا ناتی الکهان، قال ﷺ فلا تأتوا الکهان قال قلت کنا نتطیر قال ذاک شیء یجده احدکم فی نفسه، فلا یصد نکم (مسلم شریف ، کتاب السلام ، باب تحریم الکهانة و اتیان الکهان ، ص ۹۸۹ ، نمبر ۲۲۲۷ / ۵۸۱۳)

तर्जुमा: हज़रत मुआ़विया सलमी फ़रमाते हैं, या रसूलुल्लाह! ज़माना जाहिलियत में हम कुछ काम किया करते थे, मसलन हम काहिनों के पास जाया करते थे, तो आप ने फ़रमाया कि काहिनों के पास मत जाओ, मैंने कहा कि हम लोग बदफ़ाली, लिया करते थे, तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग ऐसे ही कुछ बात दिल में ले आते हो, बदफ़ाली तुम्हारी किसी चीज़ को रोकती नहीं है (यानी बदफ़ाली से कुछ नहीं होता)।

28. عن ابی هریرة ، و الحسن عن النبی ﷺ قال من اتی کاهنا او عرافا فصدقه بما یقول فقد کفر بما انزل علی محمد ﷺ . (مسند احمد ، مسند ابی هرهرة ، ج ۱۵ ، ص ۳۳۱، نمبر ۹۵۳۶)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 से रिवायत है कि जो काहिन के पास या ऐराफ़ के पास आया अब वो जो कुछ कहता है इस ने इस की तसदीक़ की, तो जो हुज़ूर स0अ0व0 पर कुरआन उतरा है गोया कि इस का इन्कार किया।

इस हदीस में है कि काहिन और ऐराफ़ के पास जाये और इस की तसदीक़ करे तो वो तसदीक़ करने वाला काफ़िर हो जायेगा।

आज कल कितने तावीज़ वाले हैं जो काहिन और ऐराफ़ की तरह ग़ैब की बातों का दअ़वा करते हैं और लोग इस की तसदीक़ करते हैं अब बताए कि इस के ईमान का क्या हाल होगा, इस से बचाना चाहिए।

29.عن عائشة قالت قلت يا رسول الله ! ان الكهان كانوا يحدثونا بالشیء فنجده حقا ، قال تلک الکلمة الحق يخطفها الجنی فيقذفها فی اذن وليه ، و يزيد فيها مائة كذبة . (مسلم شريف ، كتاب السلام ، باب تحريم الكهانة و اتيان الكهان ، ص ٩٨٩ ، نمبر ٢٢٢٨ / ٥٨١٦)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैंने कहा काहिन कुछ बात हम लोगों से कहता है तो हम इस को सच पाते हैं! तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिन्नात कोई एक सच्ची बात को कहीं से पा लेता है वो अपने मौक्कल को बताता है और मौक्कल इस में सौ झूट मिला देता है।

इस हदीस में है कि मौक्किल सौ झूट मिला कर लोगों को कहता है।

(7) जिन्नात निकालना

लोग कहते हैं कि कुछ तावीज़ वाले जिन्नात निकालते हैं, लेकिन किस तरह निकालते हैं, मुझे इस का इल्म नहीं है और ना इस बारे में कोई हदीस या क़ौल सहाबी मुझे नहीं मिल सका, मुझे

इस का भी पता नहीं है कि जिन्नात किसी पर सवार भी होता है, या नहीं, सिर्फ़ ऐसे ही उड़ाते रहते हैं, इस लिए मैं माज़ूर हूं।

इस अक़ीदे के बारे में 4 आयतें और 29 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें:

(37) क़ब्रों की ज़ियारत

इस अक़ीदे के बारे में 22 आयतें और 44 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें:

पिछली क़ौमें इन चार बातों से शिर्क में मुब्तला हुईं और अल्लाह ने इन को हलाक किया:

(1) अल्लाह के अ़लावा दूसरों को माबूद माना।

(2) अल्लाह के अ़लावा दूसरों के सामने सज्दा किया।

(3) अल्लाह के अ़लावा दूसरों से मदद मांगी।

(4) अल्लाह के अ़लावा दूसरों को हाजत रवा, यानी हाजत पूरी करने वाला समझा।

इन चार बातों का रिवाज इस तरह पड़ा कि अपने मरे हुए बुज़ुर्गों की पहले ताज़ीम की, फिर रफ़ता रफ़ता सज्दा करने लगे और इसी में मशग़ूल हो गये। अपने बुज़ुर्गों के बारे में समझा कि यह मेरी बात सुनते हैं और मेरी मदद कर सकते हैं। इस लिए अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए इन की मूरती बनाई फिर इन से मदद मांगने के लिए इन के सामने झुके, फिर सज्दा किया, और रफ़ता रफ़ता इन को भी ख़ुदा मान लिया, और यही शिर्क है जिस को ख़ुदा कभी माफ़ नहीं करेगा। इस लिए हमें बुज़ुर्गों की ऐसी ताज़ीम नहीं करनी है जिस से रफ़ता रफ़ता शिर्क शुरू हो जाये।

हिन्दुओं के रिवाजों पर ग़ौर करें

☆ हिन्दुओं के सारे रिवाजों पर ग़ौर करें।

☆ इन के बुत बनाने पर ग़ौर करें।

☆ उन से मदद मांगने पर ग़ौर करें।

☆ और उन के सामने पूजा करने पर ग़ौर करें तो यही बातें खुल कर सामने आयेंगी कि उन्होंने अपने बुज़ुर्गों की हद से ज़्यादा ताज़ीम की, फिर रफ़ता रफ़ता शिर्क में मुब्तला हो गये।

हिन्दू भी एक ख़ुदा को मानते हैं, जिस को वो ईशवर, कहते हैं और इन में से बाज़ पण्ड़ित सिर्फ़ इसी को मानते हैं, लेकिन इन में से अक्सर लोग ईशवर को मानते हुए भी मूर्ती की पूजा करते हैं, यह जितनी मूर्तियां बनाते हैं वो इन के बुज़ुर्गों की शबिहा हैं। वो जानते हैं कि यह मिट्टी की बनी हुई मूर्ती है, लेकिन इन का ऐतक़ाद यह है कि इन के बुज़ुर्गों की रूहें या इन की देवी देवताओं की रूहें इन मूर्तियों में आती हैं। वो इन की बात सुनती हैं और इन की मदद भी करती हैं, इन को मदद करने का इख़तयार है। इसी लिए वो लोग इन मूर्तियों की पूजा करते हैं, और जी भर के इन से मांगते हैं, जिस को शरीअ़त शिर्क कहती है।

हुज़ूर स०अ०व० ने क़ब्रों की हद से ज़्यादा ताज़ीम करने से मना फ़रमाया

चूंकि अल्लाह को इस बात का पता था कि मुसलमान भी अपने बुज़ुर्गों से हाजत मांगेंगे, या इन की मूर्ती बनाऐंगे और इन के सामने सज्दा करेंगे, इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 ने कभी कभी क़ब्र पर जाने की इजाज़त तो दी लेकिन बार बार यह तन्बीह की कि इस के सामने सज्दा ना करना, इस से ज़रूरतें ना मांगना, इस को ईदगाह ना बनाना, इस पर इमारत ना बनाना, बल्कि सिर्फ़ इन को सलाम करके और इन के लिए दुआ़एें करके वापिस आ जाना। आप इन सारी तफ़सीलात के लिए सही अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाऐं।

क़ब्र किस को कहते हैं।

मय्यत के दफ़न होने के बाद क़यामत क़ायम हाने तक का जो वक़्त है उस को क़ब्र कहते हैं, मय्यत का जिस्म ज़मीन में हो, या जला दिया गया हो या उस को किसी जानेवर ने खा लिया हो उन सभों का इस मय्यत का क़ब्र कहा जाता है। इसी वक़्त को बरज़ख़ भी कहते हैं। इस आयत में इस की वज़ाहत है:

1. حَتّٰی اِذَا جَاءَ اَحَدَھُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنَ لَعَلِّیْ اَعْمَلُ صَالِحاً فِیْمَا تَرَکْتُ کَلَّا اِنَّھَا کَلِمَۃٌ ھُوَ قَائِلُھَا وَ مِنْ وَّرَائِھِمْ بَرْزَخٌ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ .

(آیت ۱۰۰ سورت المؤمنون ۲۳)

तर्जुमा: यहां तक कि जब इन में से किसी पर मौत आ खड़ी होगी तो वो कहगा कि मेरे रब मुझे वापिस भैज दीजिए ताकि जिस दुनिया को मैं छोड़ आया हूं इस में जाकर नेक अ़मल करूं, हरगिज़ नहीं! यह तो एक बात ही बात है जो वो ज़बान से कह रहा है और इन मरने वालों के सामने बरज़ख़ की आड़ है जो इस वक़्त तक क़ायम रहेगी जब तक इन को दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाये।

इस आयत में है कि मौत के बाद से ले कर क़ब्र से उठाऐ जाने तक को बरज़ख़े कहते हैं, इस के हालात दुनिया के हालात से मुख़तलिफ़ हैं।

क़ब्र पर इस लिए जाने की इजाज़त है कि वहां आख़िरत याद आने लगे

अगर क़ब्र पर जाने से आख़िरत याद आने लगे और मौत याद आने लगे तब तो समझो कि यहां आने का फ़ायदा हुआ, और अगर यहां आने का मक़सद तफ़रीह करना है या खेल तमाशा करना है या पैसा बटोरना है तो फिर यह क़ब्र का फ़ायदा नहीं हुआ और

ऐसी सूरत में क़ब्र पर जाना अच्छा नहीं है। इस के लिए अहादीस यह हैं:

1. عن ابن مسعود ان رسول الله ﷺ قال كنت نهيتكم عن زيارة القبور فزوروها فانهاتزهد فى الدنيا و تذكر الآخرة . (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء فى زيارة القبور، ص ٢٢٣، نمبر ١٥٧١)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को क़ब्र की ज़ियारत से रोका करता था, अब इस की ज़ियारत किया करो, क्योंकि इस से दुनिया से बेरग़बती पैदा होती है और आख़िरत याद आती है।

2. عن ابى هريرة قال زار النبى ﷺ قبر امه فبكى و ابكى من حوله فقال استأذنت ربى فى ان أستغفر لها فلم يأذن لى و استأذنت ربى ان ازور قبرها فأذن لى، فزوروا القبور، فانها تذكركم الموت. (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء فى زيارة قبور المشركين، ص ٢٢٤، نمبر ١٥٧٢)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने अपनी मां की क़ब्र की ज़ियारत की तो वो रोऐ और जो क़रीब में थे उन को भी रूलाया, फिर फ़रमाया मैंने अपने रब से अपनी मां की मग़फ़िरत की इजाज़त मांगी तो मुझ को इजाज़त नहीं मिली, और अपने रब से इन की क़ब्र की ज़ियारत की इजाजत्रत मांगी तो मुझे इजाज़त मिल गई, क़ब्र की ज़ियारत किया करो, इस लिए कि इस से मौत याद आती है।

इन अहादीस में तीन बातें हैं:

(1) क़ब्र पर ख़ुद बखूद रोना आ जाये तो जायज़ है वावेला करना जायज़ नहीं।

(2) दूसरी बात यह है कि कभी कभी क़ब्र की ज़ियारत करनी चाहिए, क्योंकि हुज़ूर स0अ0व0 ज़िन्दगी में एक बार मां की क़ब्र की ज़ियारत की है, रात दिन इस पर जम घटा नहीं लगाना चाहिए।

(3) और तीसरी बात यह मालूम हुई कि इस लिए क़ब्र की ज़ियारत करे कि इस से मौत याद आये, खेल कूद के लिए या तमाशा के लिए क़ब्र की ज़ियारत ना करे।

इस दौर में बहुत से लोग तफ़रीह के लिए और मौज व मस्ती के लिए मज़ार पर जाते हैं, जो जायज़ नही है।

सात शर्तों के साथ क़ब्र पर जाने की इजाज़त है

इन सात शर्तों के साथ क़ब्र पर जाएें इस के बग़ैर ना जाएें।

(1) अल्लाह के अ़लावा किसी की इबादत ना करे

पहली शर्त यह है कि अल्लाह के अ़लावा किसी की इबादत भी ना करे। इस की दलील यह आयतें हैं:

2.قُلْ اِنِّى نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ . (آیت۵۶،سورۃ الانعام۶)

तर्जुमाः मुझ को इस बात से रोका गया है कि अल्लाह के अ़लावा जिस को तुम लोग पुकारते हो, इस की इबादत करूं।

3.اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ أَمَرَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اِيَّاهُ . (آیت۴۰،سورۃ یوسف۱۲)

तर्जुमाः सिर्फ़ अल्लाह ही का हुक्म चलेगा और उसने यह हुक्म दिया है कि सिर्फ़ इसी की इबादत करें।

4.ان لا تعبدوا الا الله . (آیت۱۴،سورۃ فصلت۴۱)

तर्जुमाः सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करो।

5.قُلْ أَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعاً.

(آیت۷۶،سورۃ المائدۃ۵)

तर्जुमाः आप यह ऐलान कर दीजिए कि अल्लाह के अ़लावा जो नफ़ा और नुक़सान का मालिक नहीं है, इस की इबादत करूं, यानी अल्लाह के अ़लावा की हरगिज़ इबादत ना करूं।

6. وَ مَا اُمِرُوْا اِلَّا لِيَعْبُدُوْا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ حُنَفَاءَ (آیت۵،سورۃ البینۃ۹۸)

तर्जुमाः सिर्फ़ यही हुक्म दिया गया था कि यक्सू होकर

ख़ालिस सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करें।

7. وَ مَا اُمِرُوْا اِلَّا لِيَعْبُدُوْا اِلٰهاً وَّاحِداً ، لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ . (آیت۳۱،سورۃالتوبۃ۹)

तर्जुमाः और इस के सिवा कोई हुक्म दिया दिया गया था कि सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करें इस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है।

इन छः आयतों में एक ही हुक्म दिया गया है कि सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करो, इस लिए किसी और की इबादत करना हरगिज़ जायज़ नहीं।

(2) क़ब्र वालों से ना मांगे

दूसरी शर्त यह है कि क़ब्र वालों से ना मांगे, इस के लिए आयतें यह हैं:

8. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنَ. (آیت۴،سورہ فاتحۃ۱)

इस आयत में हसर के साथ बताया कि सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करते हैं और सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद मांगते हैं। दिन रात मैं फ़र्ज़ नमाज़ सतरह रकअ़तें हैं, और कम से कम सतरह मर्तबा एक मौमिन से कहलवाया जाता है कि हम सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करते हैं और सिर्फ़ अल्लाह ही से मांगते हैं, इस लिए किसी और की इबादत भी जायज़ नहीं और किसी और से मदद मांगना भी जायज़ नहीं है।

9. وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ ، وَ لَا اَنْفُسَهُمْ يُنْصَرُوْنَ. (آیت۱۹۷،سورۃالاعراف۷)

तर्जुमाः अल्लाह को छोड़ कर जिस को तुम पुकारते हो वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकता बल्कि वो ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकता।

10. أَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ ، بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ .

(آیت۴۰۔۴۱،سورۃالانعام۶)

तर्जुमाः तो क्या अल्लाह के अ़लावा किसी और को पुकारोगे

अगर तुम सच्चे हो बल्कि इसी को पुकारोगे।

11. اِنَّ الْمَسَاجِدَ لِلّٰہِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰہِ اَحَداً . (آیت۱۸، سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: और सज्दे तो तमाम तर अल्लाह ही का हक़ है इस लिए अल्लाह के साथ किसी और की इबादत मत करो।

12. اِنَّ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ عِبَادٌ اَمْثَالُکُمْ . (آیت۱۹۴،سورۃالاعراف۷)

तर्जुमा: अल्लाह के अ़लावा जिस को पुकारते हो वो सब तुम्हारी तरह अललाह के बन्दे हैं।

13. وَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِہٖ مَا یَمْلِکُوْنَ مِنْ قِطْمِیْرٍ . (آیت۱۳،سورۃفاطر۳۵)

तर्जुमा: अल्लाह के अ़लावा जिस को भी पुकारते हो वो गुठली के छिलके का भी मालिक नहीं है (तो तुम्हारी मदद किया करेंगे)।

14. قُلْ اِنَّمَا اَدْعُوْا رَبِّیْ وَ لَا اُشْرِکُ بِہٖ اَحَداً . (آیت۲۰،سورۃ الجن۷۲)

तर्जुमा: आप फ़रमा दीजिए कि मैं सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारता हूं, और इस के साथ किसी और को शरीक नहीं करता।

इन सात आयतों में है कि सिर्फ़ अल्लाह को पुकारे, इस लिए किसी और को पुकारना और इस से मदद मांगना हरगिज़ जायज़ नहीं है, इस लिए क़ब्र पर जाये तो अल्लाह के अ़लावा किसी और से मदद ना मांगे और क़ब्र वाले चाहे वली हों या नबी हों उन से भी मदद ना मांगे।

इस वक़्त बहुत सारे लोग मज़ार और क़ब्रिस्तान इस लिए जाते हैं कि साहब क़ब्र से हाजत मांगी जाये यह जायज़ नहीं है, देने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह है।

इस की पूरी तफ़सील अल्लाह के अ़लावा से मांगना के उ़नवान के तहत देखें।

(3) क़ब्र पर सज्दा ना करे

तीसरी शर्त यह है कि क़ब्र पर सज्दा ना करे इस के लिए

यह आयत है:

15. **لاَ تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ .**

(آیت ۱۳۷، سورۃ فصلت ۴۱)

तर्जुमा: सूरज और चांद को सज्दा ना करो जिस ने तुम को पैदा किया है सिर्फ़ उसी को सज्दा करो।

16. **فَاْسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا.** (آیت ۶۲، سورۃ النجم ۵۳)

तर्जुमा: अल्लाह ही को सज्दा करो और इसी की इबादत करो।

3. **عن عائشةؓ قالت قال رسول الله ﷺ فی مرضه الذی لم یقم منه ، لعن الله الیهود و النصاری اتخذوا قبور انبیائهم مساجد. (بخاری شریف ، باب ما جاء فی قبر النبی ﷺ و ابی بکر و عمرؓ ، ص ۲۲۳ ، نمبر ۱۳۹۰)**

तर्जुमा: जिस बीमारी से हुज़ूर स0अ0व0 का विसाल हुआ इस बीमारी में हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया, अल्लाह यहूद व नसारा पर लअ़नत फ़रमाये कि उन्होंने नबियों की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया।

इस हदीस में है कि क़ब्र को सज्दे की जगह बनाना जायज़ नहीं है।

4. **سمت ابا مرسد الغنوی یقول قال رسول الله ﷺ لا تجلسوا علی القبور و لا تصلوا الیها . (ابو داود شریف ، کتاب الجنائز ، باب فی کراهیة القعود علی القبر ، ص ۴۷۱ نمبر ۳۲۲۹)**

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि क़ब्र पर बैठा ना करो और इस की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ भी ना पढ़ा करो।

और यह इस लिए फ़रमाया कि आदमी कहीं क़ब्र वाले को ख़ुदा ना समझ बैठे, इस लिए क़ब्र की तरफ़ रूख़ करके भी नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है, जब क़ब्र की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ भी ना पढ़ो तो क़ब्र को सज्दा करना कैसे जायज़ हो जायेगा।

عن قيس بن سعد قال أتيت الحيرة فرأيتهم يسجدون لمرزبان لهم. فقلت رسول الله ﷺ احق ان يسجد له قال فأتيت النبى ﷺ فقلت انى اتيت الحيرة فرأيتهم يسجدون لمرزبان لهم فانت يا رسول الله ! احق ان نسجد لک ،قال: أرأيت لو مررت بقبرى أكنت تسجد له ؟ قال قلت لا ، قال: فلا تفعلوا ،لو كنت آمرا احدا ان يسجد لاحد لامرت النساء ان يسجد ن لازواجهن لما جعل الله لهم عليهن من الحق . (ابو داود شريف ، كتاب النكاح ، باب فى حق الزوج على المرأة ، ص ٣٠٩، نمبر ٢١٤٠ / ابن ماجة شريف ، كتاب النكاح ، باب حق الزوج على المرأة ، ص٢٦٥،نمبر١٨٥٣)

तर्जुमा: क़ैस बिन सअ़द फ़रमाते हैं कि मैं हैरा मक़ाम पर आया तो देखा कि वो लोग अपने सरदारों को सज्दा करते हैं, तो मैंने कहा कि रसूलुल्लाह स0अ0व0 तो ज़्यादा हक़दार हैं कि आप को सज्दा किया जाये, मैं हुजूर स0अ0व0 के पास आया और कहा कि मैं हैरा गया था, वहां देखा कि वो अपने सरदारों को सज्दा करते हैं, इस लिए आप या रसूलुल्लाह ज़्यादा हक़दार हैं कि हम आप को सज्दा करें, हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अगर तुम मेरी क़ब्र पर गुज़रो तो क्या इस को सज्दा करोगे, क़ैस ने जवाब दिया नहीं, तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ज़िन्दगी में भी मुझे सज्दा मत करो अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रतों को हुक्म देता कि वो अपने शौहरों को सज्दा किया करें, इस लिए कि अल्लाह ने शौहरों को बीवियों पर बहुत हुक़ूक़ दिये हैं।

इस हदीस में है कि अल्लाह के अ़लावा किसी को सज्दा ताज़ीमी करना भी हराम है।

इस वक़्त का आ़लम यह है कि बहुत से मुजाविर आने वाले लोगों को क़ब्रों के सामने सज्दा करवाते हैं और इन का मकसद यह होता है कि किसी तरह यह साहब क़ब्र का गुरवीदा हो जाये और मुझे इस का नज़र व नियाज़ मिलता रहे।

(4) परदे के साथ जाये बेपर्दगी के साथ हरगिज़ ना जाये

चौथी शर्त यह है कि परदे के साथ जाये बेपरदगी के साथ हरगिज़ ना जाये। इस के लिए हदीस और आयतें यह हैं:

5.عن عائشة قالت ، كنت ادخل بيتى الذى دفن فيه رسول الله ﷺ و ابى ، فاضع ثوبى فاقول : انما زوجى و ابى ، فلما دفن عمر معهم فوالله ما دخلت الا انا مشدودة على ثيابى حياء من عمر . (مسند احمد ، باب حديث السيدة عائشة ، ج ٧، ص ٢٨٨، نمبر ٢٥١٣٢)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मेरे जिस घर में हुज़ूर स0अ0व0 दफ़न किये गये हैं मैं बग़ैर परदे के भी इस में दाख़िल हो जाया करती थी और यूं सौचती थी कि यहां मेरे शौहर हैं, ओर मेरे वालिद हैं फिर जब हज़रत उ़मर रज़ि0 इन के साथ दफ़न हुए, हज़रत उ़मर रज़ि0 से शर्म की वजह से मैं जब भी दाख़िल हुई तो पूरा कपड़ा बांध कर दाख़िल हुई।

इस हदीस में है कि क़ब्र पर परदा के साथ जाना चाहिए।

17. وَ قُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا، لِيَضْرِبَنَّ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ . (آيت٣١،سورة النور٢٤)

तर्जुमा: मौमिन औ़रतों से कह दो कि वो अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी सजावट को किसी पर ज़ाहिर ना करें, सिवाऐ इस के जो ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाये, और अपनी ओढ़नियों के आंचल अपने गिरेबनों पर ड़ाल लिया करें और अपनी सजावट और किसी पर ज़ाहिर ना करें सिवाऐ अपने शौहरों के या अपने बाप के अलख़।

इस आयत में है कि अपनी ज़ीनत किसी पर ज़ाहिर ना करें।

18.وَ قَرْنَ فِیْ بُیُوْتِکُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ تَبَرَّجَ الْجَاھِلِیَّةِ الْاُوْلٰی .

(آیت۳۳،سورۃ الاحزاب۳۳)

तर्जुमा: और अपने घरों में क़रार के साथ रहो, और ग़ैर मर्दों को बनाव सिंघार दिखाती ना फिरो जैसा कि पहली जाहिलयत में दिखाया जाता था।

6.عن عبد الله عن النبی ﷺ قال المرأة عورة فاذا خرجت استشرفها الشیطان . (ترمذی شریف ، باب استشراف الشیطان المرأة اذا خرجت، ۲۸۴، نمبر ۱۱۷۳)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि औ़रत जब बाहर निकलती है तो शैतान इशारा करता है कि इस की ताक झांक करो इस हदीस में है कि औ़रत बन ठन कर बाहर निकलती है तो शैतान लोगों को मुतवज्जह करता है कि इस औ़रत को देखो।

मुर्दोंको भी हुक्म दिया अपनी निगाहों को नीची रखा करें

इस आयत में है:

19.قُلْ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِھِنَّ وَ یَحْفَظُوْا فُرُوْجَھُمْ ذَالِکَ اَزْکٰی لَھُمْ . (آیت۳۰،سورت النور۲۴)

तर्जुमा: मौमिन मर्दों से कह दो कि वो अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यही इन के लिए पाकीज़ा तरीन तरीक़ा है।

(5) क़ब्र पर वावेला ना करे

पांचवीं शर्त यह है कि क़ब्र पर वावेला ना करे यानी बिला वजह ज़ौर ज़ौर से ना रोए और ना सीना पीटे, इस के लिए अहादीस यह हैं:

7. عن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ ليس منا من شق الجيوب و ضرب الخدود و دعا بدعوى الجاهلية . (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء عن نهى ضرب الخدود و شق الجيوب ، ص ۲۲۵ ، نمبر ۱۵۸۴)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हम में से वो नहीं है कपड़ा फाड़ै और चेहरे पर मारे और ज़माना जाहिलियत की जैसी बात करे।

8. لما ثقل ابو موسىؓ .... ان رسول الله ﷺ قال انا برى ممن حلق و سلق و خرق. (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء عن نهى ضرب الخدود و شق الجيوب ، ص ۲۲۵ ، نمبر ۱۵۸۶ / مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب تحريم ضرب الخدود ، ص ۵۸ ، نمبر ۱۰۳ / ۲۸۵)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं इस शख़्स से बरी हूं जो सर का बाल उखैड़े, गला फाड़ फाड़ कर वावेला करे और कपड़ा फाड़े।

9. عن جابر بن عبد الله ...قال : لا ، و لكن نهيت عن صوتين احمقين فاجرين صوت عند مصيبة خمش وجوه وشق جيوب و رنة شيطان . (ترمذى شريف ، كتاب الجنائز ، باب ما جاء فى الرخصة فى البكاء على الميت ، ص ۲۴۳ ، نمبر ۱۰۰۵)

तर्जुमाः हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि दो अहमक़ आवाज़ जो फ़ाजिर हैं उन से मुझे रोका गया है, एक आवाज़ वो है जो मुसीबत के वक़्त चहरे पर थप्पड़ मारते हुए आवाज़ निकाले, और कपड़ा फाड़े और दूसरी आवाज़ है शैतान की गुनगुनाहट।

इस हदीस में वावेला करने से सख़्ती से मना किया है, पता है बाज़ लोग मौहर्रम के मौक़े पर क्यों इतना वावेला करते हैं। बाक़ी तफ़सील मातम के उ़नवान में देखें।

(6) क़ब्र वालों को सलाम करे और दुआ़ पढ़े

छटी शर्त यह है कि लोग क़ब्र पर बहुत सारे ख़ुराफ़ात करते हैं इस लिए वहां खुराफ़ात ना करें। सिर्फ़, क़ब्र वालों को सलाम करें इन के लिए असतग़फ़ार करें इन के लिए दुआ़ करें ओर कुरआन वग़ैरह पढ़ कर बख़्श दें और मौत को याद करें और यूं ख़्याल करें कि मुझे भी क़ब्रिस्तान आना है यहां इतना ही काम अहादीस से साबित हैं, बाक़ी बातें वैसे ही हैं। सलाम और असतग़फ़ार करने के लिए अहादीस यह हैं:

10.عن ابن عباس قال مر رسول الله ﷺ بقبور المدينة فاقبل عليهم بوجهه فقال السلام عليكم يا اهل القبور يغفر الله لنا و لكم انتم سلفنا و نحن بالاثر . (ترمذى شريف ، كتاب الجنائز ، باب ما يقول الرجل اذا دخل المقابر ، ص ٢٥٤، نمبر ١٠٥٣)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 मदीना के एक क़ब्र के पास से गुज़रे, तो इस की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया **السلام عليكم يا اهل القبور** अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत करे, आप हमारे सल्फ़ हैं और हम बाद में आने वाले हैं।

इस हदीस में है कि अहल क़ब्र को सलाम करे और इस के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करे।

11.عن عائشة انها قالت كان رسول الله كلما كان ليلتها من رسول الله ﷺ . يخرج من آخر الليل الى البقيع فيقول ، السلام عليكم دار قوم مومنين و اتاكم ما توعدون غدا مؤجلون ، و انا ، ان شاء الله، بكم لاحقون ، اللهم اغفر لاهل بقيع الغرقد . (مسلم شريف ،كتاب الجنائز ، باب ما يقال عند دخول القبور و الدعاء لاهلها ، ص ٣٩٢، نمبر ٩٧٤، نمبر٢٢٥٥)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि जब भी हुजूर स0अ0व0 की बारी मेरे साथ होती तो रात के अख़ीर हिस्से में

जन्नतुल बक़ीअ़ (क़ब्रिस्तान) तशरीफ़ ले जाते, और यह कलिमात कहते **السلام عليكم دار قوم مومنين الخ** कहते ओर कहते कि ऐ अल्लाह बक़ीअ़ वालों को माफ़ करदे।

(7) क़ब्र वाले के लिए असतग़फ़ार करे

सातवीं बात यह है कि क़ब्र वालों के लिए असतग़फ़ार करे। इस के लिए अहादीस यह हैं:

12.عن عثمان بن عفان قال كان النبى ﷺ اذا فرغ من دفن ا لميت وقف عليه فقال استغفروا لاخيكم و اسألوا له بالتثبيت فانه الآن يسأل . (ابو داود شريف ، كتاب الجنائز ، باب الاستغفار ند القبر للميت فى وقت الانصراف ، ص ۴۷۰، نمبر ۳۲۲۱)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 जब मय्यत के दफ़न से फ़ारिग़ होते तो इस के पास खड़े होते और फ़रमाते अपने भाई के लिए असतग़फ़ार करो और इस के लिए साबित क़दम रहने के लिए दुआ़ मांगो इस लिए कि अब मुनकर नकीर (फ़रिश्ते) इस से सवाल करेंगे।

13.سمعت عائشة تحدث فقالت ...فقال ان ربك يأمرك ان تأتنى اهل البقيع فتستغفر لهم ، قالت قلت كيف اقول لهم ؟ يا رسول الله ! قال قولى السلام على اهل الديار من المومنين و المسلمين و يرحم الله المستقدمين منا و المستأخرين ، و انا ان شاء الله بكم للاحقون . (مسلم شريف ،كتاب الجنائز ، باب ما يقال عند دخول القبور و الدعاء لاهلها ، ص ۳۹۲، نمبر ۹۷۴، نمبر ۲۲۵۶)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि आप का रब आप को हुक्म देता है कि बक़ीअ़ वालों के पास आऐं और उन के लिए असतग़फ़ार करें, हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से पूछा कि किस तरह इन के लिए दुआ़ करूं, तो आप

ने फ़रमाया ، السلام علی اهل الدیار من المومنین و المسلمین आख़िर तक पढ़ो।

14.عن عائشة انها قالت كان رسول الله كلما كان ليلتها من رسول الله ﷺ . يخرج من آخر الليل الى البقيع فيقول ، السلام عليكم دار قوم مومنين و اتاكم ما توعدون غدا مؤجلون ، و انا ، ان شاء الله، بكم لاحقون ، اللهم اغفر لاهل بقيع الغرقد . (مسلم شريف ،كتاب الجنائز ، باب ما يقال عند دخول القبور و الدعاء لاهلها ، ص ٣٩٢، نمبر ٩٧٤، نمبر٢٢٥٥)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि जब भी हुज़ूर स0अ0व0 की बारी मेरे साथ होती तो रात के अख़ीर हिस्से में जन्नत उल बक़ीअ़ (क़ब्रिस्तान) की तरफ़ तशरीफ़ ले जाते, और यह कलिमात السلام عليكم دار قوم مومنين الخ कहते और कहते कि ऐ अल्लाह बक़ीअ़ वालों को माफ़ कर दे।

इस हदीस में है कि मय्यत के लिए असतग़फ़ार करे।

क़ब्र वाले को सलाम करना हो तो क़ब्र की तरफ़ मुतवज्जह हो सकता है

इस के लिए हदीस यह है:

15.عن ابن عباس قال مر رسول الله ﷺ بقبور المدينة فاقبل عليهم بوجهه فقال السلام عليكم يا اهل القبور يغفر الله لنا و لكم انتم سلفنا و نحن بالاثر . (ترمذى شريف ، كتاب الجنائز ، باب ما يقول الرجل اذا دخل المقابر ، ص ٢٥٤، نمبر ١٠٥٣)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 मदीना के एक क़ब्र के पास से गुज़रे तो इस की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया: السلام عليكم يا اهل القبور، الخ अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत करे, आप हमारे सल्फ़ हैं और हम बाद में आने वाले हैं।

इस हदीस में है कि सलाम करने के लिए हुज़ूर स0अ0व0 अहले मदीना की क़ब्रों की तरफ़ मुतवज्जेह हुए।

क़ब्र के पास बैठना हो तो मुंह क़िब्ला की तरफ़ हो

क़ब्रों के पास बैठना हो तो चेहरा क़िब्ले की तरफ़ होना चाहिए ताकि कोई यह ना समझे कि क़ब्र वाले से बैठ कर मांग रहे हैं। इस के लिए हदीस यह है:

16.عن البراء بن عازب قال خرجنا مع رسول الله ﷺ فی جنازة رجل من الانصار فانتهينا الى القبر و لم يلحد بعد فجلس النبی ﷺ مستقبل القبلة و جلسنا معه . (ابو داود شريف ، كتاب الجنائز ، باب كيف يجلس عند القبر، ص ۴٦۹، نمبر ۳۲۱۲)

तर्जुमा: हम हुज़ूर स0अ0व0 के साथ एक अन्सारी आदमी के जनाज़े में निकले तो हम क़ब्र के पास पहुंचे तो अभी क़ब्र नहीं खोदी गई थी, तो हुज़ूर स0अ0व0 क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हो कर बैठे और हम भी आप के साथ बैठ गये।

इस हदीस में है कि क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके हुज़ूर स0अ0व0 क़ब्रिस्तान में बैठे, अदब का तक़ाज़ा यही है।

आ़म हालात में औ़रतों को क़ब्र पर जाना मना है

आ़म हालात में औ़रतों को क़ब्र पर जाना मना है क्योंकि वो वावेला करती हैं और ख़िलाफ़ शरीअ़त काम करने में मशगूल हो जाती हैं, अल्बत्ता दूसरी हदीसों की वजह से बाज़ हज़रात ने कभी कभार जाने की गुंजाइश दी हैं इस में भी वही सात शर्तें हैं। हदीस में औ़रतों के लिए क़ब्रिस्तान जाना मना है इस के लिए यह हदीस है:

17.عن ابن عباس قال لعن رسول الله ﷺ زورات القبور . (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء عن زيارة النساء القبور ، ص ۲۲۴ ، نمبر ۱۵۷۵)

तर्जुमा: क़ब्र की ज़ियारत करने वाली औरतों पर हुजूर स0अ0व0 ने लअ़नत की।

18.عن ابن عباس قال لعن رسول الله ﷺ زائرات القبور و المتخذين عليها المساجد و السرج . (ترمذی شریف ، کتاب الصلاة، باب ما جاء فی کراهية ان يتخذ على القبر مسجدا ، ص۸۸،نمبر۳۲۰/ نسائی شریف، کتاب الجنائز ، باب التغليظ فی اتخاذ السرج على القبور، ص۲۸۶،نمبر۲۰۴۵)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने क़ब्र की ज़ियारत करने वाली औरतों पर लअ़नत की और जो इस पर मस्जिदें बनाते हैं और चिराग़ जलाते हैं इन पर भी लअ़नत की।

इस हदीस में है कि जो औरतें क़ब्र की ज़ियारत करती हैं उन पर हुजूर स0अ0व0 ने लअ़नत की, इस लिए औरतों को आम हालात में क़ब्र पर जाना अच्छा नहीं है, अल्बत्ता कभी कभार चली जाये तो इस की गुंजाइश है।

औरतों के लिए कभी कभार क़ब्र की ज़ियारत की गुंजाइश दी है

इस के लिए हदीस यह है:

19 .عن عائشه ان رسول الله ﷺ رخص فی زيارة القبور. (ابن ماجة شريف باب ماجاء فی زيارة القبور ، ص ۲۲۳ ، نمبر ۱۵۷۰)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने क़ब्र की ज़ियारत की रूख़सत दी।

इस रूख़सत के लफ़ज़ से पता चलता है कि कभी कभार ज़ियारत करले तो इस की रूख़सत है।

20. عن سليمان بن بريدة قال قال رسول الله ﷺ قد كنت نهيتكم عن

زیـــارة القبور فقد اذن لمحمد فی زیارة قبر امه فزوروها فانها تذکر الآخرة . (تـرمـذی شـریف ، کتـاب الجنائز ، باب ما جاء فی الرخصة فی زیارة القبور ، ص ۲۵۴، نمبر ۱۰۵۴)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबूबकर की वफ़ात हब्शा में हुई तो इन को मक्का लाया गया और वहां दफ़्न किया जब हज़रत आ़यशा रज़ि0 सफ़र से वापिस आईं तो हज़रत अ़ब्दर्रहमान बिन अबी बकर की क़ब्र की ज़ियारत के लिए आईं।

इन अहादीस से मालूम होता है कि औ़रतें भी कभी कभार क़ब्र पर जा सकती हैं।

क़ब्र पर इमारत बनाना मकरूह है

क़ब्र पर इमारत बनाना मकरूह है इस की दलील यह हदीस है:

22.عـن جـابـر قال نهی ﷺ أَنْ تُجَصَّصَ الْقُبُوْرُ، وَأَنْ يُكْتَبَ عَلَيْهَا، وَأَنْ يُبْـنَـی عَـلَيْهَـا، وَأَنْ تُـوطَـأَ. (تـرمـذی شریف ، کتاب الجنائز ، باب ما جاء فی کـراهیة تـجصیص القبور و الکتابة علیها ، ص ۲۵۴، نمبر ۱۰۵۲/ابن ماجة شـریف ، بـاب مـا جـاء فـی الـنهـی عـن البناء علی القبور و الکتابة علیها ، ص ۲۲۲، نمبر ۱۵۶۲)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने क़ब्र को पुख़्ता बनाने से मना किया और उस पर लिखने से मना और उस पर इमारत बनाने से मना किया और उस को रोन्दने से मना किया।

23. عـن جابر نهی رسول الله ﷺ ان یجصص القبر ، و ان یقعد علیه ، و ان یبـنـی عـلیهـا. (مسـلم شریف ، کتاب الجنائز ، باب النهی عن تجسیس القبر و البناء علیه ، ص ۳۹۰، نمبر ۲۲۴۵/۹۷۰)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने क़ब्र को पुख़्ता बनाने से मना फ़रमाया है और इस पर बैठने से और उस पर इमारत तामीर

करने से मना फ़रमाया है।

24. عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، نَهَى أَنْ يُبْنَى عَلَى الْقَبْرِ. (ابن ماجه: باب ماجاء فی النهی عن البناء علی القبور والکتابة علیها: ص ۲۲۲، نمبر ۱۵۶۴)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने क़ब्र पर इमारत बनाने से मना किया।

इन तीनों हदीसों में क़ब्र पर इमारत बनाने से सख़्ती के साथ मना किया है।

क़ब्र पर इमारत बनाने वालों की एक दलील

बाज़ हज़रात कहते हैं कि लोगों के कुरआन पढ़ने के लिए दुआ़ करने के लिए क़ब्र के गिर्द इमारत बनाना जायज़ है और इस के लिए वो कुछ बुज़ुर्गों के अक़वाल पैश करते हैं।

लेकिन इस में यह ख़ामियां हैं:

(1) हदीस में शिद्दत के साथ मना किया हो तो फिर किसी बुज़ुर्ग के क़ौल को इस्तदलाल में पैश करना सही नहीं है।

(2) आज कल लोग कुरआन पढ़ने के लिए तो कम और शौहरत, क़व्वाली और ढ़ोल के लिए ज़्यादा इमारत बनाते हैं, आप इस के लिए यूट्यूब और इन्टरनेट देख लें, फिर फ़ैसला करें।

(3) हुज़ूर स0अ0व0 को ख़तरा था कि पिछली क़ौमों की तरह यह क़ौम भी क़ब्र और अहले क़ब्र के ख़ुराफ़ात में पड़ जायेगी इस लिए क़ब्र पर इमारत बनाने और इस पर चिराग़ जलाने से सख़्ती के साथ मना किया है।

हुज़ूर स०अ०व० की क़ब्र मुबारक पर कुब्बा क्यों है

हदीस की बुन्याद पर हुज़ूर स0अ0व0 की क़ब्र पर छत नही होनी चाहिये, लेकिन पहली बात तो ये है के आप की क़बर शरीफ़ हज़रत आइशा के कमरे में थी इस लिये पहले से साइबान था और

यही साइबान काफ़ी सालों तक रहा, बाद में देखा के जो लोग भी बाहर से आते हें वह क़ब्र के पास ही जाना चाहते हें और कुछ लोग वहां से मिटटी भी उठाने लगे, क्यों कि बाहर के सब लोग इतने तरबियत याफता नहीं होते, इस लिये उस के इरद गिरद दिवार खड़ी करदी ताके लोग वहां तक ना जा सके और किसी तोहीन का इरतकाब ना कर सके।

557 हि० मुताबिक़ 1162 ई० में सुलतान नूरुद्वीन ज़ंगी रह० वाली दमिश्क़ के ज़माने में एक हादसा पैश आया वह ये के कुछ यहूदीयों ने हुज़ूर स0अ0व0 की क़ब्र तक सुरंग बनाया और आप की तोहीन करने की कोशिश की इस लिये इस नुरुद्वीन ज़ंगी रह० ने क़ब्र के इरद गिरद शिशे की मज़बूत बुन्याद बनाई ता कि कोई यहूदी सुरंग ना बना सके।

उन हालात को दैखते हुवे 678 हि० मुताबिक़ 1279 ई० में सुलतान सैफुद्वीन क़लावून ने उस की मरम्मत की और लकड़ी की मज़बूत दिवार बनाई और छत भी बना दी ता कि कोई ऊपर से भी ना आसके और कोई शख़्स इरद गिरद से भी अन्दर ना जा सके और ना कोई नुक्सान पहुंचा सके, इस लिये इस मजबूरी की वजा से हुज़ूर स0अ0व0 की क़ब्र शरीफ़ के इरद गिरद लकड़ी की दीवार, और लकड़ी की छत बनाई गई वरना हदीस के एतबार से उस पर भी कोई इमारत या छत नहीं होनी चाहिये।

इस वक़्त यह दीवार लकड़ीकी थी इस लिए 886 हि0 मुताबिक़ 1481 ई0 में इस इमारत में ज़बरदस्त आग लग गई और जल गई, जिस की वजह से सुल्तान क़ातीबाई मिसरी ने ईंट और पत्थर से इस की तामीर की और इस पर मज़बूत गुन्बद ड़ाली ताकि कोई अन्दर ना आ सके, इस वक़्त इस इमारत पर सादा रंग से रंगा जाता था। 1253 हि0 मुताबिक़ 1837 ई0 में सुल्तान महमूद बिन अ़ब्दुल हमीद ने इस को हरे रंग से रंग दिया और वो रंग आज तक चल रहा है।

क़ब्र पर इमारत बनाओ इस हदीस पर अ़मल करते हुए आज भी हुजूर स0अ0व0 की क़ब्र और हज़रत अबूबकर रज़ि0 और हज़रत उ़मर रज़ि0 की क़ब्र में मिट्टी की हैं और इन पर कंकरियां बिछी हुई हैं अल्बत्ता लोगों से हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से दूर में दीवार और उस की छत बनाई गई है।

हुजूर स0अ0व0 की क़ब्र मुबारक पर मिट्टी है इस के लिए हदीस यह है:

.عن القاسم قال دخلت على عائشة فقلت يا امة !اكشفى لى عن قبر رسول الله ﷺ و صاحبيه رضى الله عنهما فكشفت لى عن ثلاثة قبور ، لا مشرفة ، و لا لاطئة مبطوحة ببطحاء العرصة الحمراء . (ابو داود شريف ، كتاب الجنائز ، باب فى تسوية القبر ، ص ۴۷۰، نمبر ۳۲۲۰)

तर्जुमा: हज़रत क़ासिम रह0 फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत आ़यशा रज़ि0 के पास आया और कहा कि मुझे हुजूर स0अ0व0 और इन के दो साथियों की क़ब्र दिखाऐं? तो उन्होंने तीन क़ब्रें दिखाईं जो बहुत ऊंची भी नहीं थीं और बहुत नीची भी नहीं थीं इन पर बतहा की सुर्ख़ कंकरियां बिछी हुई थीं।

इस क़ौल सहाबी में है कि हुजूर स0अ0व0 की क़ब्र पर अभी भी सुर्ख़ रंग की कंकरी पड़ी हुई है।

इस लिए हुजूर स0अ0व0 की क़ब्र के गिर्द इमारत से दूसरी क़ब्रों पर कुब्बा और गुन्बद बनाने पर इस्तदलाल नहीं करनी चाहिए यह हदीस के ख़िलाफ़ है।

क़ब्र को बहुत ऊंची बनाना भी मकरूह है

क़ब्र को ऊंची बनाना भी सही नहीं। इस के लिए यह हदीस है:

25. عن ابى الهياج الاسدى قال : قال لى على بن طالب الا ابعثك على ما بعثنى عليه رسول الله ﷺ ؟ ان لا تدع تمثالا الا طمسته و لا قبرا مشرفا

الا سويته . (مسلم شريف ، كتاب الجنائز ، باب الامر بتسوية القبر ، ص ٣٨٩، نمبر ٢٢٤٣/٩٦٩)

तर्जुमाः अबी उल हयाज असदी फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ि० ने मुझ से कहा कि जिस के लिए मुझे हुज़ूर स०अ०व० ने भैजा है मैं तुम को ना भैजूं? मुझे इस बात के लिए भैजा है कि कोई बुत ना देखूं मगर इस को तोड़ दूं और कोई ऊंची क़ब्र ना देखूं मगर इस को बराबर कर दूं।

इस हदीस में है कि ऊंची क़ब्र को बराबर कर दे, इस लिए क़ब्र को ऊंची रखना भी अच्छा नहीं है, इस लिए क़ब्र को पुख़्ता बना कर इस को ऊंची करना अच्छी बात नहीं है। बाज़ हज़रात ने यह फ़रमाया है कि यह काफ़िर की क़ब्र के बारे में बराबर करने का हुक्म था, लेकिन यह तावील इस लिए सही नहीं है इस हदीस में किसी क़ब्र की तख़सीस नहीं है बल्कि तमाम क़ब्रों के लिए यह हुक्म आ़म है।

क़ब्र के इर्द गिर्द मस्जिद बनाना भी मकरूह है

इस के लिए यह हदीस है:

26.عن ابن عباس قال لعن رسول الله ﷺ زائرات القبور و المتخذين عليها المساجد و السرج . (ترمذی شريف ، كتاب الصلاة، باب ما جاء فی كراهية ان يتخذ علی القبر مسجدا ، ص ٨٨،نمبر ٣٢٠/ نسائی شريف، كتاب الجنائز ، باب التغليظ فی اتخاذ السرج علی القبور ، ص ٢٨٦،نمبر ٢٠٤٥)

तर्जुमाः हुज़ूर स०अ०व० ने क़ब्र की ज़ियारत करने वाली औ़रतों पर लअ़नत की और जो इस पर मस्जिदें बनाते हैं और चिराग़ जलाते हैं इन पर भी लअ़नत की।

27.عن عائشة ان ام سلمة ذكرت لرسول الله ﷺ كنيسة رأتها بارض الحبشة يقال لها مارية فذكرت له ما رأت فيها من الصور فقال رسول الله

ﷺ اولـئک قوم اذا مات فیھم العبد الصالح او الرجل الصالح بنوا علی قبرہ مسـجـدا و صـوروا فیه تلک الصور اولئک شرار الخلق عند الله . (بخاری شریف ، کتاب الصلاۃ ، باب الصلاۃ فی البیعة ، ص ۷۵، نمبر ۴۳۴)

तर्जुमा: हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने हुजूर स०अ०व० के सामने हब्शा में जो चर्च देखा था जिस को मारिया कहते हैं इस में जो तसवीर लगी हुई है इस का तज़्किरा किया तो हुजूर स०अ०व० ने फ़रमाया कि यह एक क़ौम थी जिस के नेक बन्दे मर जाते तो इस की क़ब्र पर मस्जिद बना लेते ओर इस में यह तसवीर लगा देते, अल्लाह के नज़दीक यह शरीर मख़्लूक़ है।

इन अहादीस में है कि क़ब्र के पास मस्जिद बनाना भी मकरूह है, लेकिन कुछ लोगों ने इस के ख़िलाफ़ ख़्वाह मख़्वाह फ़तवा दे दिया है और लोगों को गुमराह किया है।

क़ब्र पर चिराग़ जलाना भी मकरूह है

इस के लिए हदीस यह है:

28.عـن ابـن عباس قال لعن رسول الله ﷺ زائرات القبور و المتخذین عـلیھـا الـمساجد و السرج . (ترمذی شریف ، کتاب الصلاۃ، باب ما جاء فی کـراھیة ان یتـخـذ عـلـی القبر مسجدا ، ص ۸۸، نمبر ۳۲۰/ نسائی شریف، کتاب الجنائز ، باب التغلیظ فی اتخاذ السرج علی القبور ، ص۲۸۶،نمبر۲۰۴۵)

तर्जुमा: हुजूर स०अ०व० ने क़ब्र की ज़ियारत करने वाली औ़रतों पर लअ़नत की और जो इस पर मस्जिदें बनाते हैं और चिराग़ जलाते हैं इन पर भी लअ़नत की।

29.عـن ابـن عباس قال لعن رسول الله ﷺ زائرات القبور و المتخذین عـلیھـا المساجد و السرج . (ابو داود شریف ، کتاب الجنائز ، باب فی زیارۃ النساء القبور ، ص۴۷۲،نمبر۳۲۳۶)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने क़ब्र की ज़ियारत करने वाली औ़रतों पर लअ़नत की और जो इस पर मस्जिदें बनाते हैं और चिराग़ जलाते हैं इन पर भी लअ़नत की।

इस दौर में लोग क़ब्र पर कितने चिराग़ां करते हैं और कितनी रंग बिरंग बिजलियां जलाते हैं और इस को सवाब का काम समझते हैं।

क़ब्र पर फूल चढ़ाना ठीक नहीं है

हुजूर स0अ0व0 ने या सहाबा ने कभी भी किसी क़ब्र पर फूल नहीं चढ़ाया है। यह हिन्दुओं का तरीक़ा है कि वो लोग अपने बुतों पर और मूर्तियों पर फूल चढ़ाते हैं और इस को ख़ुश करने की कौशिश करते हैं, हमें हिन्दुओं का तरीक़ा इख़तयार नहीं करना चाहिए।

कुछ हज़रात इस हदीस से क़ब्र पर फूल चढ़ाने पर इस्तदलाल करते हैं।

29.عن ابن عباس رض عن النبی ﷺ انه مر بقبرين يعذبان فقال انهما ليعذبان ... ثم اخذ جريدة رطبة فشقها بنصفين ثم غرز فی كل قبر واحدة فقالوا يا رسول الله لم صنعت هذا ؟ فقال لعله ان يخفف عنهما ما لم ييسا .

(بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب الجریدۃ علی القبر ، ص۲۱۸،نمبر۱۳۶۱)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ जिन पर अ़ज़ाब हो रहा था, तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि इन दोनों पर अ़ज़ाब हो रहा है......फिर एक तर शाख़ को लिया और इस को दो टुकड़े किया, फिर हर क़ब्र पर एक एक शाख़ गाड़ दी, लोगों ने पूछा कि या रसूलुल्लाह यह क्यों किया? तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब तक सूख ना जाये तो हो सकता है कि इस वक़्त तक दोनों से अ़ज़ाब में कमी रहे।

इस हदीस में हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि साहब कब्र पर

अ़ज़ाब हो रहा है तो आप ने इस पर खजूर की टहनी गाड़ी और कहा जब तक यह ख़ुशक ना हो तो इस वक़्त तक इस से अ़ज़ाब कम हो जायेगा। इस से इस्तदलाल करते हैं कि क़ब्र पर फूल चढ़ाना जायज़ है। लेकिन इस में यह बातें देखने की है कि हुज़ूर स0अ0व0 ने सिर्फ़ एक मर्तबा ऐसा किया इस लिए मुमकिन है कि यह आप की बरकत से अ़ज़ाब कम हुआ हो इस लिए क्या ज़रूरी है कि हमारे गाड़ने से भी अ़ज़ाब कम हो जाये हुज़ूर स0अ0व0 ने खजूर की टहनी ड़ाली है, हम फूल ड़ालते हैं और फूल ड़ालना हिन्दुओं का तरीक़ा है वो भी अपने बुतों पर फूल ड़ालते हैं इस लिए इस से परहैज़ बेहतर है।

आज कल क़ब्रों पर एक फूल नहीं ड़ाला जाता बल्कि यह मुजाविरों की बिज़निस बन गई है इस से कितने लोग तिजारत कर रहे हैं, देखें कि किना बड़ा फ़र्क़ है।

ग़राइब का फ़तवा

कुछ हज़रात यह फ़तवा पैश करते हैं लेकिन इस फ़तवे का ऐतबार इस लिए नहीं है कि फ़तावा हिन्दया वालों ने, ग़राइब, कोई किताब है वहां से फ़तवा नक़ल किया गया है और इस पर कोई हदीस भी पैश नहीं की है ग़राइब का फ़तवा यह है।

وضع الورد و الرياحين على القبور حسن و ان تصدق بقيمة الورد كان احسن كذا فى الغرائب . (فتاوى هندية ، كتاب الكراهية ، الباب سادس عشر، فى زيارة القبور ، ج ٥ ، ص ٣٥١)

तर्जुमा: क़ब्र पर गुलाब का फूल, या ख़ुशबू रखे तो बेहतर है और इस की क़ीमत सदक़ा कर दे तो और ज़्यादा बेहतर है, ग़राइब की किताब में ऐसा ही लिखा हुआ है।

इस इबारत में देखें कि कोई हदीस पैश नहीं की और ना किसी अहम किताब का हवाला दिया है, यह तो ग़राइब की एक

इबारत है इस लिए यह फ़तवा ठीक नहीं है, ख़ुसूसन जब कि आज कल यह एक बहुत बड़ी तिजारत बन गई हो।

क़ब्र पर लिखना भी अच्छा नहीं है

30.عن جابر قال نهی رسول الله ﷺ ان یکتب علی القبر شیء . (ابن ماجة شریف ، باب ما جاء فی النهی عن البناء علی القبور و الکتابة علیها ، ص ۲۲۲، نمبر ۱۵۶۳)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने क़ब्र पर कोई चीज़ लिखने से मना फ़रमाया है।

इस हदीस में है कि क़ब्र पर लिखने से मना किया है।

क़ब्र पर पत्थर की अ़लामत रखना जायज़ है

क़ब्र पर कोई अ़लामत की चीज़ रख दे जिस से पता चले कि यह फ़लां की क़ब्र है तो इस की थोड़ी सी गुंजाइश है लेकिन इस का आ़म रिवाज ना बनाले। इस की दलील यह हदीस है:

31. عن انس بن مالک ان رسول الله أعلم قبر عثمان بن مظعون بصخرة . (ابن ماجة شریف ، باب ما جاء فی العلامة فی القبر ، ص۲۲۲،نمبر۱۵۶۱)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 ने उ़समान बिन मज़ऊ़न की क़ब्र पर चट्टान रख कर निशान लगाई।

क़ब्र की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं

क़ब्र की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ भी पढ़ना जायज़ नहीं है तो इस के सामने सज्दा करना कैसे जायज़ होगा। हदीस यह है:

32.عن ابی مرسد الغنوی قال قال رسول الله ﷺ لا تجلسوا علی القبور ، و لا تصلوا الیها. (مسلم شریف ، کتاب الجنائز ، باب النهی عن

الجلوس علی القبر و الصلاة علیه ، ص۳۹۰،نمبر ۲۲۵۰/۹۷۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया क़ब्र पर मत बैठो और इस की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ भी ना पढ़ो।

इस हदीस से साबित हुआ कि क़ब्र की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ पढ़ना भी जायज़ नहीं है ताकि लोग यह ना समझें कि यह साहब क़ब्र की इबादत कर रहा है।

क़ब्र पर बैठना मकरूह है

क़ब्र पर बैठने से साहब क़ब्र की तौहीन होगी इस लिए क़ब्र पर बैठना मकरूह है। इस के लिए हदीस यह है:

33عن ابی مرسد الغنوی قال قال رسول الله ﷺ لا تجلسوا علی القبور ، و لا تصلوا الیها. (مسلم شریف ، کتاب الجنائز ، باب النهی عن الجلوس علی القبر و الصلاة علیه ، ص ۳۹۰، نمبر ۲۲۵۰/۹۷۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया क़ब्र पर मत बैठो और इस की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ भी ना पढ़ो।

34. عن جابر نهی رسول الله ﷺ ان یجصص القبر ، و ان یقعد علیه ، و ان یبنی علیها. (مسلم شریف ، کتاب الجنائز ، باب النهی عن تجسیس القبر و البناء علیه ، ص ۳۹۰، نمبر ۲۲۴۵/۹۷۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने क़ब्र को पुख़्ता बनाने से मना फ़रमाया है और इस पर बैठने से और इस पर इमारत तामीर करने से मना फ़रमाया है।

क़ब्र को रोन्दना मकरूह है

35.عن جابر قال نهی رسول الله ﷺ ان تجصص القبور و ان یکتب علیها ، و ان یبنی علیها و ان تؤطأ. (ترمذی شریف ، کتاب الجنائز ، باب ما

جـاء فـى كـراهية تـجـصيـص الـقبـور و الـكتـابة عليهـا ، ص ۲۵۴، نمبـر ۱۰۵۲ /ابـن مـاجة شـريف ، بـاب مـا جـاء فـى الـنهـى عن البناء على القبور و الكتابة عليها ، ص ۲۲۲، نمبر ۱۵٦۲)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने क़ब्रों को पुख़्ता बनाने से मना किया और इस पर लिखने से मना किया और इस पर इमारत बनाने से मना किया और इस को रोन्दने से मना किया।

क़ब्रों के दरमियान गुज़रने की ज़रूरत पड़ जाये तो जूता निकाल कर चले

क़ब्रों के दरमियान गुज़रने की ज़रूरत पड जाये तो जूता निकाल कर चले ताकि क़ब्र की तौहीन ना हो, लेकिन अगर वहां घास वग़ैरह की वजह से चलना मुमकिन ना हो तो चप्पल पहन सकता है। इस के लिए हदीस यह है:

36.ان بشيـر ابـن الـخصاصية قال كنت امشى مع رسول الله ﷺ فمر عـلـى قبـور الـمسـلـميـن فـقـال : لقد سبق هؤلاء شرا كثيرا ، ثم مر على قبور الـمشـركيـن فـقال لقد سبق هؤلاء خيرا كثيرا ، فحانت منه التفاتة فرأى رجلا يـمشى بين القبور فى نعليه فقال يا صاحب السبتيتين القهما . (نسائى شريف ، كتاب الجنائز ، باب كراهية المشى بين القبور فى النعال البتية ، ص۲۸۷،نمبر ۲۰۵۰)

तर्जुमा: बशीर इब्ने ख़सासिया फ़रमाते हैं कि हम लोग हुजूर स0अ0व0 के साथ मुसलमान की क़ब्रों के दरमियान से चल रहे थे तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि यह लोग शर की बहुत सारी चीज़ों को पार कर गये, फिर हम मुश्रिकीन की क़ब्रों से गुज़रे तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि यह लोग बहुत सारे ख़ैर को छोड़ आये हैं, इस दरमियान आप ने एक आदमी को देखा कि वो जूता पहन कर क़ब्रों के दरमियान चल रहा है तो आप ने फ़रमाया ऐ

जूते वाले इस को निकाल लो।

इस हदीस में हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि चमड़े के जूते को निकाल कर क़ब्रों के दरमियान में चलो।

लुग़त: **سبتية** चमड़े का जूता।

जिन के यहां मौत हुई है उन के यहां खाना बना कर भेजना सुन्नत है

इस के लिए हदीस यह है:

37.عن عبد الله بن جعفر قال لما جاء نعى جعفر قال رسول الله ﷺ اصنعوا لآل جعفر طعاما فقد اتاهم ما يشغلهم او امر يشغلهم . (ابن ماجة شريف ، باب فى الطعام يبعث الى اهل الميت ، ص ٢٢٩، نمبر ١٦١٠)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़फ़र रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जब हज़रत जअ़फ़र की मौत की ख़बर आई तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हज़रत जअ़फ़र के रिश्तेदारों के लिए खाना बनाओ क्योंकि इन के पास ऐसी ख़बर आई है जिस की वजह से इन को मशग़ूलियत हो गई है, या यूं फ़रमाया कि ऐसा मामला आ गया है जिस में वो लोग मशग़ूल हैं (यानी ग़मी की वजह से खाना बनाने की फ़ुरसत नहीं है)।

इस हदीस में है कि मय्यत के घर में खाना भैजना चाहिए।

लेकिन इस वक़्त की सूरते हाल यह है कि जिन के यहां वफ़ात हुई हो तो इस के यहां खाना कहां भैजते हैं, बल्कि इन के यहां रिश्तेदार और अ़वाम मिल कर इतना खाते हैं कि घरवाले तंग आ जाते हैं।

जिन के यहां मौत हुई है उन के यहां खाना खाना मकरूह है

आज कल ईसाले सवाब के नाम पर इतना ख़र्च करवाते हैं

कि वारसीन तंग आ जाते हैं। हालांकि ईसाले सवाल करना एक मुस्तहब्ब काम है और वो वारसीन की अपनी मरज़ी की चीज़ है, कि जब चाहे अपनी ख़ुशी से कुछ गुरबा को चुपके से खाना खिलादे, या कपड़ा पहनादे, और इस का सवाब मय्यत को पहुंचा दे यही सवाब मय्यत को पहुंचता है। इस के लिए ना वक़्त मुतअ़य्यन करने की ज़रूरत है और ना ऐलान करने की ज़रूरत है, क्योंकि चुपक से गुरबा को खिलाना है। लेकिन मैंने देखा कि कई ग़रीब की वालिदा का इन्तक़ाल हुआ तो कुछ ज़हीन लोगों ने इतना मजबूर किया कि वो बनियों से कई हज़ार रूपया सूदी क़र्ज़ लाकर लोगों को खाना खिलाया तब इस की जान छुटी। इस के लिए सहाबी का क़ौल है:

38.عن جرير بن عبد الله بجلى ؓ قال كنا نرى الاجتماع الى اهل الميت و صنعة الطعام من النياحة . (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء فى النهى الاجتماع الى اهل الميت و صنعة الطعام ، ص ٢٣٠، نمبر ١٦١٢/ مسند احمد ، مسند عبد الله بن عمر و بن العاص، جلد ١، ص ٥٠٥، نمبر ٦٩٠٥)

तर्जुमा: जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम मय्यत वालों के पास जमा होना, और इन से खाना बनवाना नोहा करने के क़िसम से समझते थे।

इस हदीस में है कि जिस तरह नोहा करना नाजायज़ समझते थे, इसी तरह मय्यत वालों के यहां खाना भी नाजायज़ समझते हैं।

मय्यत के लिए बहुत ज़्यादा ऐलान करना भी ठीक नहीं है

मय्यत के लिए बहुत ज़्यादा ऐलान करेंगे तो इस के यहां भीड़ हो जायेगी और इस को संभालना मुश्किल होगा? इस लिए शरीअ़त ने यह मैअ़यार मुक़र्रर किया है कि मरने वालों के यहां बहुत भीड़ जमा हो जाये। इस के लिए हदीस यह है:

39. عن عبد الله عن النبی ﷺ قال ایاکم و النعی فان النعی من عمل الجاهلیة ، قال عبد الله و النعی اذان با لمیت.(ترمذی شریف ، کتاب الجنائز ، باب ما جاء فی کراهیة النعی ، ص ۲۳۹ ، نمبر ۹۸۴ / ابن ماجة شریف ، کتاب الجنائز ، باب ما جاء فی النهی عن النعی ، ص۲۱۱،نمبر۱۴۷۶)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि लोगों के दरमियान मौत के ऐलान से बचा करो इस लिए कि यह जाहिलियत का अ़मल है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 ने फ़रमाया कि नई का तर्जुमा है लोगों के दरमियान मौत का ऐलान करना।

इस हदीस में अहतमाम के साथ लोगों में मय्यत की मौत के ऐलान करने से मना किया है हां थोड़ा बहुत जनाज़े की इत्तला दे इस की गुंजाइश है, लेकिन जम घटा करना सही नहीं है। इस वक़्त का आ़लम यह है कि जिन के यहां मौत हो जाये वहां महीनों लोग जमा होते रहते हैं और घर वालों को कोई काम करना मुश्किल होता है और बेपनाह ख़र्च हो जाता है।

तीन दिन से ज़्यादा सोग ना मनाये

बीवी तो चार महीने दस रोज़ तक सोग मेनायेगी इस के अ़लावा के लोग तीन दिन से ज़्यादा सोग ना मनाये हदीस में इस को मना फ़रमाया है। यह जो लोग चालीस दिन तक सोग मनाते रहते हैं या हर साल सोग मनाते हैं और पूरा हंगामा करते हैं यह हदीस के ऐतबार से ग़लत है। इस के लिए यह हदीस है:

40. عن ام عطیة قالت کنا ننهی ان نحد علی المیت فوق ثلاث الا علی زوج اربعة اشهر و عشرا . (بخاری شریف ، کتاب الحیض ، باب الطیب للمرأة عند غسلها من المحیض ، ص ۵۴ ، نمبر ۳۱۳ / مسلم شریف ، کتاب الطلاق ، باب وجوب الاحداد فی عده الوفاة و تحریمه فی غیر ذالک ،الا ثلاثة ایام ، ص۶۴۴،نمبر۱۴۸۶،نمبر۳۷۲۵)

तर्जुमा: हज़रत उम्मे अ़तिया रज़ि0 फ़रमाती हैं कि तीन दिन से ज़्यादा मय्यत पर सोग मनाने से हम को रोका जाता था, सिवाऐ शौहर के कि इस पर चार महीने दस दिन बीवी सोग मनाये।

इस हदीस में है कि तीन दिन से ज़्यादा सोग ना मनाये।

क़ब्र में गुनाहगारों को अ़ज़ाब होता है

क़ब्र का अ़ज़ाब हक़ है और उन की ज़िन्दगी बरज़ख़ी ज़िन्दगी है। इस की दलील यह आयतें हैं:

20.حَتّٰی اِذَا جَاءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنَ لَعَلِّیْ اَعْمَلُ صَالِحًا فِیْمَا تَرَكْتُ كَلَّا اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَ مِنْ وَّرَائِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰی يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ .

(آیت۱۰۰سورت المؤمنون۲۳)

तर्जुमा: यहां तक कि जब इन में से किसी पर मौत आ खड़ी होगी तो वो कहेगा कि मेरे रब मुझे वापिस भैज दीजिए ताकि जिस दुनिया को मै छोड़ आया हूं इस में जाकर नेक अ़मल करूं, हरगिज़ नहीं! यह तो एक बात ही बात है जो वो ज़बान से कह रहा है, और इन मरने वालों के सामने बरज़ख़ की आड़ है, जो इस वक़्त तक क़ायम रहेगी जब तक इन को दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाये।

21.وَ حَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْءَ الْعَذَابِ ، اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ عَشِيًّا وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ أُدْخِلُوْا اٰلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ . (آیت۴۵۔۴۶،سورۃ غافر۴۰)

तर्जुमा: और फ़िरऔ़न के लोगों को बदतरीन अ़ज़ाब ने आ घैरा आग है जिस के सामने इन को सुबह शाम पैश किया जाता है और जब क़यामत आयेगी ता हुक्म होगा कि इस को सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल कर दो।

22.وَ لَوْ تَرٰی اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلٰئِكَةُ بَاسِطُوْا أَيْدِيْهِمْ أَخْرِجُوْا اَنْفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ . (آیت۹۳،سورۃ الانعام۶)

तर्जुमा: अगर तुम वो वक़्त देखो जब ज़ालिम लोग मौत की

सख़्तियों में गिरफ़तार होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाऐ हुए कह रहे होंगे कि अपनी जानें निकालो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जायेगा।

इन तीन आयतों में इशारतन क़ब्र के अ़ज़ाब का तज़्किरा है।

41.عن ابی ایوب رض قال خرج النبی ﷺ و قد وجبت الشمس ، فسمع صوتا فقال یهود یعذب فی قبورها . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب التعوذ من عذاب القبر ، ص ۲۲۰، نمبر ۱۳۷۵)

तर्जुमाः सूरज डूबते वक़्त निकले तो एक आवाज़ सुनी तो आप ने फरमाया, यहूदी को अपनी क़बर में अज़ाब होरहा है।

42.عن عائشة رض .....قالت عائشة رض فما رأيت رسول الله ﷺ بعد صلی صلاة الا تعوذ من عذاب القبر ، و زاد غندر ، عذاب القبر حق . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب ما جاء فی عذاب القبر ، ص۲۲۰،نمبر۱۳۷۲)

तर्जुमाः हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हर नमाज़ के बादे मैं हुजूर स0अ0व0 को देखा कि वो क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह मांगते थे, हज़रत गुन्दर रह0 ने यह भी फ़रमाया कि क़ब्र का अ़ज़ाब हक़ है।

43.حدثنی ابنة خالد بن سعید ابن العاصی انها سمعت النبی ﷺ و هو یتعوذ من عذاب القبر . (بخاری شریف ، کتاب الجنائز ، باب التعوذ من عذاب القبر ، ص۲۲۱،نمبر۱۳۷۶)

तर्जुमाः हज़रत सईद बिन आ़स रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने सुना कि हुजूर स0अ0व0 क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह मांगते थे।

इस हदीस में है कि हुजूर स0अ0व0 क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह मांगते थे इस से भी मालूम हुआ कि यह हयात बरज़ख़ी है।

44.عن البراء بن عازب قال خرجنا مع النبی ﷺ فی جنازة ......قال فتعاد روحه فی جسده ، فیاتیه ملکان فیجلسان فیقولا له من ربک فیقول ربی

اللـه ......فتعاد روحه و ياتيه ملكان فيجلسانه فيقولان من ربك ؟ فيقول ها ها لا ادرى .(مسند احمد ، حديث البراء بن عاذب ، ج۵،ص۳۶۴،نمبر۱۸۰۶۳/ ابو داود شريف ، باب المسألة فى القبر و عذاب القبر ۶۷۲،نمبر۴۷۵۳)

तर्जुमा: हम हुजूर स0अ0व0 के साथ एक जनाज़े में निकले……फ़रमाया कि इस की रूह को जिस्म में लाई जाती है और इस के पास दो फ़रिश्ते आते हैं और इस को बैठाते हैं, और पूछते हैं, तुम्हारा रब कौन है? तो वो मुसलमान कहता है कि मेरा रब अल्लाह है…… काफ़िर की रूह को लोटाई जाती है, इस के पास दो फ़रिश्ते आते हैं और इस को बैठाते हैं और पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है? तो वो कहता है कि हाहा मुझे मालूम नहीं है इन अहादीस में है कि इन्सान को क़ब्र में अ़ज़ाब होता है, और यह भी मालूम हुआ कि इस की यह ज़िन्दगी बरज़ख़ी है।

इस अ़क़ीदे के बारे में 22 आयतें और 44 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(38) क़ब्र पर उ़र्स जायज़ नहीं है

इस अ़क़ीदे के बारे में दो आयतें और 10 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें। क़ब्र पर उ़र्स करने से ईद की शक्ल बनती है, और हुज़ूर स0अ0व0 ने क़ब्र पर ईद करने से मना फ़रमाया है, इस लिए यह भी जायज़ नहीं है। इस की दलील यह हदीस है।

1 .عن ابى هريرة قال قال رسول الله ﷺ لا تجعلوا بيوتكم قبورا ، و لا تـجعلوا قبرى عيدا ، و صلوا على فان صلاتكم تبلغنى حيث كنتم . (ابو داود شريف ، كتاب المناسك ، باب زيارة القبور ، ص۲۹۲ ، نمبر ۲۰۴۲)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपने घरों को क़ब्र की तरह मत बनाओ (इस में नमाज़ पढ़ते रहो) और मेरी क़ब्र को ईद की तरह मत बनाओ, मुझ पर दुरूद भैजते रहा, तुम जहा कहीं

भी हो तुम्हारा दुरूद मुझे पहुंचाया जाता है।

इस हदीस में है कि मेरी क़ब्र को मेले की जगह ना बनाओ। इस हदीस में है कि क़ब्र पर ईद की शक्ल मत बनाओ, और उ़र्स में ईद की शक्ल होती है इस लिए यह जायज़ नहीं है।

इस हदीस से उ़र्स पर इस्तदलाल करना सही नहीं है

बाज़ हज़रात ने इस हदीस से उ़र्स के इस्तदलाल के जायज़ होने पर इस्तदलाल किया है।

2.عن محمد بن ابراهيم التيمى قال كان النبى ﷺ يأتى قبور الشهداء عند رأس الحول ، فيقول السلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار ، قال و كان ابو بكر ، و عمر وعثمان يفعلون ذالک . (مصنف عبد الرزاق ، باب زيارة القبور ، جلد ٣ ، ص ٥٧٣، نمبر ٦٧١٦)

तर्जुमा: मौहम्मद बिन इब्राहीम तीमी फ़रमाते हैं कि हुजूर स0अ0व0 साल के शुरू में शौहदा की क़ब्र पर आया करते थे।

इस हदीस में है कि साल के शुरू में हुजूर स0अ0व0 शौहदाऐ उहद की क़ब्रों पर जाया करते थे **فيقول السلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار** और हज़रत अबूबकर रज़ि0 और हज़रत उ़मर रज़ि0 और हज़रम उ़समान रज़ि0 भी ऐसा करते थे।

इस हदीस में है कि हुजूर स0अ0व0 हर साल के शुरू में शोहदा उहद के पास तशरीफ़ लाया करते थे इस से बाज़ हज़रात ने इस्तदलाल किया है कि हर साल में एक मर्तबा उ़र्स करना जायज़ है।

लेकिन इस में यह चार ख़ामियां हैं:

(1) पहली बात यह है कि हुजूर स0अ0व0 बग़ैर किसी ऐलान के जाया करते थे, यही वजह है कि किसी को ख़बर हुई किसी को ख़बर नहीं हुई, यही वजह है कि यह हदीस कि हर साल के शुरू में जाया करते थे, सिहाहे सित्ता की किसी किताब में नहीं है

और इस के असातिज़ा की भी किसी किताब में नहीं है, सिर्फ़ मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वाले ने इस का ज़िक्र किया है।

इस हदीस के मुताबिक़ अगर कोई आदमी कभी कभार क़ब्रिस्तान में चला जाये और सिर्फ़ السلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الـــدار पढ़ कर वापिस चला आये तो किसी को इश्काल नहीं है, लेकिन यहां हो यह रहा है कि तारीख़ मुतअ़य्यन की जाती है, ‌उ़र्स के नाम पर लाखों रूपया ख़र्च किया जाता है, महीनों से इस का ऐलान होता है, बेपनाह लोगों को बुलाया जाता है, और वो धमाल होता है कि हिन्दुओं का मैला शरमा जाये, इस की गुंजाइश कैसे दी जा सकती है।

(2) दूसरी बात यह है कि इस हदीस में ताबई ने हुज़ूर स0अ0व0 का अ़मल नक़ल किया है और बीच में सहाबी का नाम छोड़ दिया है (क्योंकि मौहम्मद बिन इब्राहीम अल तीमी, ताबई हैं) इस लिए यह हदीस मरफ़ूअ़ नहीं है हदीस मुरसल है, इस लिए इस की हैसियत कम है।

(3) उ़र्स में ईद का समा होता है और अभी ऊपर गुज़रा कि क़ब्रिस्तान पर ईद का समा करने से हुज़ूर स0अ0व0 ने मना फ़रमाया है तो उ़र्स की इजाज़त कैसे दी जा सकती है।

(4) कभी कभार किसी सहाबी या ताबई ने उर्स नहीं किया है तो ये कैसे जाईज़ हो सकता है। बल्के ऊपर की अहादीस को दैखने से मालूम होता है के इस किस्म की बातों से हुज़ूर स0अ0व0 ने मना फरमाया है ताके रफता रफता लोग शिर्क में मुबतला ना हो जाऐ।

(5) असल बात ये है के ज़हीन लोगों के खाने पीने का और साल भर के खर्च जमा करने का एक धनदा है, आप खुद भी उस पर गौर करलें।

इस हदीस से मालूम होता है के हुज़ूर स0अ0व0 कभी कभार शुहादा की क़बर पर आया करते थे, उस में तारीख़ मुतअय्यन नहीं थी।

3. سمعت طلحه بن عبيد الله يحدث ... قال خرجنا مع رسول الله ﷺ نريد قبور الشهداء حتى اذا اشرفنا على حرة واقم فلما تدلينا منها فاذا قبور بمحنية قال قلنا يا رسول الله ! قبور اخواننا هذه ؟ قال قبور اصحابنا فلما جئنا قبور الشهداء قال هذه قبور اخواننا . (ابو داود شريف ، كتاب المناسك ، باب زيارة القبور ، ص ٢٩٦ ، نمبر ٢٠٤٣)

तर्जुमा: फरमाया के हम हुजूर स0अ0व0 के साथ निकले शुहादा की क़ब्र पर जाने का इरादा था, हम जब हिरा वाक़िम (जगह) आऐ, हम जब आगे बढ़े तो मोहनिया में क़ब्र थी, तो हम ने कहा या रसूलुल्लाह ये हमारे भाईयें की क़ब्र हें, तो हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया ये हमारे साथयों की क़ब्रें हें, फिर जब हम शुहादा अहद की क़ब्र के पास आऐ तो आप स0अ0व0 ने फरमाया के ये हमारे भाईयों की क़ब्रें हें।

इस हदीस से इतना मालूम होता है के हुजूर स0अ0व0 कभी कभार शुहादा अहद की क़ब्रों पर जाया करते थे। कुछ हज़रात 1100 सो साल बाद वाले बुजुर्गों के अक़वाल और उनके आमाल से उर्स, चहलुम वगेरा के जवाज़ का सुबूत पैश करते हें।

(1) लेकिन ये इस लिये ठीक नहीं है कियों कि बहुत बाद के बुजुर्गों के अमल से ऐतक़ादी मस्अला साबित नहीं होता, उसके साबित करने के लिये सरीह आयत या पक्की हदीस चाहिये।

(2) उसके खिलाफ कई हदीसें पैश की जा चुकी हें।

(3) अब ये चीज़ें आखिरत की याद और दुन्या की बे रगबती की चीजें नहीं रहीं, बलके सिर्फ तफरीह खैल और मजहब के नाम पर लुट खुसूट का जरीया बना लिया है।

गाना और ढोलक, तब्ला बजाना हराम है

थोड़ा बहुत नज़म, या नात पढ़ लेना जाईज़ है उस में शर्त ये है के ढोल तब्ला हारमुनियम और बजाने के साज़ ना हों, अगर

बजाने के साज हों तो कोई भी गीत जाईज नहीं है। उस के लिये आयतें ये हें:

1. وَ مِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡتَرِیۡ لَہۡوَ الۡحَدِیۡثِ لِیُضِلَّ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ٭ۖ وَّ یَتَّخِذَہَا ہُزُوًا ؕ اُولٰٓئِکَ لَہُمۡ عَذَابٌ مُّہِیۡنٌ . (آیت۶۔سورلقمان۳۱)

तर्जुमा: और कुछ लोग वो हें जो अल्लाह से गाफिल करने वाली बातों के खरीदार बनते हें, ताके उनके जरीऐ लोगों को बे सम्झे बूझे अल्लाह के रासते से भटकाऐं और उसका मजाक उड़ाऐं, उन लोगों को वो अज़ाब होगा जो जलील करके रख देगा।

इस आयत में ग़ाफ़िल करने वाली बातों से नफ़रत का इज़्हार किया गया है।

2.وَ مَا کَانَ صَلَاتُہُمۡ عِنۡدَ الۡبَیۡتِ اِلَّا مُکَآءً وَّ تَصۡدِیَۃً ؕ فَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ بِمَا کُنۡتُمۡ تَکۡفُرُوۡنَ . (آیت۳۵،سورت الانفال۸)

तर्जुमा: और बेत के पास उन की नमाज़ सीटियां बजाने और तालियां पीटने के सिवा कुछ भी नहीं इस लिए जो काफ़िराना बातें तुम करते रहे हो उन की वजह से अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

का़फिर लोग बैतुल्लाह के पास तालियां और सीटी बजाया करते थे, अल्लाह ने उस से नफ़रत का इज़हार किया और क़व्वाली में यही कुछ होता है, इस लिए इससे भी रूकना चाहिए। इस के लिए अहादीस यह हैं:

4.حدثنی ابو عامر ...و الله ما کذبنی : سمع النبی ﷺ یقول لیکونن من امتی یستحلون الحر ، و الحریر ، و الخمر ، و المعازف . (بخاری شریف، کتاب الاشربة ، باب ما جاء فی من یحل الخمر و یسمیه بغیر اسمه ، ص ۹۹۲، نمبر ۵۵۹۰)

तर्जुमा: ख़ुदा की क़सम मुझ से झूट नहीं बोला मैंने हुज़ूर स0अ0व0 से सुना है मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे आज़ाद आदमी को, रेशम को, शराब को और बजाने की चीज़ को हलाल कर लेंगे।

5.عن ابی امامة عن النبی ﷺ قال ان اللہ بعثنی رحمة للعالمین و امرنی ان امحق المزامیر و الکنارات ، یعنی برابط و المعازف و الاوثان التی کانت تعبد فی الجاھلیة . (مسند احمد ، حدیث ابی امامة باھلی الصدی ،جلد ٣٦، ص ٥٥١، نمبر ٢٢٢١٨/ نمبر ٢٢٣٠٧)

तर्जुमा: हम को दो अहमक़ फ़ाजिर अज़्वाज़ से रोका गया है, एक ऐसी औ़रत जिस ने मुसीबत के वक़्त चेहरा ज़ख़्मी कर लिया हो, कपड़े फाड़ लिया हो इस औ़रत की आवाज़ और दूसरा शैतान का गुनगुनाना।

इन दोनों हदीसों में है कि गाने के तौर पर गाना हदीस में ममनूअ़ है। इस लिए मज़ारों पर ढ़ौल और तबले के साथ जो गाते हैं वो सही नहीं है। अब तो उ़र्स में लड़कियां भी क़व्वाली गाने के लिए आने लगी हैं।

गुनगुना कर गीत गाना भी मकरू है

खैल कूद और लहू लहबो के वक़त जो गुनगुनाने कर गीत गाते है, हदीस में उस को भी मना किया है। उसके लिये हदीस ये है:

6.عن عبد الرحمن بن عوف ...و لکنی نھیت عن صوتین احمقین فاجرین ،صوت عند نغمة لھو و لعب و مزامیر الشیطان . (مستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابه ، باب ذکر سراری رسول اللہ ﷺ فاولھن ماریة القبطیة ام ابراھیم ، جلد ۴، ص ۴۳، نمبر ٦٨٢٥)

तर्जुमा: मुझको दो अहमक़ अवाज़ जो फाजिर हें उनसे मना किया गया है लहू लअब के वक़्त में गुनगुनाने की आवाज और शैतान की बांसुरी की आवाज़।

इस हदीस में है के लहु लअब के वक़्त गंगना कर गाना भी ठीक नहीं है।

7.عن جابر بن عبد الله ...قال : لا ، و لكن نهيت عن صوتين احمقين فاجرين صوت عند مصيبة خمش وجوه وشق جيوب و رنة شيطان . (ترمذی شريف ، كتاب الجنائز ، باب ما جاء فی الرخصة فی البكاء علی الميت ، ص ۲۴۳، نمبر ۱۰۰۵)

तर्जुमा: हमको दो अहमक़ फ़ाजिर आवाज़ से रोका गया है, एक ऐसी औरत जिस ने मुसीबत के वक़्त चेहरा ज़खमी करलिया हो, कपड़े फाड़ लिया हो उस औरत की आवाज़ और दूसरा शैतान का गन्गुनाना।

इन दोनों हदीसों में है के गाने के तौर पर गाना हदीस में मम्नू है। इस लिये मज़ारों पर ढोल और तबले के साथ जो गाते हें वो सही नहीं है। अब तो उर्स में लड़कियां भी क़व्वाली गाने के लिये आने लगी हें।

इन अहादीस से कुछ हज़रात क़व्वाली के जवाज़ पर इस्तदलाल करते हैं

कुछ हज़रात नीचे वाली हदीस की वजह से क़व्वाली के जवाज़ पर इस्तदलाल करते हैं: यह इस्तदलाल इस लिए ठीक नहीं थे, और क़व्वाली में यह सारे धमाल होते हैं तो वो कैसे जायज़ हो जायेगी। हदीस यह है:

8.عن سعيد بن المسيب قال: مر عمر فی المسجد و حسان ينشد فقال كنت انشد فيه و فيه من هو خير منك ثم التفت الی ابی هريرة فقال انشدک بالله أسمعت رسول الله ﷺ يقول ، اجب عنی اللهم ايده بروح القدوس ؟ قال نعم . (بخاری شريف ، كتاب بدء الخلق ، باب ذكر الملائكة صلوات الله عليهم . ص ۵۳۷، نمبر ۳۲۱۲/ مسلم شريف ، كتاب فضائل صحابة ، باب فضائل حسان بن ثابتؓ ، ص ۱۰۹۴ ، نمبر ۲۴۸۵، نمبر ۶۳۸۴)

तर्जुमा: हज़रत उ़मर रज़ि0 मस्जिद से गुज़रे और हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि0 शअ़र कह रहे थे (शायद हज़रत उ़मर को यह नागवार गुज़रा) तो हज़रत हस्सान रज़ि0 ने फ़रमाया कि तुम से जो बेहतर थे यानी हुज़ूर स0अ0व0 इन के सामने में शअ़र पढ़ता रहा हूं, फिर हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं तुम को अल्लाह की क़सम दे कर कहता हूँ कि क्या तुम ने हुज़ूर स0अ0व0 से यह फ़रमाते सुना था कि मेरी जानिब से कुरैश को जवाब दो, ऐ अल्लाह हज़रत जिब्रईल के ज़रिये से उन की (यानी हस्सान) की मदद कर, तो हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 ने फ़रमाया कि हां मैंने सुना था।

इस हदीस में नज़्म पढ़ने का ज़िक्र तो है लेकिन इस में यह भी है कि हज़रत उ़मर रज़ि0 ने इस को नापसन्द फ़रमाया इसी वजह से हज़रत हस्सान रज़ि0 को हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 की गवाही लेनी पड़ी इस लिए नज़्म पढ़ना इतना अच्छा नहीं है।

9.عن عائشة قالت :قال حسان يا رسول الله ﷺ ائذن لی فی ابی سفيان ، قال كيف بقرابتی منه ؟ قال و الذی اكرمک لاسلنک منهم كما تسل الشعراة من الخمير فقال حسان

ع و ان سنام المجد من آل هاشم . الخ

(مسلم شريف ، كتاب فضائل صحابة ، باب فضائل حسان بن ثابت، ص ١٠٩٥ ، نمبر ٢٤٨٩ ، نمبر ٦٣٩٣)

तर्जुमा: हज़रत हस्सान रज़ि0 ने पूछा या रसूलुल्लाह स0अ0व0 अबू सुफ़ियान रज़ि0 की हुजू करने की मुझे इजाज़त दीजिए? तो हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि वो तो मेरे रिश्तेदार हैं, तो इस की हुजू कैसे करेंगे, तो हज़रत हस्सान रज़ि0 ने फ़रमाया कि जिस ख़ुदा ने आप को इज़्ज़त दी है, जिस तरह आटे से बाल को निकालते हैं इस तरह मैं आप को इन की हुजू से निकाल

दूंगा, फिर आगे लम्बा क़सीदा पढ़ा जिस का एक मिसरअ़ यह है:

ع و ان سنام المجد من آل هاشم . الخ

इस हदीस में हज़रत हस्सान रज़ि0 को हुज़ूर स0अ0व0 ने नज़र पढ़ने की इजाज़त दी है।

10.عن عائشة ان ابا ابو بكر دخل عليهاو عندها جاريتان فى ايام منى تدفقان و تضربان ، و النبى ﷺ متغش بثوبه فانتهرهما ابو بكر فكشف النبى ﷺ عن وجهه و قال دعهما يا ابا بكر فانها ايام عيد ، و تلك الايام ايام منى . (بخارى شريف ، كتاب العيدين ، باب اذا فاته العيد يصلى ركعتين ، ص ١٥٩ ، نمبر ٩٨٧ / مسلم شريف ، كتاب صلاة العيد ، باب الرخصة فى اللعب الذى لا معصية فيه فى ايام العيد ، ص ٣٥٢، نمبر ٨٩٢، نمنر ٢٠٦١)

तर्जुमा: हज़रत अबूबकर रज़ि0 दाख़िल हुए, यह मिना का ज़माना था, इस वक़्त दो लड़कियां दफ़ बजा रही थीं, और हुज़ूर स0अ0व0 पर कपड़ा ढ़का हुआ था, तो हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने इन दोनों लड़कियों को ड़ांटा, तो हुज़ूर स0अ0व0 ने चेहरे से कपड़ा हटाया और फ़रमाया अबूबकर इन को छोड़ दो, यह ईद का दिन है, और यह ज़माना मिना का ज़माना था।

इन अहादीस में है कि कुछ अशआ़र भी पढ़ सकते हैं और बग़ैर जलाजल के दफ़ भी बजा सकते हैं, लेकिन हदीस में ग़ौर करने से मालूम होता है कि सहाबा को इतना भी पसन्द नहीं था, इसी लिए हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने रोका, लेकिन चूंकि ईद का दिन था और छोटी छोटी बच्चियां थीं तो हुज़ूर स0अ0व0 ने थोड़ी सी गुंजाइश देदी, हम यह देखते हैं कि उ़लमा के जलसों में तलबा नज़्म पढ़ते हैं, नअ़त पढ़ते हैं, और इस में दफ़ वग़ैरह नहीं होता ना ताली बजाई जाती है ना झूमना होता है तो इतना सा हदीस से जायज़ है, बुज़ुर्गाने दीन और मशाइख़ भी ज़िक्र व अज़कार करके थक जाते थे, तो तफ़रीह के लिए कभी कभार नज़्म सुन लेते थे

जो हदीस के मुताबिक़ जायज़ है, बाद के लोगों ने अपनी रोज़ी कमाने के लिए इसी को समाअ़ बनाया इसी को क़व्वाली बनाई और फिर इस में सारंगी ढ़ोल, तबला सब कुछ होने लगा जिन को हदीस और आयत में सख़्ती से मना किया था फिर वो सारे धमाल किये जिस से हिन्दुओं के मेले शरमा गये।

एक बात यह भी समझने की है कि हदीस में जो थोड़ी बहुत गीत थी वो ख़ुशी के मौक़े पर गाई गई थी, या बुज़ुर्गों ने जो समाअ़ किया था वो अपनी ख़ानक़ाहों में की थी, और क़व्वाली तो ढ़ोल और तबला पर गाई जाती है हालांकि यह जगह ग़म करने की हे और आख़िरत को याद करने की जगह है, यहां गीत और क़व्वाली को गाने का जोड़ बिल्कुल समझ में नहीं आता, यह तो मन्दिरों में मूर्तियों के सामने भजन गाने जैसा हो गया। आप इस नुक्ता पर ग़ौर करें।

इस अ़क़ीदे के बारे में दो आयतें और दस हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

हिन्दू अपने बुज़ुर्गों की मन्दिरों के पास मैला लगाते हैं

हिन्दू लोग हर साल अपने बुज़ुर्गों की मन्दिरों के पास मैला लगाते हैं, इस पर गाते और बजाते हैं इस से मांगते हैं, इस की पूजा करते हैं, इन के सामने माथा टैकतै हैं और सज्दा करते हैं जो शिर्क है। क़ब्र पर उ़र्स इसी की मुशाबा है इस लिए इस को नहीं करना चाहिए। इस नुक्ता पर ग़ौर करें।

(39) फ़ैज़ हासिल करना

इक्तसाब फ़ैज़ यानी किसी से फ़ैज़ हासिल करना इस दौर में एक उलझा हुआ मसला बन गया है। इस अ़क़ीदे के बारे में तीन आयतें और चार हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

फ़ैज़ हासिल करने की दो सूरतें हैं:
(1) ज़िन्दों से फ़ैज़ हासिल करना।
(2) मुर्दों से फ़ैज़ हासिल करना।

ज़िन्दों से कौनसा फ़ैज़ हासिल होता है

उस्ताज़, या पीर में यह तीन सिफ़ात हों तो इस से फ़ैज़ हासिल होता है।

(1) पहली सिफ़त यह है कि उस्ताज़ या पीर मुख़लिस हों उन का एक ही मक़सद हो कि लोगों की इसलाह करनी है और इन को दीन पर लाना है और इस मामले में लगन के साथ काम करे, पैसा कमाने के लिए पीरी मुरीदी ना करता हो, इन का मक़सद यह ना हो कि इक्तसाब फ़ैज़ के नाम पर पूरे साल का ख़र्च जमा कर लिया जाये और सारी फ़ैमली का ख़र्च हासिल कर लिया जाये, या ख़ानक़ाह के नाम पर अपना घर बना लिया जाये अगर इस मक़सद से पीरी मुरीदी करता है तो इन से कोई इक्तसाब फ़ैज़ नहीं होगा।

(2) उस्ताज़ या पीर, ख़ुद भी शरीअ़त का पाबन्द हों, अगर वो ख़ुद ही फ़र्ज़ नमाज़ नहीं पढ़ता है रोज़ा नहीं रखता है तो आप को वो क्या फ़ैज़ देगा इस के पास तो ख़ुद भी कुछ नहीं है।

(3) इन में रिया और नमूद ना हो वो यह काम शौहरत और दिखलावे के लिए ना करता हो, क्योंकि अगर वो टैली वीज़न पर, और यूट्यूब पर आने के लिए यह कर रहा है तो यह शौहरत के लिए है, इस में क्या फ़ैज़ हासिल होगा।

या इन का मक़सद अपनी फ़ैमली के लिए ख़र्च जमा करना हो तो आप को क्या फ़ायदा होगा।

इस लिए पीर का इन्तख़ाब सौच समझ कर और देख भाल कर किया करें, मेरा यह मुख़्लिसाना मशवरा है।

कुरआन पाक में चार क़िस्म के फ़ैज़ का ज़िक्र है

(1) पीर साहब मुरीदों के सामने कुरआन पढ़ते हैं और इन का कुरआन दुरूस्त करवाते हैं।

(2) इन को कुरआन का मअ़नी सिखलाते हैं।

(3) कुरआन में जो हिक्मत है, यानी हलाल व हराम के जो अहकामात हैं उन को सिखलाते हैं।

(4) और दिल का तज़्किया करते हैं, यानी शिर्क वग़ैरह से बचाने की कौशिश करते हैं।

इस के लिए यह आयतें हैं:

1. رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيَاتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُزَكِّيْهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ . (آیت۱۲۹،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: ऐ हमारे रब इन में एक ऐसा रसूल भैज जो इन्हीं में से हो, जो इन के सामने तेरी आयतों की तिलावत करे, इन्हें किताब की तालीम दे, और हिक्मत की तालीम दे और इन को पाकीज़ा बनाये, सिर्फ़ तेरी ही ज़ात है जिस का इक़्तदार भी कामिल है, जिस की हिक्मत भी कामिल है।

इस आयत में है कि हुजूर स0अ0व0 चार काम के लिए मबऊ़स हुए।

2. لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيَاتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَ الْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ . (آیت۱۶۴،سورت آل عمران۳)

तर्जुमा: यक़ीनन अल्लाह ने मौमिनों पर बड़ा अहसान किया कि इन के दरमियान इन्हीं में से एक रसूल भैजा जो इन के सामने अल्लाह की आयतों की तिलावत करे, उन्हें पाक साफ़ बनाये और उन्हें किताब की तालीम दे और हिक्मत की तालीम दे, जब कि यह लोग इस से पहले खुली गुमराही में मुब्तला थे।

3. كَمَا اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلاً مِنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيَاتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ . (آيت۱۵۱،سورالبقرة۲)

तर्जुमा: जैसे हम ने तुम्हारे दरमियान तुम ही में से एक रसूल भैजा था जो तुम्हारे सामने हमारी आयतों की तिलावत करता है, और तुम्हें पाकीज़ा बनाता है और तुम्हें किताब की तालीम देता है, और तुम्हें हिक्मत की तालीम देता है, और तुम्हें वो बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते हो।

इन आयतों से पता चला कि उस्ताज़ या पीर मुख़्लिस हों तो इन से यह चार क़िस्म के फ़ैज़ हासिल होते हैं।

(1) पीर साहब मुरीदों के सामने कुरआन पढ़ते हैं और इन का कुरआन दुरूस्त करवाते हैं।

(2) इन को कुरआन का मअ़नी सिखाते हैं।

(3) कुरआन में जो हिक्मत है यानी हलाल व हराम के जो अहकामात हैं उन को सिखाते हैं।

(4) और दिल का तज़्किया करते हैं, यानी शिर्क वग़ैरह से बचाने की कौशिश करते हैं।

पीर अच्छा हो और मुरीदा भी लगन से फ़ैज़ हासिल करे तो मुरीदों को यह चार क़िस्म के फ़ैज़ हासिल होते हैं। कुरआन में उन्हीं का तज़्किरा है।

कुछ लोगों का ख़्याल यह है कि पीर साहब कोई ख़ास मअ़नवी चीज़ मुरीद को दे देते हैं और मुरीद इस के हासिल करने के लिए बरसों पीर की ख़िदमत करता रहता है, लेकिन हदीस और आयत से ऐसा मालूम नहीं होता बल्कि वही चार बातें जो ऊपर ज़िक्र की वही हासिल होती हैं।

يُزَكِّيْكُمْ की तफ़सीर

बाज़ लोग यह समझते हैं कि पीर साहब अपने मुरीद को कोई मअ़नवी चीज़ दे देते हैं ओर वो`हज़रात इस आयत से इस्तदलाल करते हैं।

كَمَا اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلاً مِنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيَاتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ . (آیت ۱۵۱، سورۃ البقرۃ ۲)

तर्जुमा: इस आयत में و يزكيكم रसूल तुम्हारा तज़्किया करते हैं से इस्तदलाल करते हैं, लेकिन तफसीर इब्ने अ़ब्बास से पता चलता है कि इस आयत में कोई मअ़नवी मअ़नी देना नहीं है बल्कि يزكيكم का मअ़नी यह है कि तौहीद सिखला कर ज़कात दिलवा कर और सदक़ा दिलवा कर तुम को गुनाहों से पाक करते हैं। तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास में يزكيكم का तर्जुमा किया है।

يطهركم بالتوحيد ، و الذكاة ، و الصدقة من الذنوب.

तर्जुमा: तुम को तौहीद सिखला कर ज़कात दिलवा कर और सदक़ा दिलवा कर पाक करते हैं।

इस लिए कुछ लोग जो يزكيكم का मअ़नी बताते हैं कि पीर साहब दिल का तज़्किया कर देते हैं यह सही नहीं है, बल्कि इस का मअ़नी है कि शरीअ़त में जो हलाल और हराम के अहकामात हैं पीर साहब वो बताते हैं जैसे उस्ताज़ बताते हैं।

पीर साहब ख़ुदा तरस हों तो इस का असर ज़्यादा होता है

पीर साहब ख़ुदा तरस हो ओर लगन से काम करे और मुरीद भी लगन से महनत करे तो इस का असर ज़्यादा होता है। इस के लिए यह हदीस है:

1.ان اسماء بنت يزيد انها سمعت رسول الله ﷺ يقول : الا ينبأكم بخياركم ؟ قالوا بلى يا رسول الله قال خياركم الذين اذا رؤوا ذكر الله عز و جل . (ابن ماجة شريف ، كتاب الزهد ، باب من لا يؤبه له ، ص١٠٦، نمبر٤١١٩)

तर्जुमाः हज़रत असमा फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर स0अ0व0 को कहते हुए सुना कि तुम में से अच्छे कौन हैं इस की ख़बर दूं? लोगों ने कहा हां या रसूलुल्लाह स0अ0व0! आप स0अ0व0 ने फ़रमाया तुम में से अच्छे वो लोग हैं जब इन को देखो तो ख़ुदा याद आये।

इस हदीस में है कि जिसे देख कर ख़ुदा याद आये वो अच्छे लोग हैं, इस लिए पीर ऐसा अल्लाह वाला हो जिस को देख कर ख़ुदा याद आये।

यह चारों फ़ायदे इस वक़्त होंगे जब पीर साहब ज़िन्दा हों और आप इन से बिल मुशाफ़ा दर्स हासिल करें, लेकिन किसी का इन्तक़ाल हो गया है तो वो फ़ैज़ नहीं दे सकते हैं, क्योंकि मरने के बाद इस का अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाता है, हदीस में यही है इस लिए अब वो यह फ़ैज़ नहीं दे सकता।

क़ब्रों और मुर्दों से कौन सा फ़ैज़ हासिल होता है

बहुत से लोग मय्यत से और मज़ार से बहुत से फ़ुयूज़ बताते हैं, लेकिन क़ुरआन और अहदीस को देखने से पता चलता है कि क़ब्र पर जाने से यह तीन फ़ैज़ हासिल होते हैंः

(1) आख़िरत याद आने लगे।

(2) दुनिया से दिल उचाट होने लगे।

(3) मौत याद आने लगे, यानी यह सौचने लगे कि जिस तरह यह बड़े लोग दुनिया से चले गये, कुछ दिनों के बाद मुझे भी यह सब छोड़ कर जाना है, इस लिए दुनिया का माल जमा करके क्या फ़ायदा होगा, या इस की शौहरत हासिल करके क्या करूंगा।

अगर क़ब्रिस्तान पर जाने के बाद यह तीन बातें पैदा होती हों तो बेहतर है और अगर क़ब्र चमक दमक वाली है और इस पर दुनिया की सारे खेल तमाशे हैं और आख़िरत की याद आने के बजाये तफ़रीह होती हो, दुनिया की आसाइश होती हो, बल्कि मज़ार माल बटोरने का ज़रिया हो और खेल तमाशे का ज़रिया हो तो क़ब्र का फ़ैज़ नहीं है बल्कि उल्टा इस का नुक़सान है। इन अहादीस में क़ब्र की ज़ियारत के फ़वाइद बताये गये हैं।

3. عن ابن مسعود ان رسول الله ﷺ قال كنت نهيتكم عن زيارة القبور فزوروها فانهاتزهد فى الدنيا و تذكر الآخرة . (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء فى زيارة القبور، ص ۲۲۳، نمبر ۱۵۷۱)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को ज़ियारत से मना किया करता था, अब इस की ज़ियारत किया करो, इस लिए कि इस से दुनिया से बेरग़बती पैदा होती है और आख़िरत याद आने लगती है।

4. عن ابى هريرة قال زار النبى ﷺ قبر امه فبكى و ابكى من حوله فقال استأذنت ربى فى ان أستغفر لها فلم يأذن لى، و استأذنت ربى ان ازور قبرها فأذن لى ، فزوروا القبور ، فانها تذكركم الموت . (ابن ماجة شريف ، باب ما جاء فى زيارة قبور المشركين، ص ۲۲۴، نمبر ۱۵۷۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने अपनी मां की क़ब्र की ज़ियारत की, ख़ुद भी रोऐ और अपने क़रीब वालों को भी रूलाऐ, फिर फ़रमाया कि मैंने अपने रब से अपनी मां के असतग़फ़ार की इजाज़त मांगी तो मुझे इजाज़त नहीं मिली और अपने रब से इस की क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त मांगी तो मुझ को इजाज़त मिल गई, इस लिए क़ब्र की ज़ियारत किया करो, इस लिए कि इस से तुम को मौत याद आने लगेगी।

इन अहादीस में तीन फ़वाइद ज़िक्र किये गये हैं:

(1) दुनिया में ज़हद पैदा हो जाये, यानी क़ब्र देख कर दिल दुनिया से उचाट होने लगे।

(2) आख़िरत याद आने लगे।

(3) क़ब्र देख कर अपनी मौत याद आने लगे कि मुझे भी इसी क़ब्र में आना है।

यह हैं मज़ार पर जाने के फ़ैज़ अगर क़ब्र पर जाने से यह तीन फ़ायदे हासिल हों तो बेहतर है, लेकिन अगर वहां जाने से आप की तफ़रीह होती है दुनिया में ख़ुद जी लगता है और आप ऐश के लिए जाते हैं तो यह क़ब्र का फ़ैज़ नही है, यह उल्टा असर है इस लिए क़ब्र की ज़ियारत की रूख़सत नहीं है।

लेकिन क्या किया जाये कुछ लोगों ने पैसा बटोरने के लिए और अपनी शौहरत के लिए अ़जीब अ़जीब फ़ैज़ का ज़िक्र किया है कि वलियों से यूं फ़ैज़ होगा और यह हाजत पूरी हो जायेगी हदीस में इस का ज़िक्र नहीं है।

पीर साहब आप को कोई मअ़नवी फ़ैज दे देंगे ऐसा नहीं

बाज़ पीर हज़रात यह तास्सुर देते रहते हैं कि मेरी ख़िदमत करोगे तो मैं तुम्हें कोई मअ़नवी फ़ैज दे दूंगा और मुरीद इस के हासिल करने के लिए बरसों ख़िदमत में लगा रहता है और वो इस हदीस से इस्तदलाल करते हैं लेकिन याद रहे कि यह मअ़नवी चीज़ देने का वाक़िआ़ हदीस में सिर्फ़ एक मर्तबा है जो मोअ़ज्ज़ा के तौर पर था इस के बाद फिर सादिर नहीं हुआ। हदीस यह है:

. عن ابی هریرةؓ .... و قال النبی ﷺ یوما لن یبسط احد منکم ثوبه حتی اقضی مقالتی هذه ثم یجمعه الی صدره فینسی من مقالتی شیئا ابدا ، فبسطت نمرة لیس علی ثوب غیرها ، حتی قضی النبی ﷺ مقالته ثم جمعتها الی صدری فوالذی بعثه بالحق ما نسیت من مقالته تلک الی یومی هذا .

(بخاری شریف ، کتاب الحرث و المزارعة ، باب ما جاء فی الغرس، ص۳۷۷، نمبر ۲۳۵۰)

तर्जुमाः हुजूर पाक स0अ0व0 ने एक दिन फ़रमाया कि कोई अपना कपड़ा फैलाऐ ताकि इस में अपनी कोई बात कह दूं और इस को अपने सीने से लगाले तो कभी वो मेरी बात नहीं भूलेगा, पस मैंने अपनी एक चादर फैलादी मेरे पास इस के अ़लावा थी भी नहीं, हुजूर स0अ0व0 ने अपनी बात इस में कही फिर इस चादर को अपने सीने पर चिपका लिया, पस क़सम उस ज़ात की जिस ने हक़ के साथ आप को मबऊस किया, आप की कोई बात अभी तक नहीं भूली।

यह हदीस मोअ़ज्ज़े के तौर पर है हमैशा यह बात नहीं थी, इसी लिए हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 को सिर्फ़ एक मर्तबा यह मक़ाला दिया इस के बाद किसी को देने का ज़िक्र हदीस में नहीं है।

मुस्तहब्ब काम में तशद्दुद

इस दौर में यह भी यह एक बहुत बड़ा मसला है कि एक चीज़ हदीस से साबित है, लेकिन इस काम को कभी कभार हुजूर स0अ0व0 ने किया है, इस में किसी को बुलाया भी नहीं, बलकि जो लोग वहां हाज़िर थे उन्होंने ही कर लिया।

मसलनः सहाबा किराम रज़ि0 कभी कभार मिल गये और इस में अल्लाह का ज़िक्र कर लिया, तो यह हदीस से साबित है, और इतना सा कर लेना जायज़ है, लेकिन अब बाज़ जगह देखा गया है (अलहम्दु लिल्लाह सब जगह यह बात नहीं है) कि ज़िक्र कर के नाम पर महीनों से इशतहार दिया जाता है, लोगों को बुलाया जाता है, इस के लिए ख़ूब चन्दा किया जाता है, ओर बेपनाह ख़र्च किया जाता है, और झूम झूम कर इस तरह ज़िक्र किया जाता है कि जैसे वो नाच रहे हों, और यह नाच गाने की महफ़िल हो और इस

को कुछ कहो तो वो हदीस का हवाला देते हैं, और यह नहीं सौचते कि वो कभी कभार था और अचानक था, और आप ज़िक्र के नाम पर पूरा हंगामा कर रहे हैं और यूट्यूब पर इस की तशहीर कर रहे हैं और तहक़ीक़ करें तो अन्दर ख़ाने यह महसूस होता है कि (वो बोलते तो यही है कि हम ज़िक्र करते हैं, या दीन की ख़िदमत कर रहे हैं) लेकिन असल में इस क़िस्म की हरकत करने वालों को यह तीन चीज़ें चाहिए।

(1) अ़वाम के अन्र अपनी शौहरत हासिल करना, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा अ़वाम जमा हों।

(2) अ़वाम के अन्दर अपना रूअ़ब जमाना।

(3) और इस बहाने से इतना रूपया इकट्ठा करले कि इस से पूरे साल का ख़र्च चले।

इस लिए ऐसे बहुत से मुस्तहिब्बात से बचने की ज़रूरत है, जिस में तदाई हो, यानी लोगों को बुला बुला कर जमा किया हो, क्योंकि दुर्रे मुख़तार में लिखा है कि मुस्तहब्ब काम के लिए तदाई, यानी लोगों को बुला बुला कर मुस्तहब्ब काम करना मकरूह है और शरीअ़त ऐसी तदाई से मना करती है इस लिए इस से बचने की सख़्त ज़रूरत है। ज़ियारत क़बूर में मौत के मौक़े पर और शादी के मौक़े पर देखा गया है कि बाज़ काम बुनियादी तौर पर मुस्तहब्ब होता है लेकिन लोग इस पर इतना तशद्दुद करते हैं कि वो तदाई के दर्जे में आ जाता है।

बाज़ मर्तबा इस में रिया व नमूद होता है और बाज़ मर्तबा ऐसे रिवाज में इतना ख़र्च करवाते हैं कि आदमी तंग आ जाता है और बाज़ मर्तबा तो सूदी क़र्ज़ ले कर इन कामों को करना पड़ता है, इस लिए मुस्तहब्ब काम में इतना तशद्दुद बिल्कुल सही नहीं है।

इस अ़क़ीदे के बारे में तीन आयतें और चार हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(40) क़ब्र के पास ज़िबाह करना ममनूअ़ है

जानवर ज़िबाह करके मिस्कीन को खिलाना सदक़ा है, शरीअ़त में सदक़ा करके इस का सवाब मय्यत को पहुंचाना जायज़ है लेकिन इस में शर्त यह है कि अल्लाह के नाम पर ज़िबाह किया हो, इस में बस इतनी सी बात है कि जानवर को ज़िबाह करके मय्यत का सवाब पहुंचाना है लेकिन अब तो इस में बेपनाह रिया नमूद दाख़िल हो गया है।

ज़िबाह करने की चार सूरतें हैं

इस की तफ़सील आगे देखें: इस अ़क़ीदे के बारे में चार आयतें और तीन हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

(1) पहली सूरत यह है कि अल्लाह के अ़लावा के नाम पर ज़िबाह करे

अल्लाह के नाम पर ज़िबाह नहीं किया, या तो किसी का नाम लिया ही नहीं या नाम लिया लेकिन अल्लाह के अ़लावा का नाम लिया तो यह गौश्त हराम है इस का खाना हराम है। इस की दलील यह आयत है:

1.وَ لَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ اِنَّهٗ لَفِسْقٌ.

(آیت ۱۲۱، سورت الانعام ۶)

तर्जुमा: और जिस जानवर पर अल्लाह का नाम ना लिया गया हो इस में से मत खाओ और ऐसा करना सख़्त गुनाह है।

2.حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَ الدَّمُ وَ لَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَ مَا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَ الْمُنْخَنِقَةِ وَ الْمَوْقُوْذَةِ وَ الْمُتَرَدِّيَةِ وَ النَّطِيْحَةِ وَ مَا اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَ مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ . (آیت ۳، سورت المائدۃ ۵)

तर्जुमा: तुम पर मुर्दार जानवर, और ख़ून, और सुवर का गौश्त

और वो जानवर हराम कर दिया गया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो और वो जो गला घोंटने से मरा हुआ और जिसे चोट मार कर हलाक किया गया हो, और जो ऊपर से गिर कर मरा हो और जिसे किसी जानवर से सींग मार कर हलाक किया हो और जिसे किसी दरिन्दे ने खा लिया हो, मगर यह कि तुम इस के मरने से पहले इस को ज़िबाह कर चुके हो और वो जानवर भी हराम है जिसे बुतों की कुर्बानी गाह पर ज़िबाह किया गया हो।

इन आयतों में है कि अल्लाह का नाम ना लिया हो तो उस को मत खाओ क्योंकि वो हलाल ही नहीं है।

(2) दूसरी सूरत, क़ब्र पर या बुतों पर ज़बह करे

दूसरी सूरत ये है के अल्लाह के एलावा मसलन बुत वालों को या क़ब्र वालों को खुश करने के लिये बुतों के पास या कब्र के पास जबह करे, इस सूरत में अल्लाह का नाम ले कर जबह किया हो तब भी हलाल नहीं है, कियों के अल्लाह के अलावा को खुश करने के लिये जबह किया है। उस के लिये ये आयत है:

3. حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَ الدَّمُ وَ لَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَ مَا اَهَلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَ الْمُنْخَنِقَةِ وَ الْمَوْقُوْذَةِ وَالْمُتَرَدِّيَةِ وَ النَّطِيْحَةِ وَ مَا اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَ مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصَبِ . (آیت۳،سورت المائدة۵)

तर्जुमाः तुम पर मुरदार जानवर, और खून, और सूवर का गोश्त और वो जानवर हराम करदिया गया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो और वो जो गला गुठने से मरा हुवा और जिसे चोट मार कर हलाक किया गया हो, और जो ऊपर से गिर कर मरा हो और जिसे किसी जानवर से सींग मार कर हलाक किया हो और जिसे किसी दरिन्दे ने खा लिया हो, मगर ये के तुम उसके मरने से पेहले उसको जबह कर चुके हो और वो जानवर भी हराम है जिसे बुतों की कुर्बानीगाह पर जबह किया गया हो।

4. يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسَرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ . فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (آیت۹۰،سورت المائدۃ۵)

तर्जुमा: ऐ ईमान वालो! शराब, जुवा, बुतों के थान और जुऐ के तीर ये सब नापाक शैतानी काम हें लिहाज़ा उन से बचो ताके तुम कामयाब हो जाऔ।

इन आयतों में है के बुतों पर जबह किया गया हो तो वो गोशत हराम है।

इस हदीस में भी है के अल्लाह के इलावा के लिये जबह किया गया हो तो वो जाईज़ नहीं है इस पर लानत है।

1.عن عامر بن واثلة قال سأل رجل عليا هل كان رسول الله ﷺ يسر اليک بشیء دون الناس فغضب علی حتی احمر وجهه و قال ما كان يسر الی شيئا دون الناس غير انه حدثنی باربع كلمات و انا و هو فی البيت فقال لعن الله من لعن والده و لعن الله من ذبح لغير الله و لعن الله من اوی محدثا و لعن الله من غير منار الارض . (نسائی شريف ، كتاب الضحايا ، باب من ذبح لغير الله عز و جل ، ص ۶۱۴ ، نمبر ۴۴۲۷)

तर्जुमा: किसी आदमी ने हज़रत अली रजी० से पूछा के हुजूर स0अ0व0 ने लोगों को छोड़ कर आप को कोई राज़ की बात बताई थी तो हज़रत अली रजी० का चेहरा गुस्से से सुर्ख होगया और कहा के लागों को छोड़ कर मुझ से कोई राज़ की बात नहीं कही है हां चार बातें मुझे घर में कही हें, जिस ने वालिदैन को लानत की अल्लाह उस पर लानत करे, जिस ने अल्लाह के एलावा के लिये जबह किया अल्लाह उस पर लानत करे जो नई चीज़ पैदा करने वाला है उसको जो पनाह दे उस पर अल्लाह लानत करे, जो जमीन की निशान को बदल दे अल्लाह उस पर लानत करे (मुझे ये चार बातें खास तोर पर हुजूर स0अ0व0 ने बताई हें)।

इस हदीस में है के जो अल्लाह के एलावा के लिये जबह करे उस पर लानत हो।

(3) तीसरी सूरत ये है के क़ब्र के पास जबाह करे

(3) तीसरी सूरत ये है के अल्लाह के नाम पर जबाह करे लेकिन क़ब्र के पास करे तो ये भी मकरू है। इस हदीस में इसका जिक्र है:

2.عن انس قال قال رسول الله ﷺ لا عقر فی الاسلام قال عبد الرزاق: کانوا یعقرون عند القبر یعنی ببقرة او بشیء . (ابو داود شریف ، کتاب الجنائز ، باب کراهیة الذبح عند القبر ، ص ۴۷۰، نمبر ۳۲۲۲/ مسند احمد ، مسند انس بن مالک ، ج ۴، ص ۵۱، نمبر ۱۲۶۲۰)

तर्जुमा: आप स0अ0व0 ने फरमाया के इसलाम में अक़र नहीं है, अबदुर रज्जाक़ रह० ने फरमाया के ज़माना जाहिलियत में लोग क़ब्र के पास गाऐ वगेरा जबाह किया करते थे।

इस हदीस में है के इस्लाम में अक़र नहीं है, यानी क़ब्र के पास जबाह करना जाइज़ नहीं है।

क़ब्र पर ज़बाह करने का शायबा हो तो वो भी मना है

क़ब्र के पास ज़िबाह करके लोग शिर्क में मुब्तला ना हो जाऐं इस लिए इतना मना किया है कि क़ब्र पर ज़िबाह करने का शायबा भी हो तो इस को मना करते हैं। इस के लिए हदीस यह है:

3.حدثنی ثابت بن الضحاک قال نذر رجل علی عهد النبی و ان ینحر ابلا ببوانة ، فقال النبی ﷺ هل کان فیها وثن من اوثان الجاهلیة یعبد ؟ قالوا لا : قال هل کان فیها عید من اعیادهم ؟ قالوا لا : قال النبی ﷺ اوف بنذرک فانه لا وفاء لنذر فی معصیة الله ولا فیما لا یملک ابن آدم . (ابو

داود شـريف ، كتـاب الايـمـان و الـنذور ، باب ما يومر به من وفاء النذر ، ص ۴۸۰، نمبر ۳۳۱۳)

तर्जुमा: एक आदमी ने हुज़ूर स0अ0व0 के ज़माने में बवाना में ऊंट ज़िबाह करने की नज़र मानी, हुज़ूर स0अ0व0 ने पूछा ज़माना जाहिलियत में वहां कोई बुत तो नहीं था जिस को लोग पूजते हों? लोगों ने कहा नहीं थी, फिर हुज़ूर स0अ0व0 ने पूछा वहां कोई ईद तो नही मनाई जाती था? लोगों ने कहा नहीं मनाई जाती थी, इस के बाद आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपनी नज़र पूरी कर लो, क्योंकि अल्लाह के गुनाह में नज़र को पूरी करना ठीक नहीं है और आदमी जिस चीज़ का मालिक ना हो उस में नज़र पूरी करना सही नहीं है।

इस हदीस में है कि अगर वहां जाहिलियत में ईद भी होती थी तब भी वहां जानवर ज़िबाह ना करो, क्योंकि इस तरह फिर बुतों को पूजेगा क़ब्रों को पूजेगा और आहिस्ता आहिस्ता शिर्क में मुब्तला हो जायेगा।

इस वक़्त सूरते हाल यह है कि मुजाविर गौश्त लेने के लिए और इस के साथ रूपया और हदया लेने के लिए इस की पूरी तरग़ीब देते हैं कि बावा साहब आप की मुराद पूरी कर देंगे इस लिए वो क़ब्र के पास ही जानवर ज़िबाह करवाते हैं और एक नाजायज़ काम में लोगों को मुब्तला करते हैं, अ़वाम को इस से बचना चाहिए।

(4) चौथी सूरत अल्लाह के नाम पर करे और क़ब्र से दूर करे

(4) चौथी सूरत यह है कि अल्लाह के नाम पर जानवर ज़िबाह करे और क़ब्र से दूर करे इस में क़ब्र वाले को ख़ुश करने की भी नियत ना हो, सिर्फ़ यह नियत हो कि यह गौश्त ग़रीबों को खिलाउंगा, तो चूंकि इस ने क़ब्र के पास भी ज़िबाह नहीं किया

और ज़िबाह करते वक़्त सिर्फ़ अल्लाह का नाम भी लिया है, इस लिए यह गौश्त हलाल है लेकिन मय्यत को इतना ही सवाब मिलेगा जितना गौश्त ग़रीब मिस्कीन को खिलायेगा।

इस का असल तरीक़ा यह है कि क़ब्र से काफ़ी दूर जानवर को ज़िबाह करके इस का गौश्त ग़रीब और मिस्कीन में तक़सीम करे, या इस को पका कर ग़रीब और मिस्कीन को खिलाये तो इस खिलाने का सवाब मय्यत को पहुंचेगा, यही एक सूरत जायज़ है, इस में रिया नमूद और दिखावा जितना कम होगा उतना ज़्यादा सवाब मिलेगा और रिया नमूद जितना ज़्यादा होगा, उतना ही सवाब कम मिलेगा और अगर सिर्फ़ रिया और नमूद हो और शौहरत हो तो कुछ भी सवाब नहीं मिलेगा। लेकिन आज कल यह हो रहा है कि ग़रीब के बजाये मालदार और रिश्तेदार लोग इस को ज़्यादा खाते हैं, या मुजाविर क़िस्म के लौग लूटने की कौशिश करते हैं, ग़रीब को तो बहुत कम मिलता हे अ़वाम को इस से परहैज़ करना चाहिए। इस हदीस में है कि ख़ैरात करने का सवाब मय्यत को मिलता है।

4. أنبانا ابن عباسؓ ان سعد بن عبادةؓ توفيت امه و هوا غائب عنها فقال يا رسول الله ان امى توفيت و انا غائب عنها أينفعها شيء ان تصدقت به عنها ؟ قال نعم قال فانى أشهدك ان حائطى المخراف صدقة عليها . (بخارى شريف ، باب اذا قال أرضى او بستانى صدقة لله عن امى ، ص ۴۵۶ / مسلم شريف ، باب وصول ثواب الصدقات الى الميت ، ص۱۲ے، نمبر ۱۶۳۰/۴۲۱۹)

तर्जुमा: हज़रत सअ़द बिन उ़बादा रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं ग़ायब था कि मेरी वालिदा का इन्तक़ाल हो गया, फिर पूछा या रसूलुल्लाह स0अ0व0 मेरी मां का इन्तक़ाल हो गया और मैं ग़ायब था क्या उन की जानिब से सदक़ा करूं तो इस को नफ़ा होगा? आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि हां! सअ़द रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं

आप स0अ0व0 को गवाह बनाता हूं कि मख़राफ़ का मेरा बाग़ मेरी मां के लिए सदक़ा है।

इस हदीस में है कि दूसरे का सदक़ा किया हुआ मय्यत को सवाब मिलता है।

पूरी तफ़सील ईसाले सवाब में देखें।

इस अ़क़ीद के बारे में 4 आयतें और 4 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(41) मातम करना हराम है

इस अ़क़ीदे के बारे में तीन आयतें और पांच हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

अचानक ग़म आ जाये और आंसू निकल जाये तो इस में कोई हरज की बात नही है। लेकिन इस में दो बातें हैं, एक तो यह कि ऐसे मौक़े पर ज़बान से कोई बात ना निकले जो बेसबरी ज़ाहिर करती हो या अल्लाह को कोसना हो। और दूसरी बात यह है कि इस में शौर मचाना ना हो, कपड़ा फाड़ना ना हो, इस को वावेला कहते हैं यह जायज़ हीं है और ज़माना दराज़ के बाद भी ग़म को बार बार याद करना और लोगों को बताना कि मुझे बहुत ग़म है और फिर सीना पीटना और शौर मचाना यह भी जायज़ नहीं है।

मुसीबत के वक़्त क़ुरआन ने सब्र करने को कहा है

इसलाम की यह तालीम नहीं है कि मुसीबत पर शौर मचाये और वावेला करे, बल्कि इस्लाम की तालीम यह है कि अगर मुसीबत आ जाये तो इस पर सब्र करे और अल्लाह से आ़फ़ियत मांगे। इस के लिए यह आयतें हैं:

1. يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّابِرِيْنَ ، وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ بَلْ اَحْيَاءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَىْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرَاتِ

وَ بَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ ، اَلَّذِيْنَ اِذَا اَصَابَتْهُمْ مُصِيْبَةٌ قَالُوْا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اُوْلٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ وَ اُوْلَائِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ .

(آیت۱۵۳۔۱۵۷،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है, और जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो गये इन को मुर्दा ना कहो, दरअसल वो ज़िन्दा हैं, मगर तुम को उन की ज़िन्दगी का अहसास नहीं होता, और देखो हम तुम्हें ज़रूर आज़माऐंगे, कभी भूक से, और कभी माल व जान और फलों की कमी करके और जो लोग ऐसे हालात में सब्र से काम लें इन को ख़ुश ख़बरी सुना दो, यह वो लोग हैं कि जब इन को मुसीबत पहुंचती है तो यह कहते हैं कि हम सब अल्लाह ही के हैं और हम को अललाह ही की तरफ़ लोट कर जाना है, यह वो लोग हैं जिन पर इन के रब की तरफ़ से ख़ुसूसी इनायतें हैं और रहमत है और यही लोग हैं जो हिदायत पर हैं।

इस आयत में तीन मर्तबा सब्र करने की ताकीद की गई है, और यह भी फ़रमाया कि जो सब्र करते हैं उस पर सलवात और रहमतें नाज़िल की जाती हैं और वही असल में हिदायत पर हैं।

2.**وَ اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ وَ اِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخَاشِعِيْنَ .**

(آیت۴۵،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमाः और सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो, नमाज़ भारी ज़रूर मालूम होती है मगर इन लोगों को नहीं जो ख़ुशूअ़, यानी ध्यान और आ़जज़ी से पढ़ते हैं।

3.**يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ .** (آیت۲۰۰،سورت آل عمران۳)

तर्जुमाः ऐ ईमाल वालो! सब्र इख़तयार करो और मुक़ाबले के

वक़्त साबित क़दमी दिखाओ, और सरहदों की हिफ़ाज़त के लिए जमे रहो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम्हें कामयाबी नसीब हो।

इन तीनों आयतों में सब्र करने की बार बार तलक़ीन की है इस लिए वावेला करना, और शौर मचाना बिल्कुल ठीक नहीं है।

रिश्तेदार के रोने से मय्यत को अ़ज़ाब होता है

इस हदीस में है कि रिश्तेदार के रोने से मय्यत को अ़ज़ाब होता है इस लिए बिला वजह शौर नहीं मचाना चाहिए। इस के लिए हदीस यह है:

1. فقال عبد الله بن عمر لعمر بن عثمان الا تنهى عن البكاء فان رسول الله ﷺ قال ان الميت ليعذب ببكاء اهله . (بخارى شريف ، باب قول النبى ﷺ يعذب الميت ببعض بكاء اهله عليه اذا كان النوح من سنته ، ص ٢٠٦، نمبر ١٢٨٦)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि0 ने उ़मर बिन उ़समान से कहा आप रोने से नहीं रोकते! क्योंकि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि घर वाले रोते हैं तो उस के रोने की वजह से मय्यत को अ़ज़ाब होता है।

इस हदीस में है कि घर वाले के रोने से मय्यत को अ़ज़ाब होता है इस के बावजूद पता नहीं बाज़ लोग क्यों हर साल सीना पीट पीट कर रोते हैं, और मय्यत को ज़्यादा अ़ज़ाब होने में इज़ाफ़ा करते हैं।

वावेला करना ममनूअ़ है

एक है ख़ुद बख़ुद आंसू आ जाये यह जायज़ है, क्योंकि आदमी इस में मजबूर है और दूसरा है कि ख़्वाह मख़वाह शौर मचा रहा है, और गले फाड़ रहा है, यह नाजायज़ है, इन अहादीस में वावेला करने से मना किया गया है। इस के लिए हदीस यह है:

2.عن عبد الله ؓ قال قال النبی ﷺ لیس منا من لطم الخدود و شق الجیوب و دعا بدعوی الجاھلیة . (بخاری شریف ، باب لیس منا من شق الجیوب ، ص ۲۰۷، نمبر ۱۲۹۴ / مسلم شریف، باب ضرب الخدود و شق الجیوب و دعا بدعوی الجاھلیة ، ص ۵۸،نمبر ۱۰۳ / ۲۸۵)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जो गाल पर तमांचा मारे और दामन फाड़े और ज़माना जाहिलियत में जिस क़िस्म के बकवास करते थे इस क़िस्म के बकवास करे, तो वो मुझ में से नहीं हैं, यानी यह काम मुसलमानों का नहीं है।

3. قال وجع ابو موسی .....قال انی بری ممن بری منه محمد ﷺ ان رسول الله ﷺ بری من الصالقة و الحالقة و الشاقة . (بخاری شریف ، باب ما ینھی من الحلق عند المصیبة ، ص ۲۰۷، نمبر ۱۲۹۶ / مسلم شریف، باب ضرب الخدود و شق الجیوب و دعا بدعوی الجاھلیة ، ص ۵۸،نمبر ۱۰۳ / ۲۸۸)

तर्जुमा: हज़रत अबू मूसा रज़ि0 ने फ़रमाया......जिस से मौहम्मद स0अ0व0 बरी हैं मैं भी इस से बरी हूं, रसूलुल्लाह स0अ0व0 इस औ़रत से जो चीख़े चिल्लाये बाल नोचे और कपड़ा फाड़े उन से बरी हैं।

ख़ुद बख़ुद आंसू निकल जाये तो यह माफ़ है

इस के लिए हदीस यह है:

4.قال انس لقد رأیته یکید بنفسه بین یدی رسول الله ﷺ فدمعت عینا رسول الله ﷺ فقال تدمع العین و یحزن القلب ، و لا نقول الا ما یرضی ربنا ، انا بک یا ابراھیم لمحزونون . (ابو داود شریف ، کتاب الجنائز ، باب البکاء علی المیت ، ص ۴۵۸، نمبر ۳۱۲۶)

तर्जुमा: हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत

इब्राहीम रज़ि0 को देखा कि हुज़ूर स0अ0व0 की गोद में अपनी जान अल्लाह को सुपुर्द कर रहे थे, तो हुज़ूर स0अ0व0 की आंखों में आंसू आ गया (तो किसी ने कहा कि हुज़ूर स0अ0व0 आप भी रोते हैं?) तो आप ने फ़रमाया कि आंखें आंसू बहा रही हैं, दिल मग़मूम है, लेकिन जिस से मेरा रब राज़ी हो मैं वही कहता हूं ऐ इब्राहीम रज़ि0 मैं तुम्हारी वजह से ग़मगीन हूं।

इस हदीस में देखें कि ख़ुद बख़ुद आंसू निकल गया तो यह माफ़ है।

5.حدثنی اسامة بن زید .... فرفع الی رسول الله الصبی و نفسه تتقعقع قال حسبت انه قال کانها شن فاضت عیناه فقال سعد یا رسول الله ما هذا ؟ فقال هذه رحمة جعلها الله فی قلوب عباده و انما یرحم الله من عباده الرحماء . (بخاری شریف ، باب قول النبی ﷺ یعذب المیت ببعض بکاء اهله علیه ، ص ۲۰۵، نمبر ۱۲۸۴)

तर्जुमाः हुज़ूर स0अ0व0 के पास बच्ची लाई गई वो आख़िरी सांस ले रही थी रावी कहते हैं, मेरा गुमान है कि वो पुराने मुश्क की तरह थी, हुज़ूर स0अ0व0 की आंखें बह पड़ीं, हज़रत सअ़द रज़ि0 ने पूछा कि या रसूलुल्लाह यह क्या है? आप ने फ़रमाया कि यह रहमत है, अल्लाह ने अपने बन्दे के दिल में इस को रखा है, जो लोग रहम करने वाले हैं अल्लाह ऐसे बन्दों पर रहम करता है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि शिद्दत ग़म की वजह से ख़ुद बख़ुद आंसू निकल गया, और ज़बान से कोई ग़लत सलत जुम्ला नहीं निकला तो इस में कोई हरज नहीं है।

इस अ़क़ीदे के बारे में तीन तीन आयतें और पांच हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(42) ईसाले सवाब एक मुस्तहब्ब काम है

कोई नेक काम करके इस का सवाब मय्यत को पहुंचाने को

ईसाले सवाब कहते हैं।

इस अ़क़ीदे के बारे में 11 आयतें और 14 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

ईसाले सवाब एक मुस्तहब्ब काम है कोई करना चाहे तो कर सकता है और नहीं करना चाहे तो कोई गुनाह नहीं है।

इस काम को करने में यह 5 बातें ज़रूरी हैं।

(1) इस में रिया नमूद जिस को दिखलावा कहते ना हो, अगर लोगों के दिखलावे के लिए किया तो चूंकि सवाब के लिए नहीं किया इस लिए सवाब नहीं मिले और जब करने वाले को ही सवाब नहीं मिलेगा, तो मय्यत को क्या सवाब पहुंचायेगा बल्कि बेहतर यह है कि दाऐं हाथ से दे तो बाऐं हाथ को इस की ख़बर ना हो इतना छुपा कर करे।

(2) रसम व रिवाज की पाबन्दी ना हो यह ना हो कि चूंकि इस काम की रसम बन गई हे इस लिए यह किया जा रहा है।

(3) माली सदक़ा करना हो तो ग़रीबों को दे क्योंकि उन्हीं का हक़ बनता है और उन्हीं को देने से सवाब ज़्यादा मिलेगा।

(4) इस में फुज़ूल ख़र्ची ना हो।

(5) ईसाले सवाब करते वक़्त लोगों को बुलाना जम घटा करना यह भी ठीक नहीं है।

क्योंकि आदमी की मौत हो चुकी हो तो उस के लिए ऐलान करना और लोगों को जमा करना भी हदीस में अच्छा नहीं समझा गया है तो ईसाले सवाब के लिए लोगों को जमा करना, नाच और गाने का समा बनाना और वो सारे ख़ुराफ़ात करना जो हिन्दुओं के मैलों में होते हैं कैसे जायज़ हो सकते हैं। इस के लिए हदीस यह है।

عن عبد الله عن النبی ﷺ قال ایاکم و النعی فان النعی من عمل الجاهلية ، قال عبد الله و النعی اذان با لمیت.(ترمذی شریف ، کتاب

الجنائز ، باب ما جاء فی کراهیة النعی ،ص۲۳۹،نمبر۹۸۴/ ابن ماجة شریف ، کتاب الجنائز ، باب ما جاء فی النهی عن النعی،ص۲۱۱،نمبر۱۴۷۶)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि लोगों के दरमियान मौत के ऐलान से बचा करो इस लिए कि यह जाहिलियत का अ़मल है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 ने फ़रमाया कि नई, का तर्जुमा है लोगों के दरमियान मौत का ऐलान करना।

इस हदीस में है कि अहतमाम के साथ लोगों में मौत के ऐलान करने से मना किया है, हां थोड़ा बहुत जनाज़े की इत्तला दे इस की गुंजाइश है लेकिन जम घटा करना सही नहीं है।

यह ग़मी का मौक़ा है यह इस की आख़िरी मुलाक़ात है और इस पर नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ना है इस के बावजूद भी ज़्यादा जम घटा करने से शरीअ़त ने मना किया है, तो ईसाले सवाब जैसे छुपा कर करने के काम में आधी दुनिया को जमा करना कैसे सही होगा, हां बग़ैर ख़ुराफ़ात के लोग जमा हो कर कुछ पढ़ कर मय्यत को बख़्श दें तो उ़लमा ने इस की गुंजाइश दी है।

इस वक़्त की अफ़रा तफ़री

लेकिन इस वक़्त सूरते हाल यह है कि इस मुस्तहब्ब काम में बहुत अफ़रा तफ़री है। एक आदमी के वालिद का इन्तक़ाल हुआ इस में चालीस रोज़ तक लोग आते रहे, और इस में चालीस हज़ार पोण्ड़ ख़र्च करवा दिया और इस आदमी का दीवाला निकल गया, क्या मुस्तहब्ब काम में इतनी ज़यादती जायज़ है।

मेरे गांव में कई आदमियों का इन्तक़ाल हुआ उन के वारिस के पास कफ़न का भी पैसा नहीं था, लेकिन लोगों ने सूदी क़र्ज़ लेने पर मजबूर किया और इस ने बनियों से तीन हज़ार रूपया क़र्ज़ ले कर लोगों को खाना खिलाया। ऐसे मौक़े पर रिश्तेदार लोग पीछे लग जाते हैं और कुछ ज़हीन लोग भी साथ हो जाते हैं और ईसाले सवाब के नाम पर इतना तंग करते हैं कि ग़रीब की चमड़ी उधैड़ लेते हैं।

ईसाले सवाब की तीन सूरतें हैं

(1) माली सदक़ा करके सवाब पहुंचाना। मसलनः माल ख़ैरात करके सवाब पहुंचाना। खाना खिला कर सवाब पहुंचाना। ग़रीबों को जानवर सदक़ा करके सवाब पहुंचाना। कुर्बानी करके सवाब पहुंचाना।

(2) बदनी आ़माल करके सवाब पहुंचाना। मसलनः हज करके इस का सवाब मय्यत को पहुंचाना। रोज़ा रख कर इस का सवाब मय्यत को पहुंचाना। नमाज़ पढ़ कर इस का सवाब मय्यत को पहुंचाना।

(3) पढ़ कर सवाब पहुंचानाः मसलनः हुज़ूर स0अ0व0 के लिए दुरूद शरीफ़ पढ़ना। कुरआन पढ़ कर मय्यत को सवाब पहुंचाना। दुआ़ करके मय्यत को सवाब पहुंचाना।

(1) माल ख़ैरात करके सवाब पहुंचाने से मय्यत को सवाब मिलता है

इस के लिए अ़क़ीदुल तहाविया में इबारत यह हैः

و فی دعاء الاحیاء و صدقاتهم منفعة للاموات . (عقیدة الطحاویة ، عقیده نمبر ۸۹، ص ۱۹)

तर्जुमाः ज़िन्दा आदमी मुर्दों के लिए दुआ़ करे, या वो सदक़ा करे इस से मुर्दों को फ़ायदा होता है।

و منها : ان دعاء الاحیاء للاموات و صدقتهم عنه نفع لهم فی علو الحالات . (شرح فقه اکبر ، مسئلة فی ان .دعاء للمیت ینفع خلافا للمعتزلة، ص ۲۲۴)

तर्जुमाः एक फ़ायदा यह भी है कि ज़िन्दा लोग मुर्दों के लिए दुआ़ करे या इन की जानिब से सदक़ा करे तो हालात की बुलन्दी में इन को नफ़ा होता है।

इस इबारत में है कि मय्यत को माली सदक़ात का नफ़ा मिलता है। इस के लिए अहादीस यह हैं:

1.أنبـانـا ابن عباسؓ ان سعد بن عبادةؓ توفيت امه و هوا غائب عنها فقال يا رسـول الـلـه ان امى توفيت و انا غائب عنها أينفعها شيء ان تصدقت به عنها ؟ قـال نـعـم قـال فـانـى أشهـد ک ان حـائطى المخراف صدقة عليها . (بخارى شـريف ، بـاب اذا قال أرضى او بستانى صدقة لله عن امى ، ص ٤٥٦ / مسلم شريف ، باب وصول ثواب الصدقات الى الميت، ص٤١٧، نمبر ٤٢١٩/١٦٣٠)

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 कहते हैं कि सअ़द इब्ने उ़बादा की मां का इन्तक़ाल हुआ जब कि सअ़द इब्ने उ़बादा ग़ायब थे उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह मैं ग़ायब था इस हाल में मेरी वालदा का इन्तक़ाल हो गया अगर मैं उन की जानिब से सदक़ा करूं तो उन को नफ़ा होगा? आप स0अ0व0 ने फ़रमाया हां सअ़द रज़ि0 ने कहा कि मैं आप को गवाह बनाता हूं कि मख़राफ़ में जो मेरा बाग़ है मैं मां के लिए इस को सदक़ा करता हूं।

2.عـن سـعد بن عبادة انه قال يا رسول الله ان ام سعد ماتت فأى الصدقة افـضـل ؟ قـال الـمـاء قال فحفر بئر ا و قال هذه لام سعد . (ابو داود شريف ، كتاب الزكوة ، باب فى فضل سقى الماء ، ص ٢٤٩ ، نمبر ١٦٨١)

तर्जुमा: हज़रत सअ़द रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह स0अ0व0 मेरी मां का इन्तक़ाल हो गया तो कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है, आप ने फ़रमाया, पानी, रावी कहते हैं हज़रत सअ़द रज़ि० ने कुंवा खोदा, फिर यह कहा कि यह सअ़द की मां के लिए सदक़ा है।

इन अहादीस में है कि दूसरे ने सदक़ा किया तो उस का सवाब मय्यत को मिलता है।

3.عـن عائشة ان رجلا اتى لنبى ﷺ فقال يا رسول الله ! ان امى افتلتت نـفسها و لم توص ، و اظنها لو تكلمت تصدقت ، أفلها اجر ان تصدقت عنها ؟

قال نعم . (مسلم شريف ، كتاب الزكوة ، باب وصول ثواب الصدقة عن الميت اليه ، ص ٤٠٦، نمبر ١٠٠٤ ، نمبر ٢٣٢٦)

तर्जुमाः हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि एक आदमी हुजूर स0अ0व0 के पास आया और कहा या रसूलुल्लाह स0अ0व0 मेरी वालदा अचानक इन्तक़ाल कर गई हैं और वसियत नहीं कर पाईं और मेरा ख़्याल यह है कि अगर वो बात करतीं तो सदक़ा ज़रूर करतीं अगर मैं उन की जानिब से सदक़ा करूं तो उन को अजर मिलेगा? आप स0अ0व0 ने फ़रमाया! हां (मिलेगा)।

4.عن جابر بن عبد الله ... نزل من منبره و اتى بكبش فذبحه رسول الله بيده و قال بسم الله و الله اكبر هذا عنى و عمن لم يضح من امتى . (ابو داود شريف ، كتاب الضحايا ، باب فى الشاة يضحى بها عن جماعة ،ص٤٠٩،نمبر٢٨١٠)

तर्जुमाः हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि0 से रिवायत है......हुजूर स0अ0व0 मिम्बर से नीचे उतरे, आप के सामने एक मेंढ़ा लाया गया और आप ने अपने हाथ से उस को ज़िबाह किया और फ़रमाया बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर मेरी जानिब से है और मेरी उम्मत में जिन लोगों ने कुर्बानी नहीं की उन की जानिब से है।

5. قال رأيت عليا ؓ يضحى بكبشين فقلت له ما هذا ؟فقال ان رسول الله ﷺ اوصانى ان اضحى عنه فانا اضحى عنه . (ابو داود شريف ، كتاب الضحايا ، باب الاضحية عن الميت ، ص ٤٠٧، نمبر ٢٧٩٠)

तर्जुमाः रावी कहते हैं कि मैंने हरत अ़ली रज़ि0 को देखा कि वो मेंढ़ा (बकरा) ज़िबाह कर रहे थे, मैंने पूछा यह क्या है? तो उन्होंने फ़रमाया कि मुझे हुजूर स0अ0व0 ने वसियत की है कि मैं हुजूर स0अ0व0 की जानिब से कुर्बानी किया करूं तो मैं यह उन की जानिब से कुर्बानी कर रहा हूं।

इन पांच अहादीस से साबित हुआ कि माली सदक़ात करे तो

इस का सवाब मय्यत को पहुंचता है। अल्बत्ता इस में शोहरत, रिया नमूद दूसरों को चिड़ाना ना हो और ना ही रसम व रिवाज की पाबन्दी की वजह से करे और ना फुजूल ख़र्ची करे। यह काम कभी कभार कर ले और इस का सवाब मय्यत को पहुंचा दे क्योंकि यह सिर्फ़ मुस्तहब्ब है।

(2) बदनी अ़मल करके मय्यत को सवाब पहुंचा सकते हैं

इस के लिए हदीस यह है:

6.عن ابن عباس رض قال جاء رجل الى النبی ﷺ فقال أحج عن ابی قال نعم حج عن ابیک . (ابن ماجة شریف ، کتاب المناسک ،باب الحج عن المیت ، ص ۴۲۰، نمبر ۲۹۰۴)

तर्जुमा: एक आदमी हुजूर स0अ0व0 के पास आया और पूछा कि मैं अपने बाप की जानिब से हज करूं? आप ने फ़रमाया हां! अपने बाप की जानिब से हज करो।

7.عن ابی الغوث بن حصین . رجل من الفروع . انه استفتی النبی ﷺ عن حجة کانت علی ابیه مات و لم یحج ، قال النبی ﷺ حج عن ابیک ، و قال النبی و کذالک الصیام فی النذر یقضی عنه . (ابن ماجة شریف ،کتاب المناسک، باب الحج عن المیت ، ص ۴۲۰، نمبر ۲۹۰۵)

तर्जुमा: अबी ग़ौस बिन हुसैन से रिवायत है कि बाप पर एक हज था और उन्होंने हज नहीं किया था और उन का इन्तक़ाल हो गया था, तो इस के बारे में फ़तवा पूछा तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि बाप की जानिब से हज करो, हुजूर स0अ0व0 ने यह भी फ़रमाया कि नज़र का रोज़ा बाक़ी हो तो उन की जानिब से क़ज़ा कर सकते हो।

हज करना और रोज़ा रखना बदनी इबादतें हैं, इस लिए इन

दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि बदनी इबादत करके मय्यत को सवाब पहुंचा सकते हैं।

(3) कुरआन पढ़ कर और दुआ करके मय्यत को सवाब पहुंचा सकते हैं

लेकिन इस के लिए वक़्त मुतअ़य्यन करना, जिस में ज़माने का धमाल हो वीड़ियो बनाया जाये, नाच और गाने भी हों, तबला और ढ़ोलकी तो हों ही और इस पर नये अन्दाज़ का डांस भी होता कि ज़माने तक इस की याद यूट्यूब पर और इन्टरनेट पर रहे, यह सब कहां तक जायज़ हैं आप ख़ुद ही फ़तवा दे लें।

इस की दलील यह आयतें हैं:

1.وَ الَّذِيْنَ جَاءُوْا مِنْ بَعْدِهٖ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ . (آیت۱۰،سورت الحشر۵۹)

तर्जुमा: वो यह कहते हैं हमारी भी मग़फ़िरत फ़रमाइये और हमारे इन भाइयों की भी जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं।

2.رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِیَ مُؤْمِناً وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ لِلْمُؤْمِنَاتِ. (آیت۲۸،سورت نوح۷۱)

तर्जुमा: मेरे रब मेरी भी बख़्शिश फ़रमा दीजिए, मेरे वालिदैन की भी और हर उस शख़्स की भी जो मेरे घर में ईमान के हालत में दाख़िल हुआ, और तमाम मौमिन मर्दों और मौमिन औ़रतों की भी (बख़्शिश कर दीजिए)।

3.اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلَائِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْماً .(آیت۵۶، سورت الاحزاب۳۳)

तर्जुमा: बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भैजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी इन पर दुरूद भैजो और ख़ुद सलाम भैजा करो।

इस आयत में है कि अल्लाह और फ़रिश्ते हुज़ूर स0अ0व0 पर दुरूद भैजते हैं, इस लिए मौमिनो को भी हुक्म दिया गया कि हुज़ूर स0अ0व0 पर ख़ुद दुरूद भैजें, इस लिए हुज़ूर स0अ0व0 पर ख़ुद दुरूछ भैजना चाहिए, पढ़ने में यह सब से बड़ी इबादत है।

इस आयत में हुज़ूर स0अ0व0 पर दुरूद भैजने को हुक्म दिया गया है, अगर इस का सवाब नहीं मिलता तो दुरूद भैजने का हुक्म क्यों देते। पढ़ कर बख़शने के लिए अहादीस यह हैं:

8.عن ابی هريرة ان رسول الله ﷺ قال اذا مات الانسان انقطع عنه عمله الا من ثلاث الا من صدقة جارية او علم ينتفع به او ولد صالح يدعوا له .

(مسلم شريف ، باب ما يلحق الانسان من الثواب بعد وفاته ،ص۷۱۶،نمبر۱۶۳۱/۴۲۲۳)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब इन्सान मर जाता है तो इस का अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाता है मगर तीन अ़मल का सवाब मिलता रहता है। (1) सदक़ा जारिया का सवाब। (2) ऐसा इल्म छोड़ा जिस से लोग नफ़ा उठाते हों। (3) नेक औलाद जो इस के लिए दुआ करती हो इस का सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है।

9.عن معقل بن يسار قال قال رسول الله ﷺ أقرؤ (يٓس) على موتا كم.

(ابو داود شريف ، باب القرأة عند الميت ، ص ۴۵۷، نمبر ۳۱۲۱)

तर्जुमा: आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपनी मय्यत पर यासीन शरीफ़ पढ़ा करो।

10.عن عثمان بن عفان قال كان النبى ﷺ اذا فرغ من دفن الميت وقف عليه فقال استغفروا لاخيكم و اسألوا له بالتثبيت فانه الانسان يسأل.

(ابوداود شريف ، باب الاستغفار عند القبر للميت فى وقت الانصراف ، ص ۴۷۰، نمبر ۳۲۲۱)

तर्जुमा: हज़रत उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि0 फ़रमाते हैं कि

जब हुज़ूर स0अ0व0 मय्यत को दफ़न करने से फ़ारिग़ होते तो क़ब्र पर खड़े रहते और कहते अपने भाई के लिए असतग़फ़ार करो और इन के लिए जवाब देने में साबित क़दम रहने की दुआ़ मांगो! इस लिए कि अभी फ़रिश्ते इन से सवाल करेंगे।

11.عن ابی هريرةؓ قال سمعت رسول الله ﷺ يقول اذا صليتم على الميت فاخلصواله الدعاء . (ابو داود شريف ، باب الدعاء للميت ، ص ۴٦٧، نمبر ٣١٩٩)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 फ़रमाते हैं कि मय्यत पर नमाज़ जनाज़ा पढ़ो तो इन के लिए अख़लास के साथ दुआ़ करो।

12.حدثنا صفوان حدثنى المشيخة انهم حضروا غضيف بن الحارث الثمالى حين اشتد سوقه فقال هل منكم احد يقرء يٓسن ....فكانت المشيخة يقولون اذا قرئت عند الميت خفف عنه بها . (مسند احمد ، مسند حديث غضيب بن الحارثؓ ، ج ۵، ص ٧۵، نمبر ١٦۵٢١)

तर्जुमा: ग़ज़ीफ़ बिन अल हारिस उल शुमाली की मौत का वक़्त आया तो कहने लगे तुम में से कोई यासीन शरीफ़ पढ़ सकता है...... इस लिए कि बूढ़े लोग कहते हैं कि अगर मय्यत के पास यासीन शरीफ़ पढ़ी जाये तो इस की बरकत से मौत की सख़ती कम हो जाती है।

इस क़ौल ताबई में है कि यासीन शरीफ़ पढ़ने से मौत की सख़ती कम हो जाती है।

13.عن عبد الرحمن بن العلاء بن اللجلاج عن ابيه انه قال لبنيه : اذا ادخلتمونى قبرى فضعونى فى اللحد و قولوا باسم الله و على سنة رسول الله ﷺ و سنوا على التراب سنا و اقرأوا عند رأسى اول البقرة و خاتمها فانى رأيت ابن عمر يستحبها ذالک . (سنن بيهقى ، كتاب الجنائز ، باب ما ورد فى قرأة القرآن عند القبر ، ج ۴، ص ٩٣، نمبر ٧٠٦٨)

तर्जुमाः इब्नुल जलाज रह0 ने अपने बेटे से कहा कि जब मुझे क़ब्र में उतार दो और मुझे लहद में रखो तो بسم الله على سنة رسول الله ، कहो और मेरे ऊपर मिट्टी ड़ाल दो फिर मेरे सर के पास सूरह बक़रा का शुरू और इस का अख़ीर हिस्सा पढ़ो इस लिए कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर इस अ़मल को मुस्तहब्ब कहते थे।

इस ताबई के अ़मल से मालूम हुआ कि मय्यत के सरहाने में सूरह बक़रा पढ़ी जाये।

इन 13 अहादीस और 3 आयात से पता चलता है कि ख़ैरात का सवाब और दुअ़ा और असतग़फ़ार का सवाब मय्यत को मिलता है।

इन में सब से बड़ी बात यह है कि दुअ़ा और दुरूद का अहतमाम हमैशा करें और बाक़ी अ़मल कभी कभार करे।

लेकिन इन में यही है कि दिन मुतअ़य्यन ना हो, रसम व रिवाज ना हो, रिया और नमूद ना हो, फ़ुजूल ख़र्ची ना हो, इज्तमाई, ढ़ोल, तबला, नाच, गाना और वो ख़ुराफ़ात ना हों जिस से हिन्दुओं का मैला शर्मा जाये।

माली सदक़ात ग़रीबों को दिया जाये, लुटैरों को और ज़हीन क़िस्म के मक्कारों को हरगिज़ ना दें।

कुछ हज़रात की राये है कि सवाब नहीं पहुंचा सकते

और कुछ हज़रात कहते हैं कि दुअ़ा का सवाब तो पहुंचता है, क्योंकि यह हदीस से साबित है। माली सदक़ात का सवाब नहीं पहुंचता। इन की दलील यह है कि एक का गुनाह दूसरे को नहीं पहुंचता। इस के लिए यह आयतें हैं:

4.اَنْ لَّا تَزِرُوَا زِرَةٌ وِّزْرٰی اُخْرٰی وَ اَنْ لَّیْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰی .

(آیت ۳۹،النجم ۵۳)

तर्जुमा: यानी यह कि कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नही उठा सकता और यह कि इन्सान को ख़ुद अपनी कौशिश के सिवा किसी और चीज़ का बदला लेने का हक़ नहीं पहुंचता।

5.**وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى .**

(آیت۱۶۴،الانعام۶)

तर्जुमा: और जो कोई शख़्स कोई कमाई करता है इस का नफ़ा और नुक़सान किसी और पर नहीं ख़ुद इसी पर पड़ता है और कोई बोझ उठाने वाला किसी और का बोझ नहीं उठायेगा।

6.**كُلُّ نَفْسٍ بِّمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ .** (آیت۳۸،سورت المدثر۷۴)

तर्जुमा: हर शख़्स अपने करतूत की वजह से गिरवी रखा हुआ है।

7.**لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ .** (آیت۲۸۶،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: इस को फ़ायदा भी इसी काम से होगा जो इस ने अपने इरादे से करे और नुक़सान भी इसी काम से होगा जो अपने इरादे से करे।

8.**تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ .**

(آیت۱۴۱،سورت البقرۃ۲)

9.**تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ .**

(آیت۱۳۴،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: वो एक उम्मत थी जो गुज़र गई, जो कुछ उन्होंने कमाया वो इन का है, और जो कुछ तुम ने कमाया वो तुम्हारा है।

10 .**ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ .** (آیت۲۸۱،سورت البقرۃ۲)

तर्जुमा: फिर हर हर शख़्स को जो कुछ इस दिन कमाया है पूरा पूरा दिया जायेगा और इन पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।

इन 7 आयतों में है कि आदमी ख़ुद जो काम करता है इसी का इस को सवाब मिलता है। इस से वो साबित करते हैं कि मय्यत को दूसरों के ईसाले सवाब करने से माली सवाब नहीं मिलतमा है, बस जो इस ने अपनी ज़िन्दगी में क्या इसी का सवाब और अ़ज़ाब मिलेगा।

इन तीन वजह से जम्हूर ईसाले सवाल के क़ाइल हुए

इन तीन वजह से जम्हूर इस बात के क़ाइल हुए हैं कि मय्यत को माली और क़िराअत का सवाब मिलता है।

(1) ऊपर 13 अहादीस और तीन आयतें गुजरीं जिन से पता चलता है के मय्यत को भेजा हुवा सवाब मिलता है अगर ये हदीसें और आयतें ना होतीं तो हम भी उस बात के क़ाइल होते के मय्यत को सवाब नहीं मिलता है।

(2) ऊपर की आयतों से इतना पता चलता है के किसी का गुनाह दूसरे को नहीं मिलेगा, कियों के इन्साफ का तक़ाज़ा यही है लेकिन दूसरे का भैजा हुवा सवाब भी नही मिल्ता है, इसका इन्कार ऊपर की आयत में नहीं है, इस लिये सवाब मिल सकता है।

(3) जुमहूर ने दूसरा जवाब ये दिया है के मरने वाला अपना दोस्त बनाता है या अपना रिश्तादार होता है या अपनी औलाद की तरबियत करता है, ये दोस्त बनाना और ओलाद की तरबियत करना भी एक क़िस्म की नैकियां कमाने का सबब है इस लिये इस सबब बनाने की वजा से उसको सवाब मिलेगा। और सबब बनेगा तो उसका गुनाह होगा उसकी दलील ये आयत है:

11. لِيَحْمِلُوْا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيَامَةِ وَ مِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ اَلَا سَاءَ مَا يَزِرُوْنَ . (آیت ۲۵،سورت النحل ۱۶)۔

तर्जुमा: इन बातों का नतीजा ये है के वो कयामत के दिन खुद अपने गुनाहों के पूरे पूरे बोझ भी उठाऐंगे और उन लोगों के बोझ का एक हिस्सा भी जिनहें ये किसी इल्म के बगैर गुम्राह कर रहे थे याद रख्खो के बहुत बड़ा बोझ है जो ये लाद रहे हें।

14.عن ابی هريرة ان رسول الله ﷺ قال من دعا الی هدی کان له من الاجر مثل اجور من تبعه لا ينقص ذالک من اجورهم شيئا، و من دعا الی ضلالة كان عليه من الاثم مثل آثام من تبعه لا ينقص ذالک من آثامهم شيئا .

(ابو داود شريف ، باب من دعا الی السنة ، ص ٦٥٢ ، نمبر ٤٦٠٩)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फरमाया के कोई हिदायत की तरफ बुलाऐ तो जिस ने उसकी इत्तिबा की उसका अजर भी उसको मिलेगा इत्तिबा करने वालों के अजर में से कुछ कम नहीं होगा और किसी ने गुमराही की तरफ बुलाया तो उसका भी गुनाह होगा जिस ने उसकी इत्तिबा की, इत्तिबा करने वालों का गुनाह कुछ कम नहीं होगा।

इस हदीस में है के आप की रहनुमाई करने से कोई काम करेगा तो करने वाले का सवाब रहनुमाई करने वाले को मिलेगा, इसी तरह आप के गुमराह करने से कोई गुनाह करेगा तो उसके गुनाह का अजाब गुमराह करने वाले को भी मिलेगा कियों के ये गुमराह करने का सबब बना है।

इस आयत और हदीस में है के कोई सबब बनता है तो सबब बन्ने की वजा से सबब बन्ने वालों को उसका सवाब या अज़ाब मिलता है और चुंके ईमान लाने वाला ईमान के सबब से सवाब का मुसतहिक़ बना है, इस लिये जो सवाब पहुंचाऐगा उसका सवाब मय्यत को मिलेगा।

क़ब्र पर खुराफात से सवाब नहीं मिलता है

क़ब्र पर जित्नी नज़र व नियाज़ चढ़ाते हें या जबाह करते हें

या हदया देते हें उनमें से किसी का सवाब हदीस में नहीं है बल्के उसके खिलाफ में अहादीस हें, और ना उसका सवाब मिलता है, बस शरीअत के मुताबिक़ ईसाल सवाब करदे इतने ही का सवाब मय्यत को मिलता है और वही करना चाहिये।

इस अक़ीदे के बारे में 11 हदीसें हें आप हर एक की तफ़सील देखें।

बाज़ मुजाविरों की दुकानें

जितनी अहादीस पैश की जाती हैं उन से इतना साबित होता है कि क़ब्रों पर जाकर मय्यत के लिए दुआ़ करे और कभी कभार चुपके से ग़रीबों पर सदक़ा कर दे और ऐसा करना मुस्तहब्ब है।

लेकिन इस वक़्त यह हो रहा है कि इन फ़तवों की आड़ में बाज़ मुजाविरों ने बड़े बड़े कुब्बे बनाऐ चमक दमक ब्लब लगाये और हर आने वालों को यह तरग़ीब देते हैं कि यह बुज़ुर्ग आप की हर मुरादें पूरी कर देंगे, और इस से इतना फ़ैज़ होगा कि आप की ज़िन्दगी संवर जायेगी, और इस झांसे में आने वालों से बड़ी बड़ी रक़में वसूल करते हैं और इन की जैब ख़ाली कर देते हैं और जो इस चक्कर में पड़ता है उस को ग़रीब बना देते हैं कहां है कभी कभार क़ब्र की ज़ियारत और कहां यह लुटैरों का खेल, फिर वो इतने ही पर बस नहीं करते, हर जुमेरात को क़ब्र पर जाकर हाज़िरी, उ़र्स और मुख़तलिफ़ हीलों से लोगों को आने की दअ़वत देते हैं, फिर उ़र्स के नाम पर मैला लगता है, क़व्वाली होती है, रण्ड़ियां नाचती हैं और पूरी रात वो धमाल होता है कि हिन्दुओं के मैले भी इस के मुक़ाबले में मान्द हैं।

कुछ लोगों ने इतनी गुंजाइश दी थी कि क़ब्रिस्तान से फ़ैज़ हासिल होगा और हदीस में वो ख़ास फ़ैज़ यह है कि क़ब्र को और इस की वीरानी को देख कर आख़िरत याद आयेगी, दुनिया से दिल उचाट हो जायेगा और यहां यह है कि दुनिया बिल्कुल नंगी

हो कर सामने आती है, बल्कि मज़हब के नाम पर इतने अच्छे अन्दाज़ में दुनिया और इस की रौनक़ें सामने आती हैं कि हर नौजवान लड़के और लड़कियां इस को हासिल करने के लिए बेताब रहते हैं। कहां मुस्तहब्ब के नाम पर बुज़ुर्गों की थोड़ी सी गुंजाइश और कहां यह डांस, नाच और यूट्यूब इन्टरनेट टीवी पर इस का इशतहार और ख़ुराफ़ात की भरमार, कितना फ़र्क़ है। **فیـــا للآسف.**

(43) मय्यत का सुनना

इस अ़क़ीदे के बारे में चार आयतें और सात हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

मुर्दे सुनते हैं या नहीं, यह मसला एक दलदल है, यहां मुर्दे के सुनने के सिलसिले में तीन मसलक हैं और तीनों के पास आयत और हदीस की दलाइल हैं।

(1) एक राये यह है कि मुर्दे नहीं सुनते।

(2) दूसरी राये यह है कि मुर्दे सुनते हैं।

(3) और तीसरी राये यह है कि हर बात को तो नहीं सुनते, हां अल्लाह जिस बात को सुनाना चाहते हैं वो फ़रिश्तों के ज़रिये या किसी और ज़रिये से सुनवा देते हैं।

नोटः जब मय्यत के सुनने में ही इख़्तलाफ़ है, तो इस की कैसे इजाज़त दी जा सकती है कि आदमी नबियों और वलियों से अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए कहे और इन को हाजत रवा कह कर पुकारे।

(1) जो हज़रात कहते हैं कि मुर्दे नहीं सुनते हैं

इस के लिए यह आयतें हैं:

1. اِنَّکَ لَا تُسۡمِعُ الۡمَوۡتٰی وَ لَا تُسۡمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوۡا مُدۡبِرِیۡنَ

(آیت ۸۰، سورت النمل ۲۷)

तर्जुमाः यक़ीनन तुम मुर्दों को अपनी बात नहीं सुना सकते

और ना तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जब वो पीठ फैर कर चल खड़े हों।

2. فَاِنَّکَ لَا تُسۡمِعُ الۡمَوۡتٰی وَ لَا تُسۡمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ اِذَا وَلَّوۡا مُدۡبِرِیۡنَ

(آیت ۵۲، سورت الروم ۳۰)

तर्जुमा: ऐ पैग़म्बर! तुम मुर्दों को अपनी बात नहीं सुना सकते और ना तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जब वो पीठ फैर कर चल खड़े हों।

3. وَ مَا یَسۡتَوِی الۡاَحۡیَاءُ وَ لَا الۡاَمۡوَاتُ اِنَّ اللّٰهَ یُسۡمِعُ مَنۡ یَّشَاءُ وَ مَا اَنۡتَ بِمُسۡمِعٍ مَّنۡ فِی الۡقُبُوۡرِ . (آیت ۲۲، سورت فاطر ۳۵)

तर्जुमा: ज़िन्दा लोग और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते और अल्लाह तो जिस को चाहता है बात सुना देता है और तुम इन को बात नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में पड़े हैं।

इन तीन आयतों में हुज़ूर स0अ0व0 से यह कहा कि आप मुर्दे को नहीं सुना सकते हां अल्लाह जिस को चाहे सुना सकते हैं। इस आयत नम्बर 22, 35 से एक बुज़ुर्ग ने यह इस्तदलाल किया है कि हम मुर्दे को नहीं सुना सकते, हां अल्लाह जिस को चाहे सुना सकते हैं।

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि0 इसी बात की क़ाइल थीं कि मुर्दे नहीं सुनते और हुज़ूर स0अ0व0 ने जो सुनाया था वो मोअ़ज्ज़े के तौर पर सिर्फ़ इसी वक़्त सुनाया था, हमैशा नहीं सुना सकता, इसी लिए इस हदीस में **يسمع الآن** यानी अभी वो सुन रहे हैं का लफ़्ज़ मौजूद है, चुनांचे हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने फ़रमाया कि मुर्दे नहीं सुनते हैं और इस के लिए **اِنَّکَ لَا تُسۡمِعُ الۡمَوۡتٰی** वाली आयत पढ़ी।

हदीस यह है:

1. **عن ابن عمر قال وقف النبی ﷺ علی قلیب بدر فقال هل وجدتم ما**

وعد ربکم حقا ؟ ثم قال انهم الآن یسمعون ما اقول ، فذکر لعائشة فقالت انما قال النبی ﷺ انهم الآن لیعلمون ان الذی کنت اقول لهم هو الحق ، ثم قرأت ﴿ اِنَّکَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰی ﴾ (آیت ۸۰، سورت النمل ۲۷) حتی قرأت الآیة .

(بخاری شریف ، کتاب المغازی ، باب قتل ابی جهل ، ص ۶۷۱، نمبر ۳۹۸۰/۳۹۸۱)

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 बदर के कुवें पर खड़े हुए और कुफ़्फ़ारे मक्का से यह कहा कि तुम्हारे रब ने जो तुम से वादा किया क्यों तुम ने इस को हक़ पाया? फिर आप ने इरशाद फ़रमाया कि वो अभी मेरी बात सुन रहे हैं, इस का तज़्किरा हज़रत आ़यशा रज़ि0 के सामने हुआ तो उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अभी जो कुछ कह रहा हूं वो अभी जानते हैं कि मैं जो कुछ कह रहा था वो हक़ है, फिर हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने इसतदलाल के तौर पर **اِنَّکَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰی** वाली आयत पढ़ी जिस में है कि आप मुर्दे को नहीं सुना सकते।

इस हदीस में हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने फ़रमाया कि यह नहीं है कि मुर्दे सुनते हैं, बल्कि हुज़ूर स0अ0व0 ने यूं फ़रमाया कि मैं जो कुछ कहता था, बदर के कुंवे वाले अभी यक़ीन कर रहे हैं कि मैं सच कहता था। इस की ताईद हज़रत क़तादा रह0 की इस तावील से भी होती है।

2.عن ابی طلحه ان نبی الله ﷺ امر یوم بدر ... فقذفوا فی طوی من اطواء بدر ...فجعل ینادیهم باسمائهم و اسماء آباهم ....فقال عمر یا رسول الله ما تکلم من اجساد لا ارواح لها، فقال رسول الله ﷺ و الذی نفس محمد بیده ما انتم بأسمع لما اقول منهم. قال قتادة أحیاهم الله حتی اسمعهم قوله توبیخا و تصغیرا و نقمة و حسرة و ندما . (بخاری شریف ، کتاب المغازی ، باب قتل ابی جهل ، ص ۶۷۱ ، نمبر ۳۹۷۶)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने जंग बदर के दिन......कुफ़्फ़ार मक्का के मुर्दों को कुंवे में ड़लवा दिया......आप स0अ0व0 ने इस का और इस के बाप का नाम ले कर पुकारा......तो हज़रत उ़मर रज़ि0 फ़रमाने लगे जिस जिस्म में रूह नहीं है, हुज़ूर स0अ0व0 आप इस से बात कर रहे हैं? तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस के क़ब्ज़े में (मौहम्मद स0अ0व0) की जान है, जो कुछ मैं कह रहा हूं तुम इन से ज़्यादा सुनने वाले नहीं हो। हज़रत क़तादा रह0 कहते हैं कि अल्लाह न इन मुर्दों को ज़िन्दा किया ताकि हुज़ूर स0अ0व0 की बात को सुन ले, ड़ांटने के तौर पर हक़ीर करने के तौर पर सज़ा देने के तौर पर और शर्मिन्दा करने के तौर पर।

हज़रत क़तादा रह0 की तावील से लगता है कि मुर्दे तो सुनते नहीं हैं लेकिन कुफ़्फ़ार कुरैश को अल्लाह ने ज़िन्दा किया और इन को शर्मिन्दा करने के लिए हुज़ूर स0अ0व0 की बात को सुनाया, इस लिए यह हुज़ूर स0अ0व0 का एक मोअ़ज्ज़ा है, आ़म हालात में मुर्दे नहीं सुनते।

इन तीन आयत और दो हदीस से यह पता चलता है कि मुर्दे नहीं सुनते हैं।

(2) जो लोग कहते हैं कि क़ब्र वाले सुनते हैं

इन की दलील यह अहादीस हैं:

3.ان ابن عمر اخبره قال اطلع النبی ﷺ علی اهل القلیب فقال : وجدتم ما وعد ربکم حقا ؟ فقیل له أتدعون أمواتا ، فقال ما انتم باسمع منهم و لکن لا یجیبون . (بخاری شریف ، باب ما جاء فی عذاب القبر، ص۲۲۰،نمبر۱۳۷۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 बदर के कुंवे वालों के पास तशरीफ़ लाऐ और कहा कि तुम्हारे रब ने जो तुम से वादा किया था क्यों तुम ने उस को हक़ पाया? आप स0अ0व0 से लोगों ने पूछा कि क्या आप मुर्दों को पुकार रहे हैं? तो आप ने फ़रमाया कि तुम भी

इस से ज़्यादा सुनने वाले नहीं हो लेकिन वो अब जवाब नहीं दे सकते।

इस हदीस में है कि मुर्दे सुनते हैं।

4.عن انسؓ عن النبی ﷺ قال العبد اذا وضع فی قبرہ و تولی و ذھب اصحابہ حتی انہ لیسمع قرع نعالہ اتاہ ملکان فأقعدانہ فیقولان لہ ما کنت تقول فی ھذا الرجل محمد ﷺ فیقول أشھد انہ عبداللہ و رسولہ .

(بخاری شریف ، باب المیت یسمع خفق النعال،ص۲۱۳،نمبر۱۳۳۸)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि बन्दा जब क़ब्र में लिटाया जाता है, और इस के साथी वापिस आ जाते हैं यहां तक कि जब मुर्दा जूते की आवाज़ सुनता है तो इस के पास दो फ़रिश्ते आते हैं और इस को बैठाते हैं और पूछते हैं कि इस आदमी मौहम्मद स0अ0व0 के बारे में तुम क्या कहते हो तो वो जवाब देता है कि मैं गवाही देता हूं कि यह अल्लाह का बन्दा और रसूल हैं।

इस हदीस में है कि जूते की आवाज़ सुनता है।

5.عن ابی ھریرۃ قال : قال رسول اللہ ﷺ من صلی علی عند قبری وکل بھما ملک یبلغنی و کفی بھما امر دنیاہ و آخرتہ و کنت لہ شھیدا او شفیعا ، ھذا اللفظ حدیث الاصمعی ، و فی روایۃ الحنفی قال : عن النبی ﷺ قال من صلی علی عند قبری سمعتہ و من صلی علی نائیا ابلغتہ .

(بیھقی[متوفی ۴۵۸] فی شعب الایمان ، باب فی تعظیم النبی ﷺ و اجلالہ و توقیرہ ، ج ثانی ، ص ۲۱۸ ، نمبر ۱۵۸۳)

तर्जुमा: हज़रत अबूहुरैराह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया जो मेरी क़ब्र के पास दुरूद भैजता है तो इस पर अल्लाह फ़रिश्ते को मुक़र्रर करते हैं जो मुझे वो दुरूद पहुंचा दे, इस के लिए दुनिया और आख़िरत की भलाई काफ़ी हो जाती है, और मैं इस के लिए गवाह हूंगा और सिफ़ारशी हूंगा।

हदीस के यह जुम्ले हज़रत असमई रह0 से मन्क़ूल हैं। और हज़रत हनफ़ी रह0 की रिवायत में यूं है, हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि कोई मेरी क़ब्र के पास दुरूद भैजता है तो मैं इस को सुनता हूं और जो दूर से दुरूद भैजता है तो वो मुझ को पहुंचा दिया जाता है।

इस हदीस में है कि मरी क़ब्र के पास दुरूद भैजे तो मैं उस को सुनता हूं और दूर से दुरूद भैजे तो मुझे पहुंचाया जाता है। मैंने मक्तबा शामिला से बहुत तलाश की किसी किताब में **عند قبری سمعته** का लफ़्ज़ नहीं मिला और कई मौहद्दिसीन ने इस को ज़ईफ़ कहा है।

(3) जो लोग कहते हैं कि खुद तो नहीं सुनते लेकिन अल्लाह जितना चाहे तो सुना देते हैं

इन के दलाइल यह हैं:

4. **وَ مَا يَسْتَوِى الْاَحْيَاءُ وَ لَا الْاَمْوَاتِ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ وَ مَا اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ . (آيت ٢٢، سورت فاطر ٣٥)**

तर्जुमा: ज़िन्दा लोग और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते और अल्लाह तो जिस को चाहता है बात सुना देता है और तुम इन को बात नहीं सुना सकते जो क़ब्रो में पड़े हैं।

इस आयत में है कि क़ब्रों में जो लोग हैं उन को अल्लाह चाहे तो सुना देते हैं हुज़ूर स0अ0व0 आप नहीं सुना सकते।

6. **عن اوس ابن اوس قال قال النبى ﷺ ان من افضل ايامكم يوم الجمعة فاكثروا على من الصلوة فيه فان صلوتكم معروضة على ، قال فقالوا يا رسول الله !و كيف تعرض صلاتنا عليك و قد ارمت ؟ قال يقولون بليت . قال ان الله حرم على الارض أجساد الانبياء ﷺ .(ابو داود شريف ، باب فى الاستغفار ، ص ٢٢٦، نمبر ١٥٣١ / ابن ماجة شريف ، باب فى فضل**

الجمعة ، ص ۱۵۲ ، نمبر ۱۰۸۵)

तर्जुमा: आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि तुम्हारा सब से अच्छा दिन जुमा का दिन है, इस लिए इस दिन मुझ पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद भैजा करो, इस लिए कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पैश किया जाता है, लोगों ने पूछा या रसूलुल्लाह! आप तो बौसीदा हो चुके होंग आप पर हमारा दुरूद कैसे पैश किया जायेगा, रावी कहते हैं कि शायद बलीत, का लफ़्ज़ कहा आप स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अल्लाह ने ज़मीन पर अम्बिया के जिस्म को हराम कर दिया (ज़मीन अम्बिया के जिस्म को नहीं खा सकती) इस हदीस में है कि हुज़ूर स0अ0व0 पर दुरूद शरीफ़ पैश किया जाता है वो दूर से नहीं सुनते, बल्कि सुनाया जाता है।

7.عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ لا تجعلوا بيوتكم قبورا و لا تجعلوا قبری عيدا و صلوا علی فان صلوتكم تبلغنی حيث كنتم . (ابو داود شريف ، باب زيارة القبور ، ص ۲۹۶ ، نمبر ۲۰۴۲)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि अपने घरों को क़ब्र की तरह मत बनाओ और मेरी क़ब्र को ईद की तरह मत बनाओ, हां मुझ पर दुरूद भैजा करो इस लिए कि तुम कहीं भी हो तुम्हारा दुरूद मुझ को पहुंचाया जाता है।

इन अहादीस से मालूम होता है कि हुज़ूर स0अ0व0 बराहे रास्त नहीं सुनते, बल्कि इन को सुनाया जाता है और इन पर दुरूद पैश किया जाता है।

एक उस्ताज़ की राये

मेरे एक उस्ताज़ यह फ़रमाते थे कि दोनों हदीसों और आयतों को मिलान से यह पता चलता है कि मुर्दा ख़ुद तो नहीं सुनता अल्बत्ता अल्लाह जिस चीज़ को सुनाना चाहता है, उस को सुना दिया जाता है, यह असलम तरीक़ा है, और दोनों क़िस्म की आयतों

को जामे है। वल्लाहु आ़लम।

इस अ़क़ीदे के बारे में चार आयतें और सात हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

(44) यह दस चीज़ें अ़लामते क़यामत में से हैं

इस अ़क़ीदे के बारे में 3 आयतें और 16 हदीसें हैं आप हर एक की तफ़सील देखें।

1— धुवां।

2— दज्जाल का निकलना।

3— ज़मीन से जानवर निकलेगा जो इन्सानों से बात करेगा।

4— सूरज मग़रिब से निकलेगा।

5— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आस्मान से ज़मीन पर उतरेंगे।

6— याजूज माजूज एक कौम होगी जो निकलेगी और पूरी दुनिया को तहस नहस कर देगी।

7,8,9— तीन जगह से ज़मीन का धसना होगा, एक मश्रिक़ में एक मग़रिब में और तीसरा जज़ीरा अ़रब में।

10— एक आग निकलेगी जो लोगों को मेहशर तक ले जायगी।

11— कुछ अ़लामात क़यामत और भी हैं।

हम इन अ़लामात क़यामत पर ईमान रखते हैं

क्योंकि इन का सबूत आयत और पक्की हदीस में है इन दस अ़लामामत की दलील यह हदीस है।

1.عن حذيفة بن اسيد الغفاريقال اطلع النبى ﷺ علينا و نحن نتذاكر فقال ما تذاكرون ؟ قالوا نذكر الساعة قال انها لن تقوم حتى ترون قبلها عشر آيات ، فذكر الدخان ، و الدجال ، و الدابة ، و طلوع الشمس من مغربها ، و نزول عيسى ابن مريم ﷺ ، و ياجوج و ماجوج ، و ثلاثة خسوف ، خسف بالمشرق ، و خشف بالمغرب ، و خشف بجزيرة العرب ، و آخر ذالک نار

تخرج من اليمن تطرد الناس الى محشرهم . (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب فى الآيات التى تكون قبل الساعة ،ص١٢٥٦،نمبر٢٩٠١/٧٢٨٥/ ابو داود شريف ، كتاب الملاحم ، باب امارات الساعة ،ص٦٠٥،نمبر٤٣١١)

तर्जुमा: हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसयद फ़रमाते हैं कि हमारे सामने हुजूर स0अ0व0 तशरीफ़ लाऐ, हम किसी चीज़ का ज़िक्र कर रहे थे, हुजूर स0अ0व0 ने पूछा कि किस चीज़ का ज़िक्र कर रहे हो, लोगों ने कहा क़यामत का ज़िक्र कर रहे हैं, तो हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया, जब कि तुम इस से पहले दस निशानियां ना देख लोगे क़यामत हरगिज़ नहीं आयेगी, आगे आप स0अ0व0 ने बयान फ़रमाया धुवां, दज्जाल, एक जानवर निकलेगा, मग़रिब से सूरज निकलेगा, हज़रत ईसा इब्ने मरयम आसमान से उतरेंगे, याजूज माजूज का ख़ुरूज, और तीन जगह जक़मीन धंसेगी, एक मश्रिक़ में, दूसरी मग़रिब में, और तीसरी जज़ीरतुल अ़रब में और आख़िरी यमन से आग निकलेगी, जो लोगों को मेहशर तक धकैल कर ले जायेगी।

क़यामत से पहले यह दस बड़ी बड़ी निशानियां होंगी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा ज़मीन पर उतरेंगे

कुछ हज़रात यह कहते हैं कि हज़रत ईसा दोबारा नहीं आऐंगे, यह बात सही नहीं है, क्योंकि पक्की और सही हदीस में है कि हज़रत ईसा आस्मान पर उठा लिए गये हैं, और वो दोबारा ज़मीन पर उतरेंगे और हुजूर स0अ0व0 की शरीअ़त के मुताबिक़ शरीअ़त नाफ़िज़ करेंगे इस वक़्त इन की अपनी शरीअ़त नहीं होगी, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हुजूर स0अ0व0 के उम्मती बन कर आऐंगे, क्योंकि हुजूर स0अ0व0 ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं, आप के बाद कोई नबी

आने वाले नहीं हैं, जो अब नबुव्वत का दअ़वा करता है वो झूटा है। कुछ लोगों ने यह भी दअ़वा किया है कि मैं ईसा हूं, लेकिन यह दअ़वा बिल्कुल ग़लत है, क्योंकि हज़रत ईसा बिल्कुल अख़ीर में होंगे, और अपने हाथों से दज्जाल को क़त्ल करेंगे और जो दअ़वा करने वाले हैं उन्होंने कभी दज्जाल को ना देखा है और ना क़त्ल किया है, इस लिए इस का दअ़वा बिल्कुल ग़लत है।

हज़रत ईसा अलैहि0 के उतरने की दलील यह आयत है:

1. وَ مَا قُتِلُوْهُ يَقِيْناً ، بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزاً حَكِيْماً، وَ اِنْ مِنْ اَهْلِ الْكِتَابِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ وَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُوْنَ عَلَيْهِمْ شَهِيْداً .

(آیت ۱۵۹، سورت النساء ۴)

तर्जुमा: यह बिल्कुल यक़ीनी बात है कि वो (ईसा को क़त्ल करने वाले) ईसा अलैहि0 को क़त्ल नहीं कर पाये, बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपने पास उठा लिया था और अल्लाह बड़ा इक़्तदार वाला, और अहले किताब में से कोई ऐसा नहीं है जो अपनी मौत से पहले ज़रूर बिल जरूर ईसा पर ईमान ना लाऐ, और क़यामत के दिन वो इन लोगों के ख़िलाफ़ गवाह बनेंगे।

तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास के मुताबिक़ इस आयत में इशारा है कि हज़रत ईसा ज़मीन पर उतरेंगे और तमाम अहले किताब ईमान लाऐंगे जिस से दोबारा उतरने का इशारा इस आयत में मिलता है। इस हदीस में है:

2. عن ابی هريرة ان رسول الله ﷺ قال.....فبينا هم يعدون للقتال يسوون الصفوف اذا قيمت الصلاة فينزل عيسى ؑ ابن مريم فامهم فاذا راه عدو الله ذاب كما يذوب الملح فى الماء، فلو تركه لانذاب حتى يهلك ، و لكن يقتله الله بيده فيريهم دمه فى حربته . (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب فى فتح قسطنطينية و خروج الدجال ، و نزول عيسى ابن مريم ، ص ۱۲۵۴ ، نمبر ۲۸۹۷ / ۷۲۷۸)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया……क़यामत के क़रीब लोग एक जंग की तैयारी कर रहे होंगे और सफ़ें सीधी की जा चुकी होंगी और नमाज़ की इक़ामत कही होगी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नीचे उतरेंगे और लोगों की इमामत करेंगे, जब अल्लाह का दुशमन दज्जाल देखेगा तो जैसे पानी में नमक पिघलता है इसी तरह वो पिघलने की कौशिश करेगा, अगर इस को ऐसे ही छोड़ देते तो वो पिघल जाता और मर जाता, लेकिन हज़रत ईसा अलैहि0 हाथ से इस को क़त्ल करायेगा, फिर हज़रत ईसा अलैहि0 (लोगों को यक़ीन कराने के लिए) अपने नेज़े पर दज्जाल का ख़ून दिखलाऐंगे।

3. سمع ابا هريرة يقول قال رسول الله ﷺ و الذى نفسى بيده ! ليوشكن ان ينزل فيكم ابن مريم حكما مقسطا ، فيكثر الصليب ، و يقتل الخنزير ، و يضع الجزية ، و يفيض المال حتى لا يقبله أحد . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب نزول عيسى ابن مريم حاكما بشريعة نبينا محمد ، ص ٧٧، نمبر ١٥٥ ، نمبر ٣٨٩)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जिस ज़ात के क़ब्ज़े में मेरी जान है इस की क़सम खा कर कहता हूं कि हज़रत ईसा तुम्हारे दरमियान ज़रूर उतरेंगे वो इन्साफ़ करने वाला हाकिम होंगे, वो सलीब को तोड़ देंगे, सुवर को क़त्ल कर देंगे, जज़िया ख़त्म कर देंगे (यानी तमाम लोगों को ईमान ही लाना होगा, ताकि कोई जज़िया ना दे) और इन के ज़माने में माल इतना बह पड़ेगा कि इस को कोई लेने वाला नहीं होगा।

4. ان ابا هريرة قال قال رسول الله ﷺ كيف انتم اذا نزل ابن مريم فيكم و امامكم منكم . (مسلم شريف ، كتاب الايمان ، باب نزول عيسى ابن مريم حاكما بشريعة نبينا محمد ، ص ٧٨، نمبر ١٥٥ ، نمبر ٣٩٢)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि इस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा कि तुम्हारे दरमियान हज़रत ईसा उतरेंगे और इस वक़्त इमाम तुम्हारे में से होगा (यानी हज़रत महदी अलैहि0 इमाम होंगे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इन के ताबअ़ होंगे)।

5. عن ابی هریره ...قال ابن ابی ذئب : تدری ما امکم منکم ؟ قلت : تخبرنی قال فامکم بکتاب ربکم عزو جل و سنة نبیکم . (مسلم شریف ، کتاب الایمان ، باب نزول عیسی ابن مریم حاکما بشریعة نبینا محمد ، ص ۷۸، نمبر ۱۵۵ ، نمبر ۳۹۴)

तर्जुमा: इब्ने अबी ज़इब ने कहा **امکم منکم** का मअ़नी तुम को पता है? मैंने कहा आप बताइये तो उन्होंने कहा कि कुरआन के ज़रिये और हुज़ूर स0अ0व0 की सुन्नत के मुताबिक़ हज़रत ईसा अलैहि0 तुम्हारी इमामत करेंगे।

इन अहादीस से पता चला कि हज़रत ईसा अलैहि0 दोबारा ज़मीन पर उतरेंगे और वो हुज़ूर स0अ0व0 की शरीअ़त के ताबअ़ होंगे और इन के उम्मती बन कर तशरीफ़ लाऐंगे।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम

यह भी क़यामत के अ़लामात में से हैं। हज़रत महदी अलैहि0 का नाम हुज़ूर के नाम पर मौहम्मद होगा और इस के बाप का नाम हुज़ूर स0अ0व0 के बाप के नाम पर अ़ब्दुल्लाह होगा और यह हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की औलाद में होगा और हज़रत हसन की औलाद में होगा। क़यामत के क़रीब लोग इन के हाथ पर बैअ़त करेंगे और यह आख़िरी ख़लीफ़ा होंगे, यह नमाज़ पढ़ा रहे होंगे कि हज़रत ईसा अलैहि0 आसमान से उतरेंगे और इन की इमामत में नमाज़ पढ़ेंगे फिर यह दोनों मिल कर दज्जाल से जंग करेंगे और हज़रत ईसा अलैहि0 दज्जाल को क़त्ल करेंगे। इस के लिए अहादीस यह हैं।

6.عن ام سلمة زوج النبی ﷺ عن النبی ﷺ قال یکون اختلاف عند موت خلیفة فیخرج رجل من اهل المدینة هاربا الی مکة فیأتیه ناس من اهل مکة فیخرجونه و هو کاره فیبایعونه بین الرکن و المقام ... یلقی الاسلام بجرانه الی الارض، فیلبث سبع سنین ، ثم یتوفی و یصلی علیه المسلمون .
(ابو داود شریف ، کتاب الملاحم ، باب اول کتاب المهدی ،ص۶۰۲،نمبر۴۲۸۶)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि एक ख़लीफ़ा की मौत पर लोगों में इख़तलाफ़ होगा, एक आदमी (हज़रत महदी) मदीना से भाग कर मक्का आऐंगे, इन के पास मक्का मुकर्रमा के लोग आऐंगे और महदी को लोगों के सामने लाऐंगे, हालांकि वो ख़लीफ़ा बनना नहीं चाहेंगे, रूक्न यमानी, और मक़ाम इब्राहीम के दरमियान इन से बैअ़त करेंगे......इस वक़्त इस्लाम ज़मीन पर जड़ पकड़ लेगा, हज़रत महदी इस के बाद सात साल तक ज़िन्दा रहेंगे, फिर इन का विसाल होगा, और मुसलमान पर नमाज़ पढ़ेंगे।

7.عن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ : لا تذهب الدنیا حتی یملک العرب رجل من اهل بیتی یواطی اسمه اسمی . (ترمذی شریف ، کتاب الفتن، باب ما جاء فی المهدی ، ص ۵۱۲، نمبر ۲۲۳۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि दुनिया ख़त्म नहीं होगी यहां तक कि मेरे अहले बैत में से एक आदमी अ़रब का मालिक है, इन का नाम मेरे नाम पर मौहम्मद होगा।

8.عن ابی سعید الخدری قال خشینا ان یکون بعد نبینا حدث ، فسألنا نبی الله ﷺ ، فقال ؛ ان فی امتی المهدی یخرج یعیش خمسا او سبعا او تسعا... قال فیجیء الیه الرجل فیقول یا مهدی اعطنی أعطنی قال فیحثی له فی ثوبه ما استطاع ان یحمله . (ترمذی شریف ، کتاب الفتن ، باب فی عیش المهدی و عطائه ، ص ۵۱۲، نمبر ۲۲۳۲)

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हमें डर

हुआ कि हुज़ूर स0अ0व0 के बाद कोई वाक़िआ़ ना पैश आ जाये तो हम ने हुज़ूर स0अ0व0 से पूछा, तो आप ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में महदी होंगे वो पांच साल, सात साल, या नौ साल ज़िन्दा रहेंगे ......इन के पास लोग आऐंगे और कहेंगे ऐ महदी मुझे दो, रावी कहते हैं कि आदमी जितना उठा सकेगा इस के कपड़े में इतना ड़ाल देंगे (यानी माल की कसरत इतनी हो जायेगी कि हज़रत महदी लोगों को बेहिसाब माल देंगे)।

इन अहादीस से मालूम हुआ कि हज़रत महदी क़यामत के क़रीब तशरीफ़ लाऐंगे वो ख़लीफ़ा बनेंगे और इन के ज़माने में फ़ुतूहात बहुत होंगी और माल की कसरत होगी।

दज्जाल का बयान

दज्जाल इन्सान होगा, लेकिन अल्लाह तआ़ला इस को इतनी ताक़त देंगे कि लोगों को गुमराह कर सके, दज्जाल आयेगा वो काफ़िर होगा और लोगों को अपने कुफ़्र की तरफ़ बुलाऐगा। इस के लिए अहादीस यह हैं:

9.ان ابا سعيد الخدری قال حدثنا رسول الله ﷺ حديثا طويلا عن الدجال ...فيقول الدجال أرأيت ان قتلت هذا ثم احييته ، هل تشكون فی الامر ؟ فيقولون ، لا ، فيقتله ثم يحييه ، فيقول حين يحييه ، و الله ما كنت قط اشد بصيرة منی اليوم ، فيقول الدجال أقتله ، فلا يسلط عليه . (بخاری شريف ، كتاب فضائل المدينة ، باب لا يدخل الدجال المدينة ، ص۳۰۳،نمبر۱۸۸۲)

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0 फ़रमाते हैं कि दज्जाल के बारे में हुज़ूर स0अ0व0 ने लम्बी हदीस बयान की......दज्जाल लोगों से कहेगा, अगर मैं इस आदमी को क़त्ल कर दूं और फिर इस को ज़िन्दा कर दूं तो मेरे मामले में कोई शक रहेगा, लोग कहेंगे, नहीं, दज्जाल इस को क़त्ल करेगा फिर इस को ज़िन्दा करेगा, जब इस को ज़िन्दा कर देगा, तो वो आदमी

कहेगा, आज जिस तरह यक़ीन हुआ (कि तुम दज्जाल हो) ख़ुदा की क़सम इस से पहले नहीं हुआ था, अब दज्जाल कहेगा क्या इस को क़त्ल ना कर दूं, लेकन अल्लाह इस क़त्ल करने पर कुदरत नहीं देगा।

10.ان عبد الله بن عمر قال قام رسول الله ﷺ فی الناس فاثنی علی الله بما هو اهله ثم ذکر الدجال فقال انی لانذرکموه و ما من نبی الا قد انذر ه قومه و لکنی سأقول لکم فیه قولا لم یقله نبی لقومه ، انه اعور ، و ان الله لیس باعور . (بخاری شریف ، باب ذکر الدجال ،ص۱۲۲۷،نمبر۷۱۲۷/ مسلم شریف ، کتاب الفتن ، باب ذکر الدجال ،ص۱۲۶۹،نمبر۲۹۳۲/۷۳۶۱)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 लोगों के दरमियान खड़े हुए अल्लाह की मुनासिब तारीफ़ की, फिर दज्जाल का ज़िक्र किया, और फ़रमाया हर नबी ने अपनी क़ौम को दज्जाल से डराया है और मैं भी तुम को इस के फ़ितने से डराता हूं, लेकिन मैं ऐसी बात कह रहा हूं जो किसी नबी ने अपनी क़ौम से नहीं कही कि दज्जाल काना है और ख़ुदा हरगिज़ काना नहीं है।

11.عن حذیفة عن النبی ﷺ قال فی الدجال ، ان معه ماء ، و نار ، فناره ماء بارد و مائه نار . (بخاری شریف ، باب ذکر الدجال ، ص ۱۲۲۸ ، نمبر ۷۱۳۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने दज्जाल के बारे में फ़रमाया दज्जाल के साथ पानी और आग चलेगी, जो इस की आग है वो हक़ीक़त में ठण्ड़ा पानी है और जो पानी नज़र आयेगा वो हक़ीक़त में आग है।

12.ان عائشةؓ قالت سمعت رسول الله ﷺ یستعیذ فی صلاته من فتنة الدجال . (بخاری شریف نمبر ۷۱۲۹)

तर्जुमा: हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैंने सुना कि हुज़ूर स0अ0व0 अपनी नमाज़ में दज्जाल के फ़ितने से पनाह मांगा

करते थे। दज्जाल एक बड़ा फ़ितना होगा इस से पनाह मांगना चाहिए यह भी अ़लामत क़यामत में से है।

याजूज माजूज निकलेंगे

याजूज माजूज एक बहुत बड़ी क़ौम है जो क़यामत के क़रीब निकलेगी और पूरी दुनिया में बड़ी उधम मचायेगी हुजूर स0अ0व0 ने उस की ख़बर दी है। इस के लिए आयत यह है:

2. **حَتّٰى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ وَ اقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ . (آیت ۹۶، سورت الانبیاء ۲۱)**

तर्जुमा: यहां तक कि जब याजूज माजूज को खोल दिया जायेगा और वो हर बुलन्दी से फिसलते नज़र आऐंगे, और सच्चा वादा (यानी क़यामत) पूरा होने का वक़्त क़रीब आ जायेगा।

हदीस यह है:

13. **عن زينب بنت جحش ان النبى ﷺ استيقظ من نومه و هو يقول: لا اله الا الله ، ويل للعرب من شر قد قترب ، فتح اليوم من ردم ياجوج و ما جوج مثل هذه و عقد سفيان بيده عشرة . (مسلم شريف ، كتاب الفتن ، باب اقترابالفتن و اشراط الساعة ، ص ۱۲۴۶ ، نمبر ۲۸۸۰/ ۷۲۳۵)**

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 नीन्द से बैदार हुए **لا اله الا الله** कह रहे थे, अ़रबों के लिए हलाकत हो शर बहुत क़रीब आ चुका है और आज याजूज माजूज का सुराख़ इतना खोल दिया गया है, हज़रत सुफ़ियान ने उंगलियों का गोल हलक़ा बना कर बताया कि इतना सा खोला गया।

इस आयत और हदीस से पता चला कि क़यामत में याजूज माजूज खोले जाऐंगे।

सूरज मग़रिब से निकलेगा

इस की दलील यह हदीस है:

14. حـدثـنـا ابـو هـريـرةؓ قال قال رسول الله ﷺ لا تقوم الساعة حتى تطلع الشمس من مغربها فاذا راها الناس آمن من عليها فذالک حين ﴿لا ينفع نـفسا ايمانها لم تكن آمنت من قبل (آيت ١٥٨ ، سورت الانعام ٦ ﴾(بخاری شريف ، كتاب التفسير ، باب لا ينفع نفسا ايمانها ، ص ٧٩٣، نمبر ٤٦٣٥)

तर्जुमा: हुजूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब तक मग़रिब से सूरज नहीं निकलेगा क़यामत क़ायम नहीं होगी, जब इस को निकलता देखेंगे तो सब लोग ईमान ले आऐंगे (लेकिन इस वक़्त यह ईमान क़ाबिल नहीं होगा, इस आयत **لا يـنـفـع نفسـا**) में इस का ज़िक्र हे।

जानवर निकलेगा

क़यामत के क़रीब एक अ़जीब जानवर निकलेगा जो इन्सानों से बातें करेगा, और इस वक़्त तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा, जानवर निकलने की दलील यह आयत है।

3. اِذَا وَقَـعَ الْـقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ . (آیت٨٢،سورت النمل ٢٧)

तर्जुमा: और जब हमारी बात पूरी होने का वक़्त उन लोगों पर आ पहुंचेगा तो हम उन के लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो इन से बात करेगा कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे।

कुछ और चीज़ें भी अ़लामत क़यामत में से हैं

क़यामत के क़रीब ज़िना आ़म हो जायेगा गाने आ़म हो जायेंगे, शराब पीना आ़म होगा, दीन से जहालत आ़म हो जायेगी और

वालिदैन के साथ बच्चों का रवय्या आक़ा जैसा होगा ओर बच्चे मां बाप का कोई अहतराम नहीं करेंगे और नीचे क़िस्म के लोग बड़ी बड़ी बिल्ड़िगें बना लेंगे, इन अहादीस में इस का तज़्किरा है।

15.عن ابی هریرة ...و سأخبرک عن اشراطها اذا ولدت الامة ربتها ، و اذا تطاول رعاة الابل البهم فی البنیان. (بخاری شریف ، کتاب لایمان ، باب سؤوال جبرئیل النبی ﷺ عن الایمان،ص۱۲،نمبر۵۰)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया मैं क़यामत आने की अ़लामत बताता हूं, जब औ़रतें अपने आक़ा को जन्म देने लगें काले ऊंटों को चराने वाले लोग बड़ी बड़ी बिल्ड़िंगों में डींगें मारने लगें।

16.عن انس بن مالک ...ان من اشراط الساعة ان یرفع العلم و یظهر الجهل و یفشو الزنا ، و یشرب الخمر ، و یذهب الرجال و یبقی النساء حتی یکون لخمسین امرأة قیم واحد . (ابن ماجة شریف ، کتاب الفتن ، باب اشراط الساعة ، ص۵۸۴نمبر۴۰۴۵)

तर्जुमा: हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि क़यामत की अ़लामतों मे से यह हैं, इल्म दीन उठ जायेगा, जहालत आ़म हो जायेगी, ज़िना आ़म हो जायेगा, शराब ख़ूब पी जायेगी, मर्द कम हो जाऐंगे यहां तक कि पचास औ़रतों के लिए एक ही ज़िम्मेदार होगा।

इस अ़क़ीदे के बारे में तीन आयतें और 16 हदीसें हैं, आप हर एक की तफ़सील देखें।

अल्हम्दु लिल्लाह आज यह किताब पूरी हुई, जो मेरी ज़िन्दगी की एक अहम किताब है।

अहक़र समीरूद्दीन क़ास्मी ग़ुफ़िरलहू
मांचेस्टर इगंलैंड

☆......☆......☆